अल्लाह को राज़ी कर लो

हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब मद्दज़िल्लुहू

अल्लाह को राज़ी कर लो

हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब

मुरत्तिब
हाफ़िज़ मुहम्मद सुलेमान

फरीद बुक डिपो (प्रा०) लि०
Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

(विषय सूची)

هٰذا مِثالُ نِعَالِہٖ صَلُّوا عَلَیہِ وَاٰلِہٖ

نقشِ نعلِ شریف

بمقامیکہ نشانِ کفِ پائے تو بود

سالہا سجدۂ صاحب نظراں خواہد بود
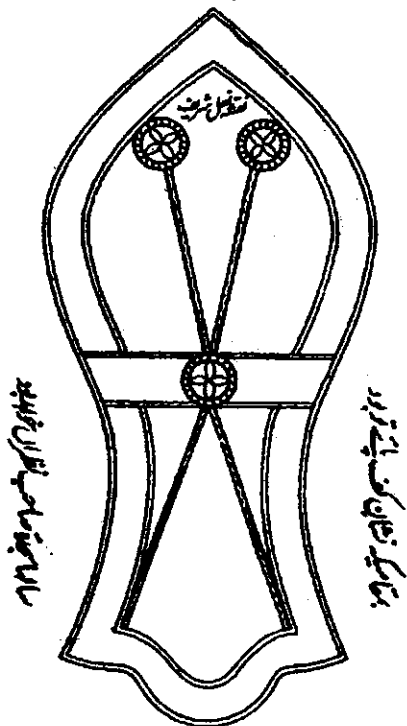
از: کعب ابراهیم

जन्नत व दोज़ख़ के हालात

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम अम्मा बअद

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًاo مَا يَلِيْقُ بِجَمَالِهٖ وَعَظِيْمِ سُلْطَانِهٖ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنْ اَرْسَلَهٗ بَيْنَ يَدَىِ السَّاعَةِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًاo وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ نَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ اَمَّا بَعْدُ

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًاo وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًاo

وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اُطْلُبُوا الْجَنَّةَ جَهْدَكُمْ وَرُدُّوْا مِنَ النَّارِ جَهْدَكُمْ فَاِنَّ الْجَنَّةَ لَا يَنَامُ طَالِبُهَا وَاِنَّ النَّارَ لَا يَنَامُ هَارِبُهَا وَاِنَّ الْجَنَّةَ الْيَوْمَ مَحْفُوْفَةٌ بِالْمَكَارِهِ وَاِنَّ الدُّنْيَا مَحْفُوْفَةٌ بِالشَّهَوَاتِ وَاللَّذَّاتِ فَلَا تُلْهِيَنَّكُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ اَوْ كَمَا قَالَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَo

अल्लाह तआला का तार्रुफ़

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! अल्लाह तआला इस

काएनात का तन्हा ख़ालिक़ वहदहु ला शरीक और मालिक भी है। अल्लाह तआला अपनी ज़ात में इब्तिदा से पाक है :

﴿اللهم انت الاول فليس قبلك شئی الاول بلا بداية.﴾

अल्लाह वह ज़ात, ऐसा अव्वल, ऐसा पहला जिसकी इब्तिदा कोई नहीं। इब्तिदा तक देखना चाहें। आख़िर आख़िर, आख़िर कोई नज़र नहीं आता।

﴿وهو الاخر ليس بعده شئی﴾ वह आख़िर भी है, दाइमी है। बिला इंतिहा उसकी इंतिहा कोई नहीं। कहीं जाकर उसका आख़िरी किनारा कोई नहीं। तो अल्लाह वह ज़ात है कि जो न दुकान में समाता है न मकान में। माज़ी, हाल, मुस्तक़्बिल की बंदिशों से बंधा हुआ न उसे ज़मीन की ज़रूरत न आसमानों की ज़रूरत। न इंसानों का मुहताज, न फ़रिश्तों का मुहताज, न नबियों और रसूलों का मुहताज, न जन्नत और जहन्नम का मुहताज। अपनी ज़ात में अपनी बक़ा के लिए न खाने का मुहताज न पीने का मुहताज।

थकन से पाक, नींद से पाक, ऊँघ से पाक, ग़फ़लत से पाक, बीवी से पाक, औलाद से पाक, रिश्तों से पाक, वज़ारत व मुशावरत से पाक।

अकेला तने तन्हा इतने बड़े निज़ाम का ख़ालिक़, मालिक। इतना कामिल, इतनी फैली हुई काएनात चलती हुई उड़ती हुई, तैरती हुई से ज़र्रा बराबर न वह ग़ाफ़िल है और न जाहिल है।

एक दौर इस काएनात और इस धरती पे कुछ ऐसा था कि कुछ न था :

اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَیْءٍ حَیٍّ.

यह आयत उस दौर की तरफ़ निशानदिही करती है जब कुछ न था। उससे अगला दौर आया। उसने ज़मीन को बिछोना शुरू कर दिया। ﴿والارض مددنها﴾ ज़मीन बिछाई। ﴿والارض فرشنها فنعم الماهدون﴾ अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मैंने फ़र्श बिछाया। कोई मेरे जैसा है जो बना के दिखा दे।

क़ुदरते इलाही के करिश्मे

बनाने में अल्लाह तआला की क़ुदरत यह है कि एक ज़र्रा मिट्टी न था और यह ज़मीन इतना बड़ा गोला मिट्टी का बनाया। एक पत्थर नहीं था इतने बड़े-बड़े पहाड़ बनाए। एक तिनका न था कैसे-कैसे दरख़्त उगाए। हवा का ज़र्रा न था ठंडी और गर्म हवाओं का निज़ाम चलाया। बादल का कोई ज़र्रा न था कोई वजूद न था। ऐसे काले, सफ़ेद, सुर्ख़ बादल बनाए और पानी का क़तरा न था। दरिया चलाए, समुन्द्र बनाए, चश्मे पैदा फ़रमाए। मीठा पानी बनाया, कढ़वा पानी बनाया।

﴿هذا عذب فرات وهذا ملح اجاج﴾ यह मीठा पानी, यह कढ़वा पानी। ﴿بينهما برزخ لا يبغين﴾ दर्मियान में पर्दा लगा दिया। न मीठा पानी कढ़वे में जाए न कढ़वा पानी मीठे में जा सके। यह एक निज़ाम है जो अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाया।

﴿رفع السموت﴾ आसमान बुलन्द कर दिए। ﴿الشمس والقمر والنجوم مسخرات بامره﴾ सूरज, चाँद, सितारों का निज़ाम बनाया और चलाया और इन सबको अपना ग़ुलाम बनाया। ﴿يغشى الليل النهار﴾ दिन और रात का निज़ाम चलाया। दिन को उजाला दे दिया, रात को अंधेरा दे दिया। सितारों को नीलाहट दे दी। चाँद को रोशनी दे दी। सूरज को उजाला, आग को तपिश और हरारत दे दी। ज़मीन को गर्दिश दे दी। पानी को चलना दे दिया। पहाड़ों

को ठहराव दे दिया। हवाओं को गर्म ठंडा और लतीफ़ बना दिया। आसमानों को बुलन्द कर दिया, ज़मीन को पस्त कर दिया। फ़रिश्तों को नूर से बनाया। हमें ख़ाक से बनाया। जिन्नात को आग से बनाया। सारी काएनात के इतने बड़े निज़ाम बनाए और चलाए। इनमें न अल्लाह कभी थका, न कभी ग़ाफ़िल हुआ, न कभी ख़ता खाई।

मोर के अंडे से मुर्ग़ी न निकली, मुर्ग़ी के अंडे से कोयल न निकली, कोयल के अंडे से कव्वा न निकला। कव्वे के अंडे से फ़ाख़्ता न निकली, फ़ाख़्ता के अंडे से मगरमछ न निकला। मगरमछ के अंडे से कछुआ न निकला। कछुए के अंडे से मछली न निकली। मछली के अंडे से मच्छर न निकला। मच्छर के अंडे मक्खी न निकली। मक्खी के अंडे से पिस्सू न निकला।

दुनिया में कितनी काएनात है जो अंडे दे रही है। कभी अल्लाह तआला ख़ता खा जाते तो मोर के अंडे से शतुरमुर्ग़ निकलता। शतुरमुर्ग़ के अंडे से मुर्ग़ाबी निकलती, मुर्ग़ाबी के अंडे से कव्वा निकलता। ओहो मैं भूल ही गया।

खरबों अंडे बिखरे पड़े हैं। एक मादा मच्छर कई हज़ार अंडे दे देती है। एक मादा मक्खी शहद की तीस हज़ार अंडे दे देती है। और इनसे क्या निकालना है नर या मादा और उसने क्या बनना है। इस अंडे को इंसान को खाना है कि उससे बच्चे निकालना है। मुर्ग़ी निकलनी है कि मुर्ग़ा निकालना है।

यह अल्लाह तआला का निज़ामे तख़्लीक़ है। बग़ैर किसी चीज़ के सब कुछ बनाया। यह निज़ाम भी बनाया और फिर हमें भी बनाया। सारे दुनिया के निज़ाम को तो क़ाबू करके दिखाया और हमें थोड़ी सी आज़ादी दे दी।

इम्तिहान की घड़ी

कहा तुमको आज़ादी दे रहा हूँ मौत तक फिर तुम से निबट लूंगा। ﴿سنفرغ لكم ايها الثقلن﴾ तुम्हारी मरज़ी है, इन ठंडी हवाओं को महसूस करके मेरा शुक्र अदा करो या इन ठंडी हवाओं में मस्त होकर गाने की महफ़िलें सजाओ। मैं देखूंगा दोनों को मगर फ़ैसला करूंगा फ़ैसले के दिन।

यह नहीं कि हम अल्लाह की ताक़त से बाहर हो गए! यह सूरज ज़मीन से बारह लाख गुना बड़ा है। नौ करोड़ तीस लाख के फ़ासले पर है। छः सौ सोलह टन हाइड्रोजन को अल्लाह तआला एक सैकंड में, छः सौ बारह अरब टन मिलियम गैस से तब्दील करता है। जिसकी हरारत इतनी ज़्यादा है कि पाँच करोड़ हाइड्रोजन बम इकठ्ठे फटें तो उनसे जितनी आग और हरारत पैदा होती है उतनी सूरज एक सैकन्ड में फेंक रहा है।

जो अल्लाह सूरज जैसी आग को क़ाबू करे और उसके पाँच करोड़ हाइड्रोजन बमों जितनी आग और हरारत को कंट्रोल करे और ज़मीन की तरफ़ जब वह आग सफ़र शुरू करे तो उसका बीस करोड़वाँ हिस्सा नीचे पहुँचे और बाक़ी सब कुछ हवा में तहलील हो जाए।

जो अल्लाह इतनी ताक़त रखता हो कि ज़मीन सूरज के गिर्द घूमे हज़ार मील फ़ी घंटा की रफ़्तार है। हमारी जो गोली पिस्तौल से या क्लाशनूफ़ से निकलती है उसकी कोई अठ्ठारह सौ किलोमीटर रफ़्तार फ़ी घंटा।

तो जो ज़मीन इतनी तेज़ घूमे, कभी अल्लाह तआला ने आपको चक्कर आने दिए? कभी मरी को उलटने दिया? कभी पहाड़ों को उलटने दिया?

इतने तेज़ रफ़्तार घूमने वाली चीज़ जिसकी रफ़्तार गोली की रफ़्तार के क़रीब है उसको क़ाबू में करना मुश्किल है या हमें (इंसान) को क़ाबू करना मुश्किल है।

फिर ज़मीन सूरज के गिर्द साढ़े उन्नीस करोड़ मील के दायरे में घूमती है। सूरज भी घूम रहा है, ज़मीन भी घूम रही है, सूरज की रफ़्तार छः लाख मील फ़ी घंटा है। ज़मीन की रफ़्तार साठ हज़ार मील फ़ी घंटा है और हर अठ्ठारह मील के बाद दो अशारिया आठ (2.8) मिलीमीटर सूरज से हट जाती है। मिलीमीटर कितना होता है? एक सेंटीमीटर का हज़ारवाँ हिस्सा। हर साल जो ज़मीन पीछे हट रही है। सूरज आगे दौड़ रहा है। इन फ़ासला पाँच सौ मिलियन मील हर साल बढ़ता जा रहा है, बढ़ता जा रहा है। सूरज भी दौड़ रहा है, ज़मीन भी दौड़ रही है। यह जो ज़मीन हर साल दो अशारिया आठ मिलीमीटर हर साल सूरज से हटती है अगर यह दो अशारिया पाँच मिलीमीटर (2.5) हटे यानी तीन माइक्रोमीटर ज़्यादा हट जाए सूरज से या कम हट जाए। तीन माइक्रोमीटर तो नज़र भी नहीं आता। बहुत बड़ी दूरबीन लगाकर देखा जाए तो तब जाकर नज़र आएगा। तो तीन माइक्रोमीटर की कमी ज़्यादती चंद हफ़्तों के अंदर सारी काएनात को तबाह व बर्बाद कर सकती है।

अल्लाह तआला का इल्मे कामिल

तो मेरे भाईयो! यह बारिश हो रही है। ये क़तरे गिर रहे हैं। तक़रीबन बारह सौ मीटर ऊँचा बादल होता है जो बारिश बरसाता है। इन बारिश के क़तरों का जो जहम और वज़न है, उस वज़न और जहम की किसी चीज़ को अगर बारह सौ मीटर की बुलन्दी से नीचे फेंका जाए तो उसकी रफ़्तार होगी पाँच सौ अठ्ठावन

किलोमीटर फ़ी घंटा। यह जो क़तरे आप पर बरस रहे हैं। अब यह सामने आपको नज़र आ रहे हैं। इनके ज़मीन पर आने की रफ़्तार दस से बारह किलोमीटर फ़ी घंटा। अल्लाह इस पानी के क़तरे को ऐसी शक्ल देता है कि जिसे उसकी रफ़्तार टूटती है। फिर हवा में अल्लाह ने ऐसे मादे रखे हैं जो इससे रगड़ खाते हैं और इसकी रफ़्तार को तोड़ते हैं। जब यह क़तरा ज़मीन को चूमता है तो उसकी रफ़्तार दस बारह किलोमीटर फ़ी घंटा होती है।

अगर यह रफ्तार दस बारह किलोमीटर की बजाए सौ किलोमीटर हो जाए तो न कोई सर सलामत रहेगा, न कोई छत सलामत रहेगी, न कोई पहाड़ सलामत रहेगा, न कोई सड़क सलामत रहेगी, न कोई इंसान सलामत रहेगा।

अब ज़मीन पर जितनी भी बारिश हो रही है उसकी रफ़्तर को कंट्रोल करना, एक-एक क़तरे को कंट्रोल करना यह रब का काम है। यह है मेरा और आपका रब जो इतना कुछ करके न थकता है न चूकता है। फिर ये कितने क़तरे बरस रहे हैं कौन जानता है? अल्लाह फ़रमाता है ﴿يعلم عدد قطر الامطار﴾ मैं तुम्हारा वह रब हूँ जो बारिश के सारे क़तरों की तादाद को जानता हूँ।

मेरे भाईयो! यह सब निज़ाम उस बादशाह ने बनाया, उसी ने चलाया, उस पर क़ाबू रखा। क्या वह हमें क़ाबू नहीं कर सकता कि मरी में जितने हैं कोई भी नाफ़रमानी न करे।

कोई औरत बे पर्दा न फिरे, कोई नवजवान मस्ती न करे, किसी होटल में शराब न पी जाए, कहीं ज़िना न हो, कहीं जुवा न हो, कोई बेनमाज़ी न हो। क्या यह मुश्किल है अल्लाह के लिए?

﴿ءانتم اشد خلقا ام السماء﴾ तर्जमा तो यह है कि तुम्हारा बनाना

मुश्किल है या आसमान का बनाना मुश्किल है। लेकिन अल्लाह कह क्या रहा है? तुम्हें क़ाबू करना मुश्किल है या आसमान को क़ाबू करना मुश्किल है? तुम्हें क़ाबू करना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान को क़ाबू करना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान को क़ाबू करना ज़्यादा मुश्किल है।

﴿بناها﴾ मैंने इसको बनाया, ﴿رفع سمكها﴾ छत को उठाया, ﴿فسواها﴾ बराबर किया, ﴿واغطش ليلها﴾ रात को लाया, ﴿واخرج ضحاها﴾ दिन को लाया, ﴿والارض بعد ذلك دحاها﴾ ज़मीन को बिछाया, ﴿اخرج منها ماءها ومرعاها﴾ ज़मीन से पानी निकाला, चारा निकाला, ﴿والجبال ارساها﴾ पहाड़ों को गाड़ा, ﴿متاعا لكم ولانعامكم﴾ तुम्हारे लिए और तुम्हारे जानवरों के लिए।

जो अल्लाह पहाड़ों को गाड़ के क़ाबू में रखे। बारिश के क़तरों पर अपनी ताक़त को ज़ाहिर करके दिखाए। आसमान जैसी बड़ी मख़्लूक़ को क़ाबू करके दिखाए। वह इस छः फिट के आदमी को कैसे क़ाबू नहीं कर सकता?

फ़िक्र की घड़ी

तो मेरे भाईयो! हमारे लिए इम्तिहान है बड़ा जबरदस्त, बड़ा ख़ौफ़नाक। हमारे एक एक क़ौल व फ़ेअल पर अल्लाह की नज़र है और एक दिन ऐसा आने वाला है जब अल्लाह हमें अपने सामने खड़ा कर देगा। बताओ आसमान को क़ाबू करना मुश्किल है या इंसान को?

यह अल्लाह पाक हमें मुतवज्जेह फ़रमा रहा है ﴿قل كل يعمل على شاكلته﴾ कि करो करो रास्ते खुले हुए हैं। गुनाहों के भी, अच्छाई के भी, बुराई के भी, ईमान के भी, कुफ़्र के भी। सारे रास्ते खुले हुए हैं। तुम्हें अख़्तियार दे दिया गया है जो चाहे ईमान लाए और

चाहे कुफ़्र अख़्तियार करे, ﴿فمن شاء فليؤمن ومن شاء فليكفر﴾ लेकिन यह बताया कि ﴿لا تحسبن الله غافلا عما يعمل الظالمون﴾ कि अपने रब को ग़ाफ़िल मत समझो। वह ग़ाफ़िल नहीं है।

तो मेरे भाईयो! हम मौत से पहले पहले अपने आपको ग़फ़लत से निकालें और सारी दुनिया के इंसानों को भी ग़फ़लत से निकालें क्योंकि हमारा मसअला सिर्फ़ अपनी ज़ात के साथ मुताल्लिक़ नहीं है। सारी दुनिया के इंसानों का मसअला है और ख़ासतौर पर इस उम्मत का मसअला है। जब अक्सरियत में नाफ़रमानी आएगी तो अल्लाह पाक के अज़ाब के दरवाज़े खुलेंगे और जब अक्सरियत में फ़रमांबरदारी आएगी तो अल्लाह पाक के रहम व करम से फ़ज़ल के दरवाज़े खुलेंगे।

इसीलिए हम यह अरज़ कर रहे हैं कि भाईयो! अपनी ज़ात के लिए भी तौबा करें और लोगों से भी तौबा करवाएं। अपनी मरी का माहौल आप ऐसा बनाएं कि कोई भी यहाँ आकर गुनाह की जुर्रात न कर सके। फ़िज़ा ऐसी बनाएं मरी के बाशिन्दे कि कोई यहाँ आवारगी न हो, फ़हाशी न हो, बेहयाई न हो। पहाड़ों के लोग नेक फ़ितरत होते हैं।

बेहयाई के मुज़िर असरात

जहाँ दुनिया की चमक दमक ज़्यादा है वहाँ लोग अंधे हो जाते हैं। वे अपने गुनाह और अपनी गंदगियाँ लेकर आपकी पाक वादी को भी गंदा करने के लिए आ जाते हैं। पाँचों उंगलियाँ बराबर नहीं हैं। अक्सर यहाँ हमारे ही भाई हैं, हमारी ही बहनें हैं। हमारे ही बेटे और बेटियाँ हैं। कोई मुसलमान अगर बिगड़ता है तो मेरा ही क़सूर है। मेरा ही भाई है, मेरा ही बेटा है, मेरी ही बहन है, मेरी ही बेटी है।

जैसे अपने बेटे का दर्द सीने में उठे। ऐसे ही अपने मुसलमान भाई का दर्द सीने में महसूस करें। जैसे अपनी बेटी का दर्द सीने में उठता है ऐसे ही हर मुसलमान बेटी का दर्द अपने सीने में महसूस करें। मेरे भाईयो! हमारी बदक़िस्मती है कि हम ने सौ साल अंग्रेज़ी की गुलामी देखी है। फिर सौ साल के बाद वह ख़ुद तो चला गया लेकिन हमारी नस्ल को ज़हनी गुलाम बना गया। हम आज़ाद होकर भी गुलाम रहे और आज़ादी पाने के बाद भी उनकी गुलामी से निकल सके।

उनकी मआशरत, उनकी तहज़ीब, उनकी ज़िंदगी हमारे मआशरे में रच गई। गंदे नाले की तरह फैल गई।

गंदे नाले का पानी निकल आए तो पाक पानी को भी गंदा कर देता है। जब गंदे पानी के गटर उबलना शुरू हो जाएं तो शफ़्फ़ाफ़ चश्मे बर्बाद हो जाते हैं। दीने इस्लाम की पाकीज़ा ज़िंदगी मे जो मग़रिबी ज़िंदगी के गंदे गटर उबल कर आए हैं, वे हमारी ज़िंदगी को भी बहाकर ले गए।

जब अल्लाह नाराज़ हो गया तो

तो मेरे भाईयो! मैं सब भाईयों के सामने हाथ जोड़कर इल्तिजा करता हूँ कि अपनी ज़ात से भी तौबा करें और इन आने वाले मुसलमान बच्चे बच्चियों बूढ़ों से भी तौबा करवाएं। अल्लाह पाक जब नाराज़ हो गया तो फिर नहीं देखेगा कि होटल वाला तो ठीक था, होटल में आने वाला शराबी था। जब अज़ाब का कोड़ा बरसता है तो फिर सबको अपनी लपेट में ले लेता है। अल्लाह तआला ने आपको ख़ूबसूरत वादी अता फ़रमाई। ख़ूबसूरत ठंडा मौसम मरहमत फ़रमाया। इसका शुक्रिया यह है आप लोगों को यहाँ आने वाले हर एक को अल्लाह का शुक्रगुज़ार बंदा बना दें।

वह कमाई है जो हमेशा चलेगी

अपनी ज़ात से अल्लाह के हुक्मों के सामने झुकें और उसके महबूब के तरीक़ों को ज़िंदा करें और ऐसी नेक फ़िज़ा बना लो कि यहाँ आने वाला बुरे से बुरा इंसान भी तौबा करके जाए। अल्लाह का फ़रमांबरदार बनकर वापस जाए।

तो यह आपकी असल कमाई होगी। होटलों की कमाई चार महीने चलेगी, छः महीने चलेगी। फिर आप इंतिज़ार करेंगे कि सर्दी आए, बर्फ़बारी हो और लोग बर्फ़बारी को देखने आएं। कमाई हो। फिर वह कमाई गर्मियों तक चलेगी। फिर ख़त्म हो जाएगी। लेकिन मेरे भाईयो! अगर आपने किसी आने वाले को तौबा करा दी, नमाज़ पर खड़ा कर दिया, किसी मुसलमान बेटी को पर्दा करा दिया या किसी आवारा को अल्लाह के हुक्मों का आदी बना दिया तो यह वह कमाई है जो हमेशा चलेगी। हमेशा तक चलेगी।

इसलिए मेरे भाईयो! देखो अगर अल्लाह इसी एक बारिश को हुक्म कर दे तो यह एक बारिश सारी मरी और पूरे मुल्क को बहा देने के लिए काफ़ी है। नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम पर एक ही बादल बरसा था और अल्लाह तआला ने सारी दुनिया को ग़र्क़ कर दिया था। ऐसी बिजली गरजी जो अभी बिजली गरजी है। ऐसी ही बिजलियाँ गरजी थीं, ऐसे ही बादल बरसे थे, ऐसी ही आवाज़ें आई थीं, शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम पर और ऐसी ही आवाज़ आई थी सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम पर और एक आवाज़ ने उनके कलेजे फाड़ दिए ﴿واخذ الذين ظلموا الصيحة﴾ चीख़ आई।

ऐसी फ़िज़ा बनाएं..

मैं मक़ामियों को ख़ासतौर पर मुख़ातिब कर रहा हूँ कि यहाँ

आने वालों को तौबा करवाएं। यहाँ ऐसी फ़िज़ा बनाएं कि जो भी यहाँ आए वह यहाँ से अल्लाह का फ़रमांबरदार बन के जाए। अल्लाह के महबूब का गुलाम बनकर जाए। यह वह आपकी कमाई है जिसका नफ़ा आप ज़िंदगी में भी उठाएंगे, मौत तक भी उठाएंगे, मौत के बाद तक भी उठाएंगे, हमेशा-हमेशा के लिए।

लेकिन यह तरीक़ा सीखना पड़ेगा। यह तबलीग़ में जाना, यह फिरना जमाअतों में, यह वह मुबारक मेहनत सीखने का तरीक़ा है। हर दुकान हिदायत का ज़रिया बने। हर होटल हिदायत का ज़रिया बने। इसको पहले सीख लो और फिर उसको अपने होटलों में चालू करो। हर होटल में नमाज़ को ज़िंदा करो, अज़ानें दो, सफ़ें बिछाओ, तालीम के हलक़े क़ायम करो। ऐसी फ़िज़ा बने की हर आने वाला शर्म व हया से झुकता चला जाए और अल्लाह का फ़रमांबरदार बनता चला जाए।

यह फ़िज़ा आप पैदा फ़रमा दें तो शायद यह ग़फ़लत का माहौल ख़त्म हो और कुछ आख़िरत की याद आए। कभी दुनिया में भी मज़े लूटे किसी ने? कोई चार दिन रहकर चला गया, कोई ज़्यादा मालदार है तो दस दिन रहकर चला गया, कोई दो महीने रहकर चला गया और फिर मरी ख़ाली हो जाता है। और फिर अगर कोई यहाँ बहार मनाने गर्मियों में आ जाए और सर्दियों में सबी चला जाए। वह अमरीका चला जाए और सर्दियों में जुनूबी अफ़्रीक़ा चला जाए तो भी एक दिन ऐसा आएगा कि मौत उसको मोड़ मरोड़कर क़ब्र में फेंक देगी।

तो भाईयो! यह जवानी भी कोई जवानी है जिसे बुढ़ापा खा जाए। वह ज़िंदगी भी कोई ज़िंदगी है जिसे मौत खा जाए। वह ख़ुशियाँ भी कोई ख़ुशियाँ है जिन्हें ग़म लूट लें। वह राहत भी कोई

राहत है जिसे दुख निगल जाएं। यह तो सब धोका है, फ़रेबे नज़र है। अक़्ल का फ़रेब है, ख़ुद का फ़रेब है।

अल्लाह तआला सौदा करते हैं

अल्लाह तआला हमसे डील कर रहे हैं कि यहाँ तुम मेरी मान लो, आख़िरत में मैं तुम्हारी मान लूंगा। ﴿ان سلمتنی فیما ارید کفیتک فیما ترید﴾ यहाँ बारिश बरसाता है, ओले बरसाता है, बादलों को लाता है।

जन्नत का बादल

जन्नत में एक बादल उठेगा। वह बादल बारिश नहीं बरसाएगा। ओले नहीं बरसाएगा। सबसे पहले तो उन पर मुश्क व अंबर की बारिश करेगा। सारे जन्नतियों पर। वे महकते चले जाएंगे। यह बादल तो न हमारी सुनता है न हमारी समझता है। हम कहते हैं आकर बरस तो सुनता नहीं। हम कहते हैं बस कर तो वह पानी के दहाने खोल देता है।

जन्नत का बादल आते ही पहले आपको सलाम अरज़ करेगा। फिर आप पर मुश्क व अंबर की बारिश करेगा। फिर आप से सवाल करेगा। आप फ़रमाएं, आप क्या चाहते हैं? आप जो फ़रमाएंगे मैं वह आप पर बरसाऊँगा। जनत में अरबों अरब इंसान, हर जन्नती से अलग-अलग ख़्वाहिश पूछी जाएगी। तो बादल के दहाने खुलेंगे। हर एक पर वह बरसेगा जो वह चाहता है। आप पर वह बरसेगा जो आप चाहते हैं।

एक कहेगा उम्दा लिबास चाहिए तो लिबास की बारिश होगी। एक कहेगा घोड़ा चाहिए तो घोड़ा उतरेगा उसके लिए। एक कहेगा मर्सीडीज़ चाहिए तो मर्सीडीज़ उतरेगी उसके लिए। एक कहेगा हूरें

चाहिएं तो हूरें बरसेंगी उसके लिए। एक कहेगा ग़िलमान चाहिएं तो ग़िलमान की बारिश होगी उस पर। एक कहेगा महल चाहिए तो महल्लात की बारिश होगी उसके लिए।

ग़र्ज़ यह कि जिसकी जो ख़्वाहिश होगी उसके लिए वही चीज़ बादल बरसाएगा।

अहमद बिन अबिल हवारी फ़रमाया करते थे अगर अल्लाह तआला ने मुझे मौक़ा दिया तो मैं उससे कहूंगा कि मुझ पर हूरों की बारिश कर दे।

यहाँ तो रख़्ते सफ़र बांधना पड़ा है। यहाँ तो कूच है मौत आकर आदमी को ले जाती है। लेकिन वह घर, वह घर है जिसे अल्लाह तआला फ़रमाता है। दारुल मुक़ामा जहाँ आप हमेशा क़याम करेंगे।

जहाँ कूच नहीं क़रार है। जहाँ से आपको कोई निकालेगा नहीं। और यह जाने का मंज़र एक घर अल्लाह तआला आपके लिए बनाने लगा है। इस मरी को कितना ख़ूबसूरत आप बनाएंगे। आज से बीस बरस पहले यह मरी ज़्यादा ख़ूबसूरत थी। जब हम स्कूल पढ़ा करते थे तो हम यहाँ आए थे। यह मैट्रोपोल होटल की जगह उस वक़्त फ़्लैट होते थे तो हम एक महीना यहाँ रहकर गए थे। उस वक़्त मरी ख़ूबसूरत थी। इसकी फ़ितरत बाक़ी थी। इसकी सादगी बाक़ी थी। इसमें इतनी भीड़ नहीं थी। इतने ज़्यादा घर नहीं थे। हम पहाड़ की चोटी पर घंटों बैठकर क़ुदरती नज़ारे देखते थे। ऐसे आवारगी नहीं थी। ऐसी बेहयाई नहीं थी लेकिन अब तो नज़र उठाने की हिम्मत नहीं रहीं। अब तो कान लगाने की हिम्मत नहीं रही। इस तरह लोग फिर रहे हैं मरी में जैसे इन पर न कोई अल्लाह है, न उन पर कोई मौत है, न उनके लिए

जन्नत व जहन्नम है। न उनके लिए कोई क़ब्र का गढ़ा है तो आज का मरी तो बहुत भयानक हो चुका है।

मैं 1967 ई० का मरी अपनी नज़र में घुमाता हूँ तो वह मंज़र ही बिल्कुल जुदा था। तो इसका हुस्न मान्द पड़ रहा है। घट रहा है। फिर देखने की भी एक हद है। 1967 ई० में जब हम मरी आए तो जुलाई में जो बारिशें शुरू हुई घर से निकलना मुश्किल हो गया। फिर मुल्तान चले गए। वही मुल्तान की गर्मी जो हमारा मुक़द्दर है। जून का एक महीना पूरा यहाँ रहे थे। तो हर चीज़ की एक हद है। खाने की एक लज़्ज़त है। उसकी भी एक हद है। सुनने की भी एक लज़्ज़त है, देखने की भी एक लज़्ज़त है, शहवत की भी एक लज़्ज़त है। लिबास की भी एक लज़्ज़त है। ज़िंदगी की एक हद है। तो हर चीज़ की हद हो गई।

जब अल्लाह तआला जन्नत का दरवाज़ा खोलेगा तो पहले यह हद ख़त्म कर देगा। जन्नत में जाने का अंदाज़ भी अजीब है। जन्नत के दरवाज़े पर सारे जन्नती खड़े हैं और दरवाज़ों को ताले लगे हुए हैं। अंदर जाने का रास्ता ही कोई नहीं। हाँ वहाँ दो चश्मे उभर रहे हैं।

उस पर ख़ूबसूरत घंटियाँ लगी हुई हैं। सोने के कंगन हैं, याक़ूत की तख़्तियाँ हैं। जब उन को छेड़ेंगे तो उनसे मौसिक़ी का एक सुर निकलेगा।

दुनिया की मौसिक़ी हराम है। जहाँ मौसिक़ी फैलती है वहाँ ज़िना भी फैलता है। यह दोनों एक दूसरे के लिए ज़रूरी हैं। जब ज़िना होगा तो बेहयाई आएगी और जब बेहयाई आएगी तो अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा उन पर ज़रूर बरसेगा सिवाए इसके कि वे लोग तौबा कर लें।

अल्लाह तआला वह ज़ात है कि जिसके सामने पूरी काएनात की हैसियत एक ज़र्रे के बराबर भी नहीं है। वह जो चाहे करके दिखा दे।

﴿وكم اهلكنا من القرون من بعد نوح وكفى بربك بذنوب عباده خبيرا بصيرا﴾

हमने कितनी ही कौमों को नूह अलैहिस्सलाम के बाद हलाक किया।

﴿الم تر كيف فعل ربك بعاد﴾ तुम देखते नहीं हो कि कौमे आद के साथ हमने क्या किया। कैसे देखी, हम तो मौजूद न थे। हज़ारों साल पहले की बात है। दिल की आँखें खोल लो। माज़ी के झरोंखों के दरीचे भी खुल जाएंगे। मुस्तक़्बिल भी देख सकोगे। चाहे तलवार का दौर हो या तोप का दौर हो या एटम बम का दौर हो। अल्लाह पाक की क़ुदरत मुसल्लम है।

तो भाईयो! मैं यह अरज़ कर रहा था कि दुनिया में अल्लाह तआला ने हर चीज़ को हराम क़रार दिया है जो दुनिया में बेहयाई फैलाने का ज़रिया बनती है। हर वह अमल हराम है जिससे इंसानी अख़्लाक़ तबाह होते हों। हर वह अमल और शय हराम है जिससे इंसानी मआशरे का तवाज़ुन ख़राब होता हो, जिससे इंसानियत की चादर तार-तार होती हो, जिससे हया की धज्जियाँ उड़ती हों, मत करो, मत करो। नहीं हम करेंगे। अच्छा ﴿سنفرغ لكم ايها الثقلن﴾ फिर मैं निमट लूंगा तुम से।

तो जन्नत की मंज़र ही कुछ और हैं। गंदे जज़्बे तो अल्लाह तआला पहले ही ख़त्म कर देगा। ﴿ونزعنا ما في صدورهم من غل﴾ हर गंदा जज़्बा निकाल देगा।

ख़्वाहिशात पहले से करोड़ों गुना ज़्यादा कर देगा लेकिन ग़लत

जज़्बे सारे ख़त्म। अकेला हज़ार साल खाता रहेगा, पेट फटेगा नहीं, आंत फटेगी नहीं, मुँह थकेगा नहीं, दांत टूटेगा नहीं। ज़ायका मिटेगा नहीं। अदना दर्जे के जन्नती का बहत्तर लड़कियों से निकाह किया जाएगा। तो जन्नत के दरवाज़े पर घंटी से एक सुर निकलेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली से फ़रमाया, काश! तू वह सुर सुन ले जो जन्नत की उस घंटी से निकलेगा।

जन्नत के चश्मे

तो वहाँ दो चश्मे हैं। कहा नहीं जाएगा कि इनसे पानी पियो बल्कि इल्हाम होगा कि इनसे पानी पियो। सब पानी पी रहे हैं। फिर इल्हाम होगा एक और चश्मे से वुज़ू करो। यह पानी जो पानी जो पिया यह सीने का खोट ख़त्म कर देगा। पेट का पाख़ाना ख़त्म कर देगा। अब कभी भी न पेशाब आएगा न पाख़ाना आएगा। हमेशा-हमेश के लिए ख़त्म। न थूक आएगा न बलग़म आएगी। न राल टपकेगी, न गंदा पसीना आएगा। हर गंदगी ख़त्म, हर ग़लाज़त ख़त्म।

जिस चश्मे से वुज़ू करेगा वह उनको ऐसा मैक-अप करेगा कि करोड़ों साल बाद भी उसी तरह शानदार जवानी वाले हसीन व जमील, हुस्न व जमाल वाले रहेंगे।

ईमान वाली औरतों को अल्लाह तआला इससे पहले ही किसी किनारे के दरवाज़े से जन्नत में पहुँचा देगा। उनको जन्नत का दाख़िला ख़ुसूसी दिया जाएगा ताकि जन्नत में अपने मर्दों का इस्तिक़बाल करें। जन्नत के ख़ूबसूरत हुस्न व जमाल के साथ और जन्नत की ख़ूबसूरती के साथ।

तो वुज़ू भी कर लिया। अब आपस में सलाह मशवरा करेंगे कि जन्नत में दाख़िल कैसे हों? फिर कहेंगे जो बाबा आदम से बात करें।

﴿یابانا استفتح لنا الباب﴾ अब्बाजी दरवाज़ा खुलवाएं। वह कहेंगे मेरे बच्चो! मैं जन्नत से शैतान के बहकावे में आकर निकाला गया था। मैं कैसे सिफ़ारिश करूं। अब कोई और ही सिफ़ारिश करेगा।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे। वह भी इंकार कर देंगे। फिर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे। वह भी इंकार कर देंगे। फिर हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे। फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे। फिर हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे। फिर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे। फिर हज़रत याह्या अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे। फिर हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे। फिर ईसा अलैहिस्सलाम के पास जाएंगे। वह फ़रमाएंगे मेरे बस में नहीं। हाँ मैं पता बता सकता हूँ जहाँ से दरवाज़ा खुल जाएगा। तो लोग कहेंगे कि बताओ। फिर वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पता बताएंगे। फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास सारी मख़्लूक़ आएगी। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! या नबिअल्लाह या ख़ातिमुल अंबिया दरवाज़ा खुलवाइए। वह फ़रमाएंगे हाँ मैं दरवाज़ा खुलवाता हूँ। वह सज्दे में सर रखकर हम्दे बारी तआला करेंगे। फिर हुक्म होगा ﴿سل تعط واشفع﴾ ऐ मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो मांगोगे वह मिलेगा, जो सिफ़ारिश फ़रमाएंगे, वह क़बूल की जाएगी। मांगो क्या मांगना है?

मक़ामे महमूद के तक़ाज़े

फ़रमाएंगे या अल्लाह दरवाज़ा खोल। हुक्म होगा कि तेरे बग़ैर इफ़्तिताह नहीं करूंगा। तो एक सवारी आएगी जन्नत की। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने यों जहाज़ की तरह लैंड करेगी। आप उस पर सवार होंगे। वह पहले उड़ती हुई आई थी और वह चलेगी। उसकी रस्सी ज़मीन पर गिरेगी। हर नज़र उठेगी कि कौन नसीबों वाला ऐसा होगा जो यह रस्सी थामेगा। तो हुक्म होगा कि बिलाल को बुलाया जाए। तो वह बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी की लगा पकड़ कर साथ चलेंगे।

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं सबसे पहले जन्नत का दरवाज़ा खटखटाऊँगा। अंदर से वह फ़रिश्ता रिज़्वान कहेगा, कौन है? जवाब मिलेगा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

रिज़्वान कहेगा, या रसूलुल्लाह! आप के इंतिज़ार में हम तो बैठे बैठे थक रहे हैं कि आप तशरीफ़ लाएं और हम दरवाज़ा खोलें क्योंकि आपके रब का फ़रमान था कि जब तक मेरा हबीब न आए दरवाज़ा न खोलना और मैं कभी किसी के लिए नहीं उठा। आपके लिए उठ रहा हूँ। पहली और आख़िरी दफ़ा।

वह दरवाज़ा खोलेगा। जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। जहन्नम के सात दरवाज़े हैं। ﴿لها سبعة ابواب لكل باب منهم جزء مقسوم﴾।

जहन्नम के तब्क़े

जहन्नम, हु-त-मा, लज़ा, सईर, सक़र, जहीम, हाविया। यह सबसे नीचे हाविया है। इसमें मुनाफ़िक़ीन होंगे। अब्दुल्लाह बिन

अबि और उसके साथी। उससे ऊपर जहीम। इसमें मुश्रिक अबू जहल और उसके साथी। उससे ऊपर सक़र। यह हिन्दू और सिख मज़हब वग़ैरह। उससे ऊपर सईर। इसमें मजूसी आतिशप्रस्त वग़ैरह। उससे ऊपर लज़ा है। यहूदी उसमें होंगे। उससे ऊपर हु-त-मा। ये ईसाई होंगे।

यह छः दोज़ख़ हैं जिसमें जाने वाला कभी नहीं निकल सकता और उनके जिस्मों को अल्लाह तआला बढ़ाएगा कि उनकी छाती ही छाती कोई हज़ार किलोमीटर लंबी होगी। उनका एक दांत दस मील लंबा चौड़ा होगा। उनकी खाल कोई ब्यानवें फ़िट मोटाई में होगी। और उनकी गर्दन में इतना फ़ासला होगा कि उस पर आग की पूरी नहरें गुज़र सकेंगी। और फिर अल्लाह उनके लिए आग के ताबूत तैयार करेगा। उनके ऊपर भी आग उनके नीचे भी आग। उनको इसमें फेंक कर उनकी रग-रग में आगे के कील ठोंकेगा। फिर बाक़ी जगहों में आग के अंगारे भरेगा। फिर उनको बंद करेगा। फिर उनको उठाकर जहन्नम की वादियों में धकेल देगा। इस जहन्नम का गिरा हुआ कभी नहीं निकल सकता और यह वह आग है जो हमेशा भड़कती रहेगी। ﴿كلما خبت زدنهم سعيرا﴾ जब वह ठंडी होने लगती है तो अल्लाह तआला फिर उसको भड़का देता है। ﴿فذوقوا فلن نزيد كم الا عذابا﴾ उस अज़ाब का मज़ा चखो। यह अज़ाब कभी नहीं घट सकता। एक बूंद ठंडा पानी नहीं मिल सकता। एक तर निवाला नहीं मिल सकता। एक पल के लिए नींद नहीं आ सकती। आग का बिस्तर, आग की चादर, आग के कमरे, आग की छतें, आग की दीवारें। ﴿نارا احاط بهم سرادقها﴾ आग के कमरे, ﴿لهم من جهنم مهاد﴾ आग के बिस्तर, ﴿ومن فوقهم غواش﴾ अंगारों की चादरें। ﴿لهم من فوقهم ظلل من النار ومن تحتهم ظلل﴾ उनके ऊपर भी आग, नीचे भी आग। ﴿سرابيلهم من

﴿قطران﴾ तारकोल की शलवारें ﴿قطعت لهم ثياب من نار﴾ आग के ताने बाने के कुर्ते। ये तो हमेशा के लिए बर्बाद हो गए।

उससे ऊपर वाला हिस्सा है जहन्नम। अहले ईमान के लिए। कौन से लोग जो गुनाहे कबीरा करते-करते मर गए और तौबा न की। तौबा पर तो कुफ़्र माफ़ हो जाता है। तौबा पर तो शिर्क माफ़ हो जाता है, तौबा पर तो नबुव्वत के झूठे दावे माफ़ हो जाते हैं। सबसे पहले जहन्नमी मुसलमान हाबील का क़ातिल क़ाबील सबसे आख़िरी जहन्नमी इस उम्मत का, उसका नाम भी झनिया। उसका क़बीला भी झनिया। अरब में से होगा। इन दोनों के दर्मियान तमाम वह जो बग़ैर तौबा मरे।

आपका क्या ख़्याल है नमाज़ के छोड़ देने से कुछ न होगा। झूठ बोलने से कुछ न होगा। कोई औरत बेपर्दा जिस्म की नुमाइश करे तो कुछ न होगा। एक नौजवान शराब में मस्त फिरा, कुछ न होगा। एक जवान सारा दिन मीरासियों के गाने सुने कुछ न होगा। कुछ हो रहा है। कुछ होने वाला है। देखने वाला न ग़ाफ़िल है न जाहिल है न बेबस और कमज़ोर है और न उसके फ़ैसलों को कोई बदल सकता है।

यह सबसे हलका अज़ाब है। इस दोज़ख़ में अगर एक लोटा पानी सात समुन्दरों में डाल दिया जाए तो सारे समुन्दर उबलने लग जाएं। तो आप उन नौजवानों पर रहम खाएं जो यहाँ बेहयाई करने आते हैं। ग़फ़लत में हैं लेकिन भाईयो! कमरे भी किराए पर दो और उनसे तौबा भी करवाओ कि अगर ये इसी हाल में चले गए तो हमेशा के लिए बर्बाद हो गए।

हाँ जिब्रील अलैहिस्सलाम आए। या रसूलुल्लाह! जहन्नम के सात हिस्से हैं जो तफ़्सील मैंने बताई। जब आख़िरी हिस्से पर

आए तो ख़ामोश हो गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा भाई! ख़ामोश क्यों हो गए? तो इसमें कौन लोग होंगे? कहा या रसूलुल्लाह! आपके उम्मती।

तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़श खाकर गिर गए और जब होश आया तो आँसुओं का एक सैलाब रवाँ था। तीन दिन गुज़र गए न कुछ खाया न पिया। बस रो रहे हैं, रो रहे हैं और किसी से बात नहीं फ़रमा रहे। आख़िर सब्र न हुआ। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और फ़रमाया जब कलिमा गो की तरफ़ जहन्नम की आग लपकेगी, जब आग उनकी तरफ़ बढ़ेगी तो ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ेंगे तो हट जाएगी।

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, "इस कलिमे की हया करते तो आज यह न होता।"

लाहौर, कराची, पेशावर में, पंजाब, सिंध, ब्लूचिस्तान सरहद में, हिन्द में, ईरान में, तूरान में, अफ़ग़ानिस्तान में, तुर्किस्तान में अगर इस कलिमे की लाज रखते तो आज यह आग तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकती। जब आग उन लोगों को पकड़ लेगी तो अल्लाह तआला कहेंगे सज्दे की जगह को छोड़ दे और जब दोज़ख़ की हथखड़ियाँ लाएंगे, बेड़ियाँ लाएंगे तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, "इनको हथखड़ियाँ न लगाओ, इन हाथों ने ख़ैरात की हुई है। इनके गले में तौक़ न डालो, इन्होंने बड़े ग़ुलाम आज़ाद किए हैं। इनके पाँव में बेड़ियाँ न डालो, इन्होंने बड़े तवाफ़ किए हुए हैं। आग को इनके दिल से हटा दो, इसमें मेरा ईमान है।

सब से हलका अज़ाब है और फिर भी कहेंगे कि हाय हम बर्बाद हो गए। हम बर्बाद हो गए। यह सबसे हलकें हैं। जब उनकी सज़ा पूरी होगी और उनके निकलने का वक़्त आएगा तो

अल्लाह तआला हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को भेजेगा। ज़रा खुद दोज़ख़ तो देखकर आओ। जब जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे तो ग़मगीन हो जाएंगे। जिब्रील अलैहिस्सलाम को मुसलमान देखेंगे तो कहेंगे कि यह कौन ख़ूबसूरत है? दोज़ख़ के फ़रिश्तों से पूछेंगे।

वे जवाब देंगे यह वह फ़रिश्ता है जो तुम्हारे नबी अलैहिस्सलाम के पास जाया करता था। तो सारी उम्मत के मर्द व औरत जिब्रील अलैहिस्सलाम के पास रश कर देंगे। ऐ जिब्रील! अल्लाह के वास्ते हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हमारा पैग़ाम पहुँचा दे। हम बड़े दुखी हैं। हमें आग ने बर्बाद कर दिया। हमें सांपों ने तबाह कर दिया। हमारी सिफ़ारिश कर दे। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हमारा सलाम पहुँचा दो।

उनका रोना अल्लाहु अकबर। उनका रोना जिब्रील अलैहिस्सलाम को भी रुला देगा तो जिब्रील जब ग़मगीन यहाँ से लौटेंगे तो अल्लाह तआला पूछेंगे, क्या देखा?

अरज़ करेंगे, बारी तआला बड़ा ही बुरा हाल देखा। तो इस ग़म में वह इस बात को ही भूल जाएंगे जो पैग़ाम मिला था तो अल्लाह तआला पूछेंगे, "तुम्हें उन्होंने कुछ कहा था?"

वह कहेंगे, "ओहो! मैं तो भूल गया। उन्होंने कहा था कि हमारे महबूब को हमारा सलाम देना और हमारा पैग़ाम देना कि हम बर्बाद हो गए।"

तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, "जाओ उनका पैग़ाम दे दो।" तो जिब्रील जन्नतुल फ़िरदौस के आला मक़ाम पर जाकर पैग़ाम देंगे कि आपके उम्मती तड़प गए हैं। वे आपकी ख़िदमत में

सिफ़ारिश की दरख़्वास्त करते हैं। तो उस वक़्त अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे में गिरेंगे (क्योंकि सज़ा ख़त्म होने वाली है)। फिर सज्दे में रोएंगे, या अल्लाह! मेरी उम्मत, या अल्लाह! मेरी उम्मत। तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, जाओ जिसके दिल में एक जौ के बराबर भी ईमान है उसको निकाल लाओ।

तो अल्लाह के नबी उनको निकालकर आबे हयात में डालते जाएंगे। अलबत्ता उनके माथे पर एक काला दाग़ बाक़ी रह जाएगा। जो यह अलामत होगी कि यह दोज़ख़ की सज़ा भुगत कर जन्नत में आया है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाएंगे, "या अल्लाह मेरी उम्मत! या अल्लाह मेरी उम्मत। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे अच्छा जाओ जिसके दिल में एक राई के बराबर भी ईमान है उस को भी निकालकर ले आओ। तो फिर बेशुमार लोगों को निकालेंगे। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे में गिर जाएंगे।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, अच्छा जाओ जिसके दिन में राई के दाने के कुछ हिस्से के बराबर भी ईमान है उसको भी निकाल लाओ। उनको भी निकाल कर जन्नत में डालेंगे। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे में।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, बस अब तेरी बारी ख़त्म। अब मेरी बारी है। फिर अल्लाह तआला तीन लप भरकर जन्नत में डालेंगे। फिर भी एक अटका रह जाएगा। जहीना जिसका नाम अभी मैंने आपको बताया है। यह उसके बाद जन्नत में डाला जाएगा।

आबे हयात से नहा-नहा कर जन्नत में चले जाएंगे। दाग़ होगा

फिर अरज़ करेंगे बारी तआला यह बुरे वक़्तों का निशान। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे चलो तुम्हारा यह दाग़ भी मिटा देते हैं। जहन्नम से निकलकर जन्नत में जाने का मंज़र देखकर कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन कहेंगे ﴿ربما يود الذين كفروا لو كانوا مسلمين.﴾ हाय काश हम भी मुसलमान होते।

हम से बड़ा गिरा हुआ कौन होगा

इसलिए मेरे भाईयो! बुरे से बुरे मुसलमान को भी हक़ीर नज़रों से न देखो। उसके पीछे अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बतें हैं। एक न एक दिन यह जन्नत में जाएगा और बड़े से बड़े काफ़िर को भी इज़्ज़त की नज़र से न देखो वरना आप अल्लाह की नज़रों से गिर जाएंगे। अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मन को इज़्ज़त हम दें। फिर हमसे बड़ा गिरा हुआ और कौन होगा।

कभी किसी बाप ने बाप के क़ातिल से भी मुहब्बत की है। कभी किसी ने बेटे के क़ातिल से भी मुहब्बत की है। कभी किसी ने बेटे के क़ातिल से भी मुहब्बत की है? जो हमारे दुश्मन हमारे दीन के दुश्मन। हमारे नबी के दुश्मन। हम इन्हें इज़्ज़त क्यों दें?

हाँ उनकी हमदर्दी ज़रूर हो कि या अल्लाह! इनको ईमान दे दे ताकि दोज़ख़ी न बनें हमेशा के लिए। फिर अल्लाह तआला और काफ़िरों की बातचीत होगी। वे कहेंगे, या रब! वे तो निकल गए। कोई सूरत हमारे निकलने की भी। कहा जाएगा ईमान है? फिर कहेंगे दोज़ख़ के फ़रिश्तों से कह दें कि थोड़ा सा अज़ाब हमारा भी हलका कर दें। जवाब मिलेगा ﴿اولم تكن تاتيكم رسلكم بالبينات قالو بلى﴾ काई आया था बताने वाला। कहा हाँ आए तो थे। फिर भुगतो। फिर कहेंगे अच्छा अगर अज़ाब कम नहीं होता तो फिर क़िस्सा ख़त्म करो। हमें मौत दे दो। ﴿ليقض علينا ربك﴾ जवाब

मिलेगा ﴿انكم ماكثون﴾ मौत भी नहीं आ सकती। हमेशा-हमेशा रहना है।

जहन्नमियों की पुकार

फिर बराहेरास्त अल्लाह को पुकारेंगे, ﴿یارب یارب یارب﴾ या रब्बि! या रब्बि! या रब्बि। हज़ारों बरस पुकारेंगे फिर जाकर जवाब मिलेगा क्या कहते हो? अरज़ करेंगे :

غلبت علينا شقوتنا وكنا قوما ضالين٥ ربنا اخرجنا منها فان عدنا فانا ظلمون٥

या अल्लाह माफ़ कर दे। ग़लती कर बैठे, आइन्दा नहीं करेंगे। जवाब मिलेगा :

﴿قال اخسئوا فيها ولا تكلمون﴾

कुत्ते को धुतकारना हो तो अरबी में अक्सर कहा जाता है।

फिर अल्लाह तआला दोज़ख़ तो ताला लगवा देगा। अब न कोई अंदर जाएगा न कोई बाहर आएगा।

जन्नत के दरवाज़े पर खड़े लोगों ने वुज़ू कर लिया। पाक हो गए। यह वुज़ू नमाज़ के लिए नहीं। यह मैक-अप है। ऐसा मैक-अप कि हज़ारों सालों के बाद भी नहीं उतरेगा। अब अल्लाह के नबी दरवाज़े खुलवाएंगे। दाख़िल होंगे। आपने फ़रमाया मेरी उम्मत के ग़रीब लोग पहले मेरे साथ अंदर दाख़िल होंगे। आपने फ़रमाया मैं एक आदमी को जानता हूँ और उसके बाप को जानता हूँ जब वह जन्नत के दरवाज़े पर आएगा तो हर दरवाज़ा बेक़रार होकर कहेगा आप इधर तशरीफ़ लाएं।

आठों दरवाज़े इसी तरह पुकारेंगे। हर दरवाज़े की तमन्ना होगी कि आने वाला इधर से गुज़रे। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु

अन्हु खड़े हुए, कहने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह कौन है? फ़रमाया, अबूबक्र सिद्दीक़।

फिर आपने फ़रमाया, मैंने एक महल देखा याक़ूत और ज़मर्रुद का। मैंने पूछा किसका है? बताया गया कि एक क़ुरैशी का है। मैं समझा मेरा है। मैं अंदर जाने लगा तो बताया गया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह आपके गुलाम उमर बिन ख़त्ताब का है।

फिर आपने फ़रमाया, ज़न्नत में हर नबी का एक रफ़ीक़ है। ऐ उस्मान! तू मेरा जन्नत में रफ़ीक़ है। फिर आपने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़कर फ़रमाया, तुझे ख़ुशख़बरी हो जन्नत में तेरा घर मेरे घर के सामने है।

फिर आपने फ़रमाया, जन्नत में हर नबी का एक हव्वारी होगा और मेरे दो हव्वारी हैं, तल्हा व ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा। इस शान से यह उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी और जैसे ही जन्नत में दाख़िल होंगे पहला गार्ड आफ़ आनर पेश किया जाएगा। फ़रिश्तों की तरफ़ से अस्सलामु अलैकुम लातादाद फ़रिश्ते। सारे नबी और उम्मतों की भी बारी नहीं आई। सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपके इर्द-गिर्द ग़रीब, मिस्कीन, फ़कीर। अमीर लोग उनके पीछे होंगे।

यह ज़मीन मिट्टी की नहीं सोने की है। इस पर मिट्टी ख़ाक नहीं बल्कि मुश्क है। इसका गुबार ज़मीन के ज़र्रे नहीं, इसका गुबार मुश्क व अंबर है। इसकी घास तिनकों की नहीं, इसकी घास ज़ाफ़रान है। इसकी सड़कें सोने चाँदी ज़मुर्रद और याक़ूत की हैं।

तो पहला सलाम फ़रिश्तों का अस्सलामुल अलैकुम यानी तुम पर सलामती हो, मुबारक हो पास हो गए। पाक हो गए गुनाहों से

भी, बीमारी से भी, मौत से भी, ग़म से भी, ﴿فادخلوها خلدين﴾। अब आइए तशरीफ़ लाइए। कितनी देर के लिए दो महीने का सीज़न है या चार छः माह का। ख़ालिदीना यह सीज़न ऐसा है कि जब तक अल्लाह है तब तेरा सीज़न है। न अल्लाह की ज़ात को फ़ना न तेरी ज़ात को फ़ना। अब मज़े कर, अब तुझे अल्लाह मज़े करवाएगा। यह तो था फ़रिश्तों का सलाम। अब आगे अहले जन्नत का जवाब।

शुक्राने नेमत

الحمد لله الذى صدقنا وعده واورثنا الارض نتبوا من الجنة

حيث نشاء فنعم اجر العملين.

शुक्र है मौला तेरा तूने अपना वायदा सच्चा किया। जन्नत का वारिस बना दिया। जहाँ चाहें चले जाएं। बेशक नेक अमल की यही जज़ा होती है।

وَتَرَى الْمَلَآئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ.

फ़रिश्ते अर्श का तवाफ़ करेंगे। अल्लाह की तस्बीह पढ़ेंगे और हक़ का फ़ैसला हो जाएगा। नाफ़रमान दोज़ख़ में, फ़रमांबरदार जन्नत में और हर तरफ़ अल्लाह तआला की तारीफ़ का नग़मा गूंजेगा।

अब आगे सवारियाँ आयीं। उन पर सवार गए। जन्नत के रास्तों पर अपनी-अपनी राहों पर चलते हुए। आगे जन्नत की हूरें भी इस्तिक़बाल करेंगी और उनकी ईमान वाली औरतें (बीवियाँ) भी इस्तिक़बाल करेंगी।

पहले एक मक़ाम पर एक महल में उनको ठहराया जाएगा। जहाँ उनकी हूरें उनका इस्तिक़बाल करेंगी। उसके बाद दूसरा

आला मक़ाम आएगा। वहाँ भी हूरें इस्तिक़बाल करेंगी। फिर उसके बाद आगे एक तीसरे मक़ाम पर उनको पहुँचाया जाएगा जहाँ उनकी ईमान वाली बीवियाँ उनका इस्तिक़बाल करेंगी और उस वक़्त अल्लाह तआला उनको ऐसा हुस्न दे चुका होगा। जन्नत की लड़की गारे मिट्टी की नहीं बनी। मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान काफ़ूर से बनी है। उसमें आबे हयात डाला गया है। अल्लाह के नूर में से उसके चेहरे पर नूर डाला गया है। उसका हुस्न ऐसा है कि अगर सूरज को अपनी उंगली दिखा दे तो सूरज नज़र न आए। अगर वह समुन्दर में थूक दे तो समुन्दर के पानी मीठे हो जाएं, वह अगर मुर्दे से बात करे तो मुर्दे ज़िंदा हो जाएं, वह अगर दुपट्टा हवा में लहरा दे तो काएनात खुशबूदार हो जाए। जब वह एक क़दम उठकार अपने ख़ाविन्द की तरफ़ चलकर आती है तो एक लाख किस्म के नाज़ व अंदाज़ अपने ख़ाविन्द को दिखाती है। जब वह मुस्कराती है तो उसके दांतों की चमक से ऐसा नूर निकलता है कि सारी जन्नत चमक जाती है। वे पूछते हैं यह नूर कैसा है? बताया जाता है एक जन्नत की लड़की मुस्कराई है। उसके दांतों के नूर ने जन्नत को चमका दिया है। उस लड़की पर सत्तर जोड़े, एक वक़्त में सत्तर लिबास, हर जोड़े का रंग अलग, हर जोड़े का डिज़ाइन अलग और तीन मील के दायरे में उसका लहंगा गर्दिश कर रहा होगा। यह लिबास धागे या फ़ाइबर का नहीं जिसका वज़न होता है। यह नूर से बना हुआ लिबास होगा। उस नूर का कोई वज़न नहीं होता। अब देखें ईमान वाली हर औरत जन्नत की उस लड़की से सत्तर गुना ज़्यादा ख़ूबसूरत हो जाएगी।

पाकदामन, पर्दादार, हया वाली, पाकदामनी वाली, अपने आपको छिपाने वाली, अपने आपको ज़ेब व ज़ीनत करके बाहर निकलने से बचाने वाली। आज अल्लाह तआला के हाँ इसका

मैक-अप होगा। आज अल्लाह तआला के हाँ उसको सजाया जाएगा। दुनिया का हुस्न तो ढल जाता है। ढले हुस्न को कौन ब्यूटी पार्लर में ज़िंदा करे? झुर्रियों के ताने बाने को कौन दूर करे? और बाहर मुल्कों में प्लास्टिक सर्जरी करके खाल को खींच देते हैं लेकिन सारे जिस्म की खाल कौन खींचेगा।

मेरे भाईयो! एक हुस्न अब अल्लाह जल्लाशानुहू अता फ़रमाने वाला है। वह अपने नूर की एक तजल्ली डालेगा। जन्नत की हूर से सत्तर हज़ार गुना ज़्यादा ख़ूबसूरत हो जाएगी।

यहाँ इस दुनिया का कोई नज़ारा मुसलसल देखा जा सकता है। दुनिया के अजाएबात के आठ अजाएबात में से एक नयागर फ़ाल है। नयागर आबशारा, कई दफ़ा कनाडा जाना हुआ जमाअत के साथ। पहली दफ़ा गए तो यह आबशार शौक़ से देखी। दूसरी दफ़ा गए तो भी शौक़ से देखी। तीसरी मर्तबा कहा गया, चलें? मैंने कहा दफ़ा करो। इसका क्या देखना, पानी ही तो है और उसमें क्या है देखने के लिए? अजूबा तीसरी मर्तबा कशिश नहीं दिखा सका। और जन्नती जन्नत में यों तकिए पर टेक लगाकर बैठेगा। अल्लाह तआला उसके सामने एक नज़ारा खोलेगा। उसकी नज़र और वह नज़ारा सत्तर साल तक मुसलसल देखेगा। दिल नहीं भरेगा और जन्नत का एक दिन हज़ार साल के बराबर होगा। बैठा हुआ देख रहा है। मगन है, गुम है। आख़िर अल्लाह पाक खुद फरमाएंगे ओए मेरे बंदे को कुछ और भी तो दिखाओ।

जन्नत की हूरें

तो अल्लाह तआला जन्नत की एक और हूर भेजेगा। वह उसके कंधे पर हाथ मारेगी। उसकी तरफ़ मुड़कर देखेगा तो उसका हुस्न ऐसा होगा कि उसको अपना चेहरा उसके चहरे में से

नज़र आएगा और जब पूरा उसकी तरफ़ मुड़कर देखेगा तो वह कहेगी ﴿اما لك فينا من رغبة﴾ आपको मेरी कोई ख़्वाहिश नहीं? वह कहेगा ﴿بلى﴾ क्यों नहीं। मगर तू बता तो सही कि तू कौन है? वह कहेगी जब ﴿انا من اللواتي قال الله تعالى ولدينا مزيد﴾ मैं ऐ अल्लाह के दोस्त! उन नेमतों में से हूँ जिनके बारे में तेरा रब तुझे क़ुरआन पाक में दुनिया में ही बता चुका था कि मेरे पास आ जाओ। मैं देता ही चला जाऊँगा, देता ही चला जाऊँगा। मैं मज़ीद में से हूँ और यह मज़ीद मिलता ही जाएगा। मिलता ही जाएगा। मिलता ही जाएगा। यह ख़्वाहिश का जहाँन है। चालीस साल तक देखता ही रहेगा। देखने की लज़्ज़त पूरी नहीं होगी। मियाँ-बीवी बैठे हुए हैं, तख़्त बिछे हुए हैं, जाम रखे हुए हैं, ग़िलमान तैयार हैं और सुराहियाँ उबल रही हैं। फल पक-पक कर गिरने के मुन्तज़िर हैं। और परिन्दे उड़ उड़ कर घेरा डाल रहे हैं। हमें खाइए, हमें खाइए। एक परिन्दा कहेगा मेरी बात सुनें। जन्नती कहेगा सुनाओ। वह कहेगा, मैंने जन्नतुल-फ़िरदौस का घास खाया है। सलसबील चश्मे का पानी पिया है। आप मुझे खाकर देखें, आप मुझे ट्राई करें जैसे परसों हम आ रहे थे कि बीस क़िस्म के लोगों ने हमें पूछा सस्ते कमरे हैं। साफ़ सुथरे कमरे हैं। इधर आइए तशरीफ़ लाइए। मैंने कहा भाई हम तो मुफ़्ते हैं। मस्जिद में सोने जा रहे हैं। हम अल्लाह के घर के मेहमान हैं। हमें क्या ज़रूरत है कमरों की। तो अब वह परिन्दा अपने फ़ज़ाइल सुना रहा है।

मैंने जन्नतुल-फ़िरदौस के चश्मे सलसबील का पानी पिया है। घास खाया है। एक पर फैलाऊँगा तो पका हुआ निकलेगा। दूसरा पर फैलाऊँगा तो भुना हुआ निकलेगा। जन्नती कहेगा अच्छा तो मुझे खिला। तो वह अपने पर खोलेगा। उसके सत्तर हज़ार पर होंगे। इस तरह हर पर से खाने की एक जुदा जुदा क़िस्म तैयार

मिलेगी और फिर वह ख़ुद अभी ज़िंदा है। यह खाने तो परों से निकले हैं। कहता है कि अगर मुझे खाएं तो मैं भी हाज़िर हूँ। क्या खाएं क्या न खाएं। अब यह सवाल नहीं क्या छोड़ें क्या न छोड़ें। अब यह सवाल नहीं। सब कुछ खा जाएं तो न पेशाब, न पाख़ाना, न मेदा ख़राब, न पेट में दर्द। ख़ुश्बूदार डकार आया और सब कुछ हज़म।

कैसे नसीबों वाले होंगे?

यह खाने की महफ़िल ﴿رحیق، معین، سلسبیل زنجبیل، کافور، تسنیم﴾ रहीक़, मईन, सलसबील, ज़ंजबील, काफ़ूर, तसनीम। ये जन्नत की वह शराबें हैं जिनका एक क़तरा अगर उंगली पर लगाकर बैठकर आसमान से नीचे किया जाए तो सारी काएनात ख़ुश्बूदार हो जाए। क्या नसीबों वाले होंगे जो भर-भर के पी रहे हैं। दुनिया की गंदी शराब छोड़ी। आज अल्लाह तआला उसके बदले जन्नत की पाक शराब पिला रहा है। ऐसे नसीबों वालों को देखो जिनको क़ुरआन कह रहा है :

﴿يُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا.﴾

कुछ ऐसे होंगे जिनको फ़रिश्ते भर-भर के पिला रहे होंगे। कुछ ऐसे होंगे जिनको ग़िलमान भर-भर कर पिला रहे होंगे। और कुछ ऐसे होंगे जिनको ख़ादिमान भर-भर कर पिला रहे होंगे और जन्नती उनसे ले लेकर पी रहे होंगे।

एक दर्जा और उनसे ऊपर नज़र दौड़ाओ। जहाँ का आलम निराला, महफ़िल निराली, मज्लिस निराली ﴿وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا﴾ उनको अल्लाह तआला ख़ुद आके भर-भर के पिला रहा है। क्या नसीबों वाली औरतें हैं जो अल्लाह के हाथ से लेकर पी

रही हैं। क्या नसीबों वाले मर्द हैं जो अल्लाह के हाथ से लेकर पी रहे हैं।

नाम का ताजिर

क्या ही घाटे का सौदा कर गया मुसलमान कि दुनिया की गंदी शराब की ख़ातिर जन्नत की शराब को बेच गया। दुनिया की आवारा गंदी औरतों के लिए जन्नत की पाक औरतों और हूरों को भूल गया। दुनिया के चंद लम्हों के माल के लिए वह जन्नत की नेमतों को भूल गया। वह परिन्दे भूल गया, वह महफ़िल भूल गया, महल भूल गया, सवारियाँ भूल गया, नेमतें भूल गया, हमेशा की ज़िंदगी को बर्बाद करके चला गया।

अच्छा बताओ कभी किसी ने दुनिया बनाई? बनी है तो कब तक बनी? मौत आई सब कुछ छिन गया।

अब जन्नती नशे में बैठे हुए हैं, दरवाज़े पर दस्तक होती है। वह फ़रिश्ता गेट कीपर से कहेगा, मैंने अंदर जाना है। फ़रिश्ते भी आपको पूछकर अंदर आएं। आक़ा से इजाज़त लो, अल्लाह तआला ने मुझे भेजा है। अल्लाह तआला का भेजा हुआ भी इजाज़त लेकर आ रहा है। ऐसी शान अल्लाह तआला अता करेंगे। वह एक नौकर नहीं होगा बल्कि नौकरों की क़तार होगी। वह साथ वाले नौकर से कहेगा अल्लाह तआला का भेजा हुआ फ़रिश्ता मिलने आया है। वह अगले से कहेगा, वह अगले से...।

आक़ा को इत्तिला मिली। वह कहेगा इजाज़त है आने दो। उसके हाथ में थाल होगा, रेश्मी रूमाल से ढका हुआ होगा। पहले दोनों को सलाम पेश करेगा और फिर थाल पेश करेगा कि यह आपकी ख़िदमत में अल्लाह तआला ने हदिया भेजा है। वह जब कपड़ा उठाकर देखेंगे तो फल रखा हुआ होगा बिल्कुल जन्नत के

फल जैसा। जन्नती कहेगा ﴿هذا الذى رزقنا من قبل﴾ यह तो वही फल है जो मैंने अभी खाया था। फ़रिश्ता कहेगा, ज़रा चख लो, थोड़ा सा यह भी टेस्ट कर लो। जब उसकी एक-एक पांख काटकर मुँह में रखेगा तो मान लो जन्नत में दस करोड़ क़िस्म के फल हैं तो जब वह एक पांख मुँह में रखेंगे तो अल्लाह तआला उनको इस एक निवाले में दस करोड़ क़िस्म के फलों के अलग-अलग ज़ाएक़े महसूस कराएगा। फिर यह कहेगा ﴿وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا﴾ बोल मेरे बंदे यह वही है या कोई और है।

इज़्ज़तों का दौर

फ़रिश्तों के सलाम हो गए। आपस में सलाम करेंगे। ये सारी इज़्ज़तें अपनी इंतिहा को होंगी कि एकदम अल्लाह के अर्श के दरवाज़े खुलेंगे। अल्लाह तआला सामने आ जाएंगे और कहेंगे :

﴿سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ﴾

अपने रब का सलाम भी क़बूल करो।

सुब्हानअल्लाह अल्लाह तआला कहेगा ﴿هَلْ رَضِيتُمْ﴾ खुश तो हो, राज़ी तो हो?

कहेंगे या अल्लाह! कैसे न राज़ी हूँ, तूने वह कुछ दिया जो किसी को दिया ही नहीं।

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, तुम्हें इससे आला चीज़ दूँ? जन्नत से भी आला चीज़ दे दूँ?

वह अरज़ करेंगे इससे आला क्या हो सकता है?

तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, "जाओ मैं तुम से राज़ी हो गया। अब कभी नाराज़ नहीं हूंगा। अब तुम मज़े करो। मैं तुम्हें देख-देख कर खुश हूंगा। अब तुम्हारी सारी पाबन्दियाँ हट गयीं।

कोई सज्दा नहीं, कोई नमाज़ नहीं, कोई रोज़ा नहीं, कोई हज नहीं, कोई ज़कात नहीं, कोई तिलावत नहीं।"

सिर्फ तस्बीह होगी सुब्हानअल्लाह की। वह सांस की तरह खुद चलेगी। तो फिर अल्लाह तआला ने यह घर बनाया है, जहाँ हर ख्वाहिश पूरी होगी। हर लज़्ज़त पूरी होगी। इस दुनिया में फ़रमांबरदार बनकर ज़िंदगी गुज़ार लो। आगे अल्लाह तआला से हर नेमत की चाबी आके ले लें।

तो भाई! हम तो आज़ाद नहीं कि दुनिया को जन्नत समझ बैठें। अल्लाह तआला ने हमें एक ज़िंदगी दी है। एक तरीक़ा दिया है जिसमें कुछ हिस्सा इबादतों का है, कुछ मामलात का है, कुछ अख़्लाक़ का है, कुछ मआशरत का है, कुछ तिजारत का है, कुछ खेतीबाड़ी का है, कुछ हुकूमत का है। हर चीज़ को अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ लेकर चलना यह है जन्नत का रास्ता।

तो मेरे भाईयो! खुद भी हम तौबा करें और आने वाले मजमे से भी तौबा करवाएं। उनको प्यार मुहब्बत से समझाएं।

हक़ारत की नज़र

किसी मुसलमान की हिक़ारत दिल में न आने पाए। किसी मुसमलान की नफ़रत न दिल में आने पाए चाहे खुल्लम खुल्ला गुनाह करता हुआ नज़र आए। फिर भी हमें इजाज़त नहीं कि किसी मुसलमान को हक़ीर जानें। मुमकिन है तौबा करके वह हम से आगे निकल जाए। हम फ़िज़ा ऐसी बनाएं कि यहाँ आने वाला हर कोई तौबा करके जाए। वह अल्लाह तआला के फ़रमांबरदार बन के जाएं। वह अल्लाह तआला की मानने वाला बन के जाएं। और इस घाटे के सौदे से निकलकर असल खरा कामयाबी का

सौदा करके जाएं। जब मौत आए तो अल्लाह तआला भी ख़ुश हो चुके हों, अल्लाह के रसूल भी ख़ुश हो चुके हों। जन्नत भी मुन्तज़िर हो, क़ब्र भी जन्नत का बाग़ बन चुकी हो और मैदाने हश्र की सख़्तियाँ भी हटाई जा चुकी हों और दुनिया व आख़िरत की कामयाबी लेकर हम अल्लाह के दरबार में पहुँच जाएं।

ये सारी चीज़ें अता करने के लिए अल्लाह तआला ने हमें दीन अता फ़रमाया है। इस्लाम अता फ़रमाया है, नमाज़ सिर्फ़ इबादात में से है। अख़्लाक़, मामलात, हया। हमारे नबी ने फ़रमाया ﴿الحياء شعبة من الايمان﴾ हया ईमान का बहुत बड़ा हिस्सा है।

बहुत बड़ा शोबा है। जब हया उठ जाती है तो ईमान भी उठ जाता है। और जब हया और ईमान दोनों उठ जाते हैं तो फिर अल्लाह तआला के अज़ाब की बिजलियाँ चलने और तड़पने लग जाती हैं।

दुनिया का सबसे बड़ा मुजरिम मेरी नज़र में

क़ौमे लूत दुनिया की बेहया तरीन क़ौम आई। दुनिया का सब से बड़ा काफ़िर दुनिया का सबसे बड़ा मुजरिम मेरी नज़र में फ़िरऔन था जिसने कहा मैं ख़ुदा हूँ। यह दावा दुनिया में किसी ने नहीं किया अलावा फ़िरऔन के। अल्लाह तआला ने उसको सिर्फ़ पानी में डुबोया, एकअज़ाब दिया। लेकिन लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम बेहया थी। उन पर अल्लाह तआला ने इकठ्ठे पाँच अज़ाब बरसाए। दुनिया में किसी और क़ौम पर इकठ्ठे पाँच अज़ाब नहीं आए।

﴿جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا﴾ नीचे का ऊपर, ऊपर का नीचे ﴿وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ مَّنْضُوْدٍ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ﴾ पत्थरों की बारिश ﴿فَطَمَسْنَا اَعْيُنَهُمْ﴾ अल्लाह तआला ने उनके चेहरे मसख़ कर दिए।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम न उनको नीचे से उठाकर आसमान तक पहुँचाया और फिर ऊपर से नीचे पटख़ कर हमेशा के लिए इबरत का निशान बना दिया और एक गंदे पानी के नीचे दफ़न कर दिया। ऐसा गंदा पानी कि उसको डैडसी कहते हैं बहरे मुर्दार। उसमें कोई चीज़ ज़िंदा नहीं रह सकती। उसमें आदमी डूबता नहीं। पानी इतना गाढ़ा है कि आप उसके बीच में छलांग लगाएं। सीने से नीचे नहीं जा सकते। पाँच मिनट सिर्फ़ पाँच मिनट खड़े रहें तो पूरे जिस्म पर आबले पड़ जाते हैं। आज तक वह झील बता रही है कि यहाँ बेहया क़ौम होती थी और वह तबाह व बर्बाद हुई थी।

अल्लाह के वास्ते होश में आ जाओ

तो मेरे भाईयो! मैं हाथ जोड़ता हूँ, अल्लाह के वास्ते ख़ुद भी होश में आएं और इनको, ये हमारी भाई बहनें हैं, ये हमारे ही बेटे बेटिया हैं। इनको यह पता नहीं, इनको किसी ने बताया ही नहीं, इन्होंने नेकी को देखा ही नहीं, इन्होंने हया की चादर को देखा ही नहीं। इन्होंने जब आँख खोली तो हया की चादर तार-तार थी। बेहयाई का जिन्न बोतल से बाहर निकल चुका था।

उन्हें क्या ख़बर कि हया किसे कहते हैं। पर्दा किसे कहते हैं? इफ़्फ़त किसे कहते हैं? पाकदामनी किसे कहते हैं?

इनसे हम तौबा करवाएं वरना बेहयाई पर यह सारा निज़ाम जल्दी ही टूटेगा। यह टूटने वाला है। मैं कोई नुजूमी नहीं हूँ। मैं कोई पामस्ट नहीं हूँ, लेकिन थोड़ी सी अल्लाह के इल्म से दिलचस्पी है। मुझे किताबुल्लाह से थोड़ा सा इश्क़ है, रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों के साथ में कुछ वक़्त गुज़ारता हूँ। तारीख़ में कुछ वक़्त गुज़ारता हूँ।

इसके लिए टूटना मुक़द्दर हो चुका

मैं अल्लाह की किताब को सामने रखकर अल्लाह के हबीब के इर्शादात को सामने रखकर और गुज़िश्ता तारीख़ को सामने रखकर मैं यह बात मेम्बरे रसूल पर दावे से कह रहा हूँ कि यह बेहया ज़िंदगी की मोहलत ख़त्म हो चुकी है। इसके लिए टूटना मुक़द्दर हो चुका है।

आप मेरे घर में छिलके फेंकते रहें। मैं कब तक बर्दाश्त करूंगा। एक दिन तो मैं भी आ जाऊँगा जोश में। मुझे अपना घर साफ़ रखना है।

यह मरी की पाक वादी कब तक गुनाह का बोझ बर्दाश्त करेगी। कब तक बेहयाई देखेगी? कब तक नाफ़रमानी का बोझ बर्दाश्त करेगी? अगर इसके बस में होता तो यह पहाड़ फट चुके होते और मरी ग़र्क़ हो चुका होता। न्युयार्क धंस चुका होता। बर्तानिया धंस चुका होता। यह तो अल्लाह का करम है जो मुहलत देता है, ढील देता है लेकिन मेरे भाईयो! जब तक कुफ़्र, नाफ़रमानी, बेहयाई, चारदीवारी के अंदर होते रहें तो अल्लाह तआला ढील देता है।

बेहयाई पर पकड़

और जब चारदीवारी से बाहर निकल आए, चादर फाड़ दी जाए और नाफ़रमानियाँ सड़कों पर होने लगें, बाज़ारों में होने लगें, गलियों में होने लगें, खुल्लम खुल्ला होने लगें तो वह अल्लाह ग़य्यूर है, हया वाला है। उसे अपनी धरती को इन गंदे कीड़ों से पाक व साफ़ करना है। ये गंदे अंडे ज़रूर फेंके जाएंगे। यह गटर ज़रूर साफ़ किए जाएंगे। आपका गटर बंद होता है तो आप

फ़ौरन आदमी बुलाते हैं। गटर साफ़ करो। आज सारी ज़मीन को यूरोप की गंदी तहज़ीब ने और यूरोप की बेहया तहज़ीब ने गटर बना दिया है। इसे अल्लाह साफ़ करके रहेगा।

उसको एटमी ताक़तें रोक नहीं सकतीं। तो हम भी इनके पीछे चल रहे हैं। हमारा नौजवान उन्हीं की तरह ज़िंदगी गुज़ारना चाहता है। वैसी ही मईश्त आ गई। वैसा ही रहन-सहन, वैसे ही तरीक़े, वैसे ही सलीक़े।

भाईयो! अल्लाह के वास्ते अपने बच्चों से तौबा करवरएं कि यह राह ख़तरनाक है। यह तो अन्क़रीब मिटने वाले हैं। हमारी आँख न देखेगी तो इसका मतलब यह नहीं कि उन पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसेगा। हम तो अल्लाह से मांग रहे हैं कि ऐ अल्लाह मौत न आए जब तक यह अंजाम न देख लें। इस बातिल के गंदे नापाक वजूद को फटना है। कोई इधर रोने वाले पैदा हो जाएं तो फ़ैसला जल्दी करवा लें तो अल्लाह इन सारी वादियों को धोएगा। शहरों को धोएगा। मैदानों को धोएगा। कब तक ज़मीन रोएगी अल्लाह के सामने। क्या अल्लाह ज़मीन की फ़रियाद नहीं सुनता?

जब ज़मीन पर ज़िना होता है तो ज़मीन चीख़ती है। कहती है ऐ अल्लाह मुझे इजाज़त दे मैं फट जाऊँ। जब ज़मीन पर नाच होता है, गाना बजाना होता है, शराबें पी जाती हैं तो ज़मीन, वह धरती अल्लाह से फ़रियाद करती है, ऐ अल्लाह! इजाज़त दे दे मैं नहीं सह सकती। मेरा सीना जल गया, मेरा कलेजा चाक हो गया, अल्लाह मुझे इजाज़त दे दे मैं फट जाऊँ, मैं निगल जाऊँ।

तौबा का इंतिज़ार

यह तो वह मालिकुल-मुल्क है जो कहता है चुप करो, चुप

करो। मुझे अपने बंदे की तौबा का इंतिज़ार है। कभी तो तौबा करेगा। जब तौबा करेगा मुझे मेहरबान पाएगा। ग़फ़ूरुर्रहीम पाएगा। तो ख़ुद तौबा करना, इन सबसे तौबा करवाना यह मुसलमान के ज़िम्मे है।

हम इस गंदे माहौल में बहने के लिए नहीं आए। हम इस धारे का रुख़ बदलने के लिए दुनिया में आए हैं। जो मेहनत कर जाएगा अल्लाह तआला उसको चमका जाएगा। इसके लिए मेरे भाईयो! इरादे करो, चार महीने लिखाओ, चिल्ले लिखाओ। अपने सीज़न को डबल कर दो कि हम ने आने वाले ग्राहकों से हलाल कमाई भी करनी है और उनसे तौबा करवाकर उनको जन्नत का रास्ता भी दिखाना है। इसके लिए बोलते जाओ जल्दी से फिर दुआ करा लेते हैं। नमाज़ का वक़्त क़रीब है।

अल्लाह तआला की तरफ़ से ढील

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम अम्मा बअद

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इंसान मुहताज है

मेरे भाईयो और दोस्तो! इंसान कमज़ोर है। ﴿خلق الانسان ضعيفا﴾ यह सहारों के बग़ैर चल नहीं सकता। जिस्म के निज़ाम के लिए ग़िज़ा का, पानी का और हवा का मुहताज है। ज़रूरियाते ज़िंदगी को पूरा करने के लिए सारी काएनात का मुहताज है।

एक-एक चीज़ से इसकी ज़रूरतें जुड़ी हुई हैं। दुनिया में इतना कोई भी मुहताज नहीं जितना इंसान है।

जानवर, पतंगे, परिन्दे इनकी क्या ज़रूरतें हैं कुछ भी नहीं। बहुत थोड़ी-थोड़ी देर में पूरी हो जाती हैं। लेकिन इंसान क़दम-क़दम पर मुहताज है। फिर जितना मालदार बनता जाता है उतना मुहताज होता जाता है। जितना ओहदों में तरक़्क़ी करता है, उतना मुहताज होता जाता है।

एक आदमी अपनी ज़रूरियात पूरी करने के लिए हज़ारों आदमियों का मुहताज बनता है चाहे वह झाड़ू देने वाला है या पाकिस्तान का सदर और बादशाह है या वह बाज़ार में रेढ़ी लगाता है, मुहताज है।

﴿يٰاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ﴾ ऐ इंसानो! तुम फ़क़ीर हो और मुहताज हो। ﴿وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا﴾ इंसान कमज़ोर है।

अब मुश्किल यह है कि जिनसे हम उम्मीदें रखते हैं वे भी हमारी तरह मुहताज हैं। हमारी तरह उनमें भी तमा है, हमार तरह उनमें लालच है। हमारी तरह उनकी भी ज़रूरियात हैं और इंसान में अपनी ज़रूरियात को पूरा करने का जज़्बा भी है। लिहाज़ा जब मुहताज ने मुहताज पर सहारा किया, कमज़ोर ने कमज़ोर पर एतिमाद किया तो वह बुनियाद टूट गई, इमारत टूट गई, खंडर बन गई।

पहला सबक़

तो सब से पहला सबक़ जो अल्लाह तआला मुसलमान को सिखाता है वह ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह। यह पहला सबक़ अल्लाह देता है और सारे नबियों की पहली दावत भी यही है कि तुम इस काएनात अल्लाह तआला जैसा नहीं पा सकते। ﴿لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ﴾ उस जैसा कोई नहीं है।

लिहाज़ा तुम अल्लाह तआला को अपने साथ ले लो और उसके सामने हर ज़रूरत रखने की आदत बना लो और उसके मुहताज बन जाओ तो वह तुम्हारी दुनिया और आख़िरत की सारी ज़रूरतों को पूरा कर देगा।

अल्लाह के साथ अपना ताल्लुक़ बनाओ

लेकिन इसके लिए शर्त यह है कि उसके साथ ताल्लुक़ क़ायम किया जाए और ताल्लुक़ क़ायम कैसे होगा?

यह जितना तबलीग़ का काम हो रहा है, यह अल्लाह से ताल्लुक़ ठीक करने की मेहनत हो रही है। अगर किसी से ताल्लुक़

बनाना हो तो कितना कुछ करना पड़ता है। सिर्फ़ थानेदार या एस०पी० है या कमिश्नर। ये सारे छोटे-छोटे अफ़सर हैं। अगर उनसे ताल्लुक़ बनाना हो तो किस तरह आदमी गर्दिश करता है। रास्ते तलाश करता है, खुशामद करता है, झूठ सच उनके सामने बोलता है। तब जाकर उनसे ताल्लुक़ क़ायम होता है तो अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करना जो ज़मीन और आसमान का बादशाह है। इन सब से आसान है, जितने आप इंसान से ताल्लुक़ क़ायम करने में थकते हैं। उससे कम अल्लाह तआला से ताल्लुक़ क़ायम करने में थका जाए तो मसअला हल हो जाएगा। अल्लाह तआला से ताल्लुक़ क़ायम करने की ज़रूरत है।

दुनिया वालों से तो यह मामला है कि नहीं हमें रोटी की ज़रूरत है। तो जिस पर हमारी उम्मीद है वह भी रोटी खाता है और हमें ख़ौफ़ से अमन की ज़रूरत है और जिस पर हमारी उम्मीद है, वह ख़ौफ़ज़दा है। हमारी तमा है कि दौलत बढ़ जाए और जिन लोगों से हम दौलत निकालना चाहते हैं उनमें भी तमा व लालच है कि हमारी दौलत और माल बढ़ जाए और हम अपने घर को रौशन करना चाहते हैं और जिन जिन रास्तों से हम कोशिशें कर रहे हैं जिनकी जेबों से रुपए निकाल रहे हैं। वे खुद भी चाहते हैं कि हमारे भी महल खड़े हो जाएं।

लेकिन अगर हम अल्लाह तआला से ताल्लुक़ क़ायम कर लें तो अल्लाह तआला किसी एक भी चीज़ का मुहताज नहीं। न वह खाए, न वह पिए, न वह सोए, न वह थके, न वह परेशान हो और न उसके ख़ज़ानों में कोई कमी आए।

﴿لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ، وَلَا يَؤُدُهُ حِفْظُهُمَا، وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوبٍ، مَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا﴾

काएनात के इस निज़ाम को चला के नहीं थका कि यह कहने लगे कि मैं थक गया हूँ। अब कल दरबार लगेगा। हम अपनी-अपनी ज़रूरतें उसके पस लेकर आएंगे। क्योंकि न सोता है, न घबराता है, न ग़ाफ़िल है, न ऊँघता है, न जाहिल है, न आजिज़ है बल्कि वह ग़ालिब है, ﴿غير المغلوب﴾ उस पर कोई ग़ालिब नहीं। सब पर उसकी ताक़त छाई हुई है। उससे ताक़तवर कोई नहीं जो उस पर छाए। वह जाबिर है मजबूर नहीं, वह ख़ालिक़ है मख़्लूक़ नहीं, ﴿مالك غير المملوك﴾ वह मालिक है ममलूक नहीं, ﴿ناصر غير المنصور﴾ वह मदद करता है, मदद का मुहताज नहीं। ﴿حافظ غير محفوظ﴾ वह हिफ़ाज़त करता है अपनी हिफ़ाज़त कराता नहीं। ﴿رب غير مربوب﴾ वह पालता है और परवरिश करता है और ख़ुद अपनी परवरिश में किसी को मुहताज नहीं। ﴿شاهد غير مشهود﴾ वह सब को देखता है उसको कोई नहीं देख सकता। सब चीज़ें उसकी नज़रों में हैं। ﴿لا تدركه الابصار﴾ उसको आँखें नहीं देख सकतीं, ﴿وهو يدرك الابصار﴾ वह हम सब को देखता है। कितनी दूर है ﴿لا تراه العيون﴾ आँख नहीं देख सकती। आँख तो सितारे भी नहीं देख सकती। अल्लाह को कैसे देख सकेगी। ﴿ولا تخالطوه الظنون﴾ दुनिया में इंसानी ख़्याल सबसे तेज़ रफ़्तार सवारी है।

अल्लाह तआला तक ख़्याल भी नहीं पहुँच सकता। सारी दुनिया के इंसानों के ख़्यालों को इकठ्ठा किया जाए। तो वह उनसे भी ऊपर है। ख़्याल की परवाज़, तख़य्युल की परवाज़ उड़ते उड़ते थक जाए और अल्लाह को न पहुँच सके।

﴿ولا يصفوه الواصفون﴾ सारा जहाँ मिलकर उसकी तारीफ़ करना चाहे। तो सब मिलकर उसकी तारीफ़ न कर सकें। इतनी दूर और इतना ऊँचा है लेकिन उसकी अजीब सिफ़्त है। ﴿بَلْ هُوَ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ﴾

﴿حبل الوريد﴾ यहाँ दो मुतज़ाद चीज़ें आपस में मिल गयीं। दो नामुमकिन मुमकिन हो गए हैं। इतना दूर है, इतना दूर है कि ख़्यालात भी उस तक न पहुँच सके और इतना ज़्यादा क़रीब है कि शह रग से भी ज़्यादा क़रीब हो जाता है।

फिर उसकी फ़ौक़ियत और ऊपर होना ﴿بفوقيته ما اكثر ملكه كما اعلى مكانه﴾ क्या अज़ीमुश्शान उसका मुल्क है, आला उसका मकान है ﴿ما اعظم شانه﴾ क्या अज़ीम उसकी शान है। एक हदीस में आता है :

الملك لله، والكبرياء لله، والجبروت لله، والهيبة لله، والقدرة لله، والنور لله.

या अल्लाह सब कुछ तेरा है, मुल्क तेरा है, किबरियाई तेरी, जबरूत तेरी, क़ुदरत तेरी, जमाल व जलाल तेरा।

उस ज़ात को हम साथ ले लें तो काम बन गया। फिर वह ऐसा बादशाह है जो किसी का मुहताज नहीं। दुनिया के बड़े-बड़े बादशाह सब मुहताज हैं। एसेम्बलियाँ पास करें, सैंट पास करें, तब कहीं जाकर उनका हुक्म चले। फिर उनके ख़िलाफ़ अदम एतिमाद का वोट हो जाए तो उनकी कर्सी उलट जाए। लेकिन अल्लाह तआला ऐसा बादशाह नहीं है। ﴿احد﴾ अकेला, ﴿صمد﴾ बेनियाज़, ﴿الملك لا شريك له﴾ उसकी बादशाही में कोई शरीक नहीं। उसका कोई मिस्ल नहीं। ﴿العالى﴾ ऊँचा, ﴿لا ثانيه﴾ उसके बराबर कोई नहीं, ﴿الغنى لا ظهير له﴾ वह ग़नी उसका मददगार कोई नहीं, ﴿لا ينفعه شى﴾ उसको किसी चीज़ से नफ़ा नहीं पहुँचता, ﴿لا يضره شى﴾ उसे कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती, ﴿لا يغلبه شى﴾ उस पर कोई चीज़ ग़ालिब नहीं, ﴿لا يؤده شىء﴾ उसको कोई चीज़ थकाती नहीं, ﴿لا يستعين بشئى﴾ वह किसी चीज़ से मदद नहीं लेता, ﴿لا يحتاج الى شى﴾ वह किसी चीज़ का मुहताज नहीं, ﴿لا

﴿ليس قبله شي ليس بعده﴾ उससे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं, ﴿يعزب عنه شي﴾ उससे पहले कुछ नहीं, उसके बाद कुछ नहीं, ﴿ليس فوقه شي﴾ कोई चीज़ छिपी हुई नहीं, ﴿ليس دونه شي﴾ उससे कोई चीज़ छिपी हुई नहीं।

لطيف بكل شي خبير شي بكل شي، عليم بكل شي، خالق بكل شي، مالك كل شي، القادرعلى شي، غالب على كل شي، قدير على كل شي، ليس كمثه شي.

अगर ऐसा बादशाह हमारी पुश्त पर आ जाए तो हम से ताक़तवर कौन होगा? हम से बड़ा इज़्ज़त वाला कौन होगा? आज सारी दुनिया में ग़लत ज़हन बन गया है कि पैसा होगा तो काम चलेगा और पैसा नहीं होगा तो काम नहीं चलेगा।

अल्लाह तआला की तरफ़ से ढील

मेरे भाईयो! हम पूरी दुनिया को यह बताएं कि अल्लाह साथ होगा तो काम चलेंगे और अल्लाह साथ नहीं होगा तो काम नहीं चलेंगे और बाज़ कहते हैं कि बहुत सारे काम चलते हैं लेकिन अल्लाह तआला साथ नहीं तो यह उनको ढील है और यह उनको मुहलत है, कब तक? मौत तक। अल्लाह तआला की किताब का ऐलान है :

ذرهم ياكلوا ويتمتعوا ويلههم الامل فسوف تعلمون. فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا يومهم الذى يوعدون. ذرنى ومن خلقت وحيدا. ذرنى والمكذبين اولى النعمة. انهم يكيدون كيداً. فمهل الكفرين امهلهم رويدا.

इन सारी आयतों का मतलब यह बनता है कि हमने अपने तमाम नाफ़रमानों को ढील दी हुई हैं। वे झूठ बोलकर कमा रहे हैं और उनको रिज़्क़ आता है। वे लोगों के पैसे मार रहे हैं, दबा रहे

हैं और हक़ मा रहे हैं, ख़्यानत कर रहे हैं, ग़लत को सही की शक्ल में बेच रहे हैं और उनको रिज़्क़ आ रहा है।

तो यह अल्लाह तआला की किताब कहती है कि हमने इनको मुहलत दी हुई है। और इन सबको बताइए ﴿واملی لهم ان کیدی متین﴾ जब तुम्हारा रब पकड़ेगा तो उसकी पकड़ बड़ी सख़्त है।

وکذالک اخذ ربک اذا اخذ القری وهی ظالمة ان اخذه الیم شدید.

यही तेरे रब की पकड़ का हाल है कि जब वह बस्तियों को पकड़ता है तो उसकी पकड़ बड़ी सख़्त है।

﴿ان فی ذالک لاية﴾ और इसमें बड़ी निशानियाँ हैं। ﴿لمن خاف عذاب الآخرة﴾ जिसको आख़िरत के अज़ाब का डर है वह इससे सबक़ हासिल करेगा और जिसको आख़िरत का ख़ौफ़ नहीं वह बहक जाएगा। भटक जाएगा। आख़िरत को जानने वालों के लिए इतनी ही निशानियाँ इसमें काफ़ी हैं। ये सब अल्लाह तआला की ढील में हैं। ये नहीं कि वह अल्लाह तआला से ग़ालिब होकर कमा रहे हैं।

मेरे भाईयो! हम अल्लाह तआला को साथ ले लें। वह खाता नहीं कि उसको तमा हो कि मैं पहले ख़ुद खाऊँ फिर तुम्हें खिलाऊँगा। माँ को भी सख़्त भूख लगी होती है तो पहले ख़ुद खा लेती है, फिर बेटों को खिलाती है। तो अल्लाह तआला न घर का मुहताज है कि पहले अपने लिए घर बनाए फिर आपको घर दे। न आराम का मुहताज है कि पहले ख़ुद आराम करे फिर आपको अराम कराए। हर चीज़, हर एब से पाक ज़ात है।

अल्लाह भी और कोई भी हो

फिर अपने फ़ैसलों में उसको कोई चैलेंज नहीं कर सकता। वह

हकीम ज़ात है, अगर वह ज़ात अकेली हमें मिल गई तो हमें सब कुछ मिल गया।

﴿الیس اللہ بکاف عبدہ﴾ मेरे बंदे के लिए काफ़ी नहीं हूँ मैं?

अल्लाह भी और कोई भी। इसी को तो शिर्क कहते हैं। अल्लाह भी है, यह भी है और वह भी है। यहीं से शिर्क के दरवाज़े खुलते हैं।

अबूतालिब के गिर्द क़ुरैश का घेरा है और वह इसरार कर रहे हैं कि अपने भतीजे को रोक लो वरना हम उसे क़त्ल कर देंगे। उन्होंने बुलाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और चारपाई के पाँव की तरफ़ बैठ गए। कहा भतीजे तेरी क़ौम आई है। आप सिर्फ़ इनको कुछ कहना छोड़ दें और ये तुझे कुछ नहीं कहेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

﴿یا عم کلمۃ واحدۃ تاتونھا﴾ ऐ चचा! मैं एक बात इनसे करता हूँ। एक बोल मेरा मान लें तो अरब सारा इनके ताबे होगा और सारा जहान उनकी हुकूमत के नीचे आ जाएगा। तो ये सब उछल पड़े। अबूजहल ने अपनी रान पर हाथ मारकर कहा ﴿وابیک عشرۃ﴾ तेरे बाप की क़सम दस दफ़ा भी तेरे बोल मानने को तैयार हूँ। वह बोल क्या है जिससे पूरा अरब हमारे ताबे हो जाए? वह क्या है जिसकी वजह से अरब और अजम हमारा ग़ुलाम हो जाए?

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ला इलाहा इल्लल्लाह। बस यह मान लो। उसने कहा :

﴿اجعل الالھۃ الٰھا واحدا ان ھذا لشئ عجاب﴾ तू कई ख़ुदाओं को एक बनाता है। यह हमारी समझ में नहीं आता।

यही आज हमारी समझ में नहीं आ रहा है। मेरे भाईयो! अल्लाह तआला को साथ ले लें तो बहर व बर, फ़र्श व अर्श, लौह

व कलम, कुर्सी, ज़मीन, मकान, हवा, फ़िज़ा सब अल्लाह की है और अल्लाह के ताबे है। यह आलम कुछ न था। अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम के साथ उसको बनाया और उसको शक्ल दी हर चीज़ को बनाया और उसका अंदाज़ा लगाया ﴿فقدره تقديرا، يصوركم فى الارحام كيف يشاء﴾ फिर आसमान को उठाया ﴿رفع السموات بغير عمد﴾ आसमान के लिए कोई सतून नहीं लगाया, ﴿والارض بعد ذالك دحها﴾ फिर ज़मीन को बिछाया, ﴿اخرج منها ماء ها﴾ फिर उसमें से पानी निकाला, ﴿ومرعها﴾ फिर चारा निकाला, ﴿والجبال ارسها﴾ फिर पहाड़ लगाए, ﴿يغشى الليل النهار﴾ रात और दिन का निज़ाम बनाया। फिर कभी दिन को लंबा किया और कभी रात को लंबा किया। फिर सूरज को दहकाया ﴿وجعلنا سراجا وهاجا﴾ फिर अल्लाह तआला ने चाँद की चाँदनी को ठंडा करके ज़मीन में बिखेर दिया। ﴿القمر نور، الم تروا كيف خلق الله سبع سموات طباقا﴾ तुम ग़ौर क्यों नहीं करते हो, तुम्हारे रब ने ज़मीन और आसमान को कैसे बनाया? ﴿وجعل القمر فيهن نورا، وخلقنا كم ازواجا﴾ तुमको जोड़ा-जोड़ा बनाया।

﴿وجعلنا نومكم سباتا﴾ हमें सारी चीज़ों से काट देती है नींद। रात को अल्लाह ने सब मख़्लूक़ात के लिए आराम की चीज़ बनाई। अगर हम खुद अपने-अपने सोने का वक़्त तय कर देते तो कितनी परेशानी होती। एक आदमी आराम करता तो दूसरा काम करता जिससे शोर होता, दूसरे का आराम ख़राब हो जाता। इसी तरह तमाम हैवानात और परिन्दे रात को आराम करते हैं। अगर परिन्दे और हैवानात भी आराम न करते तब भी इंसान के लिए आराम करना मुश्किल होता। रात को तमाम जानवर और इंसान तमाम मसरूफ़ियात से कट जाते हैं। अल्लाह तआला ने सब को एक

सोने का वक़्त दे दिया। फिर सब को एक जागने का वक़्त दे दिया।

﴿وجعلنا النهار معاشا﴾ आधा दिन अल्लाह ने हमको दिया है और आधा अपने लिए बनाया। ज़ुहर और फ़ज्र का लंबा वक़्त है। ज़ोहर के बाद नमाज़ों का वक़्त थोड़ा होना शुरू हो जाता है। फ़ज्र से ज़ुहर तक काम करो। ज़ुहर से असर तक उसको समेट लो। फिर असर मग़रिब, इशा का वक़्त जो ऊपर नीचे आता है, यह इस बात की निशानी है कि यह वक़्त कारोबार का नहीं है। यह वक़्त मेरे लिए है। मुझे बैठकर याद करो। हमारे यहाँ कारोबार ही असर और मग़रिब से शुरू होते हैं। ऐन वक़्त अल्लाह की मुहब्बत का, अल्लाह को याद करने का और वह वक़्त कारोबार का हो गया। उल्टी गंगा बहा दी।

अल्लाह से बना के रखो

अल्लाह तआला क़ुरआन के ज़रिए हमें बता रहे हैं कि यह हवा का निज़ाम, पानी का निज़ाम, पहाड़ों दरियाओं, फूलों और ज़मीन का निज़ाम हमारे लिए हैं। अल्लाह तआला को इन चीज़ों की ज़रूरत ही नहीं। तो अल्लाह ही से बना के रखो। फ़ैसलाबाद के एसपी से, मेयर से, कमिश्नर से बना के रखो और ज़मीन व आसमान के बादशाह से बिगाड़ के रखो तो कैसी हिमाक़त है।

लोग तो बदमाशों से बना के रखते हैं जिनको काम पड़ते हैं कि काम पड़ेगा तो काम आएंगे। तो हम ज़मीन ओर आसमान के बादशाह से बिगाड़ के चलें तो हमारी ज़िंदगी कैसे सुखी होगी। हम कैसे चैन पाएंगे?

तो इसके लिए मेरे भाई! अपने अल्लाह से ताल्लुक़ क़ायम कर लो। अल्लाह को हर काम में साथ ले लो। सब से ज़्यादा आसान

अल्लाह को साथ लेना है। बड़ा आसान बादशाह है, उसकी क़ुदरत इतनी बड़ी है कि उसकी कोई हद नहीं।

अल्लाह को अपने बंदे की तौबा का इंतिज़ार

अपने बंदों से ताल्लुक़ इतना है कि काएनात की हर चीज़ ने इजाज़त मांगी है कि ऐ अल्लाह! नाफ़रमानों को हलाक कर दूँ? तो अल्लाह कहता है कि नहीं छोड़ दो। मैं इनकी तौबा का इंतिज़ार करता हूँ।

पहले करने का काम यह है कि अपने अल्लाह को साथ लेना है तो इसके लिए तौबा कर लें। तबलीग़ कोई जमाअत नहीं। यह एक मेहनत है कि हर मुसलमान अपने अल्लाह से जुड़ जाए और ताल्लुक़ बना ले। मसअले हल करवाना है तो अल्लाह से हल करवा ले। उसको लेते हुए न कोई घबराहट होती है न पीछे देखें की बच गया है कि नहीं। जो रह गया है तो कल आ के ले लेना। अल्लाह के यहाँ यह नहीं। वह कहता है मुझसे लेते रहो। जितने चाहिएं लेते रहो। कितनों को मिलेगा?

لو ان اولکم و آخرکم وانسکم وجنکم وحیکم ومیتکم ورطبکم

ویابسکم وذکرکم وانثی کم وصغیرکم وکبیرکم.

ये सब के सब क्या करें? एक मैदान में खड़े हो जाओ ﴿فاسئلونی﴾ फिर मांगो। या अल्लाह! हर एक अपनी-अपनी ज़बान में मांग लें। पंजाबी पंजाबी में, पठान पश्तू में, फ़ारसीदान फ़ारसी में, सिंध वाले सिंधी में, ब्लूच ब्लूची में। सारे अपनी-अपनी ज़बानों में अल्लाह से मांग लो। सब इकठ्ठे एक ही आवाज़ में मांग लो। तो अल्लाह यह नहीं कहेगा कि अरे भाई क्या कर रहे हो। इतना

शोर, मैं किन-किन की सुनूंगा। बारी-बारी मांगो। जितना जी में आता है मांगो।

﴿فاتيت كل انسان مسئلة﴾ मैं तुम सबका मांगा तुम सब को दे दूँगा फिर ﴿ما نقص ذالك مما عندى الا كما ينقص مخيط اذا ادخل فى البحر﴾ मेरे ख़ज़ाने में इतनी भी कमी नहीं आती जितना सूई को समुन्दर में डालकर बाहर निकाला जाता है। जिस तरह समुन्दर में कमी नहीं आती इसी तरह मेरे रबके ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं आती।

तो मेरे भाईयो! ऐसे अल्लाह मेरे और आपके साथ हो जाएं तो क्या ख़्याल है। हमारे काम बनेंगे या नहीं? और पैसा कमाना कोई आसान होता है। फिर उसको बाक़ी रखना कोई आसान होता है। जवानी में बूढ़े हो जाते हैं।

अलाह से ताल्लुक़ का मतलब

अल्लाह तआला को साथ ले लो फिर तो पाँचों उंगलियाँ घी में और सर कढ़ाही में। अल्लाह से यारी लगा लो, अल्लाह को अपना बना लो, अल्लाह को राज़ी कर लो, अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करो। ताल्लुक़ का क्या मतलब है? कहते हैं मेरा उससे ताल्लुक़ है। ग़म न करो, शोर न मचाओ। मैं जाऊँगा काम बनेगा। अगर उसके दरवाज़े पर जाऊँगा तो हमें नहीं ठुकराएगा। हमें नहीं रद्द करेगा। इसी को ताल्लुक़ कहते हैं। वह मुझे जानते हैं। मैं उनको जानता हूँ। इसी तरह मैं आपको नहीं जानता। आप में से बहुत सारे मुझे जानते हैं। नाम से नहीं जानते शक्ल से तो मुझे पहचान रहे हैं। तारुफ़ तो इसको भी कहते हैं। तारुफ़ और ताल्लुक़ का मतलब यह है कि जब आप उसके दरवाज़े पर आएं तो वह आपका काम ज़रूर करे। अगर वह कर सकता है। आपको लौटा न सके। ऐसे अल्लाह के साथ ताल्लुक़ बना लें और अल्लाह तआला भी यही

फ़रमाता है, "अपने बंदे का हाथ ख़ाली लौटाते हुए मुझे शर्म आती है।"

इसका नाम ताल्लुक़ है। इस ताल्लुक़ को अल्लाह पाक के साथ आप बना लें।

मालिक बिन दीनार रह० का एक वाक़िआ

मालिक बिन दीनार रह० किश्ती में सवार होकर सफ़र कर रहे थे। कपड़े ऐसे ही थे तो एक आदमी का क़ीमती पत्थर चोरी हो गया। वह लाल व जवाहरात का हीरा था। उसने शोर मचाया कि मेरा चोर यह लगता है। उसी किश्ती में ज़ुन्नून मिसरी रह० भी बैठे हुए थे। उन्होंने कहा कि आप सब्र करें मैं इस आदमी से कुछ बात करता हूँ। वह मालिक बिन दीनार रह० के पास आकर कहने लगे कि बेटा तुम से भूल चूक हो गई, तुमने इनका हीरा ले लिया है। उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं तो कोई चोर नहीं, आप मेरी तलाशी ले लें और अपना सामान खोला कि इसमें आप देख लें और यह मेरी जेब है इसमें भी देख लें। मैंने तो कोई चोरी ही नहीं की। लेकिन उन्होंने क्या कहा? कोई जवाब ही नहीं दिया लेकिन ﴿فنظر نظرة فى السماء﴾ आसमान को यों देखा। हाय वे भी लोग हैं।

इंसान की शक्ल में जानवर

एक हदीस में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक वक़्त ऐसा आएगा कि मेरी उम्मत का शौक़ पैसा जमा करना होगा या शहवत पूरी करना होगा। अच्छे-अच्छे खानों का शौक़ होगा। या शहवतों की ख़ातिर औरतों के पीछे भाग रहे होंगे। इसके अलावा उनका कोई शौक़ नहीं रह जाएगा। वे इंसान नहीं होंगे, इंसान की शक्ल में जानवर होंगे।

मालिक बिन दीनार रह० का मक़ाम

मालिक बिन दीनार रह० चंद साल पहले शराब में मस्त रहते थे। फिर अल्लाह ने हिदायत दी। फिर जान लगाई, मेहनत की। फिर यह मक़ाम आया। ﴿نظر نظرة في السماء﴾ आसमान की तरफ़ यों देखा तो चारों तरफ़ से किश्ती को मछलियों ने घेरा डाल दिया और हर मछली के मुँह में एक हीरा था। तो उन्होंने हर मछली के मुँह से हीरे का पत्थर निकाला और ज़ुन्नून मिसरी रह० को दिखाया कि आप ये ले लें, मैंने चोरी तो नहीं की। जिसका गुम हुआ है उसको दे दें। और वह ख़ुद किश्ती से उतरे, पानी के ऊपर चलते हुए पार हुए।

हदीस पाक में आता है कि जिस आदमी के दिल में राई के दाने के बराबर तवक्कुल और भरोसा होगा तो वह पानी पर चले तो पानी उसको रास्ता देगा। उसको डुबो नहीं सकेगा।

﴿ولو كان لا بن آدم حبة الشعير من اليقين ان يمشى على الماء﴾

मेरे भाईयो अल्लाह से अपना ताल्लुक़ बना लो।

अल्लाह से ताल्लुक़ का नतीजा

उम्मे सअद का बेटा फ़ौत हो गया। जब उनको पता चला कि बेटा फ़ौत हो गया तो आयीं। मैय्यत को ग़ुस्ल दिया जा चुका था। उस मैय्यत के पाँव की तरफ़ आकर बैठ गयीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी साथ में तशरीफ़ फ़रमा थे। उनसे कुछ नहीं कहा। ख़ामोशी से दुआ करना शुरू की :

﴿امنت بك طوعا وهاجرت اليك رغبة﴾ या अल्लाह! तेरी मुहब्बत में कलिमा पढ़ा, तेरी मुहब्बत में घर छोड़ा और तेरे हबीब के घर आई। और यह मेरा बेटा तुमने ले लिया। ﴿فلا تشمت بى الاعداء﴾

या अल्लाह! आप दुश्मन को क्यों मौक़ा देते हैं कि वे कहेंगे कि बाप दादा का मज़हब छोड़ा तो बेटा गया। या अल्लाह! तू मेरी इज़्ज़त रख। सिर्फ़ इतना कहा था ﴿فلا تشمت بي الاعداء﴾ मेरे दुश्मनों को हंसने का मौक़ा न दें। तो हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम उसके अल्फ़ाज़ ही पूरे न हुए थे कि मैय्यत में हरकत हुई और अपने ऊपर से कफ़न को खोला और उठकर बैठ गया।

यह ताल्लुक़ हम भी अल्लाह तआला से बना सकते हैं। अल्लाह के रसूल सामने हैं। उनसे नहीं कहा कि आप दुआ करें। ख़ुद दुआ की। मुसलमान का मुसलमान के लिए दुआ करना सुन्नत है और दुआ की तलब भी सुन्नत है।

लेकिन हमारे मआशरे में रिवाज पड़ गया है कि करना कुछ नहीं, आप मेरे लिए ख़ुसूसी दुआ कर दें। ख़ुसूसी दुआ तो यों हुआ कि मौलाना मेरे पेट में दर्द है। आप मेरे लिए हाय हाय कर दें। मैं क्यों हाय करूं? पेट में आपके दर्द है, मैं हाय हाय करूं? मेरे लिए ख़ुसूसी दुआ करें। हाँ दुआ ज़रूर करवानी चाहिए एक दूसरे से। ख़ुसूसी दुआ इसे कहते हैं कि आदमी तड़प के कहता है या अल्लाह। ख़ुद अंदर से जब आदमी तड़प के बोलता है या अल्लाह यह ख़ुसूसी दुआ है।

एक सहाबी का वाक़िआ

एक सहाबी अपने घर में आए तो पूछा कुछ है? बीवी ने कहा नहीं, फ़ाक़ा है तो परेशान हो गए। घर में बैठा न जाए, न भूख का हाल देखा जाए। इसलिए बाहर चले गए। बीवी ने सोचा कि मैं अपना फ़ाक़ा कैसे छुपाऊँ? अड़ौस-पड़ौस से कैसे छुपाऊँ कि हमारे घर में कुछ नहीं? उसने तन्नूर में आग जलाई कि अड़ौस

पड़ौस को पता चल जाए कि इसने रोटी पकाने के लिए तन्नूर गर्म किया है। और इधर ख़ाली चक्की चलाना शुरू कर दी कि पड़ौस को पता चल जाए कि आटा पीस रही है। यों अपने फ़ाक़े को छुपाया। इस दौरान अल्लाह तआला से दुआ कर दी या अल्लाह! आप जानते हैं कि हम भूखे हैं ﴿اللهم ارزقنا﴾ आप हमें रिज़्क़ खिला दें।

सिर्फ़ एक जुमला या अल्लाह हमें खिला दें। अभी उसके अल्फ़ाज़ भी ख़त्म नहीं हुए थे कि तन्नूर से ख़ुशबुएं उठने लगीं। इतने में दरवाज़े पर ख़ाविन्द आ गया तो दरवाज़े पर ख़ाविन्द को लेने गई। मियाँ और बीवी ने तन्नूर में झांक के देखा तो तन्नूर में रानें भुनी जा रही हैं और चक्की पर जाकर देखा तो उससे आटा निकल रहा है। सारे बर्तन भर लिए। जब चक्की उठाकर देखा तो कुछ भी नहीं। अब वह आए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह वाक़िआ हुआ। तो आप ने फ़रमाया तू उठाकर न देखता तो क़यामत तक यह चक्की चलती रहती।

मेरे भाईयो! ऐसा ताल्लुक़ अल्लाह तआला से बना लें। फिर सौदे में झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। फिर हमें सूद पर सौदा करना नहीं पड़ेगा। फिर उधार का रेट अलग करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अल्लाह तआला से ताल्लुक़ बना लें। उससे मांगना आ जाए। या अल्लाह! ख़ुदा की क़सम इसमें जो ताक़त है उससे अर्श के दरवाज़े खुल जाते हैं बशर्ते कि सीखा हुआ हो। तबलीग़ का जो काम है यह इसकी मेहनत है कि अल्लाह तआला से ताल्लुक़ बनाया जाए। जब ताल्लुक़ बन जाता है तो यों ही काम हो जाते हैं।

अबू-मुस्लिम ख़ौलानी रह० का वाक़िआ

अबू-मुस्लिम ख़ौलानी रह० कहते हैं कि मैं हज पर जाता हूँ, कौन तैयार है? तो कई हज़ार आदमी तैयार हो गए। तो कहने लगे मेरे साथ वे चलें जो न तोशा लें, न पानी लें, न कोई पैसा लें। फिर सफ़र कैसे होगा न खाना न पानी न तोशा? तो फ़रमाने लगे कि जिसके मेहमान हैं उसी से मांगेगे तो सारे पीछे हट गए। कोई चंद सौ साथ रह गए। उनको लेकर चल दिए। चलते-चलते थक गए, सवारियाँ भी थक गयीं तो कहने लगे अबू मुस्लिम खिलाओ, भूखे हैं। हम भी और सवारियाँ भी तो अबू-मुस्लिम ख़ौलानी रह० ने नमाज़ पढ़ी, नमाज़ के बाद अपने घुटनों के बल यों खड़े हो गए और हाथ उठाए या अल्लाह! इतने लोग किसी बख़ील के दर पर जाएं तो वह भी शर्मा के सख़ी बन जाए तो तू सख़ियों का सख़ी है। हम तेरे घर को जा रहे हैं, तेरे सहारे पर निकले हैं। तेरे मेहमान हैं, तूने बनी इस्राईल को मन व सलवा दिया, हमें भी दे। अभी उनके हाथ नीचे नहीं हुए थे कि उनके ख़ेमों में खाने के दस्तरख़्वान बिछे हुए पड़े थे और उनके जानवरों के लिए चारे की घटियाँ आ चुकी थीं। चलो भाई खा लो। जब खाने के बाद कुछ बच गया तो साथियों ने कहा यह रख लेते हैं तो अबू-मुस्लिम रह० फ़रमाने लगे कि जिसने अभी खिलाया है अगले वक़्त में वह दोबारा गर्म और ताज़ा खाना खिलाएगा। सारा सफ़र इस तरह किया। यह भी मक़ाम आता है।

चलते चलते यही अबू-मुस्लिम ख़ौलानी रह० तीन हज़ार लश्कर लेकर मुल्के शाम पहुँचे तो सामने दरिया था और दरिया पार करना था, पुल कोई नहीं। सवारी पर से उतरकर दो रकअत नमाज़ पढ़ी या अल्लाह! तूने बनी इस्राईल को दरिया में रास्ता दिया था और अब अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

उम्मत को भी रास्ता दे। फिर आवाज़ लगाई कि आओ मेरे साथ जिसका कोई जान और माल ज़ाए हो जाए तो मेरे ज़िम्मे लगा लो। मैं ज़िम्मेदार हूँ, आ जाओ। फिर अपने घोड़े को पानी में डाला। अल्लाह तआला ने पानी को मुसख़्ख़र फरमा दिया। वह पानी भी पहाड़ी था। पहाड़ी पानी पत्थरों को भी उड़ा के ले जाता है। फिर तीन हज़ार आदमी यों ही दरिया के पार निकल गए। एक आदमी ने जानबूझ कर खुद अपना प्याला दरिया में फेंक दिया। जब दूसरी तरफ पार हो गए तो अबू-मुस्लिम रह० ने कहा हाँ भाई किसी को कोई नुक़सान हुआ? तो उस आदमी ने कहा, जी हाँ मेरा प्याला दरिया में चला गया। फिर जहाँ से दरिया पार किया था उसको लेकर वहाँ पहुँच गया। वहाँ पर जाकर देखा लकड़ी का प्याला पड़ा हुआ था। उसने कहा यह है तुम्हारा प्याला? जी हाँ यह मेरा प्याला है। कहा उठा लो। तो मेरे भाईयो! ऐसा ताल्लुक़ अल्लाह से पैदा करें और यह बहुत आसान है। बहुत ही आसान है। न धक्के खाने पड़ें न किसी की खुशामद करना पड़े, न किसी की जूती उठाना पड़े।

सबसे पहला काम

आज ही हम तौबा कर लें, या अल्लाह मेरी तौबा, या अल्लाह मेरी तौबा ﴿جئتك تائبا فاقبل في﴾ या अल्लाह मेरी तौबा क़बूल कर ले। तो करने का काम यह हे कि आज गुनाहों से तौबा करके जाएं।

दूसरा काम

दूसरा काम यह है कि आज के बाद अपनी ज़िंदगी को हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िंदगी के मुताबिक़ बनाने की नीयत कर ली जाए और यह सीखना शुरू कर दें। और यह मेहनत हो रही है ज़िंदगी नबी के तरीक़े पर आ

जाए। अल्लाह तआला के हाँ न रिश्ता, न नाता, न क़ौम, न अरबी, न क़ुरैशी, न शेख़, न पीर, न दोस्ती, न बादशाह, न दरबारी, न वज़ीर। कुछ भी नहीं सिर्फ़ एक ही सिक्का है ला इलाहा इल्लल्लाह और इसके साथ क्या है? मुहम्मदुर्रसूलल्लाह जिसको अल्लाह ने अपने साथ जोड़ा है। उनके तरीक़े पर आ जाएं और उनकी सुन्नत पर आ जाएं तो अल्लाह तआला गोरे का भी हो जाएगा, काले का भी हो जाएगा, अमीर का भी हो जाएगा और ग़रीब का भी हो जाएगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह ने अपना क़ुर्ब दिया है और अपनी मईय्यत दी है।

आदम अलैहिस्सलाम के जिस्म में रूह डाली तो उन्होंने देखा कि अर्श पर ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह। जब जन्नत की हूरों को देखा तो हर एक के माथे पर लिखा था, "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह।"

सबसे बड़ी इज़्ज़त वाली ज़ात

तो तौबा और इत्तिबा। एक काम तौबा का है, दूसरा काम अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी को अपनाने का है। सबसे बड़ी इज़्ज़त वाली ज़ात अल्लाह के रसूल की है दुनिया में।

किसी ने महल बनाया, किसी ने हुकूमतें चलायीं, कोई चाँद तक पहुँचा, कोई मरीख़ तक पहुँचा। और अल्लाह के रसूल एक ही रात में बैतुल्लाह से बैतुल मुक़द्दस पहुँचे। वहाँ से एक क़दम में पहला आसमान, फिर दूसरा फिर तीसरा। आख़िर में सातवें आसमान तक पहुँचे। फ़रिश्तों से इस्तिक़बाल करवाया, नबियों से इस्तिक़बाल करवाया। फिर अल्लाह तआला और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर्मियान मकालमा हुआ। अपना दीदार

कराया। ऐसे नबी की ज़िंदगी छोड़कर कहाँ जाएं?

एक बद्दू और उसकी तीन बातें

एक बद्दू आया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में और उसने तीन बातें सामने रखीं :

अव्वल यह कि तू कहता है कि हम बाप दादा के दीन को छोड़कर तेरे दीन पर आ जाएं। बाप दादों को छोड़कर तेरी मान लें, यह हो सकता है?

दूसरे कहता है कि क़ैसर व किसरा हमारे ग़ुलाम हो जाएंगे। हमें रोटी नहीं मिलती और रोम व फ़ारस की हुकूमतें हमारी ग़ुलाम हो जाएंगी, यह हो सकता है?

तीसरे कहता है कि मर जाएंगे, मिट्टी हो जाएंगे फिर उठाकर हम को ज़िंदा कर दिया जाएगा, यह भी हो सकता है?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला तुझे ज़िंदगी देगा, तू देखेगा कि सारा अरब यह कलिमा पढ़ेगा, तू देखेगा क़ैसर व किसरा फ़तह होंगे। रही तीसरी बात क़यामत आने वाली है। ﴿ولاخذنك بيدك هذه ولاذكرنك بمقالتك هذه﴾ मैं क़यामत के दिन तेरा हाथ पकड़ूंगा और तेरी यह बात तुझे याद दिलाऊँगा।

कहने लगा मैं नहीं मानता, ऐसी फ़ुज़ूल बातें। वापस चला गया। उसकी ज़िंदगी में फ़तह मक्का हुआ, उसकी ज़िंदगी में तबूक तक इस्लाम फैल गया, (फिर भी) मुसलमान नहीं हुआ। और उसकी ज़िंदगी ही में क़ादसिया की लड़ाई हुई। ईरान फ़तह हुआ और यरमूक की लड़ाई हुई तो रोम फ़तह हुआ। तो अब वह डर गया कि वे तो फ़तह हुए। अब तीसरा भी होगा तो वह मुसलमान होकर मदीना मुनव्वरा हिजरत करके आ गया।

जब मस्जिद में आया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने

उठकर उसका इस्तिक़बाल किया और इकराम किया। फिर दूसरे सहाबा से फ़रमाया जानते हो यह कौन है? यह वह है जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तुम्हारा हाथ पकड़कर याद दिलाऊँगा और क़यामत के दिन जिसका हाथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पकड़ें तो जन्नत में पहुँचाने से पहले कभी नहीं छोड़ेंगे। यह तो पक्का जन्नती है।

तो मेरे भाईयो! सबसे हाथ छुड़ाकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में हाथ दे दो। यह तबलीग़ का काम है, यह तबलीग़ की मेहनत है कि तौबा कर लें और ज़िंदगी अल्लाह और उसके रसूल की ग़ुलामी में ले आएं और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में आसानी है। झूठ में मुसीबत और परेशानियाँ हैं। आज तौबा करके जाओ। चार महीने लगाओ या न लगाओ तौबा तो कर लो। लेकिन बात यह है कि तौबा पक्की तब होती है जब आदमी अपना माहौल छोड़ता है। इसके लिए भी निकलना फ़र्ज़ है। यहाँ तौबा पक्की नहीं हो रही है। हो रही है, टूट रही है। इधर अल्लाह रहीम तो है लेकिन हमारी तौबा मज़ाक़ न बन जाए।

नेक लोगों की सोहबत में चले जाओ

बुख़ारी शरीफ की रिवायत है कि निन्नानवे क़त्ल करने वाले ने सोचा कि तौबा कर लूँ। किसी अनपढ़ से पूछा कि तौबा करना चाहता हूँ। तो उसने कहा आप की कोई तौबा नहीं। उसने कहा फिर सौ पूरा करूं तो उसको भी ख़त्म कर दिया तो सौ हो गए। फिर किसी आलिम से पूछा कि मेरी तौबा हो सकती है? तो उन्होंने कहा हाँ तौबा तो है लेकिन यह जगह छोड़के कहीं नेक लोगों की सोहबत में चले जाओ।

अब तो मुसीबत यह है कि नेक लोगों की बस्ती है कहाँ? यहाँ चारों तरफ़ गंद ही गंद है। तो अल्लाह तआला ने इस वक़्त हमें एक माहौल दिया है। दस बारह आदमी एक ईमानी फिज़ा बनाकर चल रहे होते हैं। उसके अंदर जो चला जाता है तो एक ऐसी फ़िज़ा में आ जाता है। उनके आमाल अगरचे कमज़ोर होते हैं। उसके अंदर आहिस्ता-आहिस्ता उनके दिल व दिमाग़ में तौबा की ताक़त पैदा कर देते हैं। अल्लाह तआला ने चलता फिरता माहौल हमें अता फ़रमा दिया है।

माहोल का असर

दो साल पहले हम अमरीका गए तो हिन्दुस्तान के हैदराबाद के अमीरुद्दीन हमारे साथ गश्त में गए। वहाँ एक अरब मुसलमान का कल्ब था शराब का। जब वह उनको दावत देने गए तो वह सब शराब में मस्त थे और एक लड़की स्टेज पर नंगी नाच रही थी और एक लड़का साथ में ड्रम बजा रहा था।

जब उन्होंने उन सब को इकठ्ठा करके दावत देना शुरू की तो वह लड़की उनके पीछे आकर खड़ी होके सुनने लगी। तो वे सब नशे में थे, उनको क्या समझ में आए? जो लड़की पीछे खड़ी थी उसने कहा जो बात आप इनको समझा रहे हो वह मुझे समझा दो। मेरी समझ में आ रही है। ये लोग मुँह नीचे करके उसको समझाने लगे। तो उसने कहा ठीक है आपकी बात। आप मुझे मुसलमान बनाएं, मैं मुसलमान होना चाहती हूँ। वह जो ड्रम बजा रहा था वह उस लड़की का ख़ाविन्द था। वह भी मुसलमान हो गया। मियाँ-बीवी दोनों मुसलमान हो गए। उन्होंने उससे कहा बेटी कपड़े पहनकर आ। वह कपड़े पहनकर आई। तीन चार दिन जमाअत वहाँ थी। उनसे कहा आती रहो, सुनती रहो, समझती

रहो। तो वह आती रही, सुनती रही। अब उन्होंने उससे कहा जब कभी ज़रूरत पड़े तो इस फ़ोन पर बात कर लेना। दो महीने या कितने अरसा गुज़रा तो उस लड़की का फ़ोन आया। कहा कि आप मुझे पहचानते हैं? कर्नल साहब ने कहा, जी हाँ आप वही रक़ासा (डांसर) लड़की हैं जिसको मैंने दो महीने पहले क्लब में देखा था। उस लड़की ने कहा जब आप को अल्लाह तआला ने मेरी ज़िंदगी को बदले का ज़रिया बनाया, जब आपने हमें दावत दी, हम मुसलमान हुए, उस वक़्त हम मियाँ-बीवी सिर्फ़ एक रात में पाँच सौ डॉलर कमा लिया करते थे। जब आपने मुझे मुसलमान बनाया तो पता चला कि औरत के लिए कमाना ठीक नहीं है। तो मैंने अपने ख़ाविन्द से कहा कि आप जाइए कमाकर लाइए। मैं घर में बैठी हूँ। ख़ाविन्द कोई काम तो आता नहीं था। उसने मज़दूरी शुरू कर दी। तो अब उनको एक दिन में सिर्फ़ चालीस डॉलर मिलते हैं। अमरीका में पाँच सौ डॉलर से चालीस डॉलर में आ जाना खुदकशी के बराबर है। हमने घर बेचा, गाड़ी बेची, एक छोटा सा फ़्लैट है जिसमें हम दोनों मियाँ-बीवी रहते हैं। आपने हम से कहा था। हम दोनों अपने रिश्तेदारों में जाकर दावत देते हैं। हमारी गाड़ियाँ तो नहीं हैं। हम बसों में सफ़र करते हैं। आज हम जा रहे थे। मेरे हाथ में एक डंडा था उसको पकड़ा हुआ था तो जब बस को झटका आया तो मेरे बाज़ू का जो कुर्ता था इतना पीछे चला गया कि बाज़ू का चौथाई हिस्सा नंगा हो गया। क्या इस पर मैं दोज़ख़ में जाऊँगी?

टेलीफ़ोन पर रोना शुरू कर दिया। चंद दिन पहले यह लड़की स्टेज पर नाच रही थी। फिर इतने से दिन बाद उसके बाज़ू का थोड़ा सा हिस्सा नंगा होने पर वह रो रही है कि इससे मैं दोज़ख़ में तो नहीं जाऊँगी। यह माहौल है, माहौल ने ऐसी फ़ाहिशा औरत

को इतने तक़्वे पर पहुँचा दिया।

जब माहौल नहीं तो हमारी बेटियाँ उनके बाज़ू नंगे होते जा रहे हैं। और स्टेज पर नाचने वाली इतने बाज़ू नंगे होने पर रो रही है कि इससे में दोज़ख़ में तो नहीं चली जाऊँगी। तौबा की पुख़्तगी के लिए अल्लाह के रास्ते में निकलना यह बहुत बड़ा ज़रिया है। तो उस आलिम ने कहा बेटा बस्ती छोड़ दो। उसने कहा बख़्शिश हो जाएगी तो मैं तैयार हूँ। चल पड़ा तो रास्ते में मौत आई और सफ़र थोड़ा तय हुआ था। अल्लाह तआला ने क़यामत तक के लिए नमूना बनाना था। दो फ़रिश्ते आ गए। जन्नत के भी और दोज़ख़ के भी। दोज़ख़ वाला कहता है यह हमारा है और जन्नत वाला कहता है, यह हमारा है। जन्नत वाले कहते हैं कि इसने तौबा कर ली है। दोज़ख़ वाले कहते हैं तौबा पूरी ही नहीं हुई। वहाँ जाके पूरी होनी थी। तो अल्लाह तआला ने तीसरा फ़रिश्ता भेजा। उसने कहा इसके सफ़र की मुसाफ़त को नापो। अगर यह यहाँ से घर के क़रीब है तो दोज़ख़ी, अगर नेक लोगों की बस्ती के क़रीब है तो जन्नती। जब फ़ासला नापने लगे तो नेक लोगों की बस्ती का ज़्यादा था और अपनी बस्ती का फ़ासला थोड़ा था। अल्लाह तआला ने घर की तरफ़ वाली ज़मीन से कहा फैल जाओ और बस्ती वाली ज़मीन से कहा सुकड़ जाओ। तो वह फैलती गई और यह सुकड़ती चली गयी।

मेरे भाईयो! अगर दुकानों को बंद करके निकलना पड़े तो निकल जाओ। अल्लाह की क़सम दुकानों के बग़ैर भी पाल सकता है। अल्लाह तआला हम सबको अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

﴾و آخر دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین.﴿

ख़ामोश इंक़लाब

نحمده و نصلى على رسوله الكريم الحمد لله رب العالمين والصلوة

والسلام على رسوله الكريم وعلىٰ آله واصحابه اجمعين اما بعد

सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब...

ये सारे महल्लात मिट्टी के खंडर हैं। संगमरमर ग्रेनाइट लगा हुआ है। वह भी तो मिट्टी है मिट्टी। पालिश करके नाइट बनाया और फिर चंद साल के बाद जनाज़ा उठा और ख़ुद जाकर क़ब्रों के देस में। अंधेरे की काल कोठरी में। शहरे ख़मूशाँ का शहरी बनकर मिट्टी की चादर ओढ़कर हमेशा के लिए सो गया। और वह घर औरों के लिए छोड़ गया और पीछे औलादों में लड़ाइयाँ शुरू हो गयीं। यह मेरा हिस्सा, यह मेरा हिस्सा। ﴿كل بيت من فالت سلامته يوم ستبدلون﴾ कोई घर कितना सलामत रहे। एक दिन ऐसा आता है कि मकड़ियों के जालों के सिवा कुछ नहीं बचता और हवाओं की सनसनाहट के सिवा कुछ नहीं बचता और अल्लाह के घर में एक ईंट सोने की, एक ईंट चाँदी, एक ईंट ज़मुर्रुद की, एक ईंट याक़ूत की, एक मोती की, मुश्क का गारा, ज़ाफ़रान की घास और अल्लाह तआला ने बाज़ महल ऐसे बनाए हैं जो हवाओं में उड़ते रहते हैं। पूरा महल हवा में उड़ रहा है जैसे बादल।

मेरा एक दफ़ा बयान हुआ पहलवानों में। उनकी अक़्ल वैसे भी माऊफ़ हो जाती है दवाएं ग़िज़ाए खा, खाकर। मैंने सोचा क्या बयान करूं? बड़ा परेशान हुआ। अल्लाह मैं इनको क्या सुनाऊँ?

जों ही मैं बैठा मिम्बर पर अल्लाह तआला ने अचानक एक हदीस याद दिला दी कि जन्नत में जब अल्लाह पाक दाख़िल करेगा, उससे पहले सारे जन्नत वालों को बैल और मछली की कुश्ती दिखाएगा। यह बैल यहाँ का नहीं, यह मछली यहाँ की नहीं जो दुनिया के बाज़ार में पड़ी है। बाज़ार में बदबू फैल रही है। यह वह नहीं सिर्फ़ नाम अल्लाह तआला ने इस्तेमाल किए हैं वरना उनकी हक़ीक़तें कुछ और हैं। फिर उनकी कुश्ती होगी। फिर अल्लाह तआला उनके कबाब बनाकर तमाम जन्नत वालों को नाश्ता करवाएगा। फिर उसके बाद कहेगा कि अपनी-अपनी जन्नत में चले जाओ। मुझे वह हदीस याद आ गई। मैंने कहा भाई जन्नत में जाने का सबसे ज़्यादा मज़ा तुमको आएगा। वह सारे मुझे देखने लगे जैसे आँखों से सवाल कर रहे हों कि वह कैसे? मैंने कहा कि जो सबसे पहला काम जन्नत में होगा वह कुश्ती है। वह तुम जानते हो। हम तो जानते नहीं दाँव क्या है? पटख़ा क्या है? जब कोई मछली दाँव लगाएगी तो सबसे ज़्यादा तुम कुर्सियों से उछल उछल कर दाद दोगे कि वाह वाह तुम्हें लाहौर के सारे अखाड़े याद आ जाएंगे। और बैल कोई दाँव लगाएगा तो सबसे ज़्यादा जन्नत का मज़ा तुम्हें आएगा और सब से ज़्यादा लुत्फ़ उस कुश्ती का तुम उठाओगे। हमें उसका पता कोई नहीं। तो अल्लाह तआला जन्नत के दाख़िले पर उनके कबाब खिलाकर कहेगा कि जाओ आज के बाद भूख ख़त्म, प्यास भी ख़त्म। हज़ारों साल हों कोई हरज नहीं। खाओ तो लाखों साल खाओ, कोई परवाह नहीं।

तौबा वह है जो आज हो अभी हो

आज इस मज्लिस से तौबा करके उठो जैसे भाई अकबर ने की तुम भी तौबा करो। इन दर व दीवार को गवाह बनाओ कि

या अल्लाह! आज से वह होगा जो तू कहेगा। या अल्लाह मेरी तौबा। जो तेरा महबूब कहेगा वह करेंगे। नीयत करते हो सब इस की। एक मर्तबा कह दो सब ज़ोर से कि या अल्लाह मेरी तौबा। एक दफ़ा और कह दो या अल्लाह मेरी तौबा। यह दर व दीवार गवाह बन गए। यह माहौल गवाह बन गया और अगर यह तौबा सच्ची है तो आपको मुबारक हो। अल्लाह की क़सम! आप ऐसे बैठे हो जैसे अभी माँ के पेट से निकले, सारे गुनाह माफ़ हो गए।

- हक़ बाक़ी रह गया, हक़ तलफ़ी माफ़ हो गई। नमाज़ छोड़ी थी, गुनाह माफ़ हो गया मगर क़ज़ा बाक़ी है। किसी का हक़ मारा था गुनाह माफ़ हो गया मगर हक़ की अदाएगी बाक़ी रह गई।

भाईयो! जिस तरह इस फ़िज़ा ने गुनाह देखे। इसी तरह इस फ़िज़ा को तौबा दिखाओ। फ़रिश्तों को ख़ुश कर दो। या अल्लाह! हम तेरे दरबार में तौबा करते हैं। हाँ! हम मीलादुन्नबी का जश्न मनाएं। तौबा के साथ हम मीलादुन्नबी को ज़िंदा करें। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सांचे में ढलने के साथ और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत को ज़िंदा करने के साथ और आप सिर्फ़ स्टेज पर बयान करने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए थे। आप सिर्फ़ किताबों में लिखने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए थे। आप सिर्फ़ मौज़ू सुख़न बनने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए थे बल्कि आप इंसानियत के धारे को अल्लाह की तरफ़ मोड़ने के लिए आए हैं।

हम आज के बाद वह करेंगे जो अल्लाह का महबूब चाहता है। तबलीग़ इसको सीखने की मेहनत है। वह मुबारक मेहनत है जिसको सदियों के बाद अल्लाह तआला ने ज़िंदा किया और अल्लाह ने इसको आहिस्ता आहिस्ता ऐसे फैलाया, उम्मत के जितने तब्क़ात हैं, दुनिया के छः बर्रे आज़मों को मुतवज्जेह किया

और इस उम्मत को शान दी तो इसी काम की वजह से दी। देखो हमारी उम्र थोड़ी मगर सवाब ज़्यादा है।

अमल मुख़्तसर सवाब ज़्यादा

एक आदमी काम ज़्यादा करे उसको तंख़्वाह कम मिले। एक आदमी काम कम करे और उसको तंख़्वाह ज़्यादा मिले। काम भी वही हों तो हमारी डयुटी घटा दी। उम्र घटा दी। इबादत को उनसे कम कर दिया। पहले वालों को कहा तुम तीन सौ साल इबादत करो फिर मैं तुम्हारा फ़ैसला करूंगा। चार सौ साल करो, दो सौ साल करो फिर उनको मौत आई। फिर फ़ैसला करूंगा। हमारे लिए फ़ैसला जल्दी कर देते हैं। पचास साल, साठ साल, तीस साल, बीस साल।

क़ौमे आद में एक बूढ़ी अम्मा थीं उसका बेटा मर गया। उसकी उम्र तीन सौ साल थी। सरहाने बैठे हाय बच्चा! हाय बच्चा! न खाया न पिया न जहान देखा तूने, न तूने दुनिया देखी। हाय हाय तो ऐसे ही दुनिया छोड़ गया। एक ने कहा अम्मा! एक उम्मत आने वाली है जिसकी कुल उम्र साठ-सत्तर साल होगी। वह हैरान होकर बोली क्या वह घर बनाएंगे? कहा, हाँ वे घर बनाएंगे बल्कि कालोनियाँ बनाएंगे। वह कहने लगी अगर मेरी इतनी उम्र होती तो मैं एक सज्दे में गुज़ार देती।

अब बंदगी उनकी ज़्यादा हमारी थोड़ी, डयुटी उनकी ज़्यादा हमारी थोड़ी। अज्र हमारा ज़्यादा, मर्तबा हमारा ज़्यादा, मक़ाम जन्नत में हम पहले पाएंगे। दरवाज़े से हम पहले गुज़रेंगे। हमारे बग़ैर कोई उम्मत जन्नत में नहीं जा सकती। इस इम्तियाज़ की वजह तबलीग़ का काम है। यह काम किसी उम्मत को नहीं मिला। किसी क़ौम को नहीं मिला ﴿كنتم خير امة﴾ तुम सबसे

बेहतरीन उम्मत हो। शाबाश अल्लाह दे रहा है। किसी बात पर? ﴿اخرجت للناس﴾ तुम निकाले गए हो। क्यों? ﴿للناس﴾ लोगों को नफ़ा पहुँचाने के लिए। कौन सा नफ़ा? ﴿تامرون بالمعروف﴾ भलाईयों को फैलाते हो, ﴿تنهون عن المنكر﴾ और बुराईयों से रोकते हो, ﴿وتومنون بالله﴾ और इसका सिला सिर्फ़ अल्लाह से लेते हो। इसका सिला किसी और से नहीं लेते।

इस काम पर अल्लाह ने इसी उम्मत के कई दर्जे बुलन्द किए। एक तो यह कि हम को सबसे आख़िर में भेजा और जन्नत तक इंतिज़ार थोड़ा होगा। दूसरा हमें थोड़ा वक़्त दिया। उनको ज़्यादा वक़्त दिया और मुआवज़ा ज़्यादा कर दिया हमारा। और तीसरी एहसान यह किया कि दूसरी उम्मतों की कमियाँ हमें बतायीं।

फ़िरऔन ने यह किया, शद्दाद, क़ारून, हामान, नमरूद ने, क़ौमे सबा ने, क़ौमे शुऐब ने, क़ौमे लूत ने, क़ौमे सालेह ने, क़ौमे आद ने, क़ौम समूद ने, क़ौमे नूह ने। उन्होंने यह यह यह किया और मैंने उन्हें ऐसे मारा।

उनके मर्दों की बुराईयाँ बतायीं। उनकी औरतों की बुराईयाँ बतायीं लेकिन जब हमारा नंबर आया तो अल्लाह तआला ने हमारे ऊपर चादर डाल दी कि हमारे गुनाह बताए कोई नहीं। हमारे बाद कोई नहीं और क़यामत के दिन हमारे नबी अलैहिस्सलाम कहेंगे, या अल्लाह! मेरी उम्मत का हिसाब मुझे दे दे। तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, क्यों? हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाएंगे, जब आप लेंगे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके गुनाहों को देखेंगे तो उनको आप से शर्म आएगी।

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, मैं आपको भी नहीं देता। मैं चादर के अंदर इनका हिसाब लेता हूँ।

कमाल है भाई! कमज़ोरियाँ और दरगुज़र क्यों? किस वजह से? जब नौकर अच्छा काम करता है तो हम उसकी इन्फ़िरादी बुराईयों से दरगुज़र कर जाते हैं। जब नौकर मालिक के साथ वफ़ादार हो तो मालिक उसकी ज़ाती कमियाँ दरगुज़र कर देता है।

उम्मते मुहम्मदी के लिए इनामात ही इनामत

इस उम्मत पर अल्लाह ने काम नबियों वाला डाल दिया। बोझ नबियों वाला। जाओ मेरे पैग़ाम को दुनिया में फैलाओ। तो उनकी ज़ाती ग़ल्तियों को अल्लाह तआला ने ऐसे दरगुज़र किया कि अल्लाह तआला ने क़यामत के दिन भी उनके गुनाहों पर पर्दा डाल दिया और उम्मत के नख़रे उठाए।

दूसरी उम्मतों का मुजरिम तौबा करता है। अल्लाह कहता है क़त्ल करो। अगर वह पकड़ा जाए क़त्ल करो। इस उम्मत का मुजरिम कहता है कि या अल्लाह मेरी तौबा। अल्लाह तआला कहते हैं जाओ माफ़ कर दिया।

पहली उम्मतों के लिए कपड़े गंदे हो जाते तो काट दो। खाल पर लग जाए तो खुरचो। पानी से पाक नहीं होगा। इस उम्मत को पानी भी नहीं मिला तो फ़रमाया, मिट्टी मुँह पर मलकर पाक हो जाए। तयम्मुम क्या है? मिट्टी पर हाथ मारो, फिर हाथ मारो, फिर हाथ मारो और चल भाई। यह किसी उम्मत को अल्लाह तआला ने नहीं दिया।

हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़ुस्ल की हाजत हो गई। सोच में पड़ गए कि वुज़ू तो यों होता है मगर तयम्मुम किसी को मालूम नहीं था। उन्होंने ग़ुस्ल के तयम्मुम के लिए यह किया कि कपड़े उतारकर रेत में लोटपोट होते रहे। जब मदीने पहुँच तो फ़रमाया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे ग़ुस्ल की

हाजत हो गई तो मैं ने यह काम किया। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि गुस्ल के लिए भी दो ज़र्बें ही काफ़ी थीं। एक मुँह पर और एक हाथ पर तो तू पाक था। कभी कोई मिट्टी मुँह पर मलकर पाक हुआ? तुम मुँह पर मिट्टी मलो मैं तुम्हें पाक करता हूँ।

दुनिया की तारीख़ का अनोखा वाक़िआ

एक बद्दू आया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं हलाक हो गया। आपने फ़रमाया कि क्या हुआ? उसने कहा मैं रोज़े की हालत में बीवी के क़रीब चला गया। मेरा क्या बनेगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तू ग़ुलाम आज़ाद कर, कफ़्फ़ारा दे। अरज़ किया मैं सिर्फ़ अपनी गर्दन का मालिक हूँ। ग़ुलाम कैसे आज़ाद करूं, मेरे पास कुछ नहीं।

आपने फ़रमाया, साठ ग़रीबों को खाना खिला। उसने कहा मुझसे ज़्यादा ग़रीब मदीने में है कोई नहीं। मैं कहाँ से लाऊँ?

फिर आपने फ़रमाया, तू साठ रोज़े रख। उसने कहा एक रोज़े ने चाँद चढ़ा दिया, साठ रोज़ों को मैं कैसे रखूंगा? कहा तू बैठ जा, मैं तेरा कोई इंतिज़ाम करता हूँ। वह बैठ गया। इतने में एक अंसारी आया। वह थैला लेकर आया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ये खजूरें हैं सदके की।

हाँ भाई! तुम बैठे हो? फ़रमाया जी हाँ। फ़रमाया, थैला ले जाओ और मदीने के साठ फ़ुक़रा में तक़्सीम कर दो। यह मुजरिम है और जुर्माना है। और यह इस तरीके से कहता है या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा की कसम मदीने में मुझसे ज़्यादा ग़रीब कोई नहीं है। यह जुर्माना मुझे ही दे दो। तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्कराकर फ़रमाते हैं, जा तू ही ले

जा। लेकिन यह रिआयत तेरे लिए है, किसी और के लिए नहीं है।

दुनिया की तारीख़ में ऐसा नहीं हुआ कि मुजरिम को जुर्माना मिल गया हो। यह इस उम्मत के लिए अल्लाह तआला ने लाड उठाए हैं। इस उम्मत के नखरे उठाए हैं, क्यों?

इसलिए कि यह उम्मत वह काम करेगी जो किसी ने न किया था। यह उम्मत अल्लाह के पैग़ाम को लेकर दुनिया में के आख़िरी किनारे तक पहुँचेगी। ब्यास्सी साल की मुद्दत में यह पैग़ाम मदीने से मुल्तान तक पहुँच गया। नेपाल और कश्मीर तक पहुँच गया। इस रास्ते में इस्फ़ेहान में हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ। कितने ऐसे सहाबी हैं जिनके नाम हम नहीं जानते। जिन्हें माज़ी के अंधेरे निगल गए। अल्लाह ही बेहतर जानते हैं वे कितने थे?

मेरा पैग़ाम मुहब्बत से पूरी दुनिया को पहुँचा दो

इससे इस्लाम के पौधे निकलते चले गए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महबूब सहाबा किराम में चंद हज़ार सहाबा अरब की मुक़द्दस ज़मीन में मदफ़ून हुए। बाक़ी सब बिखरते चले गए। जैसे फूल की पत्तियाँ बिखरती जाती हैं। तो हवा के झोंके महकते हैं इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महबूब सहाबा की क़ब्रें फूल की पत्तियों की तरह बिखरें। सारी काएनात कुल में तौहीद का रस घुल गया। तौहीद की ख़ूबसूरत फ़िज़ा क़ायम हुई। महकती हुई हवाएं चली और अंधेरों में से उजाला हुआ। गुमराही में से हिदायत का निज़ाम चलाया। यह इस उम्मत की इम्तियाज़ी शान है कि यह अल्लाह का पैग़ामे हक़ लेकर चलते

हैं। आपने मिना की वादी में कहा था ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ मेरा पैग़ाम आगे पहुँचा दो।

भाईयो! भलाइयों को फैलाना, बुराइयों से रोकना, मुहब्बत से चलना। एक ज़माना था जिसमें लागों को सख़्ती से रोकते थे। सख़्ती से न रोकने वाले को बुज़दिल कहते हैं। किसी को करीब करने के लिए पहले दिल तो दो।

जुनैद जमशेद की वापसी

जुनैद जमशेद स्टेज का आदमी है। छः साल सिर्फ़ हम उसको सलाम करते रहे। वह हराम काम कर रहा है। हमारे सामने गा रहा है लेकिन इस्तेदाद नहीं। हज़्म की इस्तेदाद नहीं। छः साल चलते चलते उसने चार महीने लगाए। चार महीने के बाद क्या हुआ? पेप्सी वालों ने ढाई करोड़ की पेशकश कर दी। दाढ़ी मुंढा दी। लबनान पहुँच गया। लबनान में एक लड़की थी नवाल। उसने कहा था कि मैं गाना गाऊँगी सिर्फ़ जमशेद के साथ। पेप्सी वालों ने दाना डाला और इंसान कमज़ोर है फिसल गया।

भाई बात सुनो! बात सुनो। पता चला वह चला गया। मैंने सलातुल हाजत पढ़ी। मैंने पचास नफ़्ल पढ़े कि या अल्लाह! इसे बचा ले। या अल्लाह! इसे बचा ले। पता नहीं उसके अंदर क्या आग लगी। लबनान होते हुए फिर उसने बैग उठाया और कराची वापस आ गया।

फिर टेलीफ़ोन करके राइविन्ड बुलाया तो कहा कि मैंने दाढ़ी मुंढा दी है। मैंने कहा तो क्या हुआ? तुम आ जाओ इंसान ही तो हो। शहसवार ही तो गिरते हैं मैदान में।

हमारे पास जादू की पुड़िया तो नहीं है कि सबको खिला दी जाए। अगर मैं आप सबसे कहूँ कि कल तक आप सब आलिम

बन जाओ वरना मैं सबको उल्टा लटका दूंगा तो क्या मुमकिन है? अगर मैं कहूँ कि मैं आप सबको कल तक दस-दस करोड़ दूंगा, सब डाक्टर बन जाओ। क्या यह मुमकिन है? मुमकिन नहीं क्योंकि डाक्टरी का एक लेबल नहीं, एक मेहनत है। इसी तरह मैं कहूँ कल तक तमाम फ़ैसलाबाद वाले ठीक हो जाएं वरना सब को मैं उल्टा लटका दूंगा, यह नामुमकिन है। तक़्वा इतना सस्ता नहीं है। दीन इतना सस्ता नहीं है कि डंडे से आ जाए।

यह चलने से आता है। रुकने से नहीं आता। जान व माल खपाने से अल्लाह दिल में ईमान की शमा रौशन करता है। फिर दिल में ईमान की शमा रौशन होती है तो उसे दुनिया की कोई तेज़ व तुन्द तूफ़ान भी नहीं बुझा सकता। अंदर रौशन न हुआ तो उसे बाहर की कोई ताक़त रौशन नहीं कर सकती। जब कोई दीनदार ग़लती करता है तो बहुत से बेदीन लोग दीनदारों से नफ़रत करते हैं।

लोगों के ऐबों को छुपाओ, ज़ाहिर न करो

एक सहाबी आकर कहते हैं या रसूलुल्लाह! मैंने ज़िना किया है। मुँह से इक़रार करते हैं लेकिन आपने दूसरी तरफ़ मुँह फेर लिया कि तूने ज़िना नहीं किया। वह इक़रारी मुजरिम पर जुर्म पर चादर डालने वाले और हम दूसरों के ऐबों को तलाश करें। ये तबलीग़ी क्या करते हैं? ये मौलवी क्या करते हैं? ये मदरसे वाले क्या करते हैं।

भाईयो! तुम बर्बाद हो जाओगे अगर किसी ज़ानी, शराबी को भी हक़ीर समझकर गए तो सारी नेकियाँ बर्बाद हो जाएंगी। उस स्टेज पर नाचने वाली लड़की को भी हक़ीर समझा तो तुम अल्लाह की निगाह में गिर जाओगे।

हिक़ारत कबीरा गुनाह है। ये नेक लोगों के गुनाह बता रहा हूँ। हिक़ारत तकब्बुर साथ लाती है। हिक़ारत व तकब्बुर बहन भाई हैं। अगर मैं औरों को हक़ीर समझूंगा तो यक़ीनन तकब्बुर में मुब्तला हो जाऊँगा।

एक मर्तबा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम गुज़र रहे थे। उनके दो साथी भी थे। इतने में एक ने उनमें से हिक़ारत से पीछे देखा तो उसने मुँह यों फेरा और बोला बड़े आए नेक लोग। नेक पाक बड़े लोगों का इस्तिक़बाल करते हैं। तो उसने सिर्फ़ यह कहा था तो अल्लाह तआला ने फ़ौरन जिब्रील अलैहिस्सलाम को भेजा और "वही" आ गई। फ़रमाया तेरे भेजे दो आदमी आ रहे हैं। एक साथी है और एक अदी मुजरिम है। इस मुजरिम को कहो कि मैंने सारे गुनाह माफ़ कर दिए, अमल कर और तेरे साथी को कहो कि मैंने तेरी सारी नेकियाँ ख़त्म कर दीं तू देखता है। नए सिरे से अमल कर, तू क्या ठेकेदार है? मेरे बंदों को हक़ीर नज़रों से मत देखो, मुहब्बत दो। भाईयो! धक्के देना आसान है लेकिन इंसानियत नहीं है। धक्का देना कौन सा मुश्किल है?

उलमा की क़द्र करो, एतिराज़ न करो

चाहे तबलीग़ी हो, या मौलवी। अगर इल्म वाले न होते तो तुम न तो आज मुसलमान होते और न क़ुरआन सीनों में होता। तो क्या हम मुसलमान होते।

दुआ दो उन क़ारियों को जिनकी तंख़्वाह तीन हज़ार होती है। बच्चों को दवाई लेकर दे नहीं सकता, बेटी की शादी करनी हो तो तीन हज़ार में शादी नहीं हो सकती। इतनी मामूली तंख़्वाह होने पर ज़िल्लत अलग, रगड़े अलग कि मौलवी साहब आप तो बहुत

लालची हो। तंख़्वाह बढ़ाने को कहो तो कहते हैं कि आपको अल्लाह पर तवक्कुल कोई नहीं।

यह आज से पंद्रह साल पहले की बात है। हम एक दावत में थे। हमारे साथ साथ एक डाक्टर साहब थे। उन्होंने कहा कि कोई इमाम साहब को समझाए। हमने उनकी तंख़्वाह पंद्रह सौ की है। वह कहते हैं कि मेरा गुज़ारा नहीं हो रहा, मेरी तंख़्वाह बढ़ा दें। एक साथी करीब ही थे वह कहने लगे, डाक्टर साहब आपके एक दिन के नाश्ते का ख़र्च पंद्रह सौ है। वह डाक्टर साहब हक़ीक़त से पर्दा उठने पर ऐसे चुप हो गए कि फिर चूँ भी न की। अगर ये लोग न होते तो दीन भी मुश्किल से मिलता। इन लोगों को मआशरे में कोई मक़ाम देने के लिए तैयार नहीं है।

एक दफ़ा अपने डेरे में बैठा था। एक इंजीनियर आ गया और कहने लगा कि तबलीग़ वाले ऐसे और तबलीग़ वाले वैसे। जब सारी बात मुकम्मल हो गई तो मैंने कहा भाई बात सुनो। यह हुकूमत पाकिस्तान बड़ी ज़ालिम है। लेकिन फिर भी वह इतनी रहम दिल है अपने बच्चों के लिए कि अगर कोई बच्चा सौ में से तैंतीस नंबर लेकर आए और सरसठ नंबर ज़ाए कर दे तो उसको भी पास कर देती है। तो मैंने कहा मेरा मामला अल्लाह के साथ है। अगर मैं दस बारह नंबर ले गया तो मैं अल्लाह से कहूंगा कि ऐ अल्लाह! मेरी ज़ालिम हुकूमत पाकिस्तान भी अपने बच्चों को पास कर देती है और मेरा मामला रहमान और रहीम अल्लाह के साथ है।

क़यामत के दिन एक आदमी की एक नेकी कम पड़ जाएगी। अल्लाह तआला कहेंगे कि एक नेकी कम पड़ गई है। तो एक और आदमी कहेगा मुबारक हो तुझे। मेरे पास एक नेकी है। मैं

दोज़ख़ में तो वैसे ही जाना है। यह नेकी तुम ले लो। वह लेकर अल्लाह तआला के पास जाएगा खुश खुश कि या अल्लाह मेरा काम बन गया। अल्लाह तआला कहेंगे किस तरह? वह कहेगा फलाँने शख़्स ने मुझको एक नेकी दे दी।

एक शख़्स इस्लामाबाद में आया मेरे पास। दाढ़ी मुंढी हुई। आँखें झुकी हुईं। सर उठाए ना। मैंने कहा घबरा क्यों रहे हो? मैंने कहा, खाना लाओ भाई, चाय लाओ। अल्लाह तआला ने चंद महीनों बाद उसको ऐसा जमाया, ऐसा जमाया कि अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से हज की जमाअत में दो महीने लगाए। चिल्ला लगाया। मुझसे बड़ी दाढ़ी है। मुझसे बड़ी पगड़ी है। पहले नहीं थी।

अख़्लाक़े नबुव्वत से दीन फैलेगा

एक दफ़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाना तनावुल फ़रमा रहे थे। एक फ़ाहिशा औरत गुज़र रही थी। उसने देखा तो कहा औरों को पूछता नहीं, कैसी बदतमीज़ी है। आपने कहा आ तू भी खा ले। वह आकर बैठ भी गई। उसने कहा नहीं नहीं वह जो तेरे मुँह में वह मुझको खिला। उसका नसीब ख़ूब है। नबी के मुँह से निकालकर खा गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुँह का निवाला यों मुँह से निकालकर मुँह में डाल दिया। उसके साथ ईमान भी उसके अंदर चला गया। एकदम ईमान की दौलत मिल गई।

और अगर वह इस तरह कहते कि ओ बदतमीज़! औरत तू मुझसे इस तरह बात करती है तो उसकी क़िस्मत में दोज़ख़ थी। निवाला मुँह में गया वह सहाबिया बन गई। फ़ाहिशा से सहाबिया बन गई। एक और शख़्स जिसको आप कह रहे कलिमा पढ़ लो, कहते हैं नहीं पढ़ता। कहा कलिमा पढ़ लो। कहते हैं नहीं पढ़ता।

सहाबा किराम फ़रमाते छोड़ो जी गर्दन उड़ा दो, आपने फ़रमाया, नहीं नहीं इसको छोड़ दो। फिर वहाँ से भागे-भागे गए। ग़ुस्ल करके आए और कहा, ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह।

हाँ जहाँ तलवार नहीं चलती वहाँ अख़्लाक़ चलते हैं। मैं तलवारों के डर से मुसलमान नहीं हूँ। यह बताना चाहता था कि मेरे क़त्ल का हुक्म हो रहा था। मैं मुसलमान नहीं हुआ। बतलाना चाहता था कि मुझे तलवार ने फ़तह नहीं किया, उस कमली वाले के अख़्लाक़ ने फ़तह किया है तो यह शफ़क़त और सोहबत। इसी तरह मेहनत होती है तो उनके क़ुलूब खिंच आते हैं। क़रीब आ, क़रीब आ। मेरे भाईयो अल्लाह ने हमें यह मुबारक मेहनत दी। पूरी दुनिया में इसको फैला दो।

हम इंगलैंड गए। एक आदमी से मिले। अंदर आकर बठे उसकी बीवी अंग्रेज़ थी। उसने कहा हैलो! तो हमने हाथ यों कर लिए तो वह आदमी हम से इतना नाराज़ हुआ, उसने इतनी गालियाँ दीं कि अल्लाह की पनाह। इसलिए कि मेरी बीवी की तौहीन कर दी। तुमने उससे हाथ नहीं मिलाया। हम उसे कैसे समझाते कि पागल हमने तेरी बीवी की इ़ज़्ज़त की, यह तौहीन नहीं थी। उसने हमारी कोई बात नहीं सुनी। रगड़ा देता रहा। कौन हो, कहाँ से आ गए? ज़्यादा पैसा है मुझे दो, इधर बर्तानिया में बेरोज़गारी है, मैं लोगों में तक़्सीम कर दूं कि किसी का भला हो जाए। मुँह उठाकर चले आते हो। एक घंटा तक बातें सुनाता रहा। चुप करके सुनते रहे।

एक बुज़ुर्ग हमारे साथ थे। मैंने कहा एक मुश्किल मुलाक़ात के लिए जा रहा हूँ, क्या करूं। फ़रमाया या रऊफ़ पढ़ते रहो। एक घंटा बाद उसका ग़ुस्सा ठंडा हो गया तो मैंने कहा मस्जिद की

तरफ़ चलते हैं तो उसने कहा नहीं। मैंने कोई बात नहीं। आज नहीं तो कल। फिर फ़ोन पर राब्ता किया तो उसने कहा आकर ले जाओ। जब उसको लेकर मस्जिद में आया तो उसने कहा आज सत्ताइस साल बाद मस्जिद में आया हूँ। यह लाहौर का था। जुमा कोई नहीं, नमाज़ कोई नहीं, ईद कोई नहीं। सत्ताइस साल तक कोई नमाज़ नहीं पढ़ी।

हम कहते, बदतमीज़ गालियाँ देता है, उसको छोड़कर आ जाते तो वह जाता जहन्नम में। तीन चार मुलाक़ातों मेंतीन दिन दे दिए। तीन दिन दिए तो रो रो करमेरे क़दमों पर गिरा। कहता था कि मेरी माँ मरी मैं नहीं रोया, मेरा बाप मर गया, मैं न रोया। मेरी सारी ज़िंदगी के आँसू आज निकल गए हैं। और आज इस बात को बाइस साल हो गए। उसकी तहज्जुद क़ज़ा नहीं होती। मालदार आदमी था। उसका अजीब शौक़ था। पंद्रह लाख की सिर्फ़ अंगूठी पहनता था। सोने की ज़ंजीर, पता नहीं और क्या क्या। सत्ताइस साल की ज़कात एक हफ़्ते में पाकिस्तान आकर रिश्तेदारों को तक़्सीम करके चला गया। वह दिन और आज का दिन। न नमाज़ क़ज़ा हुई, न रोज़ा क़ज़ा हुआ, न तहज्जुद क़ज़ा हुई।

मेरे भाईयो! यह मुहब्बत से लोगों को क़रीब करना है। ज़िंदगी में तब्दीली लाना है। तबलीग़ में मुहब्बत है, हिकमत है, बुज़दिली नहीं है। जिससे ये नक़्शे वजूद में आ रहे हैं।

दिल पलट रहे हैं

मेरे भाईयो! ज़िंदगी पलटा खा रही है। तो भाईयो मुबारक मेहनत को ग़नीमत समझो। अल्लाह तआला ने हमारे देस में शुरू कर दिया।

हम आ रहे थे वापस कुवैत से। फ़ैसलाबाद के साथियों की जमाअत थी तो फ़्लाइट एक घंटा लेट हो गई। हमने कहा क्यों हो गई फ़्लाइट लेट? तो उन्होंने कहा कि कनाडा से चंद पाकिस्तानी आ रहे हैं। उनकी वजह से। तो हम अगली सीटों पर बैठे हुए थे। तो चंद लोग आए नौजवान। बीस से पच्चीस साल की उम्र एक दो नहीं बल्कि तीस नौजवान। टोपियाँ पहनी हुई थीं। मैंने कहा ये सब कहाँ से आ रहे हैं? कनाडा की वजह से हमारे ज़हन में सूट-बूट, पैंट-कोट, टाईयाँ वग़ैरह। तो ये सब कहाँ से आए। तो हमने कहा कि तार्रुफ़ हो जाएं। मैंने कहा कि पता करो लगता है ये सब राइविन्ड जा रहे हैं। फिर मालूम क्या तो मालूम हुआ कि ये सब राइविन्ड ही जा रहे हैं। छुट्टियाँ थीं और जमाअत में वक़्त लगाने जा रहे हैं।

तो मेरे भाईयो! अल्लाह ने एक फ़िज़ा बना दी। सारी दुनिया के पलटने का रुख़ बन गया है। तो मेरे भाईयो! आज हम सब यह नीयत करें कि अल्लाह की राहों में निकलकर वक़्तों को फ़ारिग़ करें। ये तबलीग़ी जमाअत को वक़्त नहीं दे रहे हैं और हप अल्लाह और उसके रसूल को वक़्त दे रहे हैं। अल्लाह ने इस उम्मत की तबलीग़ में इसी मक़सद को रखा है।

ख़ामोश इंक़लाब

ज़रा नम हो यह मिट्टी बड़ी ज़रख़ेज़ है

तबलीग़ में ख़ामोश इंक़लाब आ रहा है। दिल पलट रहे हैं। इसमें स्टेज में काम हो रहा है। लाहौर में छः स्टेज हैं। पहले तालीम होती है फिर इंटरवल में तालीम होती है। पाँच स्टेज ऐसे हैं जहाँ लड़के लड़कियों का तालीम का हलक़ा अलग-अलग लगता है। बाजमाअत नमाज़ होती है। यह ख़ालिद डार जो है वह मेरा

स्कूल-फैलो है। उस वक़्त तार्रुफ़ नहीं हुआ था लेकिन तबलीग़ की वजह से तार्रुफ़ हो गया। कहता है कि एक वक़्त था कि ड्रामे से फ़ारिग़ होकर शराब और लड़की की तलाश होती थी और अब यह दौर आ गया है कि लोटे और मुसल्ले की तलाश होती है कि नमाज़ पढ़नी है। उनकी जमाअत निकलती है सह रोज़ा की बाक़ायदा क़सूर, शेख़ुपूरा, गुजरात के बीच चलते हैं। रात तक तबलीग़ करते हैं, फिर इशा पढ़ते हैं। फिर इशा के बाद ड्रामे करते हैं। फिर आकर मस्जिद में सो जाते हैं।

एक लड़की के बारे में हमारे साथी ने बताया। फ़ैसलाबाद थे। ड्रामे के लिए लाहौर से लाते थे। दो दिन तो गाने गाए। चौथे दिन तुम्हारे बयान की कैसेट लगाई तो उसने कहा क्या लगाया है? तो मैंने कहा अगर अच्छा न लगे तो बंद कर दूं? दस मिनट बाद बंद कर दिया तो कहा सुनाओ। फ़ैसलाबाद तक तुम्हारा बयान चलता रहा। जाने लगी तो अपनी माँ से कहने लगी मैं ड्रामा नहीं करूंगी आज के बाद। माँ ने कहा तू खाएगी कहाँ से। उसने कहा मैं भूखी मर जाऊँगी लेकिन आज के बाद ड्रामा नहीं करूंगी।,

हमारे साथी ने बताया कि वह लड़की कभी स्टेज पर नहीं आई उसके बाद। एक को ऐसे ही क़रीब किया। वह आहिस्ता-आहिस्ता पीछे हटना शुरू हुई।

पहले असमत फ़रोशी को छोड़ा। फिर बेपर्दगी को छोड़ा। फिर सिर्फ़ ड्रामे पर रह गई। पर्दा शुरू कर दिया। नमाज़ शुरू कर दी। फिर ड्रामा भी छोड़ दिया।

फिर एक दिन उसका टेलीफ़ोन आया कि आज मेरे घर में फ़ाक़ा है। लेकिन मैंने क़सम खाई है, मैं आज भूखी मर जाऊँगी लेकिन आज के बाद दरवाज़े से बाहर मेरे क़दम नहीं जाएंगे। यह

ख़ामोश इंक़लाब दिलों को पलट रहा है। तो मेरे भाईयो! यह मुबारक काम करते रहो। दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी।

मौसिक़ी रूह की ग़िज़ा नहीं

जुनैद जमशेद मेरे साथ जमाअत में निकला। ख़ानेवाल मेरा ज़िला है। एक जगह उसे बयान के लिए भेजा। वहाँ उसने अपनी मौसीक़ी के दौर में गाने गाए थे। उनको कहने लगे कि आप कहते हैं कि मौसीक़ी रूह की ग़िज़ा है। अगर मौसीक़ी रूह की ग़िज़ा होती तो मैं कभी ना छोड़ता। यह रूह को ज़ख़्मी कर देती है। यह रूह को पारा पारा कर देती है। यह दुधारी तेज़ ख़ंजर है जो रूह को ज़ख़्मी कर देता है। अगर मौसीक़ी रूह की ग़िज़ा होती तो जुनैद कभी न छोड़ता। नहीं नहीं यह शैतान का सहर है। यह शैतान का जादू है जिससे वह सहर करता है और इंसानियत को बेहयाई की आग में धकेल देता है और बेहयाई के हौज़ में नंगापन कर देता है। फिर नंगापन तहज़ीब बन जाता है। चादर से बाहर आना सक़ाफ़त बन जाता है और घुंघरूओं की छन-छन और पायल की झंकार कानों की लत का सामान बन जाता है।

शैतानी ज़िंदगी को छोड़ दो

मेरे भाईयो! इन पर बैठकर रोना चाहिए। वे हमारी बेटियाँ, हमारी बहनें हैं। वे ग़लत हाथों में परवान चढ़ीं। वे ग़लत हाथों में परवरिश पायीं। उनको किसी ने बताया भी नहीं कि यह न कर। फ़ातिमा एक बेटी थी, ज़ैनब एक बेटी थी, आएशा एक माँ थी, ख़दीजा एक माँ थी।

उन्हें बताया ही किसी ने नहीं। अगर उनको पता चल जाता तो उनके सर का बाल कोई न देखता। कहाँ अपने जिस्म को

सरेआम नचाकर उसकी दावत देना। अगर उनको पता चल जाता कि फ़ातिमा कौन थी, रुक़ैय्या कौन थी, ज़ैनब कौन थीं, सकीना कौन थी, ख़दीजा कौन थी तो तुम उनके बाल भी न देखते। कैसा ज़ुल्म है। अपनी बेटियों को नचाकर लज़्ज़त हासिल करना। फिर कोई मुसीबत आए तो अमरीका को गालियाँ देना शुरू हो जाती हैं। कोई मुसीबत आए तो बर्तानिया को गालियाँ देनी शुरू हो जाती हैं। कोई दुख आए तो यहूदियों को गालियाँ देते हैं। ईसाइयों को गालियाँ देते हैं। ठीक है वह हमारे दुश्मन हैं। शुरू से दुश्मन हैं। सांप का काम करते हैं। यह कोई नई बात नहीं है, तुम अपना बचाव करो। बिच्छु का काम डंग मारना है।

मेरे भाईयो! हमारी नस्ल नाचने लग जाए, क्यों? हमारे कारोबार सूद पर होने लगें क्यों, हमारी बेटी के सर से दुपट्टा उतर गया क्यों? नवजवानों के हाथ में गिटार आ गए, क़ुरआन क्यों न आया? ताजिर पैसे के पुजारी बन गए क्यों? सट्टा, झूठ कारोबार बन गए क्यों? दयानतदार अफ़सर को लान-तान पड़ने लगी। जो दयानतदार है उस अफ़सर का तबादला होने लगा। उसके पास बच्चे को दवाई दिलाने के लिए पैसे नहीं। हराम खाने वाले के एकाउन्ट भरे पड़े हैं।

क्या अल्लाह नहीं है? क्या सो गया है? क्या फ़ैसला नहीं करेगा? क्या क़यामत नहीं आएगी? क्या हश्र क़ायम नहीं होगा? क्या जन्नत नहीं है? क्या जहन्नम नहीं भड़कर रही? तौबा करो।

तन्हाइयों में जहन्नम का मुराक़बा किया करो

मेरे भाईयो! एक गर्म निवाले ने मुझे चार दिन से तड़पाया हुआ है। जहन्नम में ऐसा पानी पीने को दिया जाएगा कि जिसका एक लोटा सात समुन्दर में डाला जाए तो समुन्दर उबलने लग

जाएं। हम कहाँ जा रहे हैं। बस ऐसा खाना दिया जाएगा जो हलक़ में फंस जाएगा। अरे मैं कैसे समझाऊँ और कैसे बताऊँ कि हम किधर जा रहे हैं।

मेरे भाईयो! साल शुरू हो चुका है, महीना ख़त्म होने वाला है। आज सत्ताइस हो गई। तीन दिन बाक़ी हैं आओ नए साल से तौबा करें।

अल्लाह पर क़ुर्बान होना सीखिए। अल्लाह पर मर मिटना सीखो। अल्लाह की इताअत में ज़िंदगी गुज़ारना सीखो। जो पीछे गुज़री अल्लाह से माफ़ी मांग लो। मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

"सबसे थोड़ा किसका होगा? जिसके पाँव में जूता होगा। टख़ने उसके अंदर होंगे। आग का जूता होगा जिसकी वजह से दिमाग़ आग की तरह खौलेगा। तो वह कहेगा मुझे दोज़ख़ में सबसे ज़्यादा अज़ाब हो रहा है।" हालाँकि उसे सबसे थोड़ा अज़ाब हो रहा होगा।

अज़ाब का यक़ीन, फ़िक्रे रसूल और हमारी ग़फ़लत

दर्दनाक अज़ाब वाले तो ख़ून के आँसू रोएंगे। मर्द व औरत सूद खाते हैं। माँ-बाप को तड़पाते हैं, शराब पीते हैं, ज़िना करते हैं, क़त्ल करते हैं, नाचते हैं, मौसीक़ी के दिलदादा होकर गाली गलौच में फंसकर जहन्नम में गए। आख़िरी ठिकाना है।

जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने आकर कहा या रसूलुल्लाह! हाविया मुनाफ़िक़ीन, हु-त-मा में ईसाई और जहन्नम। यह कह कर ख़ामोश हो गए। आपने कहा बोलते क्यों नहीं हो?

जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, "जहन्नम में आपकी उम्मत के गुनाहगार होंगे। वे गुनाहगार जो बग़ैर तौबा के मर गए।

हमारे नबी ग़श खाकर गिर गए। वह जहन्नम। आँसू शुरू, रोना शुरू, खाना छोड़ दिया, बोलना छोड़ दिया और नमाज़ पढ़ाने आते तो रोते हुए आते और रोते हुए जाते। तीन दिन गुज़र गए न बात करें न कलाम।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने रौज़ए मुबारक पर दस्तक दी। इजाज़त चाही इजाज़त नहीं दी। हज़रत सलमानन रज़ियल्लाहु अन्हु गए। इजाज़त मांगी। इजाज़त नहीं दी। हज़रत सलमान, फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गए। बेटी अल्लाह के नबी का यह हाल है, तू जा। तुझे ज़रूरत इजाज़त मिल जाएगी। पूछ तो सही हुआ क्या है?

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा दौड़ी हुई गयीं। दरवाज़े पर दस्तक दी, पूछा कौन है?

कहा, फ़ातिमा। कहा अंदर आ जाओ। जब अंदर दाख़िल हुईं तो देखा कि हमारे नबी ज़ार व क़तार रो रहे हैं।

क्या हुआ या रसूलुल्लाह! मेरी जान क़ुर्बान। क्या हुआ या रसूलुल्लाह! क्यों रो रहे हैं? आपने कहा फ़ातिमा! मुझे जिब्राइल ने बताया कि मेरी उम्मत के मर्द व औरत जो तौबा के बग़ैर मर गए उनको जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

कितने नौजवान होंगे जिनको फ़रिश्ते पकड़ेंगे तो वे कहेंगे, हाय मेरी जवानी पर रहम करो। कितने बूढ़े होंगे जिनको फ़रिश्ते पकड़ेंगे तो वे कहेंगे, आह हमारे बुढ़ापे पर रहम करो। कितनी औरतें होंगी जिनको नंगा करके जब फ़रिश्ते घसीटेंगे तो कहेंगी, आह हमारी बेपर्दगी पर रहम करो। लेकिन उनसे कहा जाएगा जब रहमान ने रहम नहीं किया तो हम कहाँ से करें? अल्लाह तआला

हमें अज़ाबे जहन्नम से महफ़ूज़ फ़रमाए, आमीन।

अल्लाह को कुर्बानी प्यारी है

साल का शुरू है। इसलिए मुख़्तसर अरज़ करता हूँ, या अल्लाह सारे जहान के मालिक का सर कट गया और इब्ने ज़ियादा का तख़्त जम गया। शिमर ने झंडे लहराए और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे टुकड़े टुकड़े हुए।

पलीद शिमर कामयाब हो गया। देखिए पलीद इब्ने ज़ियाद कामयाब हो गया और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी आल समेत, आले रसूल समेत क़ुर्बान हो गए। ज़रा इधर देखो।

इधर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस्तिक़बाल में हैं। अली रज़ियल्लाहु अन्हु इस्तिक़बाल में हैं, हसन रज़ियल्लाहु अन्हु इस्तिक़बाल के लिए आ रहे हैं। माँ फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बाहें फैलाए खड़ी है। जन्नत आरास्ता है। जन्नत के सरदार तो आज आए हैं। सरदार के साथ तो महफ़िल सजती है। आज सारी जन्नत इंतिज़ार की रही है। एक दुल्हा तो आ चुका, आज दूसरा सरदार भी आ रहा है। देखने वालों को नज़र आ रहा है कि हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सर बुलन्द हुआ। उसका झंडा लहराया। वह तो खुद आज शिमर से ऊँचा है। उसका सर झंडे पर नहीं है। उसका सर नेज़े पर है। उसका सर खुद ऐलान कर रहा है। ख़ौला जब हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सर लेकर आया तो और रात को अपने तख़्त के नीचे सर रखा। बीवी को कहा, आज एक बड़ी चीज़ लेकर आया हूँ। बीवी ने कहा क्या लेकर आए हो?

हुसैन का सर लेकर आया हूँ। कहा तेरा बेड़ा ग़र्क़ हो जाए। लोग सोना चाँदी लेकर घर आते हैं। तू आले रसूल में हुसैन

रज़ियल्लाहु अन्हु का सर लेकर मेरे घर आया। मेरे और तेरे दर्मियान हमेंशा की जुदाई है।

अब यह छत मुझे कभी तेरे पहलू में लेटा हुआ नहीं देखेगी। रूठकर निकल गई और पड़ौस की औरत को बुलाया। आज तू मेरे साथ सो। उसने कहा मैंने देखा आसमान से एक नूर आया था जो उसके कमरे में दाख़िल हो रहा था और सफ़ेद परिन्दे कमरे का तवाफ़ कर रहे थे। चारों तरफ़ वे परिन्दे घूम रहे थे। कभी कभी अल्लाह ग़ैब से पर्दे हटा देता है।

फिर चंद दिनों के बाद इब्ने ज़ियाद का सर कटकर आया तो देखने वालों ने देखा कि नूर नहीं आया था। एक सांप आया जो इब्ने ज़ियाद के मुँह में दाख़िल हुआ और नाक से निकल गया। तीन दफ़ा मुँह में घुसा और नाक से निकल आया। यह अभी क़ब्र में जाने से पहले देखा गया। अभी वह मरदूद क़ब्र में नहीं गया। क़ब्र में गया तो उसके साथ क्या हुआ होगा?

आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दामन रंगीन करने वालों को ऐसे तो अल्लाह तआला नहीं छोड़ देंगे। काएनात का मुक़द्दस तरीन ख़ून बहाया गया।

और एक कहानी लिखी गई। इसलिए मैं कर्बला का क़िस्सा नहीं सुनाता। पैग़ाम सुनाता हूँ पैग़ाम। मुझसे क़िस्सा वैसे भी नहीं सुनाया जाता न मेरी हिम्मत है। न मेरे पास अल्फ़ाज़ हैं। न मेरे पास सब्र का इतना मज़बूत बंद है कि उसको संभाल कर मैं यह सारा क़िस्सा सुनाऊँ। इससे बड़ा इबरत का क़िस्सा कोई नहीं है।

इस क़िस्से को दस दफ़ा भी सुनकर किसी ने सूद छोड़ा? किसी ने गाना छोड़ा? किसी ने दाढ़ी मुंढवानी छोड़ी? किसी ने बेपर्दा ने पर्दा किया? किसी नाफ़रमान ने माँ के क़दम चूमे हों?

किसी ने बाप के सामने हाथ जोड़े हों? किसी ने भाई से सुलह कर ली हो? किसी ने हराम खाने वाले ने हराम छोड़ा हो।

कोई तो तौबा करता। क़िस्सा कहानी बन गया। अफ़साना बन गया और गा गा कर सुना दिया। रोने वालों ने चंद दिन रो लिया लेकिन फिर वही डगर, फिर वही रविश, वही सुबहें, वही शामें। मैं क़िस्सा नहीं कहता हूँ, मैं पैग़ाम कहता हूँ। क़िस्सा नहीं सुनाता हूँ। यह जन्नत का राही था। जन्नत मुन्तज़िर थी, जन्नत का दुल्हा था। जन्नत में आ गया। रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने, अली ज़ियल्लाहु अन्हु के साथ, हज़रत हसन के साथ, हज़रत फ़ातिमा साथ। हज़रत जाफ़र साथ और हज़रत हम्ज़ा साथ। ऊपर इस्तिक़बाल हो रहे हैं। नीचे मातम हो रहे हैं। नीचे नाकामी की दास्तानें, ऊपर कामयाबी की दास्तानें। पैग़ाम यह है कि अल्लाह पर मर मिटो। पैसे के ग़ुलाम न बनो, बीवी बच्चों के ग़ुलाम न बनो, दिरहम व दीनार के ग़ुलाम न बनो। हुकूमत नौकरी चाकरी के ग़ुलाम न बनो। वह करो जो अल्लाह तआला चाहते हैं। वह न करो जो अल्लाह तआला नापसंन्द करते हैं।

तो मैं कह रहा था खुद भी तौबा करो और औरों से भी तौबा करवाओ। अल्लाह और उसके नबी के बताए हुए रास्ते पर चलो। उनके बताए हुए हुक्मों को पूरा करो। जिन चीज़ों से अल्लाह और उसके रसूल ने मना फ़रमाया है उससे अपने आपको बचाओ। अल्लाह तआला हम सबको इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

जन्नत में अल्लाह तआला के इनामात

الحمد للهِ نحمده ونستعينهٗ ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور
انفسنا ومن سيات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضللهٗ فلا هادى له.
ونشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له ونشهد ان محمد عبده ورسوله اما بعد
فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله علىٰ بصيرة انا ومن اتبعنى ... وسبحن الله وما انا من
المشركين وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

अल्लाह को अपना बना के देखो

मेरे भाईयो! अपने अल्लाह को साथ ले लें। अल्लाह से बड़ा शफ़ीक़ कोई नहीं। अल्लाह से बड़ा मेहरबान कोई नहीं। अल्लाह से ज़्यादा मुहब्बत करने वाला कोई नहीं। माँ भी कितना कुछ सुनेगी। वह भी कहेगी बेटा बस कर। और सुनने की मुझमें ताक़त नहीं और अल्लाह तआला कहते हैं सुना, सुना सारी ज़िंदगी सुना। मैं सुनूंगा, कभी न थकूंगा। मैं दूंगा कभी न घबराऊँगा।

अल्लाह से यारी लगानी है तो मांगो और लोगों से यारी तोड़नी है तो उनसे मांगना शुरू कर दो। वे आपकी गली छोड़ जाएंगे। और अल्लाह पाक से यारी लगानी है तो उससे सवार करना शुरू

कर दो। वह आपका बन जाएगा। लोगों से जान छुड़ानी है तो उनसे क़र्ज़ मांगो। वह एक साल पूरा आपकी गली में नहीं आएगा। और अल्लाह पाक से जी लगाना है तो उससे मांगना शुरू कर दो। वह देता जाएगा कि उसके ख़ज़ानों में कमी कोई नहीं है।

क्योंकि यह ज़ख़्म रूह पर है और यह जो कुछ कर रखा है यह सिर्फ़ उसके जिस्म को नफ़ा पहुँचाने का सामान है। रूह न औरत को जाने, न शराब को जाने, न मौसीक़ी को जाने, न पेसा जाने, न हुकूमत जाने, न सियासत जाने, न सैर जाने, न हरे भरे पहाड़ जाने, न बर्फ़ानी पहाड़ जाने, न सहरा जाने, न ख़ूबसूरत वादियाँ जाने।

वह तो सिर्फ़ अल्लाह को जाने। अगर उसे अल्लाह नहीं मिला तो उसे कुछ नहीं मिला। अगर उसे अल्लाह मिल गया तो सब कुछ मिल गया। जो इंसान अपनी रूह को अल्लाह से तोड़ लेता है सारी काएनात सोना, चाँदी बनके उसके सामने ढेर कर दी जाए तो मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहा हूँ कि यह नाकाम इंसान है। यह दिल की दुनिया की वीरान इंसान है। ख़ुद अल्लाह का ऐलान सुनो ﴿الا بذكر الله تطمئن القلوب﴾ सिवाए अल्लाह की याद के कोई चीज़ नहीं जो दिल की दुनिया को चैन दे सके। भाग के देखो, दौड़ के देखो, अल्लाह से कट कर देखो, अगर कहीं चैन मिल जाए तो आके मेरा गिरेबान पकड़ना।

और अल्लाह पाक से मिलकर देख लो। उसे अपना बना के देख लो। फिर अगर रूह में कोई ख़ला रह जाए या सीने पर कोई दाग़ रह जाए, या दिल में कोई हसरत रह जाए तो फिर भी मुझे आके पकड़ना।

अल्लाह जिसे मिला उसे सब कुछ मिला। जिसे अल्लाह न मिला उसे कुछ न मिला। अल्लाह इंसान की शह रग से ज़्यादा क़रीब है और इंसान के अंदर अल्लाह की तलब ऐसे है जैसे रोटी और पानी की तलब होती है। जिसे रोटी न मिले तो बेक़रार हो जाता है या पानी न मिले तो बेक़रार हो जाता है। ऐसे ही जिस रूह को अल्लाह न मिले उसकी बेक़रारियों का सिवाए अल्लाह मिलने के कोई इलाज नहीं।

अल्लाह से दोस्ती करने का इनाम

मेरे भाईयों! इस आइन्दा कल में अल्लाह ने हक़ीक़ी ज़िंदगी को छुपा रखा है। आदमी मुल्क चाहता है ﴿واذا رايت ثم رايت نعيما وملكا كبيرا﴾ मेरा बंदे मुझसे सुलह करके आ जा तुझे ऐसा मुल्क दूंगा जिसे कोई छीन न सकेगा। जिसको फिर ज़वाल कोई नहीं। यह मुल्क तू छोड़ने वाला है। उस मुल्क को ज़वाल कोई नहीं। तुझे जवानी दूंगा ऐसी जवानी कि ﴿ان لكم ان تشبو فلا تهرموا ابدا﴾ जिसमें बुढ़ापा हर्गिज़ नहीं। तुझे ज़िंदगी दूंगा ऐसी ज़िंदगी जिसमें मौत नहीं। ﴿ان لكم ان تحيو فلا تموا توا ابدا﴾ हमेशा ज़िंदा रहो कभी मौत नहीं। तुम्हें ऐसा रिज़्क़ दूंगा जिसके पीछे फ़क़र नहीं ﴿ان لكم ان تصحو فلا تسقموا بدا﴾ तुम्हें ऐसी सेहत दूंगा कि जिसके पीछे बीमारी नहीं।

यह ज़िंदगा यहाँ नहीं बन सकती। यह ज़िंदगी अल्लाह ने आगे कल के लिए छुपा के रखी है। आदमी चाहता है मेरा सब कुछ यहीं दुनिया में पूरा हो जाए, हर जाएज़ व नाजाएज़।

अल्लाह की मुहब्बत का ज़ेवर पहन लो

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿يلبسون ثيابا خضرا من سندس واستبرق﴾

मैं तुम्हें जन्नत का रेशमी लिबास पहनाऊँगा। यहाँ मर्दों को भी शौक़ चढ़ा हुआ है। सोने की ज़ंजीरें पहनी हुई हैं, सोने के लॉकेट पहने हुए हैं, सोने की अंगूठियाँ चढ़ाई हुई हैं। यहाँ कहा औरत न बनो, मर्द बनो, तुम्हारा ज़ेवर तक़्वा है। तक़्वे का ज़ेवर पहनो, मेरी मुहब्बत का ज़ेवर पहनो, पाकदामनी का ज़ेवर पहनो, हया का ज़ेवर हपनो, सख़ावत का ज़ेवर पहनो।

﴿يحلون فيها من اساور من ذهب﴾ मैं तुम्हें सोने के कंगन पहनाऊँगा। ये सोने के ताजिरों से आप पूछें। सारे का सारा ज़ेवर खोटा है। उस वक़्त तक सोना खरा नहीं हो सकता जब तक तांबा उसमें न मिले। अल्लाह ने एक फ़रिश्ता पैदा किया है, वह बैठा हुआ ज़ेवर बना रहा है। जिस दिन मरेगा ज़ेवर बनाता बनाता मरेगा और ज़ेवर जन्नत वालों के लिए बना रहा है कि मेरे बंदे आएंगे। उन्होंने मेरी इताअत का ज़ेवर पहना। आज मैं उन्हें जन्नत का ज़ेवर पहनाऊँगा।

जिस ज़िंदगी को हम यहाँ तलाश करते हैं। यह वहाँ से हम चाहते हैं, यह वहाँ है। भाई घर आलीशान हो तो अल्लाह तआला ने कहा यह क्या घर है जो कल मिट जाएगा ख़त्म हो जाएगा।

किसरा ने महल बनाया था चालीस मील चकोर जगह में पहला हुआ था और उसे उसमें दस साल भी रहना नसीब नहीं हुआ। उसकी आँखों से सामने अल्लाह तआला ने उसको टुकड़े टुकड़े करवा दिया। आज के लोग क्या घर बनवाएंगे।

जन्नत में अल्लाह तआला के इनामात

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, तू मेरे पास आ, वह दूंगा कि ﴿لبنة من لؤلؤة بيضاء﴾ एक ईंट लगाई हुई है सफ़ेद मोती की, ﴿ولبنة﴾

﴿من ياقوتة حمراء﴾ एक ईंट लगाई हुई है सुर्ख़ याक़ूत की, ﴿ولبنة من
﴿زمردة خضراء﴾ एक ईंट लगाई हुई है सब्ज़ ज़मुर्रद की, ﴿المسك
مسك﴾ मुश्क का गारा, ﴿حشيشها الزعفران﴾ ज़ाफ़रान की घास ﴿سقفها
عرش الرحمٰن﴾ और अपने अर्श को मैंने उसकी छत बनया है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा या अल्लाह ﴿انك تقدر على
المؤمن﴾ आप मुसलमान पर बड़ी तंगी देते हैं? तो अल्लाह तआला ने जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया। जब जन्नत को देखा तो ﴿تجري من تحت الانهار﴾ बहती हुई नहरें, एक ईंट मोती की, एक ईंट याक़ूत की, एक ईंट ज़मुर्रद की, मुश्क का गारा, ज़ाफ़रान की घास और अल्लाह का अर्श उसकी छत है।

यह जन्नत का मैटीरियल है और फिर दिन में पाँच दफ़ा अल्लाह जन्नत को मुज़ैय्यन करता है। उसका हुस्न व जमाल क्या होगा? ﴿زوجنهم بحور عين﴾ हमने जन्नत की ख़ूबसूरत औरतों से उनका निकाह कर दिया।

वह औरत जो थूक सात समुन्दरों में डाल दे तो सातों समुन्दर शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएं हालाँकि उसमें थूक नहीं। थूक तो एक ऐब है लेकिन अगर वह ऐसा करे तो सातों समन्दुर शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएंगे। तो उसके बोल में क्या मिठास होगी। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कहाँ हैं वे बंदे जिन्होंने दुनिया में गाना नहीं सुना। शैतानी नग़मे नहीं सुने। शैतानी मौसिक़ी नहीं सुनी। आज वह जन्नत का राग सुनें। जन्नत का नग़मा सुनें। अल्लाह जन्नत की हूरों से फ़रमाएगा सुनाओ।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कहने लगे या अल्लाह! तेरी इज़्ज़त व जलाल की कसम अगर काफ़िर को सारा जहान भी मिल जाए और मर के दोज़ख़ में चला जाए भी चला जाए तो उसने कुछ

नहीं देखा। अगर आख़िरत ख़राब हो तो दुनिया की कामयाबी भी इतनी ही बेमाईने है जितनी नाकामी बेमाईने है। अगर आख़िरत ख़राब हो गई तो दुनिया की इज़्ज़त व ज़िल्लत एक चीज़ है। दुनिया की तवंगरी ओर फ़क़ीरी एक चीज़ है। और अगर आख़िरत बन गई तो दुनिया का फ़क्र कोई फ़क्र नहीं।

यह सब सुनकर मूसा अलैहिस्सलाम ने कहने लगे या अल्लाह! अगर मुसलमान के हाथ कटे हों और पाँव कटे हुए हों ﴾مقطوع اليدين والرجلين﴿ दोनों हाथ कटे हुए हों और पाँव कटे हुए हों और नाक ज़मीन पर घिसट रही हो। न कुछ खिलाए न पिलाए और क़यामत तक ज़िंदा रहे ﴾وعاش الدهر كله﴿ वह क़यामत तक ज़िंदा रहे लेकिन मरकर यहाँ चला जाए जो मैंने देखा है तो या अल्लाह तेरी इज़्ज़त की क़सम! उसने कोई दुख नहीं देखा।

मुसलमान को यहाँ की मौसिक़ी ने ही हराम में डाल दिया। उसे क्या ख़बर कि जन्नत की मौसिक़ी क्या है? जो गंदगी खाता रहता है उसे क्या ख़बर ज़ाफ़रान की ख़ुशबू क्या है।

एक भंगी इतर वाले की दुकान से गुज़रा तो ख़ुशबू का हल्ला चढ़ा। वह बेहोश हो के गिर गया। अब सारे इकठ्ठे हुए। क्या हुआ? उन्होंने कहा भाई बेहोश हो गया। कोई रूह केवड़ा लाओ कोई गुलाब का अर्क़ लाओ, कोई ख़मीरा लाओ। एक भंगी गुज़रा, उसने देखा यह तो मेरी बिरादरी का है। उसने कहा अरे अल्लाह के बंदो! तुम्हें क्या ख़बर पीछे हटो। वह थोड़ी सी गंदगी उठा के लाया। उसकी नाक पर जो लगाई तो वह फ़ौरन होश में आकर बैठ गया।

आज सारे मुसलमानों का यह हाल है कि जन्नत के नग़मों को भूल गया। क़ुरआन के नग़मे भूल गया। अपने को गंदगी में डुबो

दिया। सर हिला रहा है। अरे कभी तेरा सर क़ुरआन पर हिला करता था और कभी तेरे आँसू क़ुरआन पर निकला करते थे लेकिन आज तुझे शैतान ने बर्बाद कर दिया। जब तू यहाँ अपने आपको हराम से नहीं बचाएगा तो अल्लाह तुझे अपनी ज़ाते आली का दीदार कैसे कराएगा।

जन्नत वालों से अल्लाह तआला की हमकलामी

अल्लाह तआला जन्नत वालों से पूछेंगे ﴿يا اهل الجنة﴾ दोज़ख़ वालों से कहेंगे ﴿يا اهل النار﴾ सर उठाएंगे। अल्लाह तआला जन्नत वालों से पूछेंगे ﴿كم لبثتم في الارض عدد سنين﴾ दुनिया में कितना रहकर आए? ﴿قالو لبثنا يوم او بعض يوم﴾ या अल्लाह एक दिन या आधा दिन। साठ साल, सत्तर साल नहीं, हज़ार साल नहीं। ऐ अल्लाह आधा दिन। अच्छा वाह ﴿نعم ما اجرتم في يوم او بعض يوم﴾ भाई तुमने इस दिन या आधे दिन में खरा सौदा किया। ﴿ورحمتي وكرامتي وجنتي﴾ तुमने आधे दिन की तकलीफ़ को बर्दाश्त करके मेरी जन्नत को ले लिया। मेरी रहमत को ले लिया, मेरी मेहमानवाज़ी को ले लिया। जाओ मज़े करो। तेरे न पीछे मौत आएगी, न बुढ़ापा न ग़म आएगा, न परेशानी न दुख आएगा, तुझे आज़ादी मिल गई। कहते हैं कि अगर क़यामत के दिन मौत होती तो ये खुशी से मर जाते।

जहन्नम वालों से अल्लाह तआला की हमकलामी

फिर जहन्नम वालों से पूछा जाएगा। वे कहेंगे ﴿يوم او بعض يوم﴾ ऐ अल्लाह एक दिन या आधा दिन तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿بئس ما اجرتم في يوم او بعض يوم﴾ ऐ बंदो! ऐ औरतो! ऐ मर्दो! तुम कितना खोटा सौदा करके आए हो। कितना ग़लत सौदा करके

आए हो। सिर्फ़ चार दिन के नाच कूद की ख़ातिर, तुमने मेरे ग़ज़ब को मेरी आग को, मेरी जहन्नम को ख़रीदा। जाओ तुम्हें हमेशा यहीं रहना है। तुम खुशियाँ भूल जाओ। जवानी भूल जाओ, राहत भूल जाओ।

﴿وهم يسترخون فيها﴾ जाओ चले जाओ चीख़ो और चिल्लाओ। ﴿لهم فيها زفير و شهيق﴾ तुम्हें चीख़ना है या चिल्लाना है। ﴿سواء علينا اجزعنا ام صبرنا﴾ अब चाहे सब्र करो चाहे वावेला करो। मेरे दरवाज़े तुम पर बंद हैं। कहते हैं कि अगर उस दिन मौत होती तो ये ग़म से मर जाते।

और ऊपर दर्जे की जो जन्नतुल फ़िरदौस है उसकी हूरों का हुस्न व जमाल और है नीचे का और है, ऊपर का और है। एक खोखा लगता है एक दुकान बनाता है। एक फ़ैक्ट्री बनाता है, एक कारख़ाना बनाता है। हर एक का नफ़ा अलग अलग है कि नहीं।

ऐसे ही जन्नत की दौड़ है। एक अपने नमाज़ रोज़े की जन्नत है। यह सबसे छोटी जन्नत है। एक उससे बड़ी जन्नत है कि अपना रोज़ा नमाज़ करो, साथ अपने पड़ौस को भी कभी-कभी कह लो। यह थोड़ी सी इससे बड़ी जन्नत है।

जन्नतुल फ़िरदौस

और एक मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जन्नत जो जन्नतुल फ़िरदौस है। जो सारी दुनिया में कलिमा फैलाने का ग़म खाएगा और सारी दुनिया में दीन फैलाने के नीयत करेगा अल्लाह तआला कह रहे हैं कि मैं तुझे उस जन्नत में ले जाऊँगा जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया है।

जन्नतुल फ़िरदौस को अल्लाह ने अपने हाथ से बनाया है। किससे बनाया भाई? अपने हाथ से ﴿خلق الفردوس بيده﴾ फ़िरदौस

को हाथ से बनाया ﴿وشق فيها انهارها﴾ नहरें चलायीं। ﴿فيها اشجارها﴾ दरख़्त लगाए।

यह तूबा का दरख़्त, जन्नतुल-फ़िरदौस में है और उसमें महल्लात हैं जो नीचे की जन्नतें हैं उनके महल्लात सोन, चाँदी के हैं और जो जन्नतुल फ़िरदौस है उसके महल्लात भी सोने चाँदी के हैं लेकिन एक ख़ास किस्म फ़िरदौस में जो पूरी जन्नत में नहीं है।

﴿لبنة من لولوة بيضاء﴾ एक ईंट सफ़ेद मोती की है ﴿لبنة من ياقوة حمراء﴾ एक ईंट सुर्ख़ याक़ूत की है, ﴿لبنة من زمردة خضراء﴾ तीसरी ईंट सब्ज़ ज़मुर्रद की है, ﴿ملاتها المسك﴾ कस्तूरी का गारा है, ﴿حصائبها اللؤلؤ﴾ और उस पर मोती जड़े हुए हैं, ﴿حشيها الزعفران﴾ ज़ाफ़रान की घास के प्लाट हैं, ﴿وسقفها عرش الرحمن﴾ अल्लाह का अर्श उसकी छत है।

कहाँ भाग गया मुसलमान? गारे मिट्टी के मकानों पर सारी ताक़त लगा दी। सहाबा किराम ने क्यों न बड़े-बड़े नक़्शे खड़े किए? उन्हें अल्लाह के अर्श वाले महल नज़र आ रहे थे।

जन्नतुल फ़िरदौस का दरख़्त

हदीस में आता है इस जन्नतुल फ़िरदौस में एक दरख़्त है। उसके नीचे से निकलता है। सुर्ख़ याक़ूत का घोड़ा और शाख़ों से निकलते हैं जोड़े। जब वहाँ जाएगा और उस सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े पर सवार होकर ओर उस जोड़े को पहनकर हवा में उड़ेगा तो उसके चेहरे का नूर सारी जन्नत में फैलता चला जाएगा और नीचे वाले उसकी शान को देखकर कहेंगे ﴿بم بلغ﴾ या अल्लाह इतना बड़ा दर्जा इसे क्यों दिया? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿لانك تقعد عند اهلك في البيت وهو يجاهد في سبيل الله﴾ तू अपने घर में बीवी के पास बैठता था और यह मेरे रास्ते में दर-ब-दर फिरता था।

इसलिए मैंने इसको यह दर्जा दिया है। बैठने वाले और फिरने वाले बराबर नहीं हो सकते।

जन्नत की दिलकश नहरें

जन्नत में एक और नहर ﴿اسمه هرول﴾ उसका नाम हरूल है। उसके दोनों किनारों पर ख़ूबसूरत लड़कियाँ खड़ी हैं जो हर वक़्त जन्नत वालों के लिए गाती रहती हैं। अल्लाह की तस्बीह और हम्द के मीठे बोल से सारी जन्नत गूंजती है।

फिर एक और नहर है उसका नाम 'रय्यान' है। उस पर मुरजान का शहर है जिसके सत्तर हज़ार सोने चाँदी के दरवाज़े हैं जो अल्लाह तआला हाफ़िज़ क़ुरआन को अता फ़रमाएंगे।

फिर एक नहर और है उसका नाम 'बेदख़' है जो बंद है मोतियों से। उसके अंदर मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर मिलता है और ऊपर अल्लाह तआला के नूर की तजल्ली पड़ती है तो उसमें से हूर निकलकर बाहर आ जाती है। ऐसी जन्नत हे जो नहरों से भरी हुई है। फिर उन नहरों के साथ क्या है? ﴿عينان تجريان﴾ चश्मे बहते हुए, ﴿عينان نضاختن﴾ चश्मे ऊपर उठते हुए। कोई चश्मा ऊपर जाएगा फिर नीचे आएगा। कोई चश्मा बह रहा है, कोई ऊपर जा रहा है।

अल्लाह तआला ने उन नहरों के किनारों पर ख़ूबसूरत ख़ेमे लगा दिए और ख़ेमा सात मील लंबा चौड़ा एक-एक। यह ख़ेमा कपड़े का नहीं, ऊन का नहीं, खाल का नहीं। यह ख़ेमा मोती का है जिस में जोड़ भी कोई नहीं। सात मील लंबा चौड़ा ख़ेमा है जिनमें जन्नतियों की बीवियाँ बैठी हुई हैं। अगली बात क्या फ़रमा रहे हैं :

﴿ومساكن طيبة فى جنت عدن﴾ तुम्हें ऐसी जन्नत में पहुँचाऊँगा जिसका नाम 'अदन' है। और उसमें ऐसे घर अता फ़रमाऊँगा जो बड़े पाकीज़ा ख़ूबसूरत हैं।

एक आदमी ने हज़रत अबूहैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि मसाकिना तैय्यबा क्या होते हैं?

उन्होंने फरमाया जन्नत में एक घर है ﴿له سبعون دارا﴾ एक बड़ा जन्नत का महल है जिसके अंदर ﴿سبعون دار من ياقوته حمراء﴾ सत्तर हवेलियाँ हैं सुर्ख़ याक़ूत की। ﴿فى كل دار سبعون بيتا من زمردة خضراء﴾ फिर हर हवेली में सत्तर कमरे हैं, सब्ज़ ज़मुर्रद के। ﴿فى كل بيت سبعون سريرا﴾ फिर हर कमरे में सत्तर चारपाईयाँ हैं। ﴿على كل سرير سبعون فراشا﴾ हर चारपाई इतनी लंबी है कि उस पर सत्तर बिस्तर लगे हुए हैं, ﴿على كل فراش جارية﴾ हर बिस्तर पर एक जन्नत की हूर बैठी हुई है। वह ऐसी ख़ूबसूरत है कि सूरत को उंगली दिखा दे तो सूरज नज़र न आए। समुन्दर में थूक डाले तो समुन्दर मीठे हो जाएं, मुर्दे से बात करे तो मुर्दा ज़िंदा हो जाए। सत्तर जोड़ों में उसका जिस्म नज़र आता है। जो बीमार न हो, बुढ़ापा न हो, ग़म न हो, परेशानी न आए, पेशाब नहीं, पाख़ाना नहीं, हैज़ नहीं और उसको अल्लाह तआला ने गारे मिट्टी से नहीं बनाया।

फिर हर कमरे में सत्तर दस्तरख़ान हैं। हर दस्तरख़ान पर सत्तर क़िस्म के खाने हैं। हर कमरे में सत्तर नौकरानियाँ है। इतना लंबा चौड़ा एक घर और फिर अल्लाह तआला क्या ताक़त देगा ईमान वाले को, दीन की मुहब्बत करने वाले को :

ان فى الجنة نهراء اسمه ريان عليه مدينة من مرجان، له سبعون الف باب

من ذهب وضة لحامل القرآن.

जन्नत में एक नहर है जिसका नाम 'रय्यान' है जिस पर एक मरजान का शहर है जिसके सत्तर हज़ार सोने चाँदी के दरवाज़े हैं जो हाफ़िज़ क़ुरआन को दिया जाएगा।

लोग कहते हैं 'मुल्ला' बनाएंगे तो हमारे बेटे को क्या मिलेगा? और अगर ताजिर बने तो पता नहीं क्या कुछ कमाएगा। अगर नबी के क़ुरआन को सीने में लेगा तो इतना बड़ा महल मिलेगा।

﴿ان فی الجنة نهرا خافتاه طول الجنة﴾ जन्नत में एक नहर है जो जन्नतुल फ़िरदौस से चलते चलते आख़िरी जन्नत तक आ जाती है। उसके किनारे पर ख़ूबसूरत जन्नत की लड़कियाँ खड़ी हैं जिनके हाथों में जन्नत के साज़ हैं और वह कोई काम नहीं करतीं सिर्फ़ जन्नत वालों के लिए नग़मे गाती रहती हैं। मद्‌हम मौसीक़ी जन्नत में चलती रहती है। यहाँ हराम से बच जाओ, वहाँ अल्लाह तआला तुझे ऐसी सुनाएगा कि कभी सुनी नहीं होगी। जहन्नम में लपक और भड़क है और जन्नत की ख़ुशूब और महक है।

जन्नत की पुकार

जन्नत कह रही है :

﴿یا اللہ تعبت اثماری واتردت انهاری واشفقت الی اولیای فعجل الی باهلی﴾

ऐ अल्लाह! मेरे फल पक गए, मेरी नहरों का पानी छलक पड़ा, मेरे जाम, मेरी शराब, मेरा दूध, मेरी नहरें, मेरा शहद, मेरा लिबास, मेरा ज़ेवर मेरा सोना, मेरी चाँदी, मेरी मसहरियाँ, मेरे महल इंतिज़ार मे हैं। मौला! अपने नेक बंदे और बंदियों को जल्दी भेज दे।

जहन्नम की पुकार

और इधर जहन्नम पुकार रही है :

﴿اللهم بعد قعری، وعظم جمری، وشتد حری.﴾

ऐ अल्लाह! मेरे अंगारे बड़े मोटे हो गए, मेरी ग़ारें बड़ी गहरी हो गयीं। मेरी आग बड़ी तेज़ हो गए।

हाय! हाय! हम बड़ा धोका खा गए। भाई बहुत धोका खा गए। इब्ने क़य्यिम रह० फ़रमाते हैं, इससे भी बड़ा कोई लुटा हुआ मुसाफ़िर जो जन्नत बेच दें और दुनिया ख़रीद ले। इससे बड़ा भी होगा कोई मज़लूम।

उन्होंने लफ़्ज़ और बोला। मैंने उसको तब्दील कर दिया ताकि आप नाराज़ न हो जाएं क्योंकि हम सारे ऐसे ही हैं जिन्होंने जन्नत बेच दी और दुनिया ख़रीद ली।

हम बड़ा धोका खा गए

तो इससे भी बड़ा कोई महरूम होगा कि जो जन्नत की हूरों का सौदा कर दे और दुनिया की बेवफ़ा औरतों को ख़रीद ले। उन पाकीज़ा औरतों को छोड़कर यहाँ की औरतों के पीछे भागता फिरे। और कितना नादान है जन्नत के आलीशान घरों को छोड़कर इस दुनिया के चंद घरों के सौदे कर ले और वहाँ की सलतनतों को धुतकार कर यहाँ के चंद दिनों की हुकूमतों को ख़रीद ले। इससे बड़ा लुटा हुआ मुसाफ़िर कोई नहीं है। हम बड़ा धोका खा गए।

मेरी जन्नत में तो नहीं थी

तो अल्लाह एक लड़की भेजेगा। यह इस तरह बैठा हुआ होगा तो उसके कंधे पर हाथ मारेगी तो उसको ऐसे मुड़कर देखेगा। जब उसको यों देखेगा। उसका ऐसा हुस्न होगा कि वह पूरा ही मुड़ जाएगा और उसे अपना चेहरा उसके चेहरे में नज़र आएगा। वह कहेगी ﴾يا ولي الله ما لك فينا من رغبة﴿ आपको मेरा शौक़ कोई नहीं?

वह कहेगा क्यों नहीं लेकिन तू है कौन?

यह सवाल इस बात की अलामत है कि यह जो अल्लाह ने उसे पहले ही जन्नत की बीवियाँ अता कर दी हैं उस पर ज़ाएद है। और आ गया है तोहफ़ा। तू कौन है? मेरी जन्नत में तो नहीं थी। तो वह जवाब देगी मैं उनमें से हूँ जिनके बारे में रब ने कहा है ﴿ولدينا مزيد﴾ मेरे बंदे तुझे मिलता ही रहेगा तो आ तो सही। ये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसें बता रहा हूँ। ﴿ياى بنان تعاطيه﴾ तुम्हें ख़बर है मैं कौन हूँ?

जन्नत की औरत

हाथों से उसे गले लगाएगी। जन्नत की औरत की उंगली का एक पोरा सूरज के सामने आ जाए तो सूरज ऐसे ग़ुरूब हो जाए जैसे सूरज के सामने सितारे ग़ुरूब होते हैं। अगर जन्नत की औरत सात समुन्दर में थूक डाल दे ﴿لكانت اعلى من العسل﴾ तो वह शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएं। एक जन्नत का नग़मा निकलेगा और जन्नती औरतें दरवाज़े पर खड़े होकर इस्तिक़बाल करेंगी और मिलकर यह गीत गाएंगी :

الا ونحن الخالدات فلا نموت ابدا

ونحن الراضيات فلا نسخط ابدا

ونحن الناعمات فلا نبئس ابدا

ونحن المقيمات فلا نرحل ابدا

طوبى لمن كان وكنا به

हम हमेशा ज़िंदा अब मौत नहीं, हम पर हमेशा की जवानी अब बुढ़ापा नहीं, हम हमेशा सेहतमंद अब बीमारी नहीं, हमारा

हमेशा का मिलाप अब जुदाई नहीं। हमारी हमेशा की सुलह अब कभी लड़ाई नहीं।

उनको सीने से लगाएंगी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें किन हाथों से सीने से लगाएंगी? जो मुश्क से बनी, अंबर से बनी, ज़ाफ़रान से बनी, काफ़ूर से बनी। अगर वह मुर्दे से बात करें तो वह ज़िंदा हो जाए। और ज़िंदों से बात करें तो कलेजे फट जाएं। दुपट्टे को हवा में लहराएं तो सारी काएनात में ख़ुशबू फैल जाए। एक बाल तोड़कर ज़मीन पर डाल दें तो सारा जहान रौशन हो जाए। जब वह बात करे तो पूरी जन्नत में घंटियाँ बजने लग जाएं और जब वह चलती है और एक क़दम उठाती है तो उसके पूरे वजूद में से एक लाख क़िस्म के नाज़ व अंदाज़ ज़ाहिर होते हैं, नुमायाँ होते हैं।

उसका नख़रा ऐसा, उसका नाज़ ऐसा, उसका अंदाज़ ऐसा कि एक क़दम पर एक लाख क़िस्म के नाज़ व नख़रे दिखाती है। जब वह सामने आती है तो चेहरा सामने होता है, जब वह पीठ फेरती है तो भी चेहरा सामने होता है। उसका चेहरा नज़रों से ग़ायब नहीं होता। चाहे सामने हो, चाहे पीठ फेरे और सत्तर जोड़े, सत्तर जोड़ों में चमकता जिस्म चाँदी की तरह नज़र आता है। अल्लाह ने कहा ज़िना न करो। अगर कोई पाबन्दी लगाई है तो उस पाबन्दी का एवज़ यह देना चाहते हैं।

﴿وزوجنهم بحور عين﴾ अब मैं तेरी उन लड़कियों से शादी करता हूँ कि जिनको देखने में तेरे चालीस साल गुज़र जाएंगे। मेरे रब की क़सम! पहली नज़र पड़ेगी और चालीस साल देखता रहेगा और उसकी पलक झपक नहीं सकती, नज़र लौट नहीं सकती, दाएं बाएं देख नहीं सकता। चालीस साल देखने में गुम हो जाएगा। ऐसे हुस्न के नक़्शे और ऐसे शाहकार।

﴿عُرُبًا اَتْرَابًا وَكَوَاعِبَ اَتْرَابًا﴾ याक़ूत व मरजान की तरह, ﴿لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ﴾ न इंसान ने छुआ न जिन ने छुआ। फिर अल्लाह तआला कहते हैं ﴿فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ﴾ अब भी मेरी नेमतों को झुठलाते हो। मैं तुम्हारा क्या इलाज करूं?

जन्नत में अल्लाह ऐसी ताक़त दे देगा कि नींद ख़त्म हो जाएगी। आँखें हर वक़्त देखती रहेंगी। दुनिया में हराम नहीं देखा। मर्दों से कहा नज़रें नीची रखो, औरतों से कहा नज़रें नीची रखो।

﴿قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ﴾ ऐ मेरे बंदो! नज़रें झुकाया करो, ﴿قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ﴾ ऐ मेरी बंदियां! नज़रें झुकाकर चला करो। उसके बदले क्या मिलेगा? कहा उसके बदले तुझे जन्नत के नज़ारे दिखाऊँगा।

जन्नत और उसकी हूरें

हदीस में आता है कि एक जन्नती जन्नत में बैठा होगा और हाथ को ठोड़ी के नीचे रखा होगा। अल्लाह तआला उसके सामने जन्नत का एक मंज़र खोलेगा। सत्तर बरस गुज़र जाएंगे और उसको अपना पहलू बदलना भूल जाएगा। सत्तर साल में यहाँ क्या क्या इंक़लाब आ जाते हैं और जन्नत का एक दिन हज़ार साल के बराबर होगा। एक हफ़्ता सात हज़ार साल में पूरा होगा लेकिन वहाँ वक़्त का गुज़रना महसूस नहीं होगा।

चूँकि टाइम आफ़ होगा लेकिन अल्लाह तआला के हिसाब में हज़ार बरस का दिन होगा और हमें लगेगा जेसे एक मिनट गुज़र गया। मियाँ-बीवी एक दूसरे को देखेंगे। ख़ाविन्द का ऐसा हुस्न होगा कि बीवी ख़ाविन्द को देखेगी चालीस साल तक देखती रहेगी। उकसे देखने का शौक़ पूरा नहीं होगा। मर्द अपनी बीवी

को देखेगा चालीस साल तक देखता रहेगा। उसके देखने का शौक़ पूरा नहीं होगा।

कहा यह तो सारे छोटे शौक़ थे। फिर अल्लाह तआला अपने चेहरे से पर्दा हटाएंगे। दीदार कराएंगे। यह फ़िरदौस का महल है और उसकी हूर है ﴿اسمها لاعبه﴾ जिसका नाम लाएबा है। ﴿خلقت من اربعة اشياء﴾ चार चीज़ों से पैदा किया, कौनसी चार?

मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर। उसमें आबे हयात डाला। आबे हयात डालकर कहा खड़ी हो जा। वह खड़ी हुई और उसका जमाल ऐसा और हुस्न ऐसा कि जन्नत वाला जब उसे देखेगा, अगर मौत न मिट गई होती तो उसके हुस्न को देखकर मर जाता।

﴿لولا ان الله قضى لاهل الجنة لا يموتو الموت من حسنها وجمالها﴾

ऐसा जमाल कि देखकर मर जाता लेकिन मौत अब ख़त्म हो चुकी है और तो और जन्नत की हूरें इसकी आशिक़ हैं।

﴿جميع الحور العين عشاق لها﴾ यह मैं आपको अपनी तरफ़ से अरबी नहीं बता रहा। यह मैं आपको हदीस के अल्फ़ाज़ बता रहा हूँ। ﴿جميع الحور العين عشاق لها﴾ सारी जन्नत की हूरें भी इसकी आशिक़ हैं। उसके कंधे पर हाथ मारती हैं ﴿يا لاعبه لو يعلم الطالبون لو جدوا اليك﴾ ऐ लाएबा! अगर तेरे हुस्न व जमाल का लोगों को पता चल जाए तो तुझे हासिल करने के लिए सब कुछ लुटा दें। ﴿ومكتوب في نحرها﴾ यह एक रिवायत है कि उसकी गर्दन पर लिखा हुआ है ﴿مكتوب بين عينيه﴾ यह दूसरी रिवायत है कि उसकी आँखों के दर्मियान लिखा हुआ है ﴿من كان يردان يكون له مثلي﴾ जो यह चाहता है कि मुझे हासिल करे ﴿فليعمل برضاء ربي﴾ मेरे रब को राज़ी करके आए। मेरे रब के हुक्म को पूरा करके आए। एक वक़्त आने वाला है कि पाकदामन जन्नत की ख़ूबसूरत हूरों के

साथ होगा। और अपनी जवानी को गंदा करने वाला, ज़िना की गंदगी से दाग़दार करने वाला जहन्नम में कढ़वे पानियों में ग़ोते लगा रहा होगा।

एक वक़्त आएगा कि आज शराब पीने वाला जहन्नमियों की गंदगी को पी रहा होगा और आज का होंठ बंद करने वाला उनको उनका रब खुद पिला रहा होगा ﴿وسقهم ربهم شرابا طهورا﴾ एक वक़्त आएगा अपनी नज़रों को आवारा करने वाला, अपनी आँख में लोहे की गड़ती हुई मेख़ें देखेगा और एक वक़्त आएगा कि अपनी नज़रों को झुकाने वला अपने प्यारे अल्लाह के दीदार में मशग़ूल होगा। जो आँख बेहया हो उसे क्यों अल्लाह तआला का दीदार नसीब हो।

हूर को देखना कौन सी बड़ी बात है। हूर क्या चीज़ है। मैं उससे आगे की सुना रहा हूँ, हूर को बनाने वाले को भी आँख देखेगी। क्या अंदाज़ से देखेगी?

﴿وان فى الجنة حور﴾ और जन्नत में एक हूर है, ﴿اسمها عيناء﴾ उसका नाम ऐना है। ﴿عن يمينها سبعون الف خادم وعن يسارها سبعون الف خادم﴾ उसके दाएं तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम और उसके बाएं तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम। एक लाख चालीस हज़ार ख़ादिमों में रह के कहती है ﴿اين الآ امرون بالمعروف والناهون عن المنكر﴾ कहाँ है भलाइयों को फैलाने वाले, बुराइयों को मिटाने वाले?

ऐसी-ऐसी बीवियाँ अल्लाह तआला ने तैयार कर रखी हैं।

خيرات حسان، حور مقصورات فى الخيام، لم يطمثهن قبلهم ولا جان

فباى الاء ربكما تكذبان.

वह तुम्हारी बीवियाँ हैं जिन्हें इंसान ने छुआ नहीं, जिन्न ने

छुआ नहीं। देखा नहीं, क़रीब नहीं आया, फटकने नहीं पाया, कुँवारी हैं और तेरे क़रीब आने के बाद भी हमेशा कुँवारी रहेंगी। एक नज़र में चालीस बरस की और एक मुआनक़ा सत्तर बरस का होगा और जन्नती जितना उसके क़रीब जाएगा ﴿انا انشانهن انشاء فجعلنهن ابكارا﴾ वो हमेशा कुँवारियाँ रहेंगी। उनका कुँवारापन कभी टूटेगा नहीं।

बहिश्त की हूरों की बातें

मरी में हमारे एक दोस्त ने ख़्वाब में एक हूर देखी तो तीन महीने तक बेहोश रहा। सारे डाक्टरों ने पूछा कि क्या हुआ तो कहा कि हूर देखी है और कुछ नहीं। सच्ची बात है। जब ख़्वाब में नशा तारी हो गया तो वैसे देख लें तो क्या होगा? इसीलिए उधार रखना पड़ा। जिस हूर की उंगली सूरज नहीं देख सकता। उस हूर के चेहरे को हम कैसे देख सकते हैं।

हूर के हुस्न को देखकर जिब्राइल अलैहिस्सलाम भी धोके में आ गए

जिब्राइल अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला ने कहा कि जाओ मेरी जन्नत को देख लो। जब वह आए जन्नत को देखने के लिए तो नूर की तजल्ली पड़ी तो कहा सुब्हानअल्लाह आज तो अल्लाह तआला का दीदार हो गया। सज्दे में चले गए। सिदरतुल मुन्तहा तक जिब्राइल अलैहिस्सलाम की पहुँच है। उससे आगे अल्लाह तआला के अलावा किसी को नहीं पता। वहाँ हर वक़्त अल्लाह तआला की तजल्ली पड़ती है। लेकिन जन्नत की तजल्ली देखी तो कहा सुब्हानअल्लाह आज तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीदार हो गया और सज्दे में गिर गए।

आवाज़ आई ऐ रूहुल अमीन! कहाँ गिर गया। सर उठाकर तो देख। जब सर उठाया तो जन्नती की हूर मुस्करा रही है और उसके दांतों से जो चमक फूट-फूट के निकल रही थी उसे जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने समझा कि अल्लाह तआला का दीदार हो गया।

तो अब बताएं दुनिया में जन्नत कैसे मिलेगी? कहने लगे ﴿سبحان الذی خلقك﴾ कुर्बान जाइए उस पर जिसने तुझे पैदा किया। कहने लगी पता भी है कि मैं किसकी हूँ? कहा नहीं ﴿لمن الرمرضاة الله على هو﴾ मैं उसकी हूँ जो अपनी मर्ज़ी को छोड़कर अल्लाह की मर्ज़ी में लग जाए।

दुनिया की औरत अच्छी या हूर?

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया की औरत अच्छी है या जन्नत की हूर? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿بل نساء الدنيا ام سلمه﴾ ऐ उम्मे सलमा! जन्नत की औरत से दुनिया की औरत बहुत आला और अरफ़अ है। उन्होंने पूछा या रसूलुल्लाह! ﴿بم﴾ किस वजह से? यह सवाल क्यों किया कि जन्नत की हूर तो मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान और क़ाफ़ूर से बनी हैं। हम किससे बने? आग, पानी, मिट्टी, हवा। हमारा माद्दा अदना हे उनका माद्दा आला है। तो कहा या रसूलुल्लाह! वो अच्छी के हम अच्छे? फ़रमाया ﴿بل نساء الدنيا﴾ बल्कि दुनिया की औरत। कहा ﴿بم﴾ क्यों या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम? आपने फ़रमाया ﴿بصلاتهن﴾ उनकी नमाज़ की वजह से, ﴿وعبادتهن﴾ और उनकी फ़रमांबरदारी की वजह से, ﴿وصيامهن﴾ और उनके रोज़ों की वजह से।

नमाज़, रोज़ा, इबादत एक बड़ा जामेअ लफ़्ज़ है जिसका मतलब है चौबीस घंटे अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी में रहना।

﴿الِبس اللّٰه وجوههن النور﴾ अल्लाह तआला उनके चेहरों को नूरानी बनाएगा। ﴿اجسادهن الحرير﴾ उनके जिस्म को रेशम पहनाएगा। सूरज की तरह चमकते चेहरे देगा। ﴿صفر الحلى﴾ ख़ालिस सोने के ज़ेवर पहनाएगा, ﴿صفر الحلل﴾ ख़ालिस रेशम के जोड़े पहनाएगा। ﴿مجامر هن العود﴾ और उनकी अंगीठियों में ऊद को खुशबू के लिए जलाया जाएगा। ﴿امشاتهن الذهب﴾ उनके बालों में सोने की कंघी होगी। और जन्नत की हूर पर दुनिया की औरत को अल्लाह सत्तर हज़ार गुना ज़्यादा हुस्न व जमाल अता फ़रमाएगा और वे कहेंगी।

जन्नत की हूर का फ़ख़्र

نحن بنات الذل والشكل والبهاء ومسكننا فى الفردوس المخلد.

जन्नती की हूर फ़ख़्र कर रही है कि हम हुस्न वाली, जमाल वाली, जलाल वाली और जन्नत में रहने वाली। हमने मौत कोई नहीं देखी। ﴿انست التى انشئت﴾ और तू क्या है जो मिट्टी से बनी। ﴿وما واك مرقد﴾ और तू क्या जो क़ब्र की मिट्टी में मिट्टी होकर हम तक पहुँची। जन्नती की हूरों का यह फ़ख़्र है कि हमने ज़िंदगीदेखी, मौत नहीं देखी, जवानी देखी बुढ़ापा नहीं देखा, हुस्न देखा, बदसूरती नहीं देखी और तुम मिट्टी में बनी, मिट्टी में गयीं, मिट्टी से निकलकर आयीं।

वह इसके जवाब में कहेंगी ﴿نحن المصليات فما صلتين﴾ हमने नमाज़ें पढ़ीं तुमने नमाज़ें नहीं पढ़ीं, ﴿نحن الصائمات فما صمتن﴾ हमने

रोज़े रखे तुमने रोज़े नहीं रखे, ﴿ونحن المتصدقات فما تصدقتن﴾ हमने अल्लाह के नाम ख़र्च किया तुमने ख़र्च नहीं किया। ﴿ونحن المتوضئات فما توضئتن﴾ हमने अल्लाह के लिए वुज़ू किया तुमने वुज़ू नहीं किया।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं ﴿فغلبهن﴾ ईमान वाली औरत जन्नत की औरतों पर इस बिना पर ग़ालिब आ जाएगी।

एक नज़र ने मुझे बेख़ुद कर दिया

एक दफ़ा एक जमाअत अल्लाह के रास्ते में जाने के लिए तैयार हो रही थी। मुल्के शाम में एक बुज़ुर्ग अल्लाह के रास्ते में निकलने के लिए तर्ग़ीब दे रहे थे और उनको तैयार कर रहे थे कि अल्लाह ने जन्नत दे दी और जान व माल ले लिया। बोलो कौन तैयार है? एक नवजवान खड़ा हो गया। उसने कहा इस मेहनत के बदले मुझे जन्नत मिलेगी? कहा बिल्कुल मिलेगी। फिर मैं तैयार हूँ आपके साथ चलूंगा। वह बड़ा ख़ूबसूरत सोलह सत्रह साल का नौजवान उनके साथ निकल गया। उस ज़माने में तो भाई बोल सुनते ही खड़े हो जाते थे। अब तो तीन-तीन घंटे के बयान के बाद चिल्ला भी मुश्किल से देते हैं। उस वक़्त तो दस मिनट की बात हुई। वह गए और जान भी क़ुर्बान कर दी।

अब चलते-चलते अल्लाह के रास्ते में चलते फिरते वतन से हज़ारों किलोमीटर दूर निकल गए। वहाँ काफ़िरों के साथ जिहाद किया। तो वह घोड़े पर सवार था। उसको नींद आ गई। उसकी जो आँख खुली तो कहने लगा ﴿واشوقاه للعيناء مرضية﴾ कि मैं तो ऐना मर्ज़िया के पास जाना चाहता हूँ।

लोगों ने कहा यह तो पागल हो गया। लड़के का दिमाग़ ख़राब हो गया। वह घोड़ा दौड़ाता हुआ (लश्कर के बड़े बुज़ुर्ग थे शेख़ अब्दुल वाहिद रह०) उनके पास आ गया कि मुझे तो ऐना का शौक़ लग गया है। अब मैं दुनिया में नहीं रहना चाहता। थोड़ी सी झलक अल्लाह ने दिखा दी। उन्होंने कहा बेटा मुझे भी तो बता यह क्या है?

उसने कहा मैं घोड़े पर सवार था तो मुझे नींद आ गई। नींद में मैंने ख़्वाब में देखा कि एक आदमी कह रहा है कि चलो तुम्हें ऐना के पास ले चलूँ। मैंने कहा ले चलो। उसने मेरा हाथ पकड़ा और कए बाग़ में ले गया। देखा तो जन्नत में पानी की नहर है। उसके किनारे पर ख़ूबसूरत लड़कियाँ हैं। वे ऐसी लड़कियाँ हैं जिनके हुस्न व जमाल को देखकर कोई तारीफ़ नहीं कर सकता। उन्होंने मुझे देखा तो उन्होंने मुझसे कहा ﴿مرحبا بزوج العيناء﴾ यह लो भाई ऐना का ख़ाविन्द आ गया। तो मैंने उनको सलाम किया। मैंने उनसे पूछा ﴿ايتكن العيناء﴾ तुम में ऐना है कौन? तो उन्होंने कहा ﴿نحن خدم لها﴾ हम तो उसकी नौकरानियाँ हैं। हम में कोई ऐना नहीं। आप आगे जाएं।

मैं आगे गया। देखा तो वहाँ की नहर चल रही थी और उस नहर पर ऐसी लड़कियाँ खड़ी थीं जो पहले वालियों से ज़्यादा ख़ूबसूरत थीं जिनको देखकर आदमी फ़ितने में पड़ जाए। ऐसा हुस्न था कि पिछलियों को भी मैंने भुला दिया। उन्होंने मुझे देखा तो फिर मुझे कहा ﴿مرحبا بزوج العيناء﴾ यह तो ऐना का घरवाला आ गया। मैंने उनको सलाम करके पूछा ﴿ايتكن العيناء﴾ तुम में से ऐना है कौन? तो उन्होंने कहा हम कहाँ ऐना। हम तो उसकी नौकरानियाँ हैं। आग चले जाएं। आगे गया तो देखा कि शराब

की नहर चल रही है। उस पर ऐसी लड़कियाँ थीं ﴿انسى من
خلقت﴾ कि उन्हें देखकर पिछली सारी भूल गयीं। ऐसा ख़ूबसूरत अल्लाह तआला ने उन्हें चेहरा अता फ़रमाया कि उनको देखकर सब कुछ भूल गया। उन्होंने मुझे कहा ﴿مرحبا بزوج العيناء﴾ यह तो ऐना का घरवाला आ गया। मैंने उनसे पूछा ﴿اينكن العيناء﴾ तुम में ऐना है कौन? तो उन्होंने कहा ﴿نحن خدم لها﴾ हम तो नौकरानियाँ हैं। आप आगे चले जाएं। आगे गए तो शहद की नहर चल रही है। उसके किनारे पर बड़ी ख़ूबसूरत लड़कियाँ ख़ड़ी हुई थीं। वे ऐसी लड़कियाँ थीं कि जिनके हुस्न व जमाल को कोई बयान नहीं कर सकता। ये चार नहरों पर नौकरानियाँ खड़ी हुई थीं। यह तो क़िस्सा है। अब एक और हदीस इसके तहत सुना दूं। हदीस पाक में आता है ﴿انى الجنة الحور يقال لها العيناء﴾ जन्नत में एक हूर है ﴿يقال لها العيناء﴾ जिसका नाम ऐना है। जब वह चलती है ﴿عن يمينا
سبعون الف خادم﴾ उसके दांए तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम ﴿عن يسارها
مثل ذلك﴾ उसके बांए तरफ़ हज़ार। एक लाख चालीस हज़ार ख़ुद्दाम अंदर खड़े होते हैं। दर्मियान में यह, सत्तर हज़ार इधर, सत्तर हज़ार उधर। और वह कहती है ﴿اين الامرون بالمعروف والناهون
عن المنكر﴾ भलाईयों को फैलाने वाले और बुराईयों को मिटाने वाले कहाँ हैं? ﴿انى لكل من امر بالمعروف ونهى عن المنكر﴾ अल्लाह तआला ने मेरा उसके साथ निकाह कर दिया जो दुनिया में भलाई फैलाएगा और बुराई मिटाएगा। तबलीग़ का काम करेगा, उसकी बीवी हूँ।

इसका मतलब यह नहीं कि वह एक ऐना है जितने तबलीग़ का काम करने वाले पैदा होते जाएंगे उतनी ही अल्लाह तआला ऐना पैदा करता चला जाएगा।

तो कहा जब मैं चौथी नहर भी क्रास कर गया तो उन्होंने भी कहा कि हम नौकरानियाँ हैं। मैं आगे चला गया आगे देखा तो सफ़ेद मोती का ख़ूबसूरत ख़ेमा जो जगमगा रहा था। रौशन चमकदार। उसके दरवाज़े पर एक लड़की खड़ी है, सब्ज़ लिबास पहनकर। उसने जब मुझे देखा तो उसने मुँह अंदर किया और अंदर करके कहा, "ऐना! तुझे ख़ुशख़बरी हो, तेरा ख़ाविन्द आ गया, तेरा घरवाला आ गया तो मैं अंदर गया। सारा ख़ेमा नूर से रोशन और ख़ेमे के अंदर दर्मियान में तख़्त पड़ा हुआ था। तख़्त पर गाव तकिए लगे हुए, कालीन बिछे हुए और उसके ऊपर एक लड़की बैठी हुई थी। ऐसा हुस्न जमाल जिसको देखकर आदमी का कलेजा फट जाए न बर्दाश्त की ताक़त न देखने की ताक़त। जब मैंने देखा तो मैंने कहा कि अच्छा यह ऐना है तो उसने मुझे कहा ﴿مرحبا مرحبا قددنالك القدوم على ياولى الرحمن﴾ ऐ अल्लाह के वली! तेरा मेरा मिलाप अब क़रीब है। तेरे मिलने का वक़्त अब क़रीब आ गया।

कहा मैं तो उसे देखकर आगे बढ़ा कि उसके पास बैठूं, उसको गले लगाऊँ। उसने कहा ﴿مهلا مهلا﴾ सब्र करो, सब्र करो। ﴿فان فيك روح الحيوة﴾ अभी तू ज़िंदा है। लेकिन आज तेरा रोज़ा मेरे पास इफ़्तार होगा। कहा अब तो मेरी आँख खुल गई। अब मैं वापस नहीं जाना चाहता।

अगर आप भी एक झलक ऐना की देख लें तो सारे ही राइविन्ड चले जाएं। तो उन्होंने कहा कि अब तो मैं बस जान देना चाहता हूँ। टक्कर हुई सबसे पहले यह बच्चा शहीद हुआ।

अल्लाह तआला ने ऐना से मुझे मिला दिया

अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद कहते हैं कि मैंने देखा वह हंस रहा था

और मर रहा था। मरकर भी हंस रहा था। जब वापस आए तो उस बच्चे की माँ आई। उसने कहा अब्दुलवाहिद मेरे हदिए का क्या बना? वह अपने बेटे को हदिया कह रह थी हदिया।

अल्लाह को हदिया दिया था, अल्लाह के रास्ते में। उस वक़्त माँए ऐसी थीं कि मेरे हदिए का क्या बना। कहने लगे, क़बूल हो गया यानी मर गया तो क़बूल हो गया। वापस आ गया तो मरदूद हो गया। कहा भाई ﴿مقبولة ام مردودة﴾ क़बूल है कि मरदूद? तो उन्होंने कहा ﴿بل مقبول﴾ बल्कि मक़्बूल है।

रात को माँ ने ख़्वाब में देखा तो उसको बेटा जन्नत में तख़्त पर बैठा है। ऐना उसके पास बैठी है। वह कह रहा है, ऐ माँ! अल्लाह तआला ने तेरा हदिया क़बूल किया और ऐना से मेरा निकाह कर दिया है। उसे मेरी बीवी बना दिया है। मुझे उसका घरवाला बना दिया है। तो जो दावत की मेहनत में अपनी जान व माल को खपाएगा ऐसे ऊँचे दर्जात पर चढ़ता जाएगा।

जहन्नम से निकलने वाला आख़िरी जन्नत

क़यामत के दिन अल्लाह पाक अंबिया किराम से, सिद्दीक़ीन से, शोहदा से, कहेगा जाओ जितने इंसान जहन्नम से निकालकर ला सकते हो तो निकालो। इस तरह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत पर बेशुमार मख़्लूक़ निकलेगी। अब अल्लाह पाक फ़रमाएंगे कि अब मेरी बारी है। तुम सब फ़ारिग़ हो गए। ﴿كم يقبض الا ارحم الرحمين﴾ अब अल्लाह पाक अपने दोनों हाथों से जहन्नम से ईमान वालों को निकालेगा। इसी तरह तीन दफ़ा निकालेंगे और जिसके दिल में सेंटीमीटर के करोड़वें हिस्से के बराबर ईमान होगा वह फिर भी रह जाएगा।

उसके बाद जहन्नम से जिब्राईल अलैहिस्सलाम को मन्नान या मन्नान आवाज़ आएगी। कहेंगे कि एक अभी बाक़ी है। उसकी बारी नहीं आई। तो अल्लाह पाक कहेंगे जाओ उसको निकाल के ले आओ। तो वह लाएंगे और दारोग़ए जहन्नम से कहेंगे अरे भाई एक अटका हुआ आख़िरी क़ैदी है। उसको निकाल दो तो जहन्नम के अंदर जाकर वापस आएंगे कि दोज़ख़ ने अब करवट बदल दी है और हर चीज़ पलट दी है। पता नहीं वह कहाँ है?

दोजख़ का एक पत्थर सातों बर्रे आज़म के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो सारे पहाड़ पिघलकर स्याह पानी में तब्दील हो जाएंगे और दोज़ख़ में अगर सूई के बराबर भी सुराख़ हो जाए तो उसकी आग सारे जहाँ को जलाकर राख कर देगी। दोज़ख़ में एक लाख आदमियों को बिठाया जाए और वह एक सांस भी ले तो उसकी एक सांस की वजह से एक लाख आदमी मर के ख़त्म हो जाएंगे।

यह क़ैदख़ाना कोई मामूली चीज़ नहीं है कि दो चार थप्पड़ लगेंगे। फिर उठा के जन्नत में ले जाएंगें। आसान मसअला नहीं है अगर धुलाई होगी तो बड़ी ज़बरदस्त होगी।

तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम आएंगे अल्लाह तआला से अरज़ करेंगे पता नहीं चल रहा है वह कहाँ है। अल्लाह तआला बता देगा कि जहन्नम की फ़लाँ चट्टान के नीचे पड़ा है तो वह आएंगे। चट्टान का साँप डंग मारे तो चालीस साल तक तड़पता रहेगा। उसको झटका देकर निकालेंगे। फिर साफ़ हो जाएगा। उसको नहरे हयात में डाला जाएगा और पुलसिरात फ़क़त मुसलमानों के लिए है काफ़िरों के लिए नहीं। उनको तो सीधे जहन्नम के गेट में दाख़िल किया जाएगा।

कोई भी नहीं होगा। फिर अल्लाह तआला उसकी ज़बान को बंद कर देंगे और उसके जिस्म से कहेंगे तू बोल। फिर उसके हाथों से, उसकी रानों से आवाज़ें आएंगी। तो वह कहेगा कि मेरा वजूद ही मेरा दुश्मन हो गया।

वह कहेगा कि या अल्लाह! बड़े-बड़े गुनाह किए तो माफ़ कर दे। दोबारा न भेज। तो उससे कहा जाएगा कि जा जन्नत में चला जा। जब जाएगा तो अल्लाह पाक उसको ऐसी जन्नत दिखाएगा जैसे कि वह सारी की सारी जन्नतियों से भरी हुई है। तो वह देखकर वापस आ जाएगा।

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, अरे तू जाता क्यों नहीं? तो फिर जन्नत देखकर वापस आ जाएगा। फिर कहा जाएगा तू जाता क्यों नहीं है? कहेगा आपने कोई जगह ख़ाली नहीं छोड़ी मैं कहाँ जाऊँ?

अब अल्लाह तआला उससे कहेंगे, अच्छा तू राज़ी है कि मैंने जब से दुनिया बनाई थी और जिस वक़्त वह ख़त्म हुई उसका दस गुना करके तुम्हें दे दूँ? तो उसका मुँह खुल जाएगा। ﴿استهزابی وانت رب العالمین﴾ आप मेरे साथ मज़ाक करते हैं हालाँकि आप तो तमाम जहान के रब हैं। तो उसको यक़ीन नहीं आएगा। अल्लाह तआला फरमाएंगे ﴿بلی انا علی ذالك قدیر﴾ मुझे इस पर क़ुदरत है, जरा मैंने तुझे दुनिया और उसका दस गुना दे दिया। कितनी बड़ी दौलत है ईमान की जो अल्लाह तआला ने हमें अता फरमाई।

फ़र्ज़ नमाज़ का एक सज्दा ज़मीन आसमान से ज़्यादा क़ीमती है। यह अदना दर्जे का जन्नती जन्नत में जाएगा तो उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा जन्नत का ख़ादिम खोलेगा तो उसके हुस्न व जमाल को देखकर यह सर झुकाएगा।

﴿وسیق الذین کفروا الی جہنم زمرا حتی اذا جاؤها فتحت ابوابها﴾

यह काफ़िर के लिए ज़ाब्ता है कि अंधे, गूंगे बनाकर उनको जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

पुलसिरात मुसलमानों के लिए है। उस पर उनको गुज़ारा जाएगा ताकि उनके ईमान का पता चल जाए। बाज़ ऐसे गुज़रेंगे कि जहन्नम की आग नीचे से पुकारेगी। जज़ जज़ अरे अल्लाह के वास्ते चल जल्दी ﴿اطفانورك لهبی﴾ तेरे ईमान ने मुझे ठंडा कर दिया और बाज़ ऐसे गुज़रेंगे कि मख़्दूश कि उनको दोनों तरफ़ आरियाँ लग जाएंगी। उसके कांटे इसके अंदर फसेंगे। उसको कहा जाएगा कि चल वह कभी गिरेगा, कभी चलेगा।

वह पुकारेगा कि या अल्लाह! पार लगा दे। या अल्लाह! पार लगा दे।

अल्लाह तआला फ़रमाएगा, "एक वादा करे तो पार लगा दूंगा।

वह कहेगा, क्या? तू बाहर जाकर अपने सारे गुनाह मान लेगा तो पार लगा दूंगा। तो वह कहेगा, पार लगा दे। मैं सारे गुनाह मान जाऊँगा। अब अल्लाह तआला पार लगा देंगे। सामने जन्नत नज़र आ रही होगी और पीछे दोज़ख़ नज़र आ रही होगी। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे अब बता क्या किया था दुनिया में? तो अब वह डरेगा कि मान गया तो दोबारा न फेंक दें। तो वह कहेगा कि मैंने कुछ किया ही नहीं यानी आख़िर वक़्त तक दग़ाबाज़ी। अल्लाह तआला कहेंगे गवाह लाऊँ? तो तसल्ली के लिए इधर-उधर देखेगा। कोई नज़र नहीं आएगा।

जन्नत वाले जन्नत में हैं और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में हैं। वहाँ

और वह कहेगा कि तुम क्या कर रहे हो? तो यह कहेगा, तुम फ़रिश्ते हो? तो वह कहेगा, मैं आपका ख़ादिम हूँ और नौकर हूँ। और उसके लिए जन्नत में क़ालीन होंगे। उस पर यह चालीस साल तक चल सकता है और उसके दोनों तरफ़ अस्सी हज़ार ख़ादिम होंगे और वे कहेंगे, ऐ हमारे आक़ा! आप इतनी देर से आए? तो वह कहेगा कि शुक्र अदा करो कि मैं आ गया तुम्हें क्या ख़बर कि मैं कहाँ फंसा हुआ था। ऐसी धुलाई हो रही थी कि मत पूछो।

अस्सी हज़ार नौकर कोई तंख़्वाह उनको नहीं देनी पड़ेगी। उनका सारा ख़र्च अल्लाह के ज़िम्मे है।

फिर आगे जाएगा तो बड़ा चौड़ा मैदान है जिसके वस्त में एक तख़्त बिछा हुआ है। उस पर इसको बिठाया जाएगा। हर नौकर एक खाने की क़िस्म पेश करेगा और एक पीने की क़िस्म पेश करेगा। अस्सी हज़ार क़िस्म के खाने, अस्सी हज़ार क़िस्म के शर्बत। न पेट थके, न आँत थके, न दाँत थके, न जबड़ा थके। न ज़बान दांतों के अंदर अटके। यह सारा निज़ाम इसके लिए चल रहा है। और हर लुक़्मे की लज़्ज़त उसके लिए बढ़ती जाएगी। हर शर्बत की लज़्ज़त भी बढ़ती जाएगी जैसे दुनिया का पहला निवाला ज़्यादा मज़ेदार होता है, फिर उससे कम, फिर उससे कम। फिर न पीने को जी चाहता है न खाने को लेकिन जन्नत में उसके ख़िलाफ़ होगा। अल्लाह तआला ऐसी क़ुव्वत देगा कि खाता और पीता रहेगा। पेशाब कोई नहीं, पाख़ाना कोई नहीं।

फिर ख़ादिम कहेंगे अब इसको इसके घरवालों से मिला दो। वे सब चले जाएंगे। फिर सामने से पर्दा हटेगा। ﴿فاذا يملك الاخرة﴾ एक और पूरा जहान नज़र आएगा।

पूरी जन्नत जैसे यह तख़्त ऐसा ही आगे एक तख़्त। उस पर एक लड़की जन्नत की हूर बैठी होगी। उसके जिस्म पर सत्तर जोड़े होंगे। हर जोड़े का रंग अलग होगा। ख़ुशबू अलग होगी। सत्तर जोड़ों में उसका जिस्म नज़र आएगा। जब चेहरे पर देखेगा तो उस पर भी अपना चेहरा नज़र आएगा। ऐसा साफ़ जिस्म उसका होगा कि चालीस साल उसको देखने में गुमसुम रहेगा। अभी अभी जहन्नम के काले-काले फ़रिश्ते देखकर आया था। अभी एक हूर देखकर अपने आपको भी भूल जाएगा। चालीस साल देखने में लगा हुआ है। फिर वह हूर उसकी बेहोशी तोड़ेगी ﴿اما لك مني رغبة﴾ अरे वली! क्या आपको मेरी ज़रूरत नहीं? फिर उसको होश आएगा कि कहाँ बैठा है? पूछेगा तू कौन है? वह कहेगी मुझे अल्लाह तआला ने तेरी आँखों की ठंडक के लिए बनाया है। तो भी यह तो एक सेंटीमीटर के करोड़वाँ ईमान का हिस्सा है जो उसके अंदर अटका हुआ है। यह जन्नत उसकी क़ीमत है।

जब वह ख़ुद रुख़े ज़ेबा से पर्दा हटाएंगे

एक हदीस में आता है कि अल्लाह जन्नत में जन्नतियों को हफ़्ते में एक मर्तबा जमा करेगा। अल्लाह तआला जन्नतियों से कहेगा कि अपने रब की मुलाक़ात के लिए आ जाओ।

यह लुत्फ़ भी ले लिया। अब अपने मौला का भी दीदार करके देखो कि तुम्हारा रब कैसे जमाल वाला है, कमाल वाला है, क्या उसमें कशिश है। इधर दरबार में पहुँचे, उधर खाने सजे। इधर पानी पिलाए गए, लिबास पहनाए गए, सजाया गया, पहनाया गया, खिलाया गया, महकाया गया।

फिर अल्लाह तआला कहेगा जन्नत की हूरों से आओ ज़रा यह

मेरे वे बंदे हैं जो दुनिया में मौसिकी नहीं सुनते थे। इनको जन्नत की मौसिकी सुनाओ। सारी जन्नत साज़ में बदल जाएगी। और हूर का सुर और जन्नत का साज़, हूर की आवाज़।

वह आवाज़ जो मेरे भाईयो! सारे इंसानों के दिलों को अपनी ज़ात से भी ग़ाफ़िल कर देगी। वह आवाज़ होगी। वे मिलकर गाएंगी और यह गाना अल्लाह तआला की तारीफ़ का होगा। उसकी तहमीद और तहलील का होगा। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, बोलो कभी ऐसा सुना? कहेंगे नहीं सुना। क्या देखा।

मैंने दुनिया में रंडी का गाना हराम किया था क्योंकि तुम्हें यह सुनाना चाहता था। फ़रमाया इससे अच्छा सुनाऊँ? कहा इससे अच्छा क्या है? फिर अल्लाह तआला दाऊद अलैहिस्सलाम को बुलाएगा कि ऐ दाऊद! आ जा मिम्बर पर बैठ। तू मेरे बंदों को सुना। दाऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ और जन्नत का साज़ क्या कहने उस मंज़र के। बोलो कभी ऐसा सुना?

दाऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने ऐसी आवाज़ दी थी जब वह ज़बूर पढ़ते थे तो जंगलों से परिन्दे निकलकर पास आकर बैठ जाते थे। ऐसी पुरकशिश आवाज़ अल्लाह तआला ने दी थी।

﴿يا جبال اوبی معه﴾ जब ज़बूर पढ़ते थे तो पहाड़ भी उनके साथ तस्बीह पढ़ते थे। जन्नत में उनकी आवाज़ और आलीशान हो जाएगी। उनकी ज़बूर सुनेंगे तो और भी लज़्ज़त आएगी।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि इससे भी अच्छा सुनाऊँ?

तो जन्नत वाले कहेंगे कि इससे अच्छा कौन सा है? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे इससे भी अच्छा। फ़रमाएंगे या हबीब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप आ जाएं। मिम्बर पर बैठकर मेरी

तारीफ़ इनको सुनाइए। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की तारीफ़ का नग़मा सुनाएंगे तो जन्नत पर भी वज्द आ जाएगा।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि इससे भी अच्छा सुनाऊँ? वह कहेंगे, इससे भी अच्छा? बादशाहों के बादशाह का कलाम। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿یا رضوان ارفع الحجاب بینی عبادی و زواری﴾ ऐ रिज़वान! मेरे ओर मेरे बंदों के दर्मियान से पर्दा उठा दो। ये मुझे देखें। एक तो अल्लाह तआला को देखना ही बड़ी दौलत है। दुनिया और आख़िरत की सबसे बड़ी दौलत अल्लाह तआला का दीदार है। जब सारे पर्दे हटेंगे अल्लाह तआला मुस्कराते हुए सामने आएंगे ﴿سلام قولا من رب الرحیم﴾ तुम्हारा रब तुम्हें सलाम करता है। फिर अल्लाह तआला हर एक का नाम लेकर हाल पूछेगा ﴿ما منکم احد السبحاور ربہ محاذرۃ﴾ नाम लेकर हाल पूछने की लज़्ज़त का हम यों अंदाज़ा लगाएं कि अय्यूब अलैहिस्सलाम जैसी बीमारी की हालत किसी पर नहीं आई। आज़माइश थी, इम्तिहान था, अठ्ठारह साल तक जब सेहतयाब होने के बाद किसी ने पूछा कि बीमारी के दिन याद आते हैं? तो फ़रमाने लगे कि आज के दिनों से वे दिन ज़्यादा मज़ेदार थे। पूछा वह कैसे? कहने लगे, जब मैं बीमार था तो अल्लाह तआला रोज़ पूछते थे कि अय्यूब क्या हाल है? उस एक बोल की लज़्ज़त मेरे चौबीस घंटे ऐसे नशे में गुज़रते थे कि तुम उस का अंदाज़ा नहीं लगा सकते। अभी वह नशा उतरता था कि उस नशे में फिर अगले दिन दूसरी सदा आती थी अय्यूब क्या हाल है?

दीदारे इलाही और कलामे इलाही की लज़्ज़त

जब हम जन्नत में अल्लाह तआला को सामने देख रहे होंगे

और निगाहें अल्लाह तआला के चेहरे पर पड़ रही होंगी और फिर अल्लाह तआला पूछ लें कि क्या हाल है? तो इसका अंदाज़ा कौन लगा सकता है? फिर अल्लाह तआला अपना कलाम क़ुरआन मजीद सुनाएंगे। सूरः इनाम सुनाएंगे। ये आँखें दीदार की लज़्ज़त पा रही होंगी, कान उस करीम आक़ा की आवाज़ की लज़्ज़त पा रहे होंगे, रूह उसके क़ुर्ब से सरशार होगी। ऐसे मस्त होंगे कि जन्नत भूल जाएंगे, नेमतें भूल जाएंगे, हूरें भूल जाएंगे, महल भूल जाएंगे, खाना पीना भूल जाएंगे और बेखुद होकर कहेंगे, ऐ मौला! तू ऐसे जमाल वाला, हमें भी इजाज़त दे, हम तुझे एक सज्दा करना चाहते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे बस! जो दुनिया में नमाज़ें पढ़ी थीं वही काफ़ी हैं। यहाँ सज्दे माफ़ हैं। ये नमाज़ ऐसी नहीं कि छोड़ दी जाए। फिर अल्लाह तआला एक-एक का नाम लेकर फ़रमाएंगे ﴿ما منكم من احد الا سيحاور ربه محاذرة﴾ अल्लाह तआला एक-एक से पूछेगा तेरा क्या हाल है? तेरा क्या हाल है? तेरा क्या हाल है? ठीक हो? खुश हो? राज़ी हो?

अल्लाह तआला का जन्नतियों से मज़ाक़

और बाज़ों से अल्लाह तआला मज़ाक फ़रमाएंगे ﴿اتذكر يوم كذا فعلت كذا﴾ ऐ मेरे बंदे! याद है वह दिन इशारे करेंगे। यह नहीं कि तूने यह किया था। ख़ाली वह दिन किया था। जिसने किया था उसको तो समझ में आ गया कि मैंने किया था। बाक़ियों को तो कोई नहीं पता। तो आगे उसको भी पता था कि अब माफ़ी तो हो चुकी है। लिहाज़ा उल्टी सीधी भी चल जाएगी।

तो वह कहेगा फिर माफ़ करके दोबारा क़िस्सा क्यों छेड़ बैठे हो? ﴿اولم تغفرلی﴾ या अल्लाह! यह माफ़ करके फिर फ़ाइल क्यों ली जाने दो। यह दोबारा फ़ाइल केसे खोल ली। तो अल्लाह

तआला फ़रमाएंगे बेशक बेशक बेशक माफ़ किया तो यहाँ बिठाया।

आज जो मांगना है मांग लो

एक और रिवायत में आया है फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, आज तुम मेरे मेहमान हो। कुछ मांगो तो सही। आज तुम्हें देना चाहता हूँ। तुम्हारे अमलों की वजह से नहीं अपनी शान के मुताबिक़ देना चाहता हूँ। ﴿رحمتی و کرامتی رفعتی شانی علیہ مکانی﴾ मेरी जो शान है मैं ऐसा ही देना चाहता हूँ। मांगो क्या मांगते हो? जन्नती कहेंगे क्या मांगे? सब कुछ मिला गया है। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कुछ तो मांगो, कुछ तो मांगो। जन्नती कहेंगे कि आप राज़ी हो जाइए। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे राज़ी हो गया हूँ इसलिए यहाँ बिठा रखा है। अगर नाराज़ होता तो जहन्नम में डाल देता। राज़ी न होते तो तुम यहाँ न बैठते। कहेगा कुछ और मांगो तो मांगना शुरू करेंगे। जन्नत में आदमी की अक़्ल करोड़ों गुना ज़्यादा हो जाएगी। मांग-मांग कर जन्नती थक जाएंगे और कहेंगे या अल्लाह बहुत कुछ मांग लिया, कुछ समझ में नहीं आता।

अब अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि अपने ज़हनों पर ज़ोर दो सोच समझकर मांगो। वह फिर मांगना शुरू करेंगे। यह दुनिया अल्लह की शान के मुताबिक़ देने की जगह नहीं है।

एक आदमी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आकर कहने लगा कि अल्लाह से कह दो कि मैं फ़ाक़ों से मरता हूँ। मेरा भी हाथ खुला कर दें। मूसा अलैहिस्सलाम ने कोहे तूर पर जा के बात की। अल्लाह तआला ने फरमाया कि अपनी शान का दूँ या उसकी शान का दूँ? मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा देना है तो अपनी शान का दें। वापस आए तो देखा वह मरा पड़ा है। मूसा अलैहिस्सलाम

ने कहा या अल्लाह! यह क्या, देते देते जान ही ले ली। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुमने ही तो कहा था कि अपनी शान का दो। मेरी शान दुनिया में आ ही नहीं सकती। दुनिया का बर्तन ही छोटा है। उसमें आए कैसे? मेरी तो शान का जन्नत में ही मिलेगा।

बहरहाल जन्नती फिर मांगना शुरू कर देंगे। आख़िर तलब ख़त्म हो जाएगी। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे मांगो, कुछ तो मांगो। तुमने कुछ भी नहीं मांगा है। फिर आपस में सलाह मशवरे होंगे। कोई मुफ़स्सिरीन से, कोई मुहद्दिसीन से, कोई शोहदा से, कोई अंबिया किराम से, कोई उलमा से मशवरा करेगा। मशवरे के बाद फिर मांगना शुरू करेंगे। फिर उनकी मांग ख़त्म हो जाएगी। हर ख़्वाहिश ख़त्म होगी। फिर कहेंगे, या अल्लाह! बस और कुछ नहीं मांग सकते।

दुनिया से बग़ावत पर अल्लाह तआला का इनाम

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿فرضتم بدون ما يحق لكم﴾ कि तुम तो अपनी शान के मुताबिक़ मांग नहीं सकते मेरी शान के मुताबिक़ क्या मांगोगे?

इसमें जो सबसे थोड़ा मांगेगा इस थोड़े सवाल से बड़े का अंदाज़ा कर लो जो सबसे थोड़ा मांगेगा वह खड़े होकर कहेगा जिसको हदीस में बताया है :

या अल्लाह! तूने कहा था कि दुनिया को सर पर न रखो। इसको पाँव के नीचे रखो। इसको आगे न रखो, पीछे रखो। और इसको ज़लील बनाकर रखो, अज़ीज़ बनाकर न रखो। मैंने दुनिया को अज़ीज़ नहीं रखा, ज़लील बना के रखा, पाँव के नीचे रखो। पीछे रखा। इसलिए आज आपसे सवाल करता हूँ कि जिस दिन आपने दुनिया बनाई थी उस दिन से लेकर जिस दिन आपने इस

दुनिया को ख़त्म किया, उस सब के बराबर मुझे अता फ़रमा।

इस उम्मत के लिए सवाब की हद। ये सबसे छोटा और थोड़ा सवाल है। इसको अल्लाह तआला कह रहे हैं कि तुमने कुछ मांगा ही नहीं।

मेरे भाईयो! दुनिया अय्याशी की जगह नहीं है। यह इम्तिहागाह है। लिहाज़ा आज से जन्नत के तालिब बन जाओ और सच्ची तौबा कर लो। अल्लाह आपको और मुझे अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

माँ की गोद से मौत की वादी तक

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًاo مَا يَلِيْقُ بِجَمَالِهٖ وَعَظِيْمِ سُلْطَانِهٖ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنْ اَرْسَلَهٗ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًاo وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَمَّا بَعْدُ

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ وَقَالَ النبى صلى اللّٰه عليه وسلم يَا اَبَا سُفْيَان جِئْتُكُمْ بِكَرَامَةِ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَة.

अल्लाह तआला की सिफ़ात बेमिसाल हैं

इस काएनात का एक रब है ﴿ليس معه اله يخشى﴾ और कोई नहीं जिससे डरा जाए ﴿ولا رب يرجى﴾ और कोई रब नहीं जिस पर उम्मीद लगाई जाए, ﴿ولا حاجب يرشى﴾ उसके दर्मियान कोई वास्ता नहीं जिससे सिफ़ारिश देकर काम निकाला जाए। ﴿ولا وزير يوتى﴾ उसका कोई वज़ीर नहीं जिसे रिश्वत देकर काम निकाला जाए ﴿قاهر بلا معين﴾ वह इस सारी काएनात पर क़ाहिर है, मददगार

उसका कोई नहीं। ﴿مدبر بلا مشير﴾ वह इस सारी काएनात का निज़ाम चलाता है मुशीर उसका कोई नहीं। ﴿ولا يؤده حفظهما﴾ वह इस निज़ाम को चलाते हुए थकता कोई नहीं। ﴿ولا تأخذه سنة﴾ ऊँघता नहीं। ﴿ولا نوم﴾ सोता नहीं, ﴿وما مسنا من لغوب﴾ वह थकता नहीं, ﴿وما كان ربك نسيا﴾ वह भूलता नहीं, ﴿وما هم معجزين﴾ वह आजिज़ नहीं, ﴿لا يضل ربى ولا ينسى﴾ न वह भूलता है। वह अपनी क़ुव्वत के साथ है।

﴿الحى القيوم لا تاخذه سنة ولا نوم له ما فى السموات وما فى الارض﴾

वह ऐसा ज़िंदा है जिसको असबाबे ज़िंदगी की ज़रूरत नहीं। वह ऐसा क़ायम है कि जिसको क़ायम रहने के लिए असबाब की ज़रूरत नहीं। वह ऐसा इल्म वाला है कि जिसको इल्म कहीं से मिला नहीं। उसके पीछे जिहालत नहीं। ﴿هو الاول ليس قبله شيء﴾ वह ऐसा अव्वल है कि जिसके पीछे उसकी कोई इब्तिदा नहीं, ﴿قديم بلا ابتداء﴾ वह ऐसा कदीम है जिसकी इब्तिदा नहीं ﴿دائم بلا انتهاء﴾ वह ऐसा दाइम है कि उसकी इंतिहा कोई नहीं। उसके साथ उसका शरीक कोई नहीं। ﴿الاول ليس قبله شيء﴾ उससे पहले कुछ नहीं, ﴿والآخر ليس بعده شيء﴾ उसके बाद कुछ नहीं ﴿والظاهر ليس فوقه شيء﴾ इससे ऊपर कुछ नहीं ﴿والباطن ليس دونه شيء﴾ उससे नीचे कुछ नहीं ﴿لا تراه العيون﴾ जो आँख की रसाई से आगे ﴿ولا تخالطه الظنون﴾ तख़य्युल की बड़ी से बड़ी परवाज़ से भी आगे है। ﴿كل شيء هالك الا وجهه﴾ हर चीज़ को फ़ना है सिर्फ़ उसी एक को बक़ा है।

यह दुनिया छोड़ जाना है

अल्लाह जल्लजलालुहू ने एक दिन हमें खड़ा करना है। वह ग़ाफ़िल नहीं है, आजिज़ नहीं है। पकड़ सकता है, मार सकता है,

तोड़-मोड़ सकता है लेकिन अल्लाह तआला की एक सिफ़्त है। क्यों नहीं मारता? क्यों नहीं पकड़ता? दो वजह है। दो वजह से नहीं पकड़ता। एक तो इस वजह से कि अल्लाह तआला ने फ़ैसले का दिन दुनिया में रखा ही नहीं। फ़ैसला आख़िरत में है। फ़ैसला दुनिया में नहीं। अल्लाह तआला ने एक दिन रखा है।

﴿ان يوم الفصل كان ميقاتا ان يوم الفصل ميقاتهم اجمعين﴾

वह फ़ैसले का दिन। उस दिन खरा खोटा अलग करेगा। दुनिया में नहीं क़यामत के दिन ऐलान होगा :

﴿وامتازو اليوم ايها المجرمون﴾ ओहो दुनिया में बड़े नेकोकार पारसा थे। कल क़यामत के दिन मुजरिमीन की सफ़ में खड़े होंगे। अंदर तो अल्लाह ही ज़ानता है ना। अंदर तो अल्लाह ही जानता है कि अंदर क्या है? मैं हूँ या मेरा ग़ैर है। मुजरिमीन को अलग, मुत्तक़ीन को अलग। वह एक दिन आ रहा है।

मौत से पाक, उसी ने असबाबे काएनात बनाए। खुद एक ज़र्रे का मुहताज नहीं। तमाम काएनात को मुसख़्ख़र किया, खुद तस्ख़ीर का मुतहताज नहीं। जन्नत बनाई। उसका मुहताज नहीं। जहन्नम बनाई उसका मुहताज नहीं। इंसान बनाए उसका मुहताज नहीं।

इंसान की पैदाइश का मक़सद

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿يا ابن آدم يا عبادى انى لم اخلقكم لا كثر كم من قلة﴾ मेरे बंदो! तुम्हें इसलिए पैदा नहीं किया कि तुम्हारी वजह से मेरे ख़ज़ाने पूरे हो जाएंगे। ﴿ولا ستانس بكم وحشة﴾ तुम्हें इसलिए पैदा नहीं किया कि तुम्हारी वजह से दिल लगाऊँगा। ﴿ولا لاستعين بكم على امر قد عجزت عنه﴾ तुम्हें इसलिए पैदा नहीं किया कि तुम्हारी वजह से मेरे काम बंद पड़े थे। तुम आकर मेरे काम

करोगे। नहीं नहीं ﴿انما خلقتكم لتعبدوني فضيلا وتذكروني كثيرا وتسبحوني بكرة واصيلا﴾ मैंने इसलिए पैदा किया कि सुबह शाम मेरे बनकर ज़िंदगी गुज़ारो। और मेरी इत्तिबा में ज़िंदगी गुज़ार दो।

हाकमियत सिर्फ़ अल्लाह तआला की है

मेरे मोहतरम भाईयो! सब को फ़ना एक को बक़ा। फिर ज़मीन को पकड़ेगा, आसमान को पकड़ेगा, सातों ज़मीन व आसमान को लपेटेगा, सातों ज़मीन व आसमान को अल्लाह तआला एक झटका देंगे फिर इर्शाद फ़रमाएंगे﴿انا الملک﴾ मैं बादशाह हूँ। फिर दूसरा झटका देगा। फिर कहेगा ﴿انا القدوس السلام المومن﴾ मैं सलामती वाला, फिर अल्लाह तआला तीसरा झटका देंगे फिर फ़रमाएंगे ﴿انا المهيمن العزيز الجبار المتكبر﴾ मैं मुहैमिन, मैं अज़ीज़, मैं जब्बार, मैं मुतकब्बिर।

फिर अल्लाह तआला पूछेंगे﴿اين الملوک﴾ बादशाह कहाँ हैं? ﴿اين الجبار﴾ दुनिया में ज़ुल्म करने वाले कहाँ हैं?﴿لمن الملک اليوم﴾ आज कौन बादशाह है?

कोई हो तो जवाब दे। कोई हो तो बोले। अकेला जवाब देगा। खुद अपने सवाल का जवाब दे रहा हूँ। अल्लाह! अल्लाह। अकेले अल्लाह की है। जो अलवाहिद, अल-क़ह्हार, जो ग़ालिब है। जिससे कोई लड़ नहीं सकता, टकरा नहीं सकता, छीन नहीं सकता, भाग नहीं सकता, छिप नहीं सकता।

﴿اين المفر﴾ भागो कहाँ भागोगे, ﴿لا تخفى منكم خافيه﴾ छिपोगे कैसे। ﴿لا تنفذون الا بسلطان﴾ लड़ो कैसे लड़ोगे।

जब इंसान किसी इंसान का न रहेगा

ऐसे ताक़तवर बादशाह के सामने हम एक दिन पेश होने वाले

हैं। मैंने शुरू में कहा था कि हम आज़ाद नहीं। इतनी बड़ी हस्ती के साथ हमारा वास्ता है जो कल को खड़ा करने वाला है। ﴿ولقد جئتمونا فرادا﴾ अकेले अकेले ﴿كما خلقنكم اول مرة﴾ जैसे अकेले आए, अकेले जा रहे हैं। अल्लाह तआला की बारगाह में माँ बेगानी बन गई। बीवी नाआशना बन गई। औलाद ने साथ छोड़ा, दोस्तों ने आँखें फेर लीं, दुश्मन भी पराए, अपने भी पराए। अपनी जान भी पराई कि यह हाथ बोलेगा मैंने ज़ुल्म किया, यह पाँव बोलेगा मैं वहाँ तेरी नाफ़रमानी में चला। यह पेट बोलेगा मैं फ़लाँ हराम लुक़्मा खाया।

यह पूरा जिस्म मेरा मुख़ालिफ़ होगा। मेरे अहल व अयाल मुझे छोड़ गए। उस दिन भी मुजरिम पुकारेगा ﴿يود المجرم لو يفتدى من عذاب يومئذ ببنيه﴾ मेरी औलाद कोई डाल दे दोज़ख़ में ﴿وصاحبته و اخيه﴾ मेरी बीवी, मेरे भाईयों को डाल दे दोज़ख़ में, ﴿وفصيلته التى تؤويه﴾ मेरे ख़ानदान को डाल दे दोज़ख़ में। मुझे बचा ले और अगर यह भी नहीं तुझे क़बूल है ﴿ومن فى الارض جميعا﴾ सारे इंसानों को दोज़ख़ में डाल दे पर मुझे बचा ले ﴿كلا﴾ हर्गिज़ नहीं यह नहीं हो सकता।

मेरे भाईयो! मर के मर जाते तो मसअला आसान था। मर के न उठते तो भी मसअला आसान था। मुसीबत तो यह हे कि मर के मरना नहीं। मर के फिर ज़िंदा हो जाना है। अगर यहाँ ग़फ़लत में मर गए तो वहाँ बहुत बड़े ख़ौफ़नाक अंजाम का सामना करना पड़ेगा। अगर कुछ लेकर चले गए तो बड़ी ख़ूबसूरत ज़िंदगी है। उसका आग़ाज़ तो है लेकिन उसका अंजाम कोई नहीं। उसकी इब्तिदा तो है उसकी इंतिहा कोई नहीं। यह काएनात बड़ी तेज़ी के साथ अपने अंजाम की तरफ़ चल रही है।

﴿من مات فقد قامت قيامته﴾ जो मरता है उसकी क़यामत आ ही जाती है। एक क़यामत इस काएनात की भी आने वाली है। अनक़रीब ख़त्म होने वाली है और इसको मौत का झटका तोड़ने वाला है। और हमें बिल्कुल बेबस कर दिया जाएगा। क़ब्र की चारदीवारी में फेंक दिया जाएगा। जहाँ इंसान चीख़ना चाहे चीख़ नहीं सकता। चिल्लाना चाहे चिल्ला नहीं सकता, बताना चाहे बता नहीं सकता। कहीं मैय्यत होती है तो कहती है ﴿لا تقدموني﴾ मुझे न ले जाओ। पूरी काएनात उसका नोहा सुनती है। ﴿لا تقدموني﴾ मुझे क़ब्र में न ले जाओ। उसका अख़्तियार ख़त्म हो चुका है। पूरी दुनिया इस ख़ौफ़नाक अंजाम की तरफ़ बढ़ रही है। हम छोटे छोटे मसाइल को मसअला बनाकर बैठे हैं। मर जाना यह भी तो बड़ा मसअला है।

क़ब्र में क्या हालात होंगे?

हम तो पुरानी चादर उतारकर बिस्तर पर नई चादर बिछवाते हैं और जिस वक़्त मिट्टी का बिस्तर होगा तो उस वक़्त क्या बात बनेगी और मिट्टी की चादर होगी तो उस वक़्त क्या होगा?

जब बल्ब फ़्यूज़ हो जाए तो फ़ौरन बल्ब लगाओ। वह क्या दिन होगा जब अंधेरे के घर में जा पड़ेंगे। यहाँ घंटी लगी हुई है। नौकर को बुलाइए वह फ़ौरन आ जाता है। वह क्या दिन होगा न कोई सुन सकेगा, न कोई सुना सकेगा तो कितना ख़ौफ़नाक अंजाम है।

कपड़े पर दाग़ लगा हो तो उतार दो। आज बदन पर कीड़े रेंग रहे हैं। घंटों चेहरे को सजाया, कितने साबुन, कितने शैम्पू, कितनी ख़ुशबूएं, कितनी और चीज़ें। वह क्या दिन होगा जब इन आँखों को कीड़े खा रहे होंगे। और उसी पर चल रहे होंगे। पूरा वजूद ही

कीड़ों की ग़िज़ा हो चुका होगा। इन कीड़ों को दूसरे कीड़े खा रहे होंगे।

﴿افحسبتم انما خلقناكم عبثا﴾ मेरे बंदो तुम्हें क्या हो गया? कैसे ज़िंदगी गुज़ार रहे हो कि जैसे तुम्हें आज़ाद पैदा किया गया है। तुम पर कोई निगहबान नहीं है। तुम्हें ख़बर नहीं है कि ﴿ما يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد﴾ तुम्हारी ज़बान का हर बोल मैं लिख रहा हूँ। ﴿بلىٰ ورسلنا لديهم يكتبون﴾ मेरे फ़रिश्ते तुम्हारे हर बोल को लिख रहे हैं। तो अल्लाह तआला की खुली किताब हमें बता रही है कि तुम्हारा हर बोल लिखा जाता है। ﴿يعلم خائنة الاعين﴾ तुम्हारी आँख ग़लत देखती है, वह भी लिखा जाता है। ﴿وما تخفى الصدور﴾ तुम्हारे अंदर में ग़लत जज़्बात पैदा होते हैं वह भी लिखा जाता है। ﴿وما خلقنا السماء والارض وما بينهما لعبين﴾ ज़मीन आसमान और जो कुछ उसमें है मैंने खेलकूद के लिए तो नहीं पैदा किया। ﴿لو اردنا ان نتخذ لهوا لا تخذنه من لدنا﴾ अगर मुझे खेल का कोई तमाशा बनाना ही होता तो अपने पास बनाता।

मौत सबको बराबर कर देती है

तुम्हें पैदा मैंने इसलिए थोड़ा किया है। तो जब हम खुद नहीं बने और खुद जाना भी नहीं है और फिर मर के मर जाते तो मसअला आसान था। अगर मर के मिट्टी हो जाना है लेकिन मसअला यह है कि मरने के बाद मरना नहीं है। मर के नई ज़िंदगी में दाख़िल होना है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद है ﴿الناس نيام﴾ लोग सोए हुए हैं ﴿اذا ماتوا انتبهوا﴾ जब मौत आएगी तो आँख खुल जाएगी और यह दुनिया एक ख़्वाब है। एक आदमी ख़्वाब देख रहा है कि मैं बड़े ख़ूबसूरत घर में बैठा हूँ। एक आदमी ख़्वाब देख रहा है कि

मैं झोपड़े में बैठा हूँ। एक आदमी ख़्वाब में देख रहा है मैं मील चला रहा हूँ। एक आदमी ख़्वाब देख रहा है कि मैं रेढ़ी चला रहा हूँ। मौत दोनों को क़ब्र के गढ़े में पहुँचा देती है। क़ब्र की मिट्टी सबको बराबर कर देती है। ऐसे घर में रहने वाले के लिए टाइलें नहीं लगाई जातीं और झोंपड़ी में रहने वाले के लिए वही सादा मिट्टी नहीं होती। यह भी इस मिट्टी में, वह भी इस मिट्टी में।

फ़क़ीर और बादशाह मगर क़ब्र एक ही

क़तर में हमारी जमाअत गई थी। वापस आ रहे थे, एयरपोर्ट पर तो रास्ते में एक महल देखा। बहुत लंबा चौड़ा। मैंने सोचा शायद शाही ख़ानदान में से किसी का है। मैंने पूछा यह किस अमीर का है तो वे हमारे साथी बताने लगे कि यह शाही ख़ानदान का तो नहीं लेकिन यह क़तर का सबसे बड़ा ताजिर था। क़तर में सबसे ज़्यादा मालदार और सबसे बड़ा ताजिर और यह उसका महल है। बनाया, पाँच साल रहने की नौबत आई फिर मर गया और जहाँ उसकी क़ब्र है वहाँ क़तर का सबसे ग़रीब तरीन बद्दू जो सारा दिन भीख मांग के चलता था। उन दोनों की क़ब्र साथ साथ हैं। क़ब्र में दोनों को बराबर कर दिया गया। मर के मर जाते तो मज़े हो जाते। मर के मरना नहीं ﴿يا ايها الناس ان وعد الله حقا﴾ ऐ लोगो! ख़ूब सुन लो कि मेरा वादा सच्चा है। वह क्या वादा है? ﴿منها خلقناكم﴾ इस मिट्टर ये बनाया है, ﴿فيها نعيدكم﴾ यानी वापस पहुँचा दूंगा, ﴿ومنها نخرجكم تارة اخرى﴾ इसी से तुम्हें दोबारा ज़िंदा कर दूंगा तो ﴿قل بلى وربى﴾ ऐ लोगो! दो अज़ीम चीज़ों को मत भूलना। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोए। इतना रोए कि दाढ़ी आँसुओं से तर हो गई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الجنة والنار﴾ ऐ लोगो! जन्नत को न भूलना।

ऐ लोगो! दोज़ख़ को न भूलना। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اطلب الجنة جهدكم﴾ जितना जन्नत के लिए ज़ोर लगा सकते हो लगाओ। ﴿واهرب من النار جهدكم﴾ जितना दोज़ख से भाग सकते हो भागो। ﴿فان الجنة لاينام طالبها﴾ जन्नत का चाहने वाला सोता नहीं, ﴿والنار لا ينام غائبها﴾ और दोज़ख़ से डरने वाला ग़ाफ़िल नहीं होता। ﴿فان الجنة اليوم محفوفة بالمكاره﴾ जन्नत आज ढांपी हुई है मुशक़्क़तों में परेशानियों में। तुम्हें जन्नत सेयह दुनिया की चीज़ें ग़ाफ़िल न कर दें। इन से तुम्हें रास्ता भुलाना नहीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "कोई है जन्नत का तलब करने वाला? ﴿فان الجنة لا خطر لها﴾ जन्नत कोई ख़तरे की जगह नहीं।

नेक अमल ही साथ जाएंगे

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक आदमी के तीन भाई हैं और वह मरने लगे तो एक को बुलाया। कहा भाई मेरा क्या करोगे, मैं मर रहा हूँ। वह कहेगा तू मर जाएगा मैं पराया हो जाऊँगा। दूसरे से पूछा भाई तू क्या करेगा? कहा मौत तक तेरा इलाज करूंगा। मर जाएगा तो क़ब्र में दफ़न करके वापस आ जाऊँगा। तीसरे से पूछा भाई तू क्या करेगा। उन्होंने कहा मैं तेरा साथ दूंगा। तेरी क़ब्र में तेरे हशर में, तेरे तराज़ू में, जन्नत तक तेरा साथ दूंगा। तो आपने फ़रमाया बताओ इन तीनों में कौन सा भाई बेहतर है? तो सहाबा किराम ने कहा वह जो आगे तक साथ देगा। वह सबसे बेहतर है। तो आपने फ़रमाया पहला भाई माल है जो मौत पर पराया हो गया। दूसरा भाई औलाद, रिश्तेदार हैं जो क़ब्र पर जाके पराए हो गए। जब मैय्यत को क़ब्र में डाला जाता

है तो एक फ़रिश्ता क़ब्र की मिट्टी को उठाकर मजमे के ऊपर फेंकता है और कहता है जाओ इसे तुमने भुला दिया, यह तुम्हें भुला देगा। तीन दिन के बाद सारे मातम ख़ुशियों में बदल जाते हैं। हर कोई भूल भुलइय्याँ कर जाता है। कोई आया था चला भी गया नाम भी मिट गया।

और तीसरा आपने फ़रमाया वह तुम्हारा अमल है जो तुम्हारे साथ जाएगा। एक सहाबी बैठे थे अब्दुल्लाह बिन कर्ज़ रज़ियल्लाहु अन्हु। कहने लगे या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम इजाज़त हो तो मैं शे'र कहूँ। आप ने फ़रमाया कहो। अच्छा मुझे थोड़ी इजाज़त दें। इजाज़त हुई अगले दिन तशरीफ़ लाए। आपने सारे सहाबा को जमा किया, भाई! सुनो अब्दुल्लाह क्या क़हता है। तो खड़े हुए, कहा :

तर्जुमा : मैं मेरे माँ-बाप, मेरे बीवी बच्चे, मेरे रिश्तेदार, मेरा पैसा और मेरा अमल इसकी मिसाल उस आदमी की है जो मर रहा है और तीनों को बुलाता है। भाई अल्लाह के वास्ते मेरी मदद करो। जुदाई की तवील घड़ियाँ शुरू होने वाली हैं। तन्हाई का लंबा सफ़र शुरू होने वाला है। अल्लाह के वास्ते मेरी कुछ मदद करो।

तो पहला भाई बोला यानी पैसा बोला कि भाई मैं तेरा बड़ा गहरा दोस्त हूँ। "ठठ्ठा यार" जिसे हमारे सराएकी में कहते हैं। तेरा बड़ा गहरा दोस्त हूँ लेकिन सिर्फ़ मौत तक हूँ। जब मौत आएगी तो फिर तेरे कफ़न से पहले मेरे ऊपर लड़ाई शुरू हो जाएगी।

﴿سيسلك بى فى مهيل من مهائل﴾ अभी तेरे कफ़न के लिए बाद में तदबीरें सोची जाएंगी पर मेरे ऊपर लोग पहले टूट पड़ेंगे। लिहाज़ा अगर मुझसे नफ़ा उठाना है ﴿فان يفنى لا يبق﴾ अगर मेरे दोस्त

मुझसे नफ़ा उठाना है तो मेरे ऊपर रहम न खा। ﴿فاستفدني﴾ मुझे ख़र्च कर दे, ﴿وعجل فلا حائل حتف معاجل﴾ और इस मौत से पहले कुछ नेकी आगे भेज दे। मैं मौत के बाद तेरा नहीं हूँ। तेरी क़ब्र में तेरे दफ़न से पहले ही मेरे ऊपर लड़ाईयाँ शुरू हो जाएंगी और यह तो आँखों देखे वाक़िआत हैं।

अब दूसरा भाई बोला, अच्छा भाई तू तो किसी काम का ही नहीं ﴿فقال مرء من هم قد كنت جدا احبه و اوثره من بينهم في التفاضل﴾ फिर मेरा वह भाई बोला जिसके लिए मैंने बड़े पापड़ बेले जिसके लिए मैंने बड़े दुख झेले। वह कहने लगा और जिसे सब पर तरजीह देता था जिसके लिए मैंने कितनी कितनी मुशक़्क़त के रास्ते तय किए। वह क्या बोला जो अपने रिश्तेदार हैं कि मौत तक अपने साथी हूँ। मैं आपके इलाज का भी साथी हूँ और आपकी क़ब्र तक का भी साथी हूँ। क्या हूँ मैं? ﴿غناء ى الى جاهدلك ناصح﴾ यानी मैं आपका इलाज करूंगा। आपके लिए बहुतेरे डाक्टर मुहैय्या करूंगा। आपके लिए सारे सहूलत के असबाब पैदा करूंगा। ﴿اذا جد جدا الكرب غير مقاتلي﴾ लेकिन मौत के दर्द से नहीं लड़ सकता। ﴿ولكنني باب عليك ومعول﴾ जब आप मर जाएंगे तो मैं गिरेबान चाक कर दूंगा और बाल खोल दूंगा और ज़ोर-ज़ोर से शोर मचाऊँगा। वावेला करूंगा, नौहा करूंगा।

﴿ومن يخير عند من و سائلي﴾ जो लोग ताज़ियत करने के लिए आएंगे मैं कहूँगा, ऐसा था मेरा बाप, ऐसी थी मेरी माँ, ऐसा था मेरा ख़ाविन्द, ऐसी थी मेरी बीवी, ऐसा था मेरा बच्चा। मैं सिर्फ़ तेरी तारीफ़ें कर सकता हूँ और क्या करूंगा?

फिर तीसरा भाई बोला ﴿ان لاخ ترا خالك مثلي عند كرب الزلازل﴾ मैं नहीं ऐसा कि यह मौत तक चले जाएंगे। तो तू कैसा है? जनाज़े के साथ चलूंगा। कंधा भी दूंगा। (अब तो बड़े शहरों में वह

रिवाज भी है कि मोटर में डाला, चल सीधा क़ब्रिस्तान में)। कहा मैं तुझे कंधा दूंगा और तेरे साथ चलूंगा। कहा हाँ फिर क्या होगा? क़ब्र में ले जाऊँगा जो आपका ठिकाना है। जहाँ आपने रहना है और वहाँ आप पर मिट्टी डालकर मैं वापस आ जाऊँगा। ﴿وارجـع مـقـرونـا بـمـا هو شاغل﴾ क्योंकि मुझे और भी बड़े काम हैं। सिर्फ़ आपका दफ़न करना ही नहीं। आपकी ज़िंदगी का तार तो कट गया। मुझे तो और भी काम है। लिहाज़ा ﴿واجع مقرونا بما هو شاغل﴾ फिर मैं वापस आ जाऊँगा और मुझे काफ़ी ड्यूटियाँ देनी हैं। फिर एक दिन ऐसा आएगा ﴿كـان لـم تـكـن بيني وبينك خلة﴾ तो एक भूली बिसरी दास्तान बन जाएगा। हर्फ़े ग़लत की तरह मिटा दिया जाएगा। तेरी क़ब्र का निशान भी मिट जाएगा। ﴿ولا حسـن دمـرة في البـــادل﴾ फिर ऐसा वक़्त आएगा कि कभी लगा ही नहीं कि हम कभी मिल बैठे थे। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई का इंतिक़ाल हुआ। (अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र) तो हज़रत आएशा ने दो शे'र पढ़े।

जज़ीमा में एक बादशाह गुज़रा है। उसके दो वज़ीर थे। बड़ा लंबा अरसा उनकी वज़ारत चली तीस चालीस बरस। तो ऐसा हो गया था कि जैसे जुदा ही नहीं होंगे। फिर उनमें से एक मर गया तो इस पर उसके दूसरे ने शे'र कहे तो उन्होंने उन दो शे'रों को पढ़ा :

كـنـا كـنـد مـانـي جـزيـمـة حـقـبة

مـن الـدهـر قـيـل لـن يـتـصـدعـا

فـلـمـا تـفـرقـنـا كـانـي ومـا لك

لـطـول اجـتـمـاعـلـم لـبـث لـيـلـة مـعـا

मैं और अब्दुर्रमान मेरा भाई ऐसे थे जैसे जज़ीमा बादशाह के दो वज़ीर कि जिन्हें कहा जाता था कि कभी जुदा ही न होंगे। लेकिन जब मैं और वह जुदा हुए तो ऐसा लगा जैसे कभी मिल बैठे ही न थे।

﴿ولا حسن دمرة فى التبادل﴾ ऐसा होगा जैसे कभी आया ही नहीं था। जिसने रातों को जाग के अपनी औलाद के लिए कुछ नहीं किया और अपनी ख़्वाहिशात को ख़त्म कर दिया। अपनी ख़्वाहिशात के जनाज़े निकालकर औलाद के लिए क्या क्या जमा करके गया। उन्हें यह भी पता नहीं होगा कि हमारे बाप की क़ब्र कहाँ है? तीसरा भाई बोला ﴿فقال امرء منهم انا الاخ لا ترا﴾ ऐ मेरे भाई! मैं उन दो जैसा नहीं हूँ कि पैसा तो मौत पर साथ छोड़ जाए और रिश्तेदार क़ब्र तक जाएं और वापस आ जाएं। नहीं मैं ऐसा नहीं हूँ।

﴿اخالك مثلى عند كرب الزلازل﴾ जब तेरे मौत के ज़लज़ले शुरू होंगे तो मैं उन ज़लज़लों को कम करने में तेरी मदद करूंगा। जब तू क़ब्र में आएगा तो मैं तेरा इस्तिक़बाल करूंगा।

हाँ! और जब मुन्कर नकीर सवाल को आएंगे तो मैं दर्मियान में आड़े आ जाऊँगा और तेरी तरफ़ से मैं उनको दिफ़ा करूंगा। मुन्कर नकीर को तेरे क़रीब नहीं आने दूंगा। जो ज़मीन को चीरते हुए आते हैं और उनकी आँखों से शरारे निकलते हैं। हाथों में एक गुर्ज़ होता है जिसे सारी दुनिया मिलकर उठा नहीं सकती। तब मैं मेरा साथी बनूंगा। ﴿اجادل معنك القول رجع التجادل﴾ मैं झगड़ा करके तेरी तरफ़ से जवाब दूंगा।

हदीस शरीफ़ में आता है कि जब हाफ़िज़ क़ुरआन को क़ब्र में रखा जाता है जो अमल वाला हो तो जब मुन्कर नकीर आते हैं

तो एकदम ख़ूबसूरत नौजवान क़ब्र में नमूदार होता है। मुन्कर नकीर और उस हाफ़िज़ के दर्मियान हायल हो जाता है और उनको आगे नहीं बढ़ने देता तो यह हैरान होता है कि भाई यह कौन है? तो कहता है घबराओ मत, मैं तेरा क़ुरआन हूँ जो तेरे सीने में था।

हाँ डाक्टर की डिग्री ख़त्म, इंजीनियरी ख़त्म, ज़मींदारी ख़त्म। हाफ़िज़ जी यहाँ भी काम दे रहे हैं। अब मैं तेरा साथी हूँ। वह मुन्कर नकीर कहते हैं तुम्हें किसने भेजा है। हमें इससे सवाल करने दो।

वह कहता है जिसने तुम्हें भेजा है उसी ने मुझे भेजा है। मैं वह क़ुरआन हूँ जिसे कभी यह रात को पढ़ता था। कभी दिन को पढ़ता था। मैं इसकी तरफ़ से जवाब दूंगा।

जब सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये शे'र ख़त्म किए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ी मुबारक आँसुओं से तर हो चुकी थी और सारे सहाबा किराम की चीख़ें निकल रही थीं और सब रो-रो कर बुरे हाल में थे। हज़रत जिब्राइल अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में तशरीफ़ लाए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं ﴿عش ما شئت فانك ميت﴾ ऐ मेरे नबी! जितनी ज़िंदगी चाहे ले लीजिए मगर मौत आप पर भी आएगी। ﴿واحبب من شئت فانك مفارقه﴾ और आप किस चीज़ से मुहब्बत करते हैं? जिससे भी मुहब्बत कर लीजिए यक़ीनन एक दिन आपको जुदा होना पड़ेगा। जुदाई यक़ीनी है। दुनिया में विसाल नहीं। दुनिया में फ़िराक़ है।

उमैय्या बिन ख़लफ़ आया, आस बिन वाइल आया, वलीद बिन मुग़ीरह आया, तीन क़ौल हैं। हाथ में पुरानी हड्डी थी। उसने आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिखाई। उसे मसला फिर हवा में उड़ा दिया। कहने लगा ﴿اتزعم ان ربك يحي بذه وهی رميم﴾ क्या कहता है तू ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! तेरा रब इसे भी ज़िंदा करेगा हालाँकि यह बिखर गई। अल्लाह तआला ने जिब्राइल अलैहिस्सलाम को उतारा :

وضرب لنا مثلا ونسی خلقهٗ قال من يحي العظام وهی رميم قل

يحيها الذی انشاها اول مرة وهو بكل خلق عليم.

मेरे हाथ से पैदा हुआ, मुझे मिसाले देता है और कहता है इस हड्डी को कौन ज़िंदा करेगा? ऐ मेरे नबी इसे कहो तू वह वक़्त याद कर जब तू कुछ भी नहीं था।

هل اتی علی الانسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا.

वह दिन याद कर जब तू कुछ भी नहीं था और मैंने तुम्हें अदम से वजूद बख़्शा।

﴿من نطفة﴾ एक नुत्फे से ﴿من ماء مهين﴾ नापाक पानी से, ﴿من نطفة امشاج﴾ मर्द औरत के पानी से, ﴿من سلالة من طين﴾ खनकती हुई मिट्टी से।

जब मैंने तुम्हें अदम से वजूद दिया तो मैं तेरे ज़र्रात को भी जमा कर सकता हूँ और तुझे जमा करूंगा और खड़ा करूंगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "सुन ले ऐ आस! अल्लाह उस हड्डी को भी जमा करेगा और इसे भी ज़िंदा करेगा और तुझे भी ज़िंदा करेगा और तुझे जहन्नम का अज़ाब चखाएगा।

सैय्यदा जन्नत जब जन्नत को चलें

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का जब इंतिक़ाल होने लगा

तो आप बीमार थीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हा किसी काम से बाहर गए हुए थे। अपनी ख़ादिमा को बुलाकर फ़रमाया। मेरे लिए पानी तैयार किया। फिर फ़रमाया मुझे ग़ुस्ल करवा दो। फिर उसके बाद कपड़े पहने। फिर फ़रमाया, चारपाई दर्मियान में कर दे। उन्होंने चारपाई को दर्मियान में कर दिया। फिर लेट गयीं और क़िब्ले की तरफ़ मुँह कर लिया। फिर फ़रमाया अब मैं मर रही हूँ। मेरा ग़ुस्ल हो चुका है। ख़बरदार! मेरे जिस्म को कोई न देखे। बस यही मेरा ग़ुस्ल है और यह कहकर इंतिक़ाल फ़रमा गयीं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो देखा कहानी ख़त्म हो चुकी है। चौबीस साल की उम्र में इंतिक़ाल फ़रमाया तो उनकी ख़ादिमा ने क़िस्सा सुनाया तो फ़रमाया अल्लाह की क़सम ऐसा ही होगा जैसे फ़ातिमा कह गयीं। जब क़ब्र में दफ़न कर दिया लोग भी खड़े हुए हैं। अब एक मंज़र क़ायम किया, आवाज़ दी, या फ़ातिमा! वह तीन मर्तबा आवाज़ दी। कोई जवाब न आया। फिर शे'र पढ़े (जिनका तर्जुमा यह है) :

यह फ़ातिमा को क्या हुआ? यह तो मेरी एक पुकार पर तड़प उठ जाती थी।

आज मेरी सदा सदाए बाज़गुश्त बन चुकी है और जवाब नहीं आ रहा है। यह जवाब क्यों नहीं आ रहा अरे महबूब! सिर्फ़ क़ब्र में जाते ही सारी मुहब्बतें भूल गए।

हाँ कोई कब तलक साथ रहता है, आख़िर साथ टूट ही जाते हैं।

मैंने इन्हीं हाथों से अपने महबूब नबी को दफ़न किया,

आज इन्हीं हाथों में से मैंने फ़ातिमा को गुम कर दिया, मिट्टी में खो दिया।

मुझ पर यह बात खुल गई कि यहाँ किसी की दोस्ती सलामत

नहीं रह सकती और एक दिन मुझ पर भी यह रात आने वाली है। जिस दिन मेरा भी जनाज़ा उठ जाएगा तो रोने वालों का रोना मेरे किस का?

हमें क्या जो तुर्बत पर मेले रहेंगे
तहे ख़ाक हम तो अकेले रहेंगे

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तशरीफ़ ले जा रहे थे तो एक क़ब्र देखी। फ़रमाया यह है नूह अलैहिस्सलाम के बेटे साम की क़ब्र। (जब तूफ़ान आया सारे मगर गए। तीन बेटों से फिर नस्ल चली। साम, हाम और याफ़्स)। हम सारे साम की औलाद हैं। सारे यूरोप वाले याफ़्स की औलाद हैं। सारे यूरोप वाले याफ़स की औलाद हैं, सारे अफ़्रीकन हाम की औलाद हैं तो उन्होंने कहा यह साम की क़ब्र है। लोगों ने कहा या नबी अल्लाह इसको ज़िंदा करें क्योंकि उनके कहने से अल्लाह तआला ज़िंदा फ़रमा देते थे।

उन्हें हुक्म दिया। वह ज़िंदा हो के क़ब्र से बाहर गए। कोई बातचीत फ़रमाई। कहा वापस चला जा। कहा इस शर्त पर दोबारा वापस जाता हूँ कि मुझे दोबारा मौत की तकलीफ़ न हो कि मौत का दर्द आज भी मेरी हड्डियों में मौजूद है। इसके लिए कोई पेन किलर (दर्द मिटाने वाली गोली) नहीं है सिवाए तक़्वे और तवक्कुल के, सिवाए अल्लाह पाक की बंदगी के, कितना बड़ा हादसा है जो हर हर मर्द व औरत पर आने वाला है और कितनी बड़ी ग़फ़लत है कि सबसे बड़े हादसे का हमने कभी तज़्किरा नहीं किया कि मौत के लिए क्या किया जाए। क़ब्र के लिए क्या किया जाए।

इस छोटे से घर को सजाने के लिए सारा दिन मंसूबे बनाते हैं। जहाँ रहना और वहीं से उठना है। इसको भी तो सजाने के लिए कुछ सोचा होता कि वह घर भी हमारा है और वह दिन भी

आने वाला है। ﴿بيت الوحشة بيت الغربة بيت الوحدة بيت الدود﴾ जो क़ब्र ख़ुद कहती है कि मैं कीड़ों का घर हूँ, मैं वहशत का घर हूँ, मैं तन्हाई का घर हूँ, मैं ज़ुलमत का घर हूँ।

जब वह मारने पर आता है तो बंद कमरों में मौत आके ले जाती है। ख़्वाबगाहों से मौत उठाकर ले जाती है और हिफ़ाज़ती पहरों में मौत उचक लेती है। कभी मौत का किसी ने रास्ता रोका है?

हिज्जाज बिन यूसुफ़ ने कहा सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से अभी तेरा सर उड़ाने लगा हूँ। कहने लगे तुझे अगर मौत का मालिक समझता तो तुझे माबूद बना लेता। मेरा रब फ़ैसला करके फ़ारिग़ हो चुका कि मुझे कब मरना है।

ईसा अलैहिस्सलाम से मुर्दों की बातें

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक बस्ती से गुज़र हुआ। देखा तो सब बर्बाद हुए पड़े थे। आपने फ़रमाया कि इन पर अल्लाह तआला के अज़ाब का कोड़ा बरसा है ﴿فصب عليهم ربك سوط عذاب ان ربك لبالمرصاد﴾ तेरे रब के अज़ाब का कोड़ा बरसा है।

मेरे भाईयो! आज के कुफ़्र पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा क्यों नहीं बरस रहा कि आज खरा इस्लाम दुनिया में कोई नहीं है। आज खरे कलिमे वाले कोई नहीं हैं। जिस ज़माने में जिस वक़्त माज़ी में, मुस्तक़्बिल में, हाल में जब भी ये कलिमे वाले हकीकत वाला कलिमा सीख लेंगे तो अल्लाह तआला के अज़ाब का कोड़ा बड़ी से बड़ी माद्दी ताक़त पर बरसेगा। चाहे वह एटम की ताकत हो, चाहे वह तलवार की ताक़त हो, चाहे वह हकूमत की ताक़त हो। अल्लाह तआला के अज़ाब का कोड़ा बरसेगा जब कलिमे वाले वजूद में आएंगे।

ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे कि यह सब अल्लाह की नाफ़रमानी की वजह से हलाक हुए हैं। और आपको पता है कि ईसा अलैहिस्सलाम की आवाज़ पर मुर्दे ज़िंदा होते थे।

आपने निदा की ﴿يا اهل القرية﴾ ऐ बस्ती वालो। जवाब आया ﴿لبيك يا نبي الله لبيك﴾ हम हाज़िर हैं ऐ अल्लाह के नबी हम हाज़िर हैं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ﴿ما ذا جنايتكم وما ذا سبب هلاككم﴾ तुम्हारा गुनाह क्या था और तुम्हें किस सबब से हलाक किया गया? आवाज़ आई ﴿حب الدنيا وصحبة تواغيب﴾ हमारे दो काम थे जिसकी वजह से हम हलाक हुए। एक तो दुनिया की मुहब्बत थी दूसरे तवाग़ीत के साथ सोहबत थी।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, तवाग़ीत की सोहबत से क्या मतलब है? आवाज़ आई कि बुरे लोगों का साथ दिया करते थे। बुरों की सोहबत में बैठते थे।

पूछा दुनिया की मुहब्बत का क्या मतलब है? आवाज़ आई दुनिया से मुहब्बत इस तरह थी कि ﴿كالام لولدها﴾ जैसे माँ अपने अपने बच्चे से मुहब्बत करती है जब दुनिया आती थी तो ख़ुश होते थे। जब दुनिया हाथ से निकल जाती थी तो हम ग़मगीन हो जाते थे। हलाल हराम का ख़्याल किए बग़ैर दुनिया कमाते थे। और जाएज़ व नाजाएज़ की परवाह किए बग़ैर दुनिया में ख़र्च करते थे। कमाई में हलाल हराम को नहीं देखते थे और ख़र्च करने में में भी जाएज़ व नाजाएज़ को नहीं देखते थे। इस पर हमारी पकड़ हुई।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, फिर तुम्हारे साथ क्या हुआ?

आवाज़ आई ﴿بتنا بالعافية واصبحنا في الهاوية﴾ रात को अपने घरों में सोए लेकिन जब सुबह हुई तो हम सब के सब हाविया में पहुँच

चुके थे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ﴿وما هاويه﴾ यह हाविया क्या है? आवाज़ आई ﴿سجين﴾ यह सिज्जीन है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पूछा ﴿وما سجين﴾ सिज्जीन क्या है?

आवाज़ आई ﴿كل جمرة منها مثل اطباق الدنيا كلها ودفنت ارواحنا فيها﴾ ऐ अल्लाह के नबी! सिज्जीन वह क़ैदख़ाना है जिसका एक एक अंगारा सातों ज़मीनों के बराबर है और हमारी रूहों को उसमें दफ़न कर दिया गया है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, तुम एक ही बोल रहे हो, दूसरे क्यों नहीं बोलते?

आवाज़ आई, ऐ अल्लाह के नबी! तमाम लोगों को आग की लगामें चढ़ी हुई हैं। वह नहीं बोल सकते। मेरे मुँह में लगाम नहीं। मैं इसलिए बोल रहा हूँ।

फ़रमाया, तू क्यों बचा हुआ है?

कहने लगा मैं हाविया के किनारे पर बैठा हूँ और मेरे मुँह पर लगाम भी नहीं है। वजह इसकी यह है कि मैं इनके साथ तो रहता था लेकिन उन जैसे काम नहीं करता था। उनके साथ रहने की वजह से मैं भी पकड़ा गया। अब मैं किनारे पर बैठा हूँ लेकिन लगाम नहीं चढ़ी। पता नहीं नीचे गिरता हूँ या अल्लाह अपने करम से मुझे बचाता है। मुझे इसकी ख़बर नहीं है।

अल्लाह के वास्ते मेरी फ़रियाद सुनो। कहाँ जा रहे हो? क्या कर रहे हो? इधर मंज़िल नहीं है। यह रास्ता ख़ौफ़नाक सहरा की तरफ़ जाता है। ख़ौफ़नाक ग़ारों की तरफ़ जाता है।

यह इबरत की जा है तमाशा नहीं

भाईयो! अंधों के हवाले मत करो अपने को। उस बीना के

हवाले करो जो ज़मीन पर बैठकर अर्श की तहरीर पढ़ता है। जन्नत को देखता है। उसका दर्द देखो उसका रोना देखो।

महमूद ग़ज़नवी दुनिया का नंबर दो फ़ातेह है जिसने दुनिया में सबसे ज़्यादा फ़ुतूहात कीं। महमूद ग़ज़नवी ने महल बनाया। बड़ा आलीशान। इस शहर का ताजिर चंद करोड़, चंद अरब के दायरे में ही घूम रहा होगा। वह महमूद ग़ज़नवी है जिसके सामने दुनिया के ख़ज़ाने सिमट चुके हैं। महल बनाया बड़ा ख़ूबसूरत, बड़ा आलीशान, अभी वह शहज़ादा था। बाप ज़िंदा था तो बाप को कहा कि अब्बाजान मैंने घर बनाया है। ज़रा आप मुआइना तो फ़रमाएं। उसका वालिद सुबकतगीन बहुत नेक सिपाही था। अल्लाह ने बादशाह बना दिया। अवक़ात याद थी। आया, महल हसीन, हुस्न व जमाल, नक़्श व निगार का नमूना लेकिन एक लफ़्ज़ नहीं कहा कि कैसा ख़ूबसूरत है। कैसा आलीशान है। महमूद ग़ज़नवी दिल ही दिल में बड़ा गुस्से में था। मेरा बाप कैसा बेज़ौक़ है। एक लफ़्ज़ भी दाद नहीं दी कि हाँ भाई बड़ा अच्छा है, ख़ामोश। जब बाहर निकलने लगे तो अपने ख़ंजर को निकाला। दीवार पर ऐसे ज़ोर से मारा कि दीवार पर जो नक़्श व निगार थे वह सारे टूट गए। कहने लगा कि बेटा तूने ऐसी चीज़ पर मेहनत की है जो एक ख़ंजर की चोट बर्दाश्त नहीं कर सकती। तुझे मिट्टी और गारे के ख़ूबसूरत बनाने के लिए अल्लाह तआला ने नहीं पैदा किया। इस दिल को बनाने के लिए पैदा किया है।

चंगेज़ख़ान ने सारी दुनिया फ़तह की। दुनिया का सबसे बड़ा फ़ातेह हैं चंगेज़ ख़ान। दूसरे नंबर पर महमूद ग़ज़नवी, तीसरे नंबर पर तैमूर लंग और चौथे नंबर पर सिकन्दर यूनानी। सारी दुनिया फ़तह कर ली और सत्तर बरस ख़बीस को गुज़र गए लड़ाईयाँ लड़ते लड़ते तो अब उसको ख़्याल आया कि उम्र तो गुज़ारी लड़ाइ

लड़ते लड़ते। जब हुकूमत का दौर आया तो ज़िंदगी की डोर लिपट चुकी है। तो सारे हकीमों को बुलाया। सारी दुनिया के तबीब इकठ्ठे किए। मुझे बताओ मेरी ज़िंदगी कैसे बढ़ जाए? हुकूमत तो मैंने अब करनी है। पहले तो लड़ते ही गुज़र गई। हुकूमत तो अब करनी है। मुझे बताओ जिससे मेरी ज़िंदगी बढ़ जाए। उन्होंने कहा ख़ाक़ाने आज़म ज़िंदगी तो हम एक पल भी नहीं बढ़ा सकते। जो है वह सेहत से गुज़र जाए उसके असबाब बता सकते हैं। चौहत्तर साल की उम्र में गुज़र गया। सिर्फ़ चार बरस उस लानती को अल्लाह तआला ने मुहलत दी। खोपड़ियों के ढेर लगा दिए। लाखों इंसानों को तहे तेग़ करदिया और खुद चार बरस भी हुकूमत नसीब न हुई। तो कोई चाहता है कि ऐसे घर में मैं मर जाऊँ? झोंपड़ी वाला भी नहीं चाहता मैं मर जाऊँ। तो यहाँ रहने वाला कैसे चाहेगा कि मैं मर जाऊँ।

कितने कितने घर उजाड़े मौत ने

كل نفس ذائقة الموت اين تكونوا يدركم الموت ولو كنتم فى بروج مشيده.

भागो! कहाँ तक भागोगे। यकीनन तुम्हें मौत का सामना करना है। यह कितना बड़ा हादसा है। कहा एक हंसती खेलती ज़िंदगी एक दम मिट्टी के ढेर में तब्दील हो जाती है और फिर तहे ख़ाक रेज़ा-रेज़ा हो जाती है। हड्डियाँ बिखर जाती है। ऐसे ख़ूबसूरत चेहरे जिन्हें कीड़े खा जाते हैं। वे आँखें जो चश्मे आहू से ताबीर की जाती थीं उन पर कीड़े चल रहे होते हैं। वे जिस्म जो हाथ लगाने से मैला होता था वह कीड़ों की ग़िज़ा बन चुका है और वह जिस्म जो हज़ारों लाखों कीमती कपड़ों से सजाया जाता था उसी से ऐसी बदबू फैल रही है कि कब्र में थोड़ा सा सुराख़ कर दिया जाए तो सारे कब्रिस्तान में बदबू ही बदबू फैल जाती है।

वासिक़ बिल्लाह ऐसा जाबिर बादशाह था। उसकी आँखों में आँख डाल के कोई बात नहीं कर सकता था। ऐसा कहर बरसता था उसकी आँखों से। और जो मौत ने झटका दिया, सकरात का झटका लगा तो एकदम हाथ आसमान को उठे ﴿يا من لا يزال ملكه ارحم من زال ملكه﴾ ऐ वह ज़ात! जिसके मुल्क को ज़वाल नहीं, उस पर रहम खा जिसका मुल्क ज़ाएल हो गया।

और हाँ जिन आँखों में कोई आँखें डाल के नहीं देख सकता था। मरने के बाद जो उन्होंने सर पर चादर डाल दी तो थोड़ी देर बाद उसकी हरकत महसूस हुई। चादर के नीचे चेहरे के मक़ाम पर यह क्या? कैसी हरकत? चादर उठाके देखा तो एक चूहा उसकी दोनों आँखें खा चुका था। अब्बासी महल में चूहा आ जाए जिसके महल में अढ़तीस हज़ार पर्दे लटके हुए थे जिनमें सोने का पानी चढ़ा हुआ था और हीरे वहाँ ऐसे लटकाए जाते थे जैसे अंगूर के गुच्छे लटकाए जाते हैं। वहाँ तो चींटी का गुज़र भी मुश्किल से होता था। यह चूहा कहाँ से आ गया और उसकी ख़्वाबगाह में। यह कहाँ से आया है? यह अल्लाह का भेजा हुआ है। जो यह बताने के लिए आया है कि जिन आँखों से यह कहर बरसाता था। तुम सब देख लो कि सबसे पहले इन्हीं आँखों को चूहे के सुपुर्द कर दिया और आगे जो क़ब्र में होने वाला है वह अगली कहानी है। इसके अलावा है कि आगे उसके साथ क्या होने वाला है।

कोई नहीं जाना चाहता। एकदम इधर से मौत शिकार करती है। इधर से उठा के ले जाती है, उधर से उठा के ले जाती है। अब तो हमारा जी लग चुका है। अब हम जाना नहीं चाहते। पहले हम आना नहीं चाहते थे, चाहत क्या? पहले हम थे ही नहीं। हम आए, अब हम जाना नहीं चाहते और फिर दाएं बाएं

चारों तरफ़ से हैः

تروعني الجنائز كل يوم ويحزنني بكاء من احاطى

चारों तरफ़ से रोने वालियों की आवाज़ें। वह दिल को हिलाती हैं। कभी हिलाया करती थीं। अब तो घर में मौत हो तो किसी का दिल नहीं हिलता। ऐसे पत्थर हो गए। क़ब्रिस्तान में क़ब्रिस्तान के अंदर टेलीफ़ोन पर सौदे कर रहे हैं। ऐसी दिलों पर आ गई सख़्ती और साथी को दफ़्न होता देखकर भी मौत याद नहीं।

मरने के बाद लाश में हरकत

सुलेमान बिन अब्दुलमलिक बड़ा ख़ूबसूरत था। वह एक वक़्त में चार निकाह करता था। चार दिन के बाद चारों को तलाक़ देकर चार और करता। फिर उनको तलाक़ देकर चार और करता। बांदियाँ अलग थीं। लेकिन पैंतीस साल की उम्र में मर गया। चालीस साल भी पूरे नहीं किए। दुनिया में कितनी अय्याशी की। उसके मुक़ाबले में उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ हैं इक्तालीस साल उनके भी पूरे नहीं हुए लेकिन उसने अल्लाह को राज़ी करना शुरू कर दिया। अब देखिए कि जब सुलेमान को क़ब्र में रखने लगे तो जिस्म हिलने लगा। उसके बेटे अय्यूब ने कहा मेरा बाप ज़िंदा है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा ﴿عجل الله بالعقوبة﴾ बेटा! तेरा बाप ज़िंदा नहीं है। अज़ाब जल्दी शुरू हो गया। जल्दी दफ़्न करो। हालाँकि ज़ाहिर तौर पर सुलेमान बिन अब्दुल मलिक बनू उमैय्या के ख़ूबसूरत शहज़ादों में था। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० फ़रमाते हैं कि मैंने उसको क़ब्र में उतारा और चेहरे से कपड़ा हटाकर देखा तो चेहरा क़िब्ले से हटकर दूसरी तरफ़ पड़ा था और रंग काला स्याह हो गया था।

क़ब्र के कीड़े ने छोड़ा तो क़ब्र की गर्मी ने हड्डियों को भी गला दिया। उसकी राख बना दीं वह ख़ूबसूरत चेहरा हसीन आँखें। एक हदीस में आता है कि मेरे बंदे दुनिया को हवस की नज़र से मत देख। सबसे पहले क़ब्र का कीड़ा जिस चीज़ को खाता है वह तेरी आँख है। आँख को बेहया न बना। ये आँखें इसलिए नहीं हैं कि तू औरों की बेटियाँ और बीवियाँ देखे, नादानों के बनाए हुए महल देखकर चंद सांस, चंद घंटे, चंद घड़ियाँ, चंद हफ़्तों के लिए करोड़ों के घर बनाकर बैठा हुआ है। करोड़ों के बंगले बनाकर बैठा हुआ है। उनसे बड़ा नादान कोई है? जो गिरती हुई शाख़ पर आशयाना बनाए। जो टूटी हुई दीवार पर घर की बुनियाद रखे। जो ऐसे जहाँ से दिल लगाने की कोशिश करे जो मच्छर का पर और धोके का घर और मिट्टी वाला घर है, मकड़ी का जाला है और जिसके पल का भी भरोसा न हो।

इसी दुनिया ने हर एक से बग़ावत की। यह ग़द्दार दुनिया, यह बेवफ़ा दुनिया, न मेरे बाप के पास रही न मेरे पास रहेगी। आज हम इस टूट जाने वाले घर पर सब कुछ लगाकर बैठ हुए हैं। जब जनाज़ा क़ब्र में डलेगा, कीड़े खाएंगे, क़ब्र की तपिश उसके गोश्त को गलाएगी। उसकी हड्डियों को चूरा करेगी। फिर एक दिन ज़मीन अंगड़ाई लेगी। नीचे का ऊपर और ऊपर का नीचे और ऊपर से ज़ालिम हवा आएगी। इस शहज़ादे की हड्डियों की राख को उड़ाकर गुम कर देगी जैसे यह पहले कुछ न था, आज फिर कुछ न रहा।

यह मेरा है यह तेरा है। यह कर लिया है, यह कर रहा हूँ। मेरे भाईयो! यह सारी ज़िंदगी की मेहनत जब मौत से ज़र्ब खाएगी तो नतीजा सिफ़र हो जाएगा। तो इसकी तैयारी करो जिधर हर लम्हा हमारा सफ़र जारी है।

क़ब्र में बिच्छू

(من مات فقد قامت قيامته) जो मरता है उसकी क़यामत तो आ जाती है। एक क़यामत इस काएनात की भी है। अल्लाह तआला एतिदाल से चलने की दावत देता है। हमारा मज़हब रहबानियत नहीं सिखाता कि दुनिया को छोड़कर बैठ जाओ।

मेरे अपने क़रीबी गाँव का वाक़िआ है। वहाँ एक ज़मींदार मर गया। उसके लिए क़ब्र खोदी गई तो क़ब्र काले बिच्छुओं से भर गई। उसे बंद करके दूसरी क़ब्र खोदी गई, लहद बनाई गई तो वहाँ पर भी काले बिच्छुओं से क़ब्र भर गई। तीन क़ब्रें बनीं तो तीनों क़ब्रों में यही हाल हुआ। ये ज़मीन के बिच्छू नहीं है बल्कि यह उसकी बदआमालियों के बिच्छू हैं। यह अल्लाह तआला कभी-कभी पर्दा उठाकर दिखलाता है। इसी तरह हम सबसे अल्लाह तआला कहते हैं कि ज़रा संभल के चल। सबसे बड़ा मोहसिन दुनिया का इस वक़्त कौन है जो उनको दोज़ख़ से बचा ले। वह मोहसिन नहीं जो रोटी पर लड़ा दें। ज़मीन पर लड़ा दें, कपड़े पर लड़ा दें। मोहसिन वह है जो दुनिया वालों को दोज़ख़ से बचा ले। तबलीग़ दुनिया को जहन्नम से बचाने की मेहनत का नाम है। यह हमारे नाम लिखवाने से लाज़िम नहीं। ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा दिल में पकड़ा तो साथ ही तबलीग़ ज़िम्मे हो गई। अगर हमारे ज़िम्मे नहीं, मुसलमान के ज़िम्मे नहीं तो फिर आप बता दो किसके ज़िम्मे है?

मैं म्यानी शरीफ़ क़ब्रिस्तान गया। एक साथी की क़ब्र पर फ़ातिहा पढ़ने के लिए। एक क़ब्र ने मुझे रोक लिया। ऐसी शिकिस्ता और ऐसे बुरे हाल में कि मैंने कहा शायद इसको सबने भुला दिया। कोई यहाँ आता ही नहीं हालाँकि मेरा उससे क्या

वास्ता? लेकिन ईमानी रिश्ता है जो हर मुसलमान का दूसरे से है तो मेरे क़दम रुक गए और मैं क़ब्र को देखने लगा या अल्लाह इस तरह भी इंसान मिट जाते हैं। फिर मैंने क़रीब होकर उसके कुत्बे को पढ़ा तो लिखा हुआ था, "रुस्तमे हिन्द।" मेरे आँसू निकल पड़े कि यह रुस्तमे हिन्द की क़ब्र है। तारीख़ पैदाइश 1844 ई० और 1908 ई० तारीख़ वफ़ात लिखी थी। मुझे अपने साथी की फ़ातिहा भूल गई और मैंने उसकी क़ब्र पर फ़ातिहा शुरू कर दी कि इसकी क़ब्र पर कोई आता ही नहीं होगा। ये बेचारा किस हाल में पड़ा होगा।

मेरे भाईयो और बहनो! हम कब तक अपने जिस्म व जान के साथ वफ़ा करें? तो अल्लाह तआला से वफ़ा कर लें। वफ़ा करना इंसान की आदत है। बेवफ़ाई करना भी इंसान की आदत है। इंसान बेवफ़ा भी और बावफ़ा भी है। अगर अल्लाह तआला से वफ़ा हो जाएगी तो नफ़्स व शैतान के बेवफ़ा बन जाएंगे। फिर मज़े ही मज़े होंगे और अगर अल्लाह तआला के बेवफ़ा हो गए फिर नफ़्स व शैतान के वफ़ादार बनेंगे। फिर मुसीबत ही मुसीबत है। आज हर घर बिजली के क़ुमक़ुमों से रौशन है लेकिन दिल काली रात से ज़्यादा तारीक है। बनावटी क़हक़हे गूंजते हैं मगर दिल उनके ख़ून के आँसू रोते हैं। चेहरे उनके चमकते हैं पर अंदर वीरानी है। लिबास उनके ज़र्क़ बर्क़ हैं पर अंदर उनके ख़ाक आलूद हैं। कोई अंदर उतरकर देख नहीं सकता।

आज की दुनिया और आज की इंसानियत कितनी दुखी है क्योंकि अल्लाह तआला के बेवफ़ा हो गए तो अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं :

अरे! मिट जाने वाली भी कोई सलतनत होती है। डूब जाने

वाला भी कोई उरूज होता है। जिस ज़िंदगी को मौत खाए वह भी कोई ज़िंदगी है। जिस जवानी को बुढ़ापा खा ले वह भी कोई जवानी है। जिन ख़ुशियों को ग़म निगल जाएं वे भी कोई ख़ुशियाँ हैं। जिस माल पर फ़क़र का डर हो वह भी कोई माल है। जिस सेहत के पीछे बीमारियाँ हों वह भी कोई सेहत है। जिस मुहब्बत के पीछे नफ़रतें हों वह भी कोई मुहब्बत है और जिन घरों ने उजड़ जाना हो, जहाँ मिट्टी के ढेर बन जाने हों जहाँ मकड़ियों के जाले तन जाने हों।

कितने तन पछाड़े मौत ने

كل بيت وان قالت سلامتها يوما ستدركه النقباء والحبب.

बड़े-बड़े महल ज़रा जाके देखो तो सही। आज वहाँ मकड़ियों के जाले हैं। मेंढकों का घर है, चूहों का घर है। मकड़ियों का राज है और उस पर राज करने वालों को आज कीड़े खा गए और उन कीड़ों को अगले कीड़े खा गए और वे कीड़े भी मरकर मिट्टी हो गए और उनकी क़ब्रें उखेड़ दी गयीं। दुनिया का फ़ातेह आज़म चंगेज़ ख़ान है। कोई उसकी क़ब्र तो बता दे? फ़ातेह आज़म चंगेज़ ख़ान की आज क़ब्र नहीं है। दुनिया हमारी मेहनत का मैदान नहीं। हम तो अल्लाह का गीत गाते हैं।

यह था ना गोदू पहलवान मरहूम। यह राइविन्ड आया है। मैं राइविन्ड में पढ़ता था। यह वह शख़्स था जिसने सारे आलम को चैलेंज किया और कोई उसे गिरा न सका। तो मैंने जब उसे देखा तो न यह खड़ा हो सकता था न बैठ सकता था। उसे सहारे से उठाया गया, सहारे से बिठाया गया। तो ज़बाने हाल ने अखाड़े में आके ऐलान किया जिसे कोई न हरा सका उसे वक़्त के बे-रहम

पहिए ने, रात व दिन की गर्दिश ने ऐसा चित किया कि उठने के क़ाबिल न रहा।

यहाँ तो मौत का नाच जारी है। यहाँ हर क़दम पर ज़िंदगी मात खा रही है और मुसलसल मात खा रही है। हर क़दम पर मौत जीत रही है :

فلو لا اذا بلغت الحلقوم وانتم حينئذ تنظرون ونحن اقرب اليه منكم ولكن

لا تبصرون. فلولا ان كنتم غير مدينين. ترجعونها ان كنتم صدقين.

जब मौत पंजे गाढ़ती है। वह सिकन्दर था या चंगेज़ था, वह दारा था या हलाकू था, तैमूर था या महमूद था, ज़ुलक़रनैन था या दानियाल था। सब उसके हाथों मात खाए, ख़ाक में ख़ाक हो गए।

मुस्तफ़ा ज़ैदी एक डिप्टी कमिश्नर मर गया था तो उसका पोस्टमार्टम किया गया। मैं उस वक़्त लाहौर में पढ़ता था। उस वक़्त की बात है तो अख़बार वाले ने लिखा :

"वह मुस्तफ़ा ज़ैदी जो जहाँ से गुज़रता था ख़ुशबुओं के हाले साथ लेकर गुज़रता था। आज जब उसकी क़ब्र को खोला गया तो सारे क़ब्रिस्तान में उसके जिस्म की बदबू से खड़ा होना मुश्किल हो रहा था।"

जिस इंसान का अंजाम ऐसा होने वाला हो कुछ तो सोचना चाहिए नाँ। हमारे दिन रात के क्या मसाइल हैं? बच्चों की पढ़ाई, घर की रोटी, सालन, कपड़े और ज़ेवर और मौत तक की ज़रूरियात। सारी ताक़त इस पर लग रही है। हाँ यह तो बड़े आसान मसअले हैं। माँ-बाप साथी हैं, मियाँ-बीवी साथी हैं, औलाद माँ-बाप की साथी है, माँ-बाप औलाद के साथी हैं, बीवी

ख़ाविन्द का साथ दे रही है, ख़ाविन्द बीवी का साथ दे रहा है। लेकिन वह वक़्त जब मेरी औलाद मेरे सामने मुझे बचा नहीं सकती, डाक्टर खड़े हुए हैं और कह रहे हैं कि अब तो अल्लाह की करेगा और सांस उखड़ रहा है और जान निकल रही है। और जो नज़र आता था ग़ायब हो गया और जो ग़ायब था नज़र आ गया। फ़रिश्ते नज़र आने लगे और घर ग़ायब होने लगे। यह वह वक़्त है जब मुझे ज़रूरत है कि मेरी कोई मदद करे। यहाँ जो चीज़ काम देगी वह असल वफ़ा की चीज़ है। उठते जनाज़े देखो जो पुकार पुकार कर कहते हैं कि यह दुनिया आबाद होने के लिए नहीं बर्बाद होने के लिए है। हंसने का मक़ाम नहीं रोने का मक़ाम है।

दुनिया की कहानी याद रही अपना फ़साना भूल गए

यह टूट जाने का घर है, मिट जाने का घर है, लुट जाने का घर है, मिट जाने वाला सरमाया है। इससे जिसने जी लगाया और जिसने इसके पीछे आख़िरत को ठुकरा दिया वह बाज़ी हार गया। हार गया बाज़ी। आज किसी पर रोने वाला कोई न रहा। आज किसी को दफ़न करने वाला कोई न रहा। आज किसी को कफ़न पहनाने वाला कोई न रहा। आज मरने वालों पे मातम करने वाला कोई नहीं। आज जाएदाद के छिन जाने पर कोई केस करने वाला नहीं, आज दरबार मौजूद हैं दरबारी कोई नहीं। तख़्त मौजूद है तख़्तनशीन कोई नहीं। शाही मौजूद है शाह कोई नहीं। कासा गदाई मौजूद है गदागर कोई नहीं।

तो क्या होगा? उस दिन बच्चों की ख़ातिर या जिस नफ़्स की ख़ातिर अल्लाह तआला से बग़ावत की कि उठा नहीं जाता, आया नहीं जाता, गर्मी बड़ी है, सर्दी बड़ी है, अंधेरा बहुत है।

क्या क़ब्र के अंधेरे याद नहीं है? क्या क़ब्र की गर्मी याद

नहीं? क्या जहन्नम की आग भूल गए? क्या जहन्नम का अज़ाब भूल गए? क्या जन्नत की नेमतें भूल गए? वह अल्लाह का कलाम भूल गए? वह अल्लाह तआला का दीदार भूल गए? वह महबूब ख़ुदा की महफ़िल भूल गए? वह कैसा इस्लाम है?

यह कैसे पत्थर दिल हैं जो कमाने में तो ऐसे मस्त हुए कि होश नहीं और जब अल्लाह बुलाए तो ऐसे ग़ाफ़िल हो जाएं। न बूढ़े और न जवान को होश आए। न किसी औरत को होश आए। न किसी मर्द को होश आए। न बाज़ार बंद होंगे।

अल्लाह तआला को राज़ी करना अपनी ज़िंदगी का काम बना लो

अल्लाह तआला को राज़ी करना अपना ज़िंदगी का काम बना लो। अल्लाह को राज़ी करना अपनी ज़िंदगी का मक़सद बना लो। अल्लाह तआला राज़ी हो गए तो सारे काम बन गए। अल्लाह तआला नाराज़ हो गए तो सब बर्बाद हो गए। यह जहाँ में कुछ दिन अल्लाह तआला दे देता है। कुछ वक़्त के लिए मिल जाता है। अल्लाह तआला काफ़िर को भी देता है। मुसलमान को भी देता है लेकिन मौत के बाद बहुत बड़ी तबाही आने वाली है जिसको इंसान बर्दाश्त नहीं कर सकता।

पहले सोच लेना

﴿يا ابن آدم لا تتحمل سخطي ولا تطيق عذابي فتعصيني﴾

मेरे बंदे! मेरी नाफ़रमानी करने से पहले सोच लेता कि तुम में ताक़त नहीं कि तेरा जिस्म आग बर्दाश्त कर सके। तुम में ताक़त नहीं कि मेरे ग़ुस्से को बर्दाश्त कर सके। गाने सुनने से पहले सोच

लेना इसमें दोज़ख़ का पिघला हुआ सीसा डाला जाएगा। किसी की बेटी पर नज़र उठाने से पहले सोच लेना इसमें आग के कील उतार दिए जाएंगे। पेट के अंदर साँप चले जाएंगे। अंदर बिच्छू चले जाएंगे जो सूद खाने वाले को अंदर से काटेंगे। वह बाहर से काटता है तो चालीस साल तड़पता रहता है और जिस के पेट के अंदर साँप चला जाएगा बिच्छू चला जाएगा। उसका पेट होगा जैसे ये पहाड़ है। इतना बड़ा पेट होगा। वह साँपों से भरा होगा। वह बिच्छुओं से भरा होगा। वह उसको काटेंगे और उसको बचाने वाला कोई नहीं होगा।

तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरी नाराज़गी मेरी नाफ़रमानी करने से पहले सोच लेना कि तुमने आना तो मेरे पास ही है।

﴿ولا تحسبن الله غافلا عما يعمل الظلمون﴾ इनसे कह दो कि मैं ग़ाफ़िल नहीं हूँ। किन से? नाफ़रमानों से। तो अल्लाह पकड़ते क्यों नहीं? कहा ﴿انما يؤخرهم ليوم تشخص فيه الابصار﴾ मैं उन्हें मुहलत दे रहा हूँ। जिस दिन आँखें फट जाएंगी। उस दिन तक के लिए मुहलत है।

हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा के घर को देखो

आज के लोग कमाते कमाते जब बाल सफ़ेद हो जाते हैं तो वे ऊँचे-ऊँचे बंगले खड़े करके अपनी सारी दौलत को बर्बाद करके दिखाते हैं कि हम बड़े बन गए। अल्लाह तआला जिसके माल को बर्बाद करने का इरादा करता है और अल्लाह तआला जिसके माल को मरदूद करने का इरादा करता है उसके माल से बंगले बनवाता है और उसके माल से बड़े-बड़े महल बनवाता है और हदीस में आता है कि अल्लाह तआला जिसके माल को ठुकराता है उसे गारे

मिट्टी में लगाकर महल्लात बनवाता है। सहाबा किराम ने महल्लात नहीं बनाए। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का कोई घर नहीं था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का कोई घर नहीं था। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का कोई घर नहीं था।

लेकिन उनकी मेहनत से सारे आलम में ईमान फैल रहा था और सारे आलम में दीन फैल रहा था और सारे आलम में दीन वजूद में आ रहा था और उनका यह जज़्बा बन गया था कि हमें तो बस अल्लाह तआला के नाम पर मरना है और अल्लाह के दीन को दुनिया में ज़िंदा करना है। हमारा और कोई काम नहीं है। बेटों को कहते थे कि जाओ बेटा! अल्लाह के नाम पर मरो। हम भी तुम्हारे साथ जन्नत में जाएंगे। माँएं कहती थीं जा बेटा क़ुर्बान हो जा। आज किसी माँ का यह जज़्बा है कि उसका बेटा उसके सामने मरे? हर माँ चाहे कितनी गई गुज़री क्यों न हो वह यह कहती है कि मेरा जनाज़ा मेरा बेटा उठाए। मेरे सामने मेरा बेटा न मरे लेकिन सहाबा किराम की औरतें वह माँए थीं जिनका जज़्बा था कि हमारे बेटे क़ुर्बान हो जाएं।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेरे बाप और आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा तेरी माँ हैं

बुख़ारी शरीफ़ में है। सहाबी बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं अपनी माँ के साथ हिजरत करके आया। वालिदा का इंतिक़ाल हो गया। अकेला मासूम बच्चा। बाप हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक ग़ज़वे में चले गए। वह वहाँ शहीद हो गए। जब लश्कर वापस आया तो फ़रमाते हैं, मैं अपने बाप के इस्तक़बाल के लिए मदीने से बाहर एक चट्टान पर

बैठ गया। यहाँ से लश्कर गुज़रेगा तो बाहर निकलकर अपने बाप का इस्तिक़्बाल करूंगा। उसे क्या ख़बर कि बाप के साथ क्या हो चुका है। जब सारा लश्कर गुज़र गया और बाप को नहीं देखा (वह तो शहीद हो चुके थे) तो चट्टान से उतरे और दौड़ते हुए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़े हो गए। आप भी खड़े हो गए। पूछा या रसूलुल्लाह! मेरे बाप ने क्या किया? हज़रत बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरी तरफ़ मुँह फेर लिया। मैं रोया और सामने आया तो मैंने फिर पूछा :

"या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरे बाप का क्या बना? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों में पानी भर आया और आप रोने लगे। मैं आप की टांगों से लिपटा और रोया और मैंने कहा या रसूले अकरम मेरी माँ रही और न मेरा बाप रहा। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु को उठा लिया और अपने सीने से लगा लिया और इर्शाद फ़रमाया :

﴿يا بشير اما ترضى ان تكون عائشه املك وانا ابوك او كما قال﴾

बशीर क्या तू इस पर राज़ी है कि अल्लाह का रसूल तेरा बाप बन जाए और आएशा तेरी माँ बन जाए।

तो हज़रत बशीर फ़रमाने लगे या रसूलुल्लाह मैं राज़ी हूँ। मेरी मुराद पूरी हो गई।

सदियाँ गुज़र गयीं कि हमने ख़त्मे नबुव्वत का काम छोड़ दिया। भूल गए और फिर यह भी भूल गए। आज इस उम्मत का आदमी बूढ़ा हो जाए। अल्लाह तआला को उसकी अदा पसन्द। इस उम्मत का आदमी जवान हुआ, इताअत में हो अल्लाह को

अदा पसन्द। वह जवान जो अपनी जवानी को पाकदामनी से गुज़ारे। इबादत में गुज़ार दे तो अर्श के साए तले जाए और बूढ़ा हो जाए, दाढ़ी सफ़ेद हो जाए तो अल्लाह तआला उसको अज़ाब देते हुए शर्माते हैं। कैसे इस उम्मत के लाड बर्दाश्त किए हैं?

इस्लाम का बुढ़ापा लेकर आया हूँ

याह्या बिन अक्सम रह० का इंतिकाल हुआ। मुहद्दिस हैं ख़्वाब में मिले। पूछा क्या हुआ? कहा अल्लाह तआला ने पूछा ओ बदकार बूढ़े! तूने यह किया, तूने यह किया। आगे मैंने कहा ऐ अल्लाह! मैंने तेरे बारे में यह हदीस नहीं सुनी। इल्म की शान देखो। अल्लाह तआला के सामने भी हदीस बयान हो रही है।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया, उन्हें हुज़ूर आकर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया, उन्हें जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बताया, जिब्राईल अलैहिस्सलाम को अल्लाह पाक ने बताया कि जब कोई मुसलमान बूढ़ा हो जाता है तो (मैं) अज़ाब देते हुए शर्माता हूँ। और मैं इस्लाम में बूढ़ा हुआ हूँ। तो अल्लाह तआला ने मुझे इस पर माफ़ फ़रमा दिया। इस उम्मत को इज़्ज़त बख़्शी क्योंकि यह घरों को छोड़कर निकलते हैं।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र पर हमारी जमाअत गई तो उनकी क़ब्र के ऊपर एक हदीस लिखी हुई थी कि जब उनकी शहादत की ख़बर मदीना मुनव्वरा में पहुँची तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके घर तश्रीफ़ ले गए तो उनकी छोटी बच्ची आपसे लिपटकर रोने लगी तो आप भी रोने लगे। सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु नें पूछा या रसूलुल्लाह! यह कैसा रोना है। तो आप ने फ़रमाया कि यह रोना एक हबीब का हबीब के लिए है। आपने ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को बेटा बनाया

हुआ था। फ़रमाया अल्लाह के रास्ते निकलते हुए वह छोटा बच्चा छोड़कर गए थे।

आज तौबा करके उठो। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िंदगी को सीने से लगाकर उठो। उसके सीखने के लिए वक़्त दो। उसको सीखने के लिए फिरो।

और हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी हैं। उनके बाद कोई नबी नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैग़ाम सारी दुनिया के इंसानों तक पहुँचाना हम पर फ़र्ज़ है। जब फ़राइज़ मिट जाएं तो तबलीग़ फ़र्ज़ हो जाती है।

अरे! मैं तुम्हें क्या बताऊँ। किसी गाँव का क़िस्सा नहीं सुना रहा हूँ। मुल्तान अपने ज़िले का क़िस्सा सुना रहा हूँ। नवें शहर की भरपूर आबादी में फ़ुटपाथ पर खड़े होकर हमारे एक साथी ने इक्कीस आदमियों से पूछा भाई हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम क्या है?

उन्नीस ने कहा, "साँई मैं कूँ पता काएं नहीं (मुझे पता नहीं)। सिर्फ़ दो आदमियों ने बताया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

जो जानते हैं उनका घर में बैठना आज जुर्मे अज़ीम है। उसकी माफ़ी नहीं है। मैंने ख़ुद एक गाँव में बीस लड़कों से पूछा हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम क्या है? कहा जी पता कोई नहीं, पता कोई नहीं। मेरे भाईयो! अल्लाह के वास्ते इस पैग़ामे हक़ को लेकर फिरो। अल्लाह तआला तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

﴿و آخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

कामयाबी का रास्ता

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًاo مَا يَلِيْقُ بِجَمَالِهٖ وَعَظِيْمِ سُلْطَانِهٖ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنْ اَرْسَلَهٗ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًاo وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَمَّا بَعْدُ

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًاo وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ بَعْدِ نُوْحٍ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًاo

अल्लाह तआला अपने बंदों से ग़ाफ़िल नहीं

मेरे भाईयो! अल्लाह तआला अपने बंदों से किसी हाल, किसी आन और किसी वक़्त में ग़ाफ़िल नहीं और अल्लाह तआला के इरादे ही से बंदे का काम होता है। असबाब ज़ाहिर में पैदा होते हैं। फिर आसानतर होते हैं।

﴿ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗ اَمْ نَحْنُ الْخَالِقُوْنَ﴾ तुम बनाते हो औलाद या हम देते हैं औलाद। ﴿اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ﴾ या तुम ख़ुद बने हो। अल्लाह तआला ने ख़ुद सवाल किया और फिर ख़ुद जवाब दिया ﴿قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ﴾ यह मौत और हयात का निज़ाम तुम

नहीं चला रहे हो बल्कि तुम्हारा अल्लाह चला रहा है।

﴿خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاتَ﴾ मौत को बनाने वाला अल्लाह और ज़िंदगी को वजूद देने वाला अल्लाह।

﴿وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ. وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ﴾

आसमान को हमने अपने हाथों से बनाया। और हमने ही उसको फैला दिया और यह ज़मीन हमने बनाई और इसको फैला दिया। कोई है हम से ज़्यादा बिछाने वाला?

न बुलडोज़र लगाया और न क्रेनें लगायीं। कोई आला इस्तेमाल नहीं हुआ। मिट्टी को मिट्टी से ही हमने बनाया। अपने लफ़्ज़े कुन से ज़मीन को वजूद अता फ़रमाया। किसी पत्थर वग़ैरह से पहाड़ नहीं बनाए, वैसे ही पहाड़ों को वजूद बख़्शा।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا. وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا.

क्या हमने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया। और पहाड़ किसने लगा दिए। और यह अल्लाह ही है कि जिसने मर्द व औरत को वजूद बख़्शा।

अल्लाह तआला ही है कि इंसान को चारपाई पर लिटाकर ऐसी मख़्लूक़ को उस पर मुसल्लत कर देता है कि इंसान बिल्कुल बेख़बर बेशऊर पड़ा हुआ है और इसी बेबसी की हालत में उसके मुँह और नाक से ऐसी आवाज़ें निकाल देता है और ऐसी ख़ौफ़नाक आवाज़ें आ रही हैं कि पास बैठने वाले भी बद्दुआएं दे रहे हैं कि हम इससे तंग हैं।

﴿وجعلنا نومكم سباتا﴾ नींद को बनाया काटने वाला। ज़िंदगी को काट दिया हरकात से, आमाल से, मशाग़िल से, लेन-देन और कारोबार से काटकर रख दिया।

﴿وجعلنا الليل لباسا وجعلنا النهار معاشا﴾ और रात को अल्लाह ले आए और छिपा दिया। दिन को काम के वास्ते बनाया। ﴿وبنينا فوقكم سبعا شدادا﴾ और ऊपर सात आसमान बना दिए। कौन है रातों को फ़रियाद करने वाले की फ़रियाद सुनने वाला? कौन है तुम्हारी महफ़िलें चलाने वाला। क्या अल्लाह के साथ कोई शरीक है? ﴿قليلا ما تذكرون﴾ फिर तुम में थोड़े हैं नसीहत हासिल करने वाले। और जिनको नसीहत हासिल होती है वे दुनिया के धंधों में पड़कर ग़ाफ़िल नहीं होते। अल्लाह तआला खुद सवाल उठाकर खुद जवाब देता है ﴿قل لمن الارض ومن فيها﴾ पूछो उनसे ज़मीन किसकी है और ज़मीन पर कब्ज़ा किसका है। वह खुद कहेंगे अल्लाह का है। हमारी कोई नाफ़रमानी करे तो हमें ग़ुस्सा आता है मगर ﴿سيقولون الله افلا تذكرون﴾ फिर शर्माते क्यों नहीं अल्लाह तआला से।

मेरी रहमत मेरे अज़ाब को रोक लेती है

अल्लाह तआला की ज़मीन पर उसके साथ शरीक करते हो और उसकी ज़मीन में उसके अहकाम से इंकार करत हो। उन ही की ज़मीन पर सूद का निज़ाम चलाते हो। उन ही की ज़मीन पर शराब पीते हो और उनकी ही ज़मीन पर नाच और गाने की महफ़िलें सजाते हो। अल्लाह तआला यह फ़रमाते हैं कि अगर तुम्हारे घर में और तुम्हारी ज़मीन में कोई तुम्हारी मर्ज़ी के बग़ैर कुछ करे तो तुम उसके साथ क्या करते हो?

तो तुम मेरे साथ मेरी ज़मीन पर क्या कर रहे हो? ﴿قل لمن الارض ومن فيها﴾ तुम खुद कहते हो कि यह ज़मीन अल्लाह तआला ही की है। फिर तुम्हें हया क्यों नहीं आती कि सूद के निज़ाम से ज़मीन आलूदा और गंदा कर दिया। ﴿وربك الغني ذو الرحمة﴾

अल्लाह तआला फिर भी मेहरबान ज़ात है। ﴿لو يؤاخذهم بما كسبوا﴾ अगर मैं पकड़ने वाला होता तो कोई चलने वाला ज़मीन पर न छोड़ता। मेरी रहमत मेरे अज़ाब को रोक लेती है वरना मैं तुम्हें पकड़ लूँ। ﴿لعجل لهم العذاب﴾ मेरे अज़ाब के दरवाज़े खुल जाएंगे। फिर दुनिया में कोई बचाने वाला नहीं होगा। बहरहाल तुम खुद अपने घर में किसी को कुछ करने नहीं देते लेकिन मेरी ज़मीन में तुमने गाने की महफ़िलें सजा दीं। मेरी ज़मीन को तुमने बेहयाई और फ़हाशी से भर दिया। ﴿افلا تذكرون﴾ तुम्हें हया भी न आई। ﴿قل لمن في السموات السبع والارض ومن فيهن﴾ सब कहेंगे ﴿سيقولون الله﴾ ﴿افلا تتقون﴾ यही हमारे मिज़ाज के मुताबिक़ बात की है।

दुनिया के बादशाह से डरते हो, थानेदार से डरते हो जिनको अल्लाह तआला ने थोड़ा सा अख़्तियार दे दिया है। ये न इज़्ज़त दे सकते हैं, न ज़िल्लत दे सकते हैं, न मौत दे सकते हैं न हयात दे सकते हैं। जो न किसी को बना सके, न किसी को बिगाड़ सके, न दे सके, न ले सके, न मर सके, न मार सके। जो इतना बेबस और आजिज़ है उसके सामने तुम कैसे बकरी बन जाते हो।

इधर ज़बान से कहते हो आसमान का रब अल्लाह, ज़मीन का रब अल्लाह, अर्शे अज़ीम का रब अल्लाह, काएनात का बादशाह अल्लाह। फिर भी अल्लाह तआला से नहीं डरते हो। अपने जैसे इंसान से डर जाते हो। उसकी ज़ात की बादशाही को तसलीम करते हुए फिर भी उससे नहीं डरते। ﴿افلا تتقون﴾ हाय अफ़सोस अपने जैसे इंसानों के सामने कांपते हो।

किस दिल के साथ ज़िंदा हैं

ऐसों से डरें और आसमानों और ज़मीनों, अर्शे अज़ीम, लौह व कुर्सी के बिला शिर्कते ग़ैर बादशाह से न डरें, न चौंकें, न कांपें, न

लरज़ें तो तुम्हारे दिल मुर्दा हो चुके हैं। यह पत्थर का दिल या गोश्त का दिल है। किस दिल के साथ ज़िंदा हैं जिसको अल्लाहु अकबर की आवाज़ के बाद भी अल्लाह तआला याद न आए तो वह मर ही गया है और क्या? जिसको सज्दे और रुकू में भी अल्लाह याद न आए तो उसका दिल मुर्दा है। तकबीरे तहरीमा का मतलब यह है कि आदमी सब कुछ छोड़कर अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए। अगर फिर भी अल्लाह तआला याद नहीं तो यह दिल मुर्दा ही है और क्या है। याद होना या याद करना यह दिल का फ़ेअल है। ज़बान का फ़ेअल उसका इज़्हार है।

सीने में दर्द होता है तो किसी स्पेशलिस्ट के पास दौड़ता है कि भाई सीने में शदीद दर्द है। दर्द हुआ तो क्या होगा मरना तो है ही लेकिन दिल की सारी रगें अल्लाह से कट गयीं हैं उसके इलाज की कोई फ़िक्र नहीं।

तो मेरे भाईयो! जब दिल का कनक्शन अल्लाह से टूट जाता है तो उस दिल पर अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं आता। जब अल्लाह का डर किसी के दिल से निकल जाता है तो वह दिल सारी चीज़ों से डरता है। ﴿العظمة لله﴾ सारी अज़मतें अल्लाह तआला के लिए हैं।

अल्लाह तआला की अज़मत अगर दिल में हो तो

मलक काफ़ूर बिन तूलून को नसीहत की तो उसको गुस्सा आ गया। उसके हाथ और पाँव बांध के भूखे शेरों के सामने डाल दिया और ऐलान करा दिया कि बादशाह के सामने गुस्ताख़ी करने वाले का अंजाम ऐसा होता है। जब सब इकठ्ठे हो गए तो एक भूका शेर आकर अपनी ज़बान से उसके पाँव और हाथों को चाटने लगा। जैसे जानवर अपने बच्चों को ज़बान से चाटते हैं।

यह जानवर की मुहब्बत और प्यार का तरीक़ा है। वह शेर आदमी के पैर चाट रहा था तो उस पर भी लरज़ा तारी हो गया कि मैं अभी इसके मुँह में जाऊँगा। उसके बाद उस आदमी के पाँव खोलकर बाहर लाया गया और उससे पूछा कि जब शेर आपके पाँव चाट रहा था तो आप अपने दिल में क्या सोच रहे थे? तो उसने कहा कि मैं सोच रहा था कि मेरे पाँव पाक हैं या नापाक हैं। अल्लाह तआला की अज़्मत दिल में उतर जाती है तो शेर को भी अल्लाह तआला बकरी बना देता है। और हम इंसानुमा बकरियों से डरते हैं और अल्लाह तआला से नहीं डरते हैं।

﴿قل من بيده ملكوت كل شیء وهو يجير ولا يجار عليه﴾

किसके हाथ में है ज़मीन और आसमान की लगाम और कौन है उससे टकराने वाला। जिसको वह साया दे दें तो कौन है साया हटा देने वाला और जिसको वह पकड़ लें तो कौन है उसको पनाह देने वाला। तो सब कहते हैं कोई नहीं। फिर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿تسحرون﴾ इतनी बड़ी ताक़तवर ज़ात को छोड़ के पेशाब पाख़ाने वाले के सामने झुक गए तो तुम पर किस ने जादू कर दिया। ऐसा काम आक़िल नहीं कर सकता। अल्लाह तआला को छोड़कर अपनी जैसी मख़्लूक़ की ख़ुशामद करता फिरे।

अल्लाह को राज़ी कर लो

मेरे भाईयो ला इलाहा इल्लल्लाह यह सिर्फ़ ज़बानी बोल नहीं बल्कि यह एक हक़ीक़त है जिससे हमारे दिल नाआशना हैं। और हम तबलीग़ में इसी बात को सिखा रहे हैं और इसी की दावत दे रहे हैं कि भाईयो मरने से पहले अपने दिल में अल्लाह तआला को ले लो। उसकी अज़्मत और किबरियाई उसकी जबरूत और

वहदानियत को दिल में उतार लो। सिर्फ़ उस एक अल्लाह को राज़ी कर लो।

न उसका कोई वज़ीर, न मुशीर, न मुईन न मददगार न कोई हिफ़ाज़त करने वाला न वह खाए, न पिए, न सोए, ने मरे, न मिटे। इब्तिदा से पाक, इंतिहा से पाक, थकावट से, नींद से, ऊँघ से पाक।

﴿وما كان ربك نسيا﴾ भूलता नहीं, ﴿لا يضل ربى﴾ भटकता नहीं, ﴿وما كان الله ليعجزه من شى﴾ वह आजिज़ नहीं, ﴿لا تحسبن الله غافلا﴾ वह ग़ाफ़िल नहीं, ﴿يمسك السموات والارض ان تزولا﴾ सारी काएनात का ज़र्रा-ज़र्रा बहर व बर, फ़िज़ा व ख़ला, आसमान व ज़मीन में सबके सब उसके क़ब्ज़ए क़ुदरत में हैं।

सारी काएनात को हुक्म दिया ﴿ائتيا طوعا وكرها﴾ झुक जाओ खुशी ओर नागवारी से। सारी काएनात बोली ऐ अल्लाह हम खुशी से हाज़िर हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि सारी काएनात मेरे सामने झुक जाती है तो तुम भी मेरे सामने झुक जाओ। तुम भी मान लो अल्लाह तआला की। अपनी मनचाही छोड़कर अल्लाह तआला की चाहत को पूरा कर लो। उसको राज़ी कर लो। तबलीग़ में इसी चीज़ की मेहनत हो रही है और कुछ नहीं। मेरे दोस्तो और भाईयो ज़मीन और आसमान में वह होगा जो अल्लाह तआला चाहते हैं।

ما شآء الله كان يفعل الله ما يشاء ويهدى من يشاء ويضل لمن يشآء

ويغفر من يشآء.

वही होगा जो अल्लाह चाहेंगे और हम भी चाहते हैं कि हमारी चाहतें पूरी हों। आज दुनिया वालों की चाहत यह है कि माल व दौलत कमाओ और नाचों यह रास्ता नामुकम्मल भी है और

ख़तरनाक भी है। कभी पैसे भी कोई खुशियाँ ले सका है? कभी नाज़नीनों को पहलू में लिटाकर भी किसी को तस्कीन हुई है? कभी शराब में ग़र्क होने से भी किसी का ग़म मिटा है?

सारी दुनिया में दुख ही दुख हैं। जो जितना भी अल्लाह तआला से दूर है वह बेचारा उतना ही महरूम है। इस रास्ते की नाकामी खुली आँखों के सामने अल्लाह तआला दिखला रहे हैं। अल्लाह तआला बता रहे हैं ﴿عبدی انت ترید وانا ارید ولا یکون الا ما ارید﴾ हम अपनी चाहतें चाहते हैं तो अल्लाह तआला इंतिज़ाम फ़रमा रहे हैं ﴿فان سلمتنی فی ما ارید اتیتك فی ما ترید﴾ ऐ मेरे बंदे! दुनिया में मेरे हुक्म को अपने ऊपर लगा दो और जारी कर दो, तारी कर दो।

हमारी ज़िंदगी की कामयाबी

फिर जो कुछ तू चाहता है सब कुछ पूरा कर दूंगा। अल्लाह तआला की चाहत को पूरा कर देना हमारी ज़िंदगी की कामयाबी है। यह पैदा करने वाले का हक़ है कि जिसने नुत्फ़े से ख़ूबसूरत शक्लें बनायीं क्या उसका हक़ नहीं कि उसकी मानकर चला जाए।

आँखों में छब्बीस करोड़ बल्ब लगाए हैं। क्या वह यह मुतालबा नहीं कर सकता कि हलाल देखो। कानों में दो लाख टेलीफ़ोन लगाए। क्या इसका मुतालबा नहीं कर सकता कि इनसे हराम नहीं सुनो और हलाल सुनो।

हाथ अल्लाह ने दे दिया। क्या इसका मुतलबा नहीं कर सकता कि इसके साथ अदल करो, ज़ुल्म न करो। शहवत की ताक़त रखी है इससे ज़िना नहीं शादी करो।

ज़बान में बोलने की ताक़त रखी। इतनी बड़ी क़ुदरत है कि हवा की हरकत अल्फ़ाज़ में ढल रही है। आवाज़ें हरकत ही तो

हैं। जो हवा से पैदा होती हैं और वह हरकत कान में जाकर अल्फ़ाज़ में मुन्तक़िल होकर दिमाग़ तक मायने को पहुँचाती है। कितनी बड़ी अल्लाह की क़ुदरत है ज़मीन की भी एक हरकत है जैसा कि गेंद थिरकती है ऐसे ही ज़मीन थिरकती है। अगर अल्लाह तआला ज़मीन के कपकपाहट को ख़त्म कर दें तो ज़मीन सीधी घूमती चली जाए।

कोई मौसम नहीं रहेगा। यह मौसम ख़त्म हो जाएंगे। क़ुतबी हवाएं चलेंगी तो पूरी ज़मीन पर बर्फ़ बिछा देंगी। जब हवाएं बंद हो जाएंगी तो सूरज की तपिश और शुआएं पूरी ज़मीन को चटख़ा देंगी। तो इंसान का क्या हाल बनेगा। क्या वह ज़ात मुतालबा नहीं कर सकती कि हक़ और सच बोलो और झूठ न बोलो और गाली किसी को मत दो?

﴿اذا هجرت امتی تساقط من عین اللہ﴾ जब मेरी उम्मत गाली गलौच अख़्तियार करेगी तो अल्लाह तआला की नज़र से गिर जाएगी।

हम तो पैदा होते ही गालियाँ देना शुरू कर देते हैं। बच्चे गालियाँ देने को खेल समझते हैं। छोटा सा बच्चा जानवरों को गालियाँ बक रहा है। ऐसा तो जानवर भी नहीं करते।

उसका मुतालबा जाएज़ है कि हक़ सच बोलो, चुग़ली न खाओ, ग़ीबत न करो, लगाई बुझाई न करो। वह बोल जो तेरा रब चाहता है।

﴿ان السمع والبصر والفؤاد کل اولئك کان عنه مسئولا.﴾

एक दिन आएगा कि मैं तेरे कानों से पूछूंगा कि क्या सुनते रहे। तेरी आँखों से पूछूंगा कि क्या देखते रहे। तेरे दिल से पूछूंगा कि किस जज़्बे के साथ मरे हो।

तो मेरे दोस्तो, भाईयो! हम मशहूर हुए या बदनाम हुए, ग़नी

हुए या फ़क़ीर हुए, अगर हमने अल्लाह तआला की चाहत को पूरा कर दिया तो हम कामयाब हुए। तबलीग़ इस चीज़ को सीखने की मेहनत है पूरी तरह। ﴿ادخلوا فی السلم کافۃ﴾ दीन में मुकम्मल तौर पर दाख़िल हो जा।

अपनी ख़्वाहिशात को दफ़न कर दो

एक टांग दरवाज़े से बाहर हो और एक अंदर हो तो यह लटक गया दर्मियान में। इसको पूरा दाख़िल होना नहीं कहा जाता और अल्लाह तआला कहते हैं कि दीन में पूरे आ जाओ। अल्लाह तआला के सामने झुका दो अपने आपको। अपनी ख़्वाहिशात को दफ़न कर दो। यह मुतालबा अल्लाह तआला ने हम से ला इलाहा इल्लल्लाह में किया है। यह ज़बान का ख़ाली बोल नहीं है, पूरी ज़िंदगी का मुतालबा है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम कलिमे में अपने नाम के साथ जोड़ दिया है। हम अल्लाह तआला की मान को जानते नहीं। और किसी पर अंबिया अलैहिमुस्सलाम के अलावा "वही" आती नहीं और अब कोई नबी आएगा नहीं। इसलिए अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने बंदों में से नमूना बनाके भेजा है कि मेरी मान के चलना है तो यह नमूना है।

﴿وما آتاکم الرسول فخذوہ.... الخ﴾ जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मना करें तो छोड़ दो और जिसको करने को कहें तो कर दो।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद को इनाम

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आज के बाद सूद हराम है। सबसे पहले मैं अपने चचा अब्बास के सूद को ख़त्म

करता हूँ। तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं अपने असल को भी ख़त्म करता हूँ। इस पर अल्लाह तआला ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद को सवा पाँच सौ बरस की हुकूमत अता फ़रमाई।

ऊपर वाले की तरफ़ से ऐलाने जंग

आज सारी दुनिया सूद की लानत में लिपट चुकी है। मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम सब इसके अलावा तिजारत ही नहीं करते। ऊपर वाले की तरफ़ से ऐलाने जंग हो रहा है। अगर इंसान के दुश्मन ऐलाने जंग करें तो सारे शहर में ब्लैक आऊट हो जाए। सारे मोर्चे खोद दिए जाएं और सारे दिफ़ाई निज़ाम तैयार कर लिए जाएं ओर अल्लाह तआला सूद पर कहे कि मैं तुमसे लड़ने के लिए आ रहा हूँ ﴿فاذنوا بحرب من الله...الخ﴾ मैं अकेला नहीं आ रहा है बल्कि मेरा रसूल भी तुम से लड़ने आ रहा है।

तो बताओ वह उम्मत कैसे फलाह पाएगी? जिनसे उसका रब और रसूल लड़ने को आ जाएं। उनको एटमी ताक़त बनना क्या नफ़ा देगा? एटमी ताकत बन भी गई तो कितने घरों को सुख मिला और हम यह नहीं कहते कि हथियार मत बनाओ लेकिन हम इतने पागल हैं कि इसी को अपनी मैराज समझ रहे हैं। कामयाबी और कामरानी अल्लाह तआला के हाथ में है। अल्लाह को साथ लेने से काम बनता है। फिर पत्थर भी एटम बम बन जाता है।

जालूत से मुक़ाबला

जब तालूत जालूत के मुक़ाबले के लिए निकले तो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम उस वक़्त छोटे बच्चे थे। कहने लगे मुझे भी

साथ ले लें। जब ये रास्ते में जा रहे थे तो इधर एक पत्थर पड़ा हुआ था। वह पत्थर कहने लगा कि ऐ दाऊद मुझे उठा लो। मेरे अंदर जालूत की मौत लिखी हुई है। छोटा सा पत्थर था। उसको उठाकर जेब में डाल दिया। जब मैदान में पहुँचे तो जालूत लोहे के लिबास पहनकर आया। सिर्फ़ उसकी आँखें नज़र आती थीं। उसने ऐलान कर दिया कि आओ कोई मेरे मुक़ाबले में?

दाऊद अलैहिस्सलाम ने तालूत से कहा कि इससे मुक़ाबले के लिए मैं जाता हूँ। उन्हें इजाज़त मिल गई तो यह छोटा सा नौउम्र बच्चा मैदान में उतरा तो जालूत ने कहा कि यह नौउम्र मेरे मुक़ाबले में आकर अपनी मौत से खेल रहा है। इतने में दाऊद अलैहिस्सलाम ने वही पत्थर उठाकर उसके सर पर मारा। वह पत्थर सर से पार निकल गया। इतना छोटा सा पत्थर सर को पार करके दूसरी तरफ़ निकल जाए तो यह कोई अक़्ल की बात है?

﴿وما رميت اذ رميت ولكن الله رمى﴾ तू नहीं मारता है बल्कि तेरा रब मार रहा है।

मेरे भाईयो! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी को अपनी ज़िंदगी बना लें। उनकी अदाएं अपने अंदर पैदा करें। मुहब्बत करनी है तो अल्लाह और उसके रसूल से करें। मुहब्बत से इत्तिबा पैदा होता है। जिससे मुहब्बत होती है आदमी उसके सांचे में ढलता चला जाता है।

जो लोग अपने मासूम बच्चों को सुबह सवेरे टाइयाँ और सलीब पहना के स्कूलों में भेज रहे हैं। बचपन से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों की अज़मतें बच्चों के दिलों से निकाल रहे हैं। यही औलाद कल इन माँ-बाप के गिरेबानों में हाथ डालेगी और कहेगी या अल्लाह! इन्होंने हमें हुज़ूर के तरीक़ों से दूर कर

दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है :

﴿لا يؤمن احدكم حتى اكون احب اليه...الخ﴾ तुम में से कोई मोमिन नहीं जब तक अपनी ख़्वाहिशात को मेरे तरीक़े के ताबे न कर दे। दूसरी जगह यह हदीस आई है ﴿لا يؤمن احدكم حتى اكون احب اليه...الخ﴾ तुम में से कोई उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब मेरी मुहब्बत औलाद पर, माँ-बाप पर ग़ालिब न हो जाए।

असल बात की फ़िक्र

मेरे भाईयो! सारे मआशरे को यह बात समझानी है कि आज हम रोटी और दाल की मंहगाई पर रो रहे हैं लेकिन क़ब्र की भूख चली आ रही है। यहाँ पर कपड़ों पर रो रहे हैं और वहाँ सबको नंगा करके खड़ा कर दिया जाएगा। सर के बालों से पकड़कर फ़रिश्ते घसीटते जा रहे होंगे। उस वक़्त के लिए कोई नहीं रोता। उस ग़म को कोई ग़म नहीं बनाता। रात तो कट ही जाती है चाहे हंसते कटे चाहे रोते कटे। कभी रात भी रुकी है। इस का काम जाना है। और दिन का काम भी चलना है। ग़म अवक़ात के साथ चले जाते हैं। ढल जाते हैं और जब वक़्त थम जाएगा, दिन व रात की गर्दिशें, अवक़ात की घड़ियाँ ख़त्म हो जाएंगी। फिर ग़म आया तो सदा रहेगा और राहत आई तो सदा रहेगी।

तबलीग़ सोई हुई इंसानियत को जगाने का नाम

मेरे दोस्तो! तबलीग़ सारी सोई हुई इंसानियत को जगाने का नाम है। दुनिया का मोहसिने आज़म होता है नबी। नबी से बढ़कर कोई मोहसिन नहीं होता। वह इंसानियत को जहन्नम की आग से बचाकर अल्लाह तआला की गिरफ़्त से बचाकर जन्नत के सीधे रास्ते पर लगाता है। इस वक़्त सारी दुनिया पर एहसाने अज़ीम यह

है कि उनको अल्लाह की तरफ़ फेर लिया जाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा मर्दों और औरतों में नज़र आए।

﴿يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِيْنَ...الخ﴾ ऐ मेरे नबी! बता दो अपनी बेटियों को और बीवियों को और सारी मुसलमान औरतों को कि अब पर्दे का हुक्म आ गया है।

जब सुबह में मुसलमान औरतें आयीं तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि ऐसा लगा कि कव्वे मस्जिद में आ गए। सारी काली चादरों में ढकी हुई, छिपी हुई। इधर हुक्म आया उधर इताअत आई। उनमें अपनी चाहत को अल्लाह पर क़ुर्बान करने का जज़्बा पैदा हो गया था।

तेरे इस सब्र पर अल्लाह ने तेरे बाप को जन्नत दे दी

एक औरत का ख़ाविन्द अल्लाह के रास्ते में चला गया और बीवी से कहा कि घर में रहना, बाहर न जाना। अब उसका बाप बीमार हो गया। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आई और कहने लगी कि मेरे ख़ाविन्द कहकर गए हैं कि बाहर न जाना। अब मैं बाप से मिलने जाऊँ। सहाबी का मतलब यह नहीं था कि बाप के पास भी न जाना। चूँकि मुँह से यह जुमला निकला था कि बाहर न जाना लेकिन उस औरत ने उस जुमले का भी पास रखा।

आप ने इम्तिहान में डाल दिया कि घर में बैठी रहो। फिर सकरात आ गई तो औरत ने कहा या रसूलुल्लाह! वह मरने लगा है और इंतिक़ाल हो गया। फिर वह औरत कहने लगी या रसूलुल्लाह मुँह देखने चली जाऊँ? आप ने फ़रमाया बैठी रहो। उसको कढ़वा घूंट न समझा शहद समझकर पी गई।

बीमारी में न गई, कफ़न में न गई। जब दफ़न से फ़ारिग़ होकर

वापस आए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अब जाओ। तेरे इस सब्र पर अल्लाह तआला ने तेरे बाप को जन्नत दे दीं इस तरह उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल पर अपने जज़्बात क़ुर्बान कर दिए थे। हमारा मिज़ाज बदल रहा है। हम मुसलमान भी रहना चाहते हैं और अपनी ख़्वाहिशात को भी पूरा करना चाहते हैं। और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि अगर मेरा क़ुर्ब हासिल करना चाहते हो तो अपनी चाहतों को मेरी चाहत पर क़ुर्बान कर दो।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मर्दों को भी तरीक़ा बताने के लिए आए और औरतों को भी तरीक़ा बताने के लिए आए। ﴿يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة﴾ ऐ अबूसुफ़ियान मेरी मान के चलना, दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़तें तुम्हारा मुक़द्दर कर दी जाएंगी।

जिसके लम्स (छूने) से बेजान चीज़ें भी वज्द में आ जाएं

सारी काएनात के अंदर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत डाल दी गई है। इंसान एक जज़्बाती मख़्लूक़ है। किसी मंज़र से मुहब्बत करता है और किसी मंज़र से नफ़रत करता है। कोई शक्ल देखता है तो मुहब्बत करता है। कोई शक्ल देखता है तो नफ़रत होती है। ये नज़ारे और शक्लें इसको अपनी तरफ़ खींचती हैं। इसी तरह से जानवर भी हैं लेकिन एक बेजान चीज़ में कोई शऊर नहीं, कोई ऐश और हरकत ही नहीं। मिसाल के तौर पर पहाड़ और वह भी काले। ﴿سحور سماء﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करती है।

आप जबले उहद पर चढ़ गए तो उहद पहाड़ झूमने लगा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम मुबारक मुझ पर पड़

गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया (اسکن) ठहर जा क्यों हरकत करता है?

जिसे लम्स से बेजान चीज़ें भी वज्द में आ जाएं उसकी ज़िंदगी हमने उठाकर किताबों में रख दी। वह ज़िंदगी घरों से निकल गई। वह दुकानों से निकल गई, बाज़ारों से निकल गई, अदालतों से निकल गई, हुकूमत के एवानों में से निकल गई, मुल्की क़ानून से निकल गई, बीवी और बच्चों से निकल गई, मर्दों से निकल गई, औरतों से निकल गई।

मेरे भाईयो और दोस्तो! इस पर कौन रोए। घर में मैय्यत पर घरवाले न रोएं तो कौन रोएगा?

कामयाबी का रास्ता

आज दीन और इस्लाम को मिटते हुए देखकर मुसलमान न रोए तो क्या यहूदी रोएगा? वह तो पहले से मिटाने पर लगे हुए हैं। तबलीग़ में इसी बात की मेहनत हो रही है कि अल्लाह तआला के अहकामात को हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों पर लेकर चलना हर मुसलमान मर्द और हर मुसलमान औरत के अंदर उतर जाए। यही उनकी कामयाबी का रास्ता है। इसी से वे कामयाबी की मंज़िल तक पहुँच जाएंगे। इसके अलावा तमाम रास्ते नाकामियों की तरफ़ हैं, हलाकतों की तरफ़ हैं, बर्बादियों की तरफ़ हैं।

यही मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रास्ता है जो उनको कामयाबी तक पहुँचाएगा। दुनिया की कोई किताब पढ़ने से कुछ नहीं मिलता अगरचे उसके इंतिहा तक पहुँचे और उसके असल फ़न तक जा पहुँचे। पढ़े हुए भी जूतियाँ चटख़ाते फिरते हैं।

जब मैं राइविन्ड में पढ़ता था तो मेरा छोटा भाई मेडिकल

कालेज में पढ़ता था। जब मैं कभी घर जाता था तो मुझसे कहता था कि आपके मुस्तक़्बिल के बारे में बड़ी फ़िक्र है। मैं उससे कहता था कि तू अपनी फ़िक्र कर। हम मस्जिद में एक रोटी पर भी गुज़ारा कर लेंगे। जब वह फ़ारिग़ हो गया तो उसको कोई मुलाज़मत नहीं मिली। जूतियाँ चटख़ाने लगा तो कहने लगा कि मुझे अब अपनी फ़िक्र है।

दुनिया की डिग्रियाँ हासिल करने के बाद कुछ नहीं मिलता और इस तरफ़ अल्लाह तआला की किताब उठाकर घर से निकला और मस्जिद में जाकर पढ़ने लगा तो माँ-बाप के पिछले सारे गुनाह माफ़ हो गए।

हाय जो क़ौम ज़हनी तौर पर ग़ुलाम हो चुकी हो तो उसे एटम बम बनाना कोई इज़्ज़त नहीं दे सकता। जो ज़हनी ग़ुलाम हैं जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी और तरीक़े अपनी तरफ़ न खींच सकें और जिनको हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में हुस्न दिखाई न दे वे कहाँ जा के फ़लाह पाएंगे? यह ज़मीन अल्लाह तआला की है। ज़मीन वह चीज़ निकालती है जो अल्लाह तआला कहते हैं। और हवाएं उसके ताबे हैं जो आसमान में रहता है। ज़मीन और आसमान की लगाम उसके हाथ में है। उसमें कोई शरीक नहीं।

जिसके दीदार का शजर (पेड़) व हजर (पत्थर) शौक़ रखें

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोए हुए थे तो दूर से एक दरख़्त आया ज़मीन को चीरता हुआ आया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर साया किया। फिर थोड़ी देर बाद हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँख खुलने से वापस अपनी जगह पर फ़रार पकड़ा। अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह

देखा कि वह दरख़्त आप के पास आया और फिर चला गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दर्याफ़्त किया तो आपने फ़रमाया कि वह मेरे दीदार के लिए आया था और मेरे दीदार का प्यासा था। उसने अल्लाह तआला से इजाज़त मांगी। जब उसे इजाज़त मिली तो आकर मेरा दीदार करके अपनी प्यास बुझाई। जिसकी ख़ातिर शजर व हजर शौक़ रखें और हम उसका शौक़ न रखें तो फिर हम अपने आपको मुर्दा न कहें तो और क्या कहें?

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी को ले के चलना और सीखना, इसके लिए घरों से निकलना शर्त है। यह मेहनत का एक निज़ाम अल्लाह तआला ने चला दिया। आपके मुल्क में चला दिया। इसे मैं भी सीख लूं और आप भी सीख लें ताकि जब मरें तो अल्लाह के महबूब बन के मर जाएं। मरदूद बन के न मरें।

यह मक़ाम कैसे पाया?

हज़रत शैवाना रह० ने ख़्वाब में देखा कि जन्नत सजाई जा रही है। फ़रिश्ते और जन्नती दरवाज़े पर खड़े हैं तो कहने लगे क्या हो रहा है और कौन आ रहा है? जवाब मिला कि एक ख़ातून आ रही हैं जिनके लिए सारे जन्नती दरवाज़े पर उनके इस्तिक़्बाल के लिए खड़े हुए हैं। तो उन्होंने देखा कि उनकी अपनी बहन शमऊना रह० सफ़ेद ऊँट पर बैठकर हवा में जन्नत की तरफ़ चली आ रही हैं। जब वह जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचकर ऊँट से उतरीं तो सारे फ़रिश्ते और जन्नतियों ने इस्तिक़बाल किया तो उन्होंने उनसे पूछा कि बहन यह मक़ाम कैसे पाया? उन्होंने कहा कि रातों को उठ-उठ कर अल्लाह को याद करने से पाया।

जो औरतें रात को उठकर रोती थीं तो उनकी गोद में जुनैद बग़दादी जैसे फूल खिलते थे और जिन औरतों की रातें गाने बजाने और सुनाने और सुनने में गुज़रती हैं उनकी गोद में बदमाश ही पैदा होंगे और कौन पैदा होगा। ऐसी बंजर ज़मीन में कांटे ही लगते हैं गुलाब नहीं लगते।

इस उम्मत की ज़िम्मेदारी

तो मेरे भाईयो! हम अपनी चाहतें अल्लाह की चाहत के ताबे कर लें और उन चीज़ों की नफ़रत अपने अंदर पैदा कर लें जिन चीज़ों से अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोका है। अब सारी दुनिया के इंसानों को इस पर लाना है। यह इस उम्मत की ज़िम्मेदारी है।

एक आदमी को आपने देखा। उसके पास कपड़े और जूते नहीं हैं तो आपके दिल में ख़्याल आया कि इसकी ज़रूरियात पूरी करूं। इतने में आपने देखा कि एक साँप दौड़ता हुआ उसकी तरफ़ आ रहा है तो बेसाख़्ता पुकार उठेंगे, साँप! साँप। सबसे पहले आप उसकी जान बचाने की फ़िक्र करेंगे क्योंकि जब तक जान है तो रोटी भी होगी, कपड़ा भी होगा, जब मर गया तो यह रोटी और कपड़े किस काम के?

इंसानियत को इन बिच्छुओं से बचाने की ज़रूरत है

इस वक़्त पूरी दुनिया की इंसानियत सिवाए चंद एक के सब के सब जहन्नम की तरफ़ जा रहे हैं। उनकी सबसे पहली ज़रूरत यह है कि उनसे तौबा करवाकर अल्लाह तआला से जोड़ा जाए। और जहन्नम के साँप बिच्छुओं से बचाया जाए। मेरे वालिद साहब फ़ौत हुए तो मैंने ख़्वाब में देखा कि वह बड़े ख़ौफ़ज़दा हैं। मैंने

कहा कि क्या हुआ? तो कहने लगे बेटा आख़िरत के साँप बड़े ख़तरनाक हैं। मैंने कहा कि आपके साथ क्या हुआ? फ़रमाया अल्लाह ने मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाई। फिर भी आख़िरत के साँप बड़े ख़तरनाक हैं। जहन्नम के बिच्छू जिनके क़द ख़च्चर के बराबर हैं। अगर एक बार डस लें तो चालीस साल तक आदमी तड़पता रहेगा और उसको हमेशा हमेशा डसते ही रहना है। न जहन्नम के आदमी पर मौत आएगी और न बिच्छू पर मौत आएगी। तो इंसानियत को इन बिच्छुओं से बचाने की ज़रूरत है।

हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारा दुश्मन अल्लाह का नाफ़रमान है तो तुझे बदला लेने की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला ख़ुद अपने नाफ़रमान का बदला चुकाएगा। जो मुजरिम बनकर मर गया तो किस इबरतनाक तरीक़े से क़ब्र उसका हशर करेगी। सारी दुनिया के इंसानों को इस आने वाले दिन से बचाना और अपने आपको भी बचाना है। गर्मी सर्दी से भी बचाना है। ये हुक़ूक़ का मामला है लेकिन अपने को जहन्नम की आग से बचाने के लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿قوا انفسكم اهليكم نار وقودها الناس...الخ﴾ जिस आग का ईंधन हम और आप हैं।

जिसको जन्नत ख़ुद चाहती है उसकी हालत

इस आयत को सुनने के बाद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु रोते हुए बाहर निकल गए। तीन दिन ग़ायब रहे और किसी को नहीं मिले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनको तलाश करो। जब तलाशी हुई तो पहाड़ों में बैठे थे। सर पर मिट्टी डाली हुई थी और रो रहे थे कि हाय! उस आग की हालत क्या होगी जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं।

उनको पकड़कर आपकी ख़िदमत में लाया गया तो अरज़ किया कि इस आयत ने मुझे बेक़रार कर दिया है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आप उनमें से नहीं हैं। सलमान तो वह है जिसको जन्नत ख़ुद चाहती है। जिसको जन्नत चाहे वह जंगलों और पहाड़ों में निकल जाए और जिसको कुछ पता ही नहीं जन्नत व जहन्नम का वह मज़े की नींद सो जाए।

एक सहाबी तहज्जुद की नमाज़ में रो रहे है कि ऐ अल्लाह! जहन्नम की आग से बचा। आपने आकर देखा और फ़रमाया अरे भाई! तूने क्या कर दिया। तेरे रोने की वजह से आसमान में सफ़े मातम बिछी हुई है। तेरे रोने ने फ़रिश्तों को भी रुला दिया है। ऐसा दर्द व ग़म उनके अंदर उतर गया था।

अब ऐसे पत्थर दिलों को नरम करना और अल्लाह तआल के बंदों को अल्लाह तआला से जोड़ना, इस उम्मत की मेहनत है। हम आए हैं इसके लिए। ﴿هو اجتبكم﴾ हमें अल्लाह तआला ने चुन लिया है। ﴿كنتم خير امة﴾ इस आयत में अल्लाह तआला ने इस उम्मत की शराफ़त और क़द्र व मंज़िलत बताई है। बिन बुलाए नहीं यह बुलाने पर आई है। मेहमाने ख़ुसूसी स्टेज पर मौज़्ज़त होता है। और वह स्पेशल कहा जाता है। आप अल्लाह तआला की तलब पर दुनिया में आएं हैं और आप क्यों आए हैं?

﴿تامرون بالمعروف تنهون﴾ आप लोगों को नेकियों की तरफ़ दावत देते हैं ओर आप उनको बुराइयों से रोकते हैं और आप अल्लाह तआला पर ईमान रखते हैं।

इस वक़्त मुसलमान की हालत यह है कि कुछ वक़्त दीन पर चलता है बाक़ी अपनी मर्ज़ी पर चलता है।

यह क्या आज़ादी है

पिच्चानवें फ़ीसद नमाज़ें छोड़ चुके हैं। कारोबार में लाखों में से एक मिलते हैं जो हलाल और हराम का ख़्याल रखते हैं। जिहालत का यह आलम है कि न बाप को पता है कि बच्चों की क्या तर्बियत करनी है और न माँ को इल्म है कि कैसे तर्बियत बच्चों की की जाए। बाज़ार औरतों से भर गए। जो घर की जांनशीन थी शैतान ने बाज़ार की ज़ीनत बना दिया। यह अच्छी आज़ादी है। एयर होस्टेस बन जाओ, तीन सौ आदमियों की ख़िदमत करो। यह आज़ादी है। क्या यह आज़ादी है? कर्लक बनकर सारा दिन आफ़िस में बैठो यह आज़ादी है। आज़ादी अल्लाह तआला ने दी थी कि घर में बैठकर बच्चों की तर्बियत करो और मर्द की ज़िम्मेदारी है कि कमाकर लाए और तुझे खिलाए। जिस रास्ते से अल्लाह तआला रिज़्क देते हैं, वे रास्ते हमने खुद बंद किए हुए हैं।

﴿من حيث لا يحتسب﴾ का दरवाज़ा खोलो तो अल्लाह तआला घर में बिठाकर खिलाएगा। अब अल्लाह तआला ने इंसान को कमाने का हुक्म देकर इम्तिहान में डाला है कि हलाल कमाता है या हराम, झूठ बोलता है या सच। रिश्वत लेता है या तंख़्वाह पर गुज़ारा करता है वरना अल्लाह तआला के लिए देना, लेना, पहनाना, खिलाना, बनाना, पिलाना कोई मुश्किल काम नहीं। वह घर में बिठा के खिला पिला सकते हैं।

दीन किसके हवाले

आज मुसलमान का हाल यह है कि हम कमाएंगे तो खाएंगे। इस अक़ीदे को तोड़ना है। अब इन मुसलमानों को समझना है। सारी दुनिया के काफ़िरों के पास इस दीन को लेकर जाना है। अगर हम और आप कहें कि हमारे पास फ़ुर्सत ही नहीं। औरतें

कहें कि हम अपने ख़ाविन्दों को अपने से जुदा नहीं होने देंगे और बच्चे कहें कि हमें खेलने से फ़ुर्सत नहीं तो फिर यह दीन किसके हवाले है? या यह बता दें कि यह काम फ़लाँ क़ौम या क़बीले के ज़िम्मे है। वह जाकर अंजाम दें।

मेरे भाईयो! हमने इस काम को अपनी ज़िंम्मेदारी ही नहीं समझा है। यह कोई नफ़्ली इबादत नहीं है कि कर लिया जाए तो ठीक है अगर न किया जाएं तो कोई हरज नहीं। नहीं मेरे दोस्तो! यह उम्मत की ज़िम्मेदारियों में शामिल है। हदीस में है, "जब तुम जिहाद को छोड़ दोगे तो तुम पर ज़िल्लत मुसल्लत कर दी जाएगी।"

सहाबा किराम मुल्क और माल फ़तह करने नहीं निकले थे। पैग़ामे इलाही को फैलाने निकले थे। अल्लाह का शुक्र है कि अल्लाह तआला ने इस पुराने काम को दोबारा ज़िंदा कर दिया। पीछे की तरफ़ गर्दिशे अय्याम को लौटा दिया। यह उम्मत फिर से इस काम को लेकर फिरने लगी।

कोई बताने वाला नहीं कि तुम दुनिया में क्यों आए?

हम को माँ-बाप ने कमाना सिखाया है। जवान हुए तो दाँए बाँए देखा तो हमने सोचा कि हमें भी कमाना है, घर बनाना है। यही हमारी सोच है। यही हमारा सरमाया है। स्कूल गए तो वहाँ भी कमाई की तालीम दी गई कि बड़े होकर बड़ा आदमी बनना है। बड़ा आदमी क्या है? जिसकी शोहरत हो, माल व दौलत हो, चारों तरफ़ चर्चा हो। हमारी नस्ल मज़लूम है। बेचारी जो अपने माँ-बाप के हाथों से ज़ुल्म सह रही है। अपने उस्तादों से ज़ुल्म सह रही है। कोई इनको बताने वाला नहीं है कि तुम दुनिया में क्यों आए हो?

कोई यह नहीं बता रहा है कि तक़्वा अख़्तियार करो। अल्लाह तआला पालेगा। सारे परेशान बैठे हुए हैं कि औलाद होगी तो रिज़्क़ कहाँ से आएगा?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "औलाद कसरत से पैदा करो ताकि मैं अपनी उम्मत की कसरत पर फ़ख़्र करूं क़यामत के दिन।"

मुक़द्दर माँ-बाप नहीं बनाते

आजकल यह शोर हो रहा है कि आबादी बढ़ गई है। बढ़ती हुई आबादी पर कंट्रोल किया जाए। स्कूल के हैड मास्टर को पता है कि मेरे स्कूल में बीस बच्चे पढ़ सकते है। उसके बाद गुंजाइश कोई नहीं। इसी तरह एक मील वाले को पता है कि मेरी फ़ैक्ट्री में कितने मज़दूर होने चाहिएं।

इसी तरह अल्लाह तआला को भी उनकी शान के मुताबिक़ पता है कि कितने बंदे पैदा करने हैं। मंसूबाबंदी पर अल्लाह तआला आ जाए तो शहरों के शहर ज़मीन कें अंदर धंसा दिए जाएं। उसने मौत व हयात का निज़ाम चलाया हुआ है। और रिज़्क़ अपने हाथ में लिया हुआ है। मुक़द्दर माँ-बाप नहीं बनाते, बच्चा माँ के पेट से अपना मुक़द्दर साथ लेकर आता है।

इज़्राईल अलैहिस्सलाम का रहम खाना

अल्लाह तआला ने इज़्राईल अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि आपने इतने आदमियों की जान ले ली है। आपको कभी किसी पर रहम भी आया है? उन्होंने कहा दो दफ़ा आया था। फ़रमाया किस वक़्त? एक औरत किश्ती में सवार थी। किश्ती दरिया के दर्मियान टूट गई। औरत एक तख़्ते पर बैठ गई। और उसी वक़्त

उसको दर्दे ज़ह हो गया। आपने कहा था कि इसकी माँ की जान निकालो। मैंने सोचा कि इस बच्चे का क्या बनेगा?

दूसरा वक़्त जब शद्दाद ने तीन सौ साल में नक़ली जन्नत बनाई। जब उसमें दाख़िल होने के लिए एक क़दम अंदर रखा तो आपने कहा इस की जान ले लो। तो मैंने उसकी जन्नत के दरवाज़े पर उसे गिरा दिया। उस पर मुझे रहम आया।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया आप जानते हैं यह शद्दाद कौन था? फ़रिश्ते ने कहा नहीं। फ़रमाया कि यह वही बदबख़्त है जिसकी माँ की जान आपने किश्ती के तख़्ते पर निकाली थी।

माँ-बाप के ज़िम्मे औलाद की तर्बियत है और उसका रिज़्क़ अल्लाह के हवाले है। रब अल्लाह तआला हैं काएनात नहीं। बहर व बर नहीं, हवाएं और ग़ल्ले नहीं, चाँद सितारे नहीं।

रब सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला ही हैं। बच्चे का रिज़्क़ पहले लिखा जाता है। माँ की छातियों में दूध पहले आता है, बच्चा बाद में आता है। क्या वह अल्लाह बड़े होने के बाद उसको रिज़्क़ नहीं दे सकता। रब अल्लाह तआला हैं। हमने उनकी रबूबियत को नहीं समझा। उनकी क़ुदरत, ताक़त, उसकी किबरियाई को नहीं समझा।

﴿يا موسى لا تخشى من الفقر ما دام خزآئن الملآء وان خزائن لا تنفد ابدا﴾

ऐ मूसा! तेरे रब के ख़ज़ाने कभी ख़त्म नहीं होंगे।

पहली निस्बत

तो मेरे भाईयो! हम तो दुनिया में इस्लाम को लेकर फिरने वाले हैं। पैदा होते ही हमारे कान में बताया जाता है कि तू मुहम्मदी है। बाक़ी बाप होने की निस्बत, बेटा होने की निस्बत,

माँ होने की निस्बत, बीवी और बेटी होने की निस्बत बाद की है। वज़ीर होने की निस्बत, सदर होने की निस्बत, ताजिर और ज़मींदार होने की निस्बत, डाक्टर होने की निस्बत, ये सब चीज़ें बाद में हमारे साथ लगती हैं। पहली निस्बत हमारी मुहम्मदी होने की है। इस निस्बत की ज़ैल में हमें दुनिया में अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुँचाना है। जिस तरह अल्लाह तआला ने कहा कि नमाज़ के लिए घर से निकल जाओ, हज के लिए निकल जाओ, ज़कात के लिए अपनी कमाई से पैसे दो। इसी तरह अल्लाह तआला ने कहा कि तुम्हारा नबी आख़िरी नहीं है। उसके बाद कोई नबी नहीं। उसके अहकामात फैलाओ और पहुँचाओ। यह हुक्म हमें मिला है। इसलिए हम इस काम को करने के पाबन्द हैं। पहली उम्मतों को नहीं मिला। उन पर दो वक़्त नमाज़ फ़र्ज़ थी। हमारे ऊपर पाँच वक़्त फ़र्ज़ है। कोई कहता है कि उन पर दो हमारे ऊपर पाँच क्यों हैं?

इनको घर छोड़ने का हुक्म नहीं मिला और हमें घर छोड़ने का हुक्म मिला है। ﴿وجاهدوا في الله حق جهاده، انفروا خفافا...﴾ जब हुक्म मिल गया तो अब करना ही पड़ेगा। तबलीग़ी जमाअत ने सिर्फ़ याद दिहानी कराई। न कोई ताक़त है कि घर से उठाकर बाहर फेंक दे। बीवी बच्चों से जुदा कर दे। यह अल्लाह तआला के अम्र की क़ुव्वत है कि लोग खुद घरों से निकलकर अल्लाह का पैग़ाम दुनिया में फैला रहे हैं। मुल्कों-मुल्कों फिज़ाएं बदल गयीं। क़बाइल के क़बाइल इस्लाम के दायरे में आ गए। हज़ारों लाखों इंसान इस मुक़द्दस काम से इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए।

मेरे रास्ते में निकलो

यूरोप की फ़िज़ाओं में अज़ानें गूंजने लगीं। मस्जिदें बनीं,

मदरसे बनें, हैरत की बात है कि डेढ़ हज़ार बच्चे यूरोप के एक मदरसे में थे। जबकि बीस बरस पहले कोई जनाज़ा पढ़ने वाला नहीं मिलता था। सारे पादरी मुसलमानों को दफ़न करते थे। जिन लोगों ने घरों को छोड़ा तो उसका सिला यह मिला है। ये पागल नहीं हैं कि बिस्तर उठा के फिर रहे हैं और साल में एक दफ़ा आपको तंग करने आ जाते हैं। नहीं नहीं यह अल्लाह का अम्र है जो आपको कह रहा है कि मेरे रास्ते में निकलो।

हम अपने ऊपर रहम खाएं

अल्लाह के फ़ज़ल से हम ने क़ुरआन पढ़ा और हदीस पढ़ी। हमें कोई गुंजाइश नहीं मिलती कि क़ुरआन में यह आता है और हदीस में यह आता है कि क्या ज़रूरत है घर से निकलने की। इधर बैठे रहो। गली कूचों में धक्के खाने की क्या ज़रूरत है। अल्लाह तआला ने बीवी बच्चे दिए हैं, सब कुछ दिया है। अगर कहीं से कोई गुंजाइश नज़र आती तो हम अपने लिए निकालते। हमें गुंजाइश नज़र नहीं आती। जब तीस बरस से क़ुरआन व हदीस पढ़ रहे हैं तो हम आपके लिए गुंजाइश कहाँ से निकालें कि चलो जी घर बैठे रहो। ये ऐसे ही कहते रहते हैं। नहीं मेरे भाईयो! यह हमारी ख़ैर ख़्वाहाना दरख़्वास्त है, इल्तिमास है कि अपने ऊपर रहम खाएं। यह निकलना आपकी ज़ाती ज़रूरत है। जो इसमें रुकावट बनते हैं वे नादान हैं कि उनको कुछ पता नहीं।

अगर इनको पता चल जाए तो वह रुकावट न बनते। एक वक़्त वह था मेरे वालिद ने कहा अगर तू निकल गया इन लोगों के साथ तो मैं तेरी टांगे तोडूँगा। ये अल्फ़ाज़ अब तक मेरे कानों में गूंज रहे हैं। एक वक़्त ऐसा आया कि मेरे छोटे भाई ने कहा यह काम करता नहीं। घूमता रहता है तो वालिद साहब ने कहा

कि अभी मैं ज़िंदा हूँ तुझे यह बोल बोलने का कोई हक् नहीं है। ये रुपए ख़र्च करता है। यह अगर मेरी बोटियाँ भी मांग ले तो मैं अपनी बोटियाँ भी निकालकर दे दूँ। पहले उन्हें पता नहीं था तब बात और काम उनकी समझ में आ गया तो कहने लगे मैं बोटियाँ देने को तैयार हूँ।

ये हमारे वालिदैन को और बच्चे बीवियों को पता नहीं है। कि इस निकलने में क्या ख़ज़ाने दुनिया और आख़िरत में छुपे हुए हैं। अगर पता चल जाए तो घरों में बैठना मुश्किल हो जाए। लोगो! तैयार हो जाओ। फिरते रहो, पुकारते रहो और इस रास्ते में मरने की दुआएं मांगते फिरो। हमारा माहौल कोई माहौल है सुनने का कोई मौक़ा ही नहीं मिलता।

यह हक़ीक़त कोई झुठला सकता है?

मेरे दोस्तो और बुज़ुर्गो! इस उम्मत को अल्लाह तआला ने चुना है दुनिया में अपना पैग़ाम पहुँचाने के लिए और आवाज़ लगाने के लिए। अगर हम अल्लाह की आवाज़ नहीं लगाएंगे तो शैतान की आवाज़ लगाना और सुनना पड़ेगी। घरों में बैठकर उसकी आवाज़ और नाच देखना पड़ेगा। उनकी फ़हाशी के निज़ाम में अपनी औलाद को ज़हर निगलते हुए देखकर भी आप चूँ न कर सकोगे। अगर अल्लाह की तरफ़ न बुलाया तो ये सब कुछ होगा। आप की औलादें वह न करेंगी जो आप चाहते हैं बल्कि वह करेंगी जो यहूदी और ईसाई चाहते हैं। हमारी बेटियाँ फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पीछे नहीं चलेंगी। हमारी बेटियाँ फ़ाहिशा औरतों और अदाकारों के पीछे चलेंगी। हमारे नौजवान अबूबक्र को सामने नहीं रखेंगे। वे फ़ासिक़ों, बदमाशों, फ़ाजिरों को सामने रखेंगे। यह हक़ीक़त है कोई झुठला नहीं सकता। जिसके लिए रात

की नींदें ख़राब कीं, जिसके पेशाब पाख़ाने धोते रहे लेकिन जब जवान हुए तो वालदैन को आँखें निकालता है। इन नाफ़रमान औलादों के लिए हम अपने अल्लाह की नाफ़रमानी करें, क्यों?

यह सौदा नहीं होगा। हम अपनी औलाद की ख़ैर ख़्वाही चाहते हैं तो यह भी जन्नत में जाने वाले बनें और पूरी दुनिया के इंसाना ताएब होकर अलाह से जुड़ जाएं तो तबलीग़ कोई तबलीग़ी जमाअत का काम नहीं है। यह अल्लाह का अम्र है, हुक्म है हुक्म। यह हमारी महरूमी है कि ज़माने की हवा में हम इस बात को भूल गए।

पिंजरे में रहते-रहते ऐसी ताक़त ख़त्म हुई कि उड़ने की ताक़त न रही। उड़े भी तो पता नहीं कि यह किस चमन का पंछी है? तो यह जमाअती काम नहीं है। यह इस्लाम है इस्लाम। ये दीन है दीन और सबसे बड़ा हुक्म है दीन का। तुम खड़े हो जाओ ﴿قــم فــانــذر وربك فكبر﴾ तो भाई इसके लिए निकलो चार महीने, चालीस दिन। ये सीखने का ज़माना है। काम सारी ज़िंदगी का है। डाक्टर बना बीस साल में, अगर सौ साल ज़िंदगी रही तो डाक्टरी ही करूंगा। चार माह सिर्फ़ सीखने के लिए है। बाक़ी सारी ज़िंदगी तेरा बनकर चलूंगा और लोगों को मानने वाला बनाऊँगा। नीयत तो कर लें भाई इसके अपने नाम लिखवा लें। अल्लाह तआला हम सब को अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

﴿و آخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

ज़िंदगी का मक़सद

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا○ مَا يَلِيْقُ بِجَمَالِهٖ وَعَظِيْمِ
سُلْطَانِهٖ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنْ اَرْسَلَهٗ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ بَشِيْرًا
وَّنَذِيْرًا وَدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُنِيْرًا○ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَاَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَمَّا بَعْدُ

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ
فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا○ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ
عِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا○

ज़िंदगी का मक़सद

मेरे भाईयो और दोस्तो! इस जहाँ का बनाने वाला अल्लाह तआला है और बनाने वाले को पता है कि इसको बनाने में सरमाया कितना लगा है, मेहनत कितनी हुई है। उसकी क़ीमत कितनी होनी चाहिए। अल्लाह तआला ने यह जहाँ बनाया है और उसने हमें यह ख़बर दी है कि उसकी क़ीमत एक मच्छर के एक पर के बराबर भी नहीं है।

﴿لو كانت الدنيا عند الله جناح بعوضة ما سقى منها كافرا شربته.﴾

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि अगर यह दुनिया मेरे नज़दीक मच्छर के बराबर हो भी क़ीमत रखती तो मैं एक काफ़िर को एक घूंट पानी के बराबर भी न देता।

यहाँ तो उनको ज़्यादा दिया हुआ है। अल्लाह तआला ने एक अजीब बात यह भी की है कि ﴿ولو لا ان يكون الناس امته واحدة﴾ और तुम्हारा ख़्याल न होता कि तुम भी दीन को छोड़ जाओगे।

لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضته ومعارج عليها

يظهرون. ولبيوتهم ابوابا و سررا عليها يتكئون وزخرفاً.

मैं क्या करता काफ़िरों के दरवाज़े और सीढ़ियाँ सोने और चाँदी के बना देता, उनकी चारपाईयाँ उनकी कुर्सियाँ, उनकी छतें, उनके घर, उनकी दीवारें, सोने और चाँदी की होतीं।

हदीस में आता है, "उनके जिस्म लोहे के बना देता।"

लोहे का मतलब यह है कि न बीमार होते न बूढ़े होते। यह सारा कुछ क्यों नहीं किया?

इसलिए फिर गिने चुने ही मुसलमान रह जाते तो अक्सर फिसल जाते। अब भी उतने फिसल रहे हैं कि उनको इतना दे दिया हमें कुछ न दिया। अल्लाह तआला ने हमें भी कुछ दे दिया और कुछ उनको भी दे दिया। कुछ उन पर हालात डाल दिए और कुछ हम पर हालात डाल दिए। उनकी मुसीबतें अलग कर दीं और हमारी मुसीबतें अगल कर दीं। बराबर बराबर उन्नीस बीस का फ़र्क़ रख दिया।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, "यह दुनिया मेरे नज़दीक इतनी गई गुज़री चीज़ है कि सारी उनको दे देता। तुम्हें कुछ न दे देता।"

﴿يا موسى ان لى عبادا لو سئلنى الجنة لاعطيتهم بحوالهها﴾.

ऐ मूसा! मेरे कुछ बंदे ऐसे हैं कि जन्नत मांगे तो सारे दे दूँ।

मेरे भाईयो! एक हदीस में आता है कि जन्नत की एक औरत का दुपट्टा सातों ज़मीनों को ख़ज़ानों से ज़्यदा क़ीमती है।

सिर्फ़ एक दुपट्टा जो ख़ज़ाने इस वक़्त हैं और जो इस्तेमाल हो चुकी हैं, जो आइन्दा इस्तेमाल होंगे, उसके बाद जो बाक़ी रहेंगे और कयामत आएगी तो ज़मीन के ख़ज़ानों में से फिर भी थोड़ा ही हिस्सा इस्तेमाल हुआ होगा। बाक़ी हिस्सा फिर भी पड़ा होगा। उसको निकाल दिया जाए, जो निकल चुका है, उसकी भी वापस लाया जाए। उन सबको इकठ्ठा किया जाए तो एक दुपट्टे की कीमत ज़्यादा है तो सारी जन्नत कैसी होगी?

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, जन्नत मांगे तो सारी दे दूँ और दुनिया में कहा कि कपड़ा लटकाने के लिए एक लकड़ी चाहिए तो वह भी नहीं दूंगा। ऐ अल्लाह एक लकड़ी दे दे ताकि उससे कपड़े लटकाऊँ तो फ़रमाते हैं वह भी नहीं दूंगा।

﴿وليس ذالك لهنو ان له على﴾ इसलिए नहीं कि वह मेरी नज़रों में झूठा है, ﴿لا دخوله من كرامته يوم القيامته﴾ इसलिए कि मैं उसको कयामत के दिन इज़्ज़त देना चाहता हूँ।

अल्लाह तआला के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हालत

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा साथ थे तो जो खजूरें दरख़्त से टपक जाती हैं वह नीचे गिर पड़ती हैं। उसको

कौन उठाता है? मगर उनको आप उठा के साफ़ करके खाने लगे और अब्दुल्लाह बिन उमर से फ़रमाया, तू क्यों नहीं खाता?

उन्होंने अरज़ किया ﴿لا اشتهى﴾ मुझे भूक नहीं। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿بل انا اشتهى﴾ मुझे तो भूक है। ﴿هذه الصبح رابعته ما ذقت شيئا﴾ आज चौथा दिन है मैंने एक लुकमा भी नहीं खाया।

अल्लाह तआला को अपने हबीब से प्यारा तो काएनात में कोई नहीं। सबसे महबूब तरीन अल्लाह तआला को अपना हबीब ही है। भला अपने हबीब को कोई मुश्किल में डालकर खुश हो सकता है?

अल्लाह तआला अपने बंदे से चाहे काफ़िर हो या मुसलमान हो माँ से सत्तर गुना ज़्यादा मुहब्बत व प्यार करते हैं। तो अपने हबीब से कितना प्यार करता होगा। अल्लाह के हबीब ने फ़रमाया कि चौथा दिन है मैंने एक लुक़्मा नहीं चखा।

अगर मैं चाहता तो मेरा अल्लाह मुझे सारी दुनिया के ख़ज़ाने दे देता। अगर मैं चाहता तो अल्लाह तआला मेरे क़दमों में रोम व फ़ारस के ख़ज़ाने ढेर कर देता। लेकिन मैंने नहीं मांगा। ऐ अब्दुल्लाह! एक ज़माना ऐसा आएगा कि लोगों के घरों में साल साल की रोटी पड़ी होगी फिर भी कहेंगे कि मज़ीद कहाँ से आएगी, कहाँ से आएगी? उनका यक़ीन बर्बाद हो जाएगा।

﴿وههنا جمع الدرهم ولا دينارا﴾ और सुन ले मैं कल के लिए भी जमा नहीं करता।

तो अल्लाह तआला ने दुनिया की हैसियत ऐसी रखी है कि मच्छर के पर के बराबर भी नहीं है। अगर होती तो इन काफ़िरों को एक पानी का घूंट भी न मिलता और हक़ीक़त बताई कि

अगर तुम्हारा ख़तरा न होता तो क्योंकि अक्सर मुसलमान कच्चे ही हैं, बहुत थोड़े पक्के हैं तो अक्सर मुसलमान फिसल जाते। अगर तुम सारे पक्के होते तो मैं तुम्हें कुछ न देता।

﴿وان كل ذالك لما متاع الحيوة الدنيا والاخرة عند ربك للمتقين﴾

ये तो सारे का सारा दुनिया का चंद रोजा खेल तमाशा है। असल अंजाम मेरे पास अल्लाह से डरने वालों का है।

इस दुनिया को बनाने वाला इस दुनिया की क़ीमत हमें बता रहा है ﴿وما الحيوة الدنيا الا متاع الغرور﴾ यह एक धोका है।

धोका किसे कहते हैं? होता नहीं मगर नज़र आता है। इसी को धोका कहते हैं। यह दुनिया नज़र आती है, जवानी नज़र आती है। अल्लाह तआला कहते हैं कि नहीं नहीं तुम्हारी नज़र का धोका है। आस्ट्रेलिया की ख़ूबसूरत वादियाँ नज़र आती हैं। ये सब धोका है। बड़ी बिल्डिंगें नज़र आ रही हैं, हुकूमत नज़र आ रही है, ताक़त नज़र आ रही है, दौलत नज़र आ रही है, झूठी शक्ल है अच्छी या बुरी। हुस्न के नक़्शे हों या बदसूरती के नक़्शे हों, इ़ज़्ज़त की चोटी हो या ज़िल्लत की पस्ती हो। अल्लाह तआला कहते हैं कि तुम्हारी नज़र का धोका है। हक़ीक़त में कुछ भी नहीं।

﴿متاع الغرور﴾ धोके का घर, ﴿جناح بعوض﴾ मच्छर का पर। अल्लाह तआला ने दुनिया के तीन नाम दिए हैं :

1. धोके का घर, 2. मच्छर का पर, 3. मकड़ी का जाला।

अगर कोई आदमी मच्छर के परों से झोली भर ले तो आप कहेंगे कि देखो भाई कितना ख़ुशनसीब हैं, माल लेकर जा रहा है या यह कहेंगे कि कितना पागल है मच्छर के परों से झोली भर के जा रहा है।

एक कलिमे वाले की क़ीमत

तो भाई! अल्लाह तआला ने हमें ईमान दिया है। अल्लाह की रहमत की कितनी बड़ी बारिश हमारे ऊपर हुई है कि उसने हमें मुसलमान बनाया। सारी दुनिया के काफ़िर मुसलमानों की वजह से ज़िंदा हैं। सारी दुनिया के मुश्रिक, ईसाई, यहूदी मुसलमान की वजह से ज़िंदा हैं। ईमान न हो तो सारी काएनात तोड़ दी जाए। मुसलमान न हो तो ज़मीन व आसमान का नक़्शा टूट जाए।

﴿لا تقوم الساعة حتى يقال على وجه الارض﴾ अल्लाह! अल्लाह! जब तक एक मुसलमान ज़िंदा है। आप अंदाज़ा लगाएं और यह मुसलमान भी वह होगा जिसको न नमाज़ का पता है और न रोज़े का, न हलाल का पता है न हराम का पता है। सिर्फ़ वह ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह पढ़ता है।

और उसको कुछ पता नहीं। अभी अल्लाह का फ़ज़ल है कि हम इस सतह के नहीं हैं। कुछ अच्छे काम भी करते हैं। कुछ बुरे काम भी करते हैं। जब तक मुसलमान ज़िंदा है, यह सूरज चमकेगा, यह चाँद घटेगा और बढ़ेगा। ये हवाएं चलती रहेंगी। ये बादल उठते रहेंगे। ये बारिशें बरसती रहेंगी। और य ज़मीन अपने ग़ल्ले उगलती रहेंगी, यह मौसम बदलते रहेंगे।और यह ज़मीन व आसमान की गर्दिश चलती रहेगी। फ़रिश्तों का आना जाना होता रहेगा। यह पूरा निज़ाम चलता रहेगा।

यह बंद नहीं हो सकता जब तक यह मुसलमान मौजूद है। जब यह मरेगा तो अब अल्लाह को इस काएनात की कोई ज़रूरत नहीं। सारी काएनात के ऊपर रंदा फेर देगा। तो मुसलमान इतना कीमती है। हम अपनी कीमत को महसूस करें। एहसासे कमतरी में मुब्तला न हों। आस्ट्रेलिया वाले आपकी बरकत से खा रहे हैं।

अमरीका वाले, यूरोप वाले, सातों बर्रे आज़म की चींटियाँ तक मुसलमान की बरकत से रोज़ी खा रही हैं। शैतान को भी रिज़्क़ मुसलमानों की वजह से मिल रहा है। काफ़िर जिन्नात को भी मुसलमानों की वजह से मिल रहा है। परिन्दे, चरिन्दे, साँप, कीड़े, मकौड़े मुसलमान की वजह से रिज़्क़ खा रहे हैं।

सबसे ज़्यादा ख़ुश क़िस्मत

जब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती दुनिया से मिट जाएगा तो सारी काएनात का निज़ाम तोड़ दिया जाएगा। अल्लाह की किसी के साथ रिश्तेदारी नहीं है। और अल्लाह तआला ने यह दौलत हमें मुफ़्त दी है बग़ैर मांगे दी है। अब हमारा फ़क़ीर से फ़क़ीर आदमी भी अमरीका के सदर से ज़्यादा ख़ुश क़िस्मत है कि उसने अल्लाह तआला को पहचान लिया है। हमारा अनपढ़ जाहिल जो अंगूठे लगाना भी नहीं जानता वह भी दुनिया के बड़े से बड़े साइंसदान आइन्सटाइन से ज़्यादा समझदार है। उसने अल्लाह और रसूल को पहचान लिया है और इस पागल ने अल्लाह तआला को पहचाना न रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहचाना। सारे आस्ट्रेलिया के साइंसदानो से हमारा रेढ़ी चलाने वाला मुसलमान ज़्यादा समझदार है। वह आख़िरत को जान गया। अल्लाह तआला पर और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया। वह इस काएनात के रब को जान गया। और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरी रसूल मान लिया। इससे ज़्यादा दुनिया कोई अक़्लमंद नहीं।

गारे मिट्टी की ज़िंदगी में जुस्तजू खपा देना यह तो अक़्ल की कोई इंतिहा नहीं। मगर बेअक़्ली की ज़रूर है। एक दफ़ा गश्त में बात हो रही थी। एक आदमी ने कहा कि लोग चाँद तक पहुँच

गए लेकिन तुम लोग अभी तक नमाज़ रोज़े की बातें करते फिर रहे हो? हमारे एक साथी ने कहा जानवर बन के चाँद पर फिरने से ज़्यादा बेहतर है कि इंसान बनकर ज़मीन पर चला जाए।

हर कए चीज़ की तख़्लीक़ में अलग-अलग मक़सद है। अल्लाह तआला ने हमें एक मक़सद दिया है। आप ग़ौर फ़रमाएं कि हम ख़ुदा पैदा होते हैं या अल्लाह तआला ने हमें पैदा किया है? यह शक्ल मैंने अपनी मर्ज़ी से अख़्तियार नहीं की और मेरे माँ-बाप से अल्लाह ने नहीं पूछा। हमें पंजाब में पैदा किया हमसे मशवरा नहीं लिया। आप लोगों को यहाँ आस्ट्रेलिया में पैदा किया आप लोगों से मशवरा नहीं किया। अरबी को अरबी बनाया, अजमी को अजमी बनाया। मर्द को मर्द बनाया, औरत को औरत बनाय। रंग अलग, शक्ल अलग। किसी की नाक खड़ी, किसी की नाप चपटी, किसी को ऊँचा किसी को नीचा। कोई काला कोई गोरा, कोई मोटा कोई पतला। किसी से अल्लाह तआला ने मशवरा नहीं लिया?

आसमान से फ़ैसला किया ﴿هو الذی يصوركم فی الارحام كيف يشاء﴾ अल्लाह वह रब है तुम्हें माँ के पेट में जैसा चाहता है शक्ल देता है। शक्ल उसने दी, सूरत भी उसने दी, ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा भी उसने दिया है। पूरी दुनिया के उलूम इकठ्ठे किए जाएं तो इसमें एक जुमला भी ऐसा नहीं मिल सकता कि जो यह बताए कि मेरी ज़िंदगी का मक़सद क्या है? जो आदमी अपनी ज़िंदगी के मक़सद को न पहचान सके तो उसके पास कौन सा इल्म है जो उसे नजात दे सके। ज़मीन क्यों है? हवा क्या है? लोहा किस लिए है और क्या है?

वह सारी काएनात के ज़र्रे ज़र्रे की छान में लगकर हम से ग़ाफ़िल हो गए कि मैं क्यों हूँ और क्या हूँ?

यह तो सबसे बड़ा सवाल था हल करने वाला कि मैं क्यों और क्या हूँ?

मेरे भाईयो! आप यह ग़ौर फ़रमाएं कि हमारा वजूद अपना नहीं। बनाने वाले ने उसे बनाया है और मक़सद भी उसी ने दिया है।

कामयाब ज़िंदगी

सारी दुनिया के डाक्टर और साइंसदान बता नहीं सकते कि मैं क्यों पैदा हुआ हूँ? अल्लाह तआला ने असल मक़सद बताया कि यह काएनात क्यों पैदा हुई है और इसका क्या मक़सद है। इसी मक़सद पर आना ज़िंदगी की मैराज है और इस मक़सद को हासिल करना कामयाबी है। माल का आना और उसका चला जाना इस बात से कामयाबी और नाकामी को कोई जोड़ नहीं। कामयाब ज़िंदगी वह है जो अल्लाह की मंशा के मुताबिक़ हो। जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की ज़िंदगी से ग़ाफ़िल होकर नफ़्स और शैतान की पूजा में लगा हुआ है तो यह हक़ीक़त में एक नाकाम ज़िंदगी का तसव्वुर है। हमें ज़िंदगी का जो तसव्वुर दिया गया है वह अल्लाह की तरफ़ से है। आज की दुनिया में तस्सवुरे ज़िंदगी यह है कि माल व दौलत है, बड़ी गाडियाँ हैं, बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें है तो बड़ी बेहतरीन ज़िंदगी है। आम आदमी के बारे में पूछो तो कहते हैं कि कुछ नहीं उसका क्या पूछना। बड़ा ज़लील आदमी है। छोटा आदमी है, थिक्कड़ सा आदमी है ज़िंदगी का यह रुख़ अल्लाह तआला की तरफ़ से हमें नहीं मिला।

अल्लाह तआला ने जो रुख़ दिया है वह यह है कि जो मेरी मानकर चल रहा है और मेरे नबी की मानकर चल रहा है वह दुनिया का सबसे कामयाब इंसान है। जो मुझसे हटकर चल रहा है

और मेरे नबी के तरीक़ों से दूर चल रहा है वह दुनिया का नाकाम तरीन इंसान है।

अल्लाह तआला कह रहे हैं ﴿الم يعلموا﴾ क्या तुम्हें पता नहीं है? ﴿انه من يحادد الله ورسوله فان له نار جهنم خالدين فيها ذالك الخزى العظيم﴾ तुम्हें पता नहीं जो मेरा और मेरे रसूल का दुश्मन हो जाए वह जहन्नम की आग में जाएगा। यही असल नाकामी है। यही बड़ी ज़िल्लत व रुसवाई है। हम समझते हैं कि फ़क़ीर हो गए तो ज़लील हो गए जबकि अल्लाह तआला कहते हैं कि मेरे और मेरे रसूल के नाफ़रमान हो गए तो ज़लील हो गए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में बैठकर नमाज़ पढ़ रहे हैं। एक नबी में चालीस आदमियों की ताक़त होती है और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में कितनी ताक़त होगी। आप बैठकर नमाज़ पढ़ रहे हैं। हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु आए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ﴿بابى انت وامى﴾ मेरे माँ-बाप आप पर क़ुर्बान हों, आप बैठकर क्यों नमाज़ पढ़ रहे हैं?

पेट की तरफ़ इशारा करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि भूक। भूक की वजह से हिम्मत नहीं है कि पाँव पर खड़े होने की। यह जो मेरा और आपका ज़हन है कि इसके मुताबिक़ बड़ी ज़िल्लत की बात यह है कि रोटी नहीं मिल रही।

सबसे ऊँची ज़ात जिसके इशारे से चाँद दो टुकड़े हो जाए। जहाँ सारी काएनात की ताक़तें ख़त्म हो जाएं। काएनात की सबसे बड़ी मख़्लूक़ जिब्राईल अलैहिस्सलाम हैं। जिब्राईल अलैहिस्सलाम की जहाँ जिस्मानी और रूहानी ताक़तें ख़त्म हुई वहाँ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिस्मानी परवाज़ शुरू हुई है। मूसा अलैहिस्सलाम पर अर्श से तजल्ली एक तजल्ली पड़ी तो चालीस

दिन बेहोश रहे और होश नहीं आया जबकि अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सामने खड़ा करके ख़िताब फ़रमाया और आपने सारी तजल्लियात को बर्दाश्त किया है।

मुसलमान होना बहुत बड़ी दौलत है

मेरे भाईयो! यह अरज़ करना चाहता हूँ कि मुसलमान होना बहुत बड़ी दौलत है। डॉलर से, पाउन्ड से, गाड़ियों से, बंगलों से सबसे आला चीज़ यह है कि अल्लाह तआला ने हमें ईमान की दोलत दी है। अदना से अदना मुसलमान के लिए हुज़ूर का आँसू निकला हुआ है। लिहाज़ा किसी को भी घटिया नहीं समझना चाहिए।

मुसलमान को ज़लील करना बैतुल्लाह को गिराने से बड़ा गुनाह है। बैतुल्लाह को किसी ने तोड़ दिया यह छोटा गुनाह है बनिस्बत इस बात कि किसी मुसलमान को बेइ़ज़्ज़त कर दिया यह बड़ा गुनाह है।

कमज़ोर से कमज़ोर मुसलमान के लिए भी कयामत के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत होगी। दुनिया कीसबसे क़ीमती पूंजी मुसलमान है। अदना से अदना मुसलमान भी जहन्नम में रहेंगे तो अल्लाह पाक अंबिया अलैहिमुस्सलाम से सिद्दीक़ीन से, शोहदा से कहेगा जाओ जितने इंसान जहन्नम से निकालकर ला सकते हो तो निकालो।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत पर बेशुमार मख़्लूक़ निकलेगी। अब अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि अब मेरी बारी है तुम सब फ़ारिग़ हो गए।

﴿ولم يبق الا ارحم الراحمين﴾ अब अल्लाह पाक अपने दोनों हाथों से जहन्नम के अंदर से ईमान वालों को निकालेगा। इस तरह तीन

दफ़ा निकालेंगे। और जिस दिल में सेंटीमीटर के करोड़वें हिस्से के बराबर भी ईमान होगा वह फिर भी रह जाएगा। उसके बाद जहन्नम से जिब्रील अलैहिस्सलाम को या हन्नान या मन्नान की आवाज़ आएगी। कहेंगे एक अभी बाक़ी है, उसकी बारी नहीं आई तो अल्लाह पाक फ़रमाएंगे जाओ उसको भी निकाल ले आओ। तो वह आएंगे और जहन्नम के दारोग़ा से कहेंगे अरे भाई! एक अटका हुआ आख़िरी क़ैदी है उसको निकाल दो। तो वह जहन्नम के अंदर जाकर वापस आएंगे और कहेंगे कि दोज़ख़ ने अब करवट बदल दी है और हर चीज़ पलट दी है, पता नहीं वह कहाँ है? दोज़ख़ का एक पत्थर सातों बर्रे आज़म के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो सारे पहाड़ पिघलकर स्याह पानी में तब्दील हो जाएंगे और दोज़ख़ की एक चट्टान सारी दुनिया के पहाड़ों से वज़नी और बड़ी है। दोज़ख में अगर सूई के बराबर सुराख़ हो जाए तो उसकी आग सारे जहाँ को जलाकर राख कर देगी। दोज़ख़ से एक आदमी को भी निकालकर एक लाख आदमियों में बिठा दिया जाए और वह एक सांस भी ले तो उसकी एक सांस की वजह से एक लाख आदमी मर के ख़त्म हो जाएंगे।

यह क़ैदख़ाना है कोई मामूली चीज़ नहीं है कि दो चार थप्पड़ लगेंगे और फिर उठाकर जन्नत में ले आएंगे। आसान मसअला नहीं है। अगर धुलाई होगी तो बड़ी ज़बरदस्त होगी। तो जिब्रील अलैहिस्सलाम आएंगे। अल्लाह तआला से अरज़ करेंगे कि पता नहीं चल रहा है वह कहाँ है।

जन्नत में जाने वाला आख़िरी इंसान

अल्लाह तआला बता देगा कि जहन्नम के फ़लाँ चट्टान के नीचे पड़ा है। तो वह आएंगे चट्टान उठाएंगे तो नीचे साँप बिच्छू में

फंसा पड़ा होगा। एक दफ़ा दोज़ख़ का साँप डंग मार दे तो चालीस साल तक तड़पता रहेगा। उसको झटका देकर निकालेंगे। फिर साफ़ हो जाएगा। उसको नहरे हयात में डाला जाएगा। उससे वह चाँद की तरह चमकता हुआ निकलेगा। पुलसिरात से उसको गुज़ारा जाएगा। और पुलसिरात सिर्फ़ मुसलमानों के लिए है। काफ़िरों के लिए नहीं। उनको तो सीधा जहन्नम के गेट से दाख़िल किया जाएगा।

﴿وسيق الذين كفروآ الى جهنم زمراء حتى اذا جآء وها فتحت ابوابها﴾

ये काफ़िर के लिए ज़ाब्ता है कि अंधे गूंगे बनकर उनको जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। पुलसिरात मुसलमानों के लिए है। उस पर उनको गुज़ारा जाएगा ताकि ईमान का पता चल जाए। बाज़ ऐसे गुज़रेंगे कि जहन्नम की आग नीचे से पुकारेगी ﴿جز جز﴾ अरे अल्लाह के वास्ते जल्दी चल जल्दी ﴿اطفاء نورك لهبي﴾ तेरे ईमन ने मझे ठंडा कर दिया।

और बाज़ ऐसे गुज़रेंगे कि उनको दोनों तरफ़ आरियाँ लग जाएंगी। उसके कांटे इसके अंदर फसेंगे। उसको कहा जाएगा कि चल वह कभी गिरेगा, कभी चलेगा।

वह पुकारेगा कि या अल्लाह! पार लगा दे। या अल्लाह! पार लगा दे।

अल्लाह तआला फ़रमाएगा, "एक वादा करे तो पार लगा दूंगा।

वह क़हेगा, क्या? तू बाहर जाकर अपने सारे गुनाह मान लेगा तो पार लगा दूंगा। तो वह कहेगा, पार लगा दे। मैं सारे गुनाह मान जाऊँगा। अब अल्लाह तआला पार लगा देंगे। सामने जन्नत नज़र आ रही होगी और पीछे दोज़ख़ नज़र आ रही होगी। अल्लाह

तआला फ़रमाएंगे अब बता क्या किया था दुनिया में? तो अब वह डरेगा कि मान गया तो दोबारा न फेंक दें। तो वह कहेगा कि मैंने कुछ किया ही नहीं यानी आख़िर वक़्त तक दग़ाबाज़ी। अल्लाह तआला कहेंगे गवाह लाऊँ? तो तसल्ली के लिए इधर-उधर देखेगा। कोई नज़र नहीं आएगा।

जन्नत वाले जन्नत में हैं और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में हैं। वहाँ कोई भी नहीं होगा। फिर अल्लाह तआला उसकी ज़बान को बंद कर देंगे और उसके जिस्म से कहेंगे तू बोल। फिर उसके हाथों से, उसकी रानों से आवाज़ें आएंगी। तो वह कहेगा कि मेरा वजूद ही मेरा दुश्मन हो गया।

वह कहेगा कि या अल्लाह! बड़े-बड़े गुनाह किए तो माफ़ कर दे। दोबारा न भेज। तो उससे कहा जाएगा कि जा जन्नत में चला जा। जब जाएगा तो अल्लाह पाक उसको ऐसी जन्नत दिखाएगा जैसे कि वह सारी की सारी जन्नतियों से भरी हुई है। तो वह देखकर वापस आ जाएगा।

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, अरे तू जाता क्यों नहीं? तो फिर जन्नत देखकर वापस आ जाएगा। फिर कहा जाएगा तू जाता क्यों नहीं है? कहेगा आपने कोई जगह ख़ाली नहीं छोड़ी मैं कहाँ जाऊँ?

अब अल्लाह तआला उसको क़ीमत देगा। अच्छा तू राज़ी है कि मैंने जब से दुनिया बनाई थी और जिस वक़्त वह ख़त्म हुई उसका दस गुना करके तुम्हें दे दूँ क्या तू राज़ी है? तो उसका मुँह खुल जाएगा। ﴿استهزا بی وانت رب العالمین﴾ आप मेरे साथ मज़ाक करते हैं हालाँकि आप तो तमाम जहान के रब हैं। तो उसको यक़ीन नहीं आएगा। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿بلی انا علی ذالك﴾

(फ़रमाया) मुझे इस पर क़ुदरत है, जो मैंने तुझे दुनिया और उसका दस गुना दे दिया। कितनी बड़ी दौलत है ईमान की जो अल्लाह तआला ने हमें अता फ़रमाई।

फ़र्ज़ नमाज़ का एक सज्दा ज़मीन आसमान से ज़्यादा क़ीमती है। यह अदना दर्जे का जन्नती जन्नत में जाएगा तो उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा जन्नत का ख़ादिम खोलेगा तो उसके हुस्न व जमाल को देखकर यह सर झुकाएगा।

और वह कहेगा कि तुम क्या कर रहे हो? तो यह कहेगा, तुम फ़रिश्ते हो? तो वह कहेगा, मैं आपका ख़ादिम हूँ और नौकर हूँ। और उसके लिए जन्नत में क़ालीन होंगे। उस पर चालीस साल तक चल सकता है और उसके दोनों तरफ़ अस्सी हज़ार ख़ादिम होंगे और वे कहेंगे, ऐ हमारे आक़ा! आप इतनी देर से आए? तो वह कहेगा कि शुक्र अदा करो मैं आ गया तुम्हें क्या ख़बर कि मैं कहाँ फंसा हुआ था। ऐसी धुलाई हो रही थी कि मत पूछो।

अस्सी हज़ार नौकर कोई तंख़्वाह उनको नहीं देनी पड़ेगी। उनका सारा ख़र्च अल्लाह के ज़िम्मे है।

फिर आगे जाएगा तो बड़ा चौड़ा मैदान है जिसके वस्त में एक तख़्त बिछा हुआ है। उस पर इसको बिठाया जाएगा। हर नौकर एक खाने की क़िस्म पेश करेगा और एक पीने की क़िस्म पेश करेगा। अस्सी हज़ार क़िस्म के खाने, अस्सी हज़ार क़िस्म के शर्बत। न पेट थके, न आँत थके, न दाँत थके, न जबड़ा थके। न ज़बान दांतों के अंदर अटके। यह सारा निज़ाम इसके लिए चल रहा है। और हर लुक़्मे की लज़्ज़त उसके लिए बढ़ती जाएगी। हर शर्बत की लज़्ज़त भी बढ़ती जाएगी जैसे दुनिया का पहला निवाला ज़्यादा मज़ेदार होता है, फिर उससे कम, फिर उससे कम। फिर न

पीने को जी चाहता है न खाने को लेकिन जन्नत में उसके ख़िलाफ़ होगा। अल्लाह तआला ऐसी क़ुव्वत देगा कि खाता और पीता रहेगा। पेशाब कोई नहीं, पाख़ाना कोई नहीं।

फिर ख़ादिम कहेंगे अब इसको इसके घरवालों से मिलने दो। वे सब वापस चले जाएंगे। फिर सामने से पर्दा हटेगा। ﴿فاذا يملك الاخرة﴾ और एक पूरा जहान नज़र आएगा।

पूरी जन्नत जैसे यह तख़्त ऐसा ही आगे एक तख़्त। उस पर एक लड़की जन्नत की हूर बैठी होगी। उसके जिस्म पर सत्तर जोड़े होंगे। हर जोड़े का रंग अलग होगा। ख़ुशबू अलग होगी। सत्तर जोड़ों में उसका जिस्म नज़र आएगा। जब चेहरे पर देखेगा तो उस पर भी अपना चेहरा नज़र आएगा। उसके सीने पर नज़र पड़ेगी, उसमें भी अपना चेहरा नज़र आएगा। ऐसा साफ़ जिस्म उसका होगा कि चालीस साल उसको देखने में गुमसुम रहेगा। अभी अभी जहन्नम के काले-काले फ़रिश्ते देखकर आया था। अभी एक हूर देखकर अपने आपको भी भूल जाएगा। चालीस साल देखने में लगा हुआ है। फिर वह हूर उसकी बेहोशी तोड़ेगी ﴿امالك مني رغبة﴾ अरे वली! क्या आपको मेरी ज़रूरत नहीं? फिर उसको होश आएगा कि कहाँ बैठा है? पूछेगा तू कौन है? वह कहेगी मुझे अल्लाह तआला ने तेरी आँखों की ठंडक के लिए बनाया है। तो भाई यह तो एक सेंटीमीटर के करोड़वाँ ईमान का हिस्सा है जो उसके अंदर अटका हुआ है। यह जन्नत उसकी क़ीमत है।

अब अमरीका वालों के पास क्या है, आस्ट्रेलिया वालों के पास क्या है। तो हमें एहसासे कमतरी से निकलना चाहिए। हमारी बरकत से सारी काएनात को रिज़्क मिल रहा है। हम हुज़ूर की

उम्मत हैं सारी उम्मतों की सरदार उम्मत। ﴿انتم خيرها واكرمها﴾ तुम सबसे बेहतरीन उम्मत हो। सबसे अफ़ज़ल तरीन उम्मत हो अल्लाह तआला की नज़र में।

एक दफ़ा मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह! मेरी उम्मत से कोई अच्छी उम्मत है? मेरी उम्मत पर मन-सलवा और बादलों का साया जैसी नेमतें रही हैं

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿ام تدرى يا موسى ان فضل امة احمد على الامم كفضلى على خلقى يا موسى﴾ आपको पता नहीं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को सारी उम्मतों पर वह इज़्ज़त हासिल है जो मेरी ज़ात को मेरी मख़्लूक़ पर इज़्ज़त हासिल है।

हमारे तो मज़े हो गए कि हम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती बन गए। ﴿من جآء بالحسنة فله عشر امثالها﴾ जो एक नेकी करेगा उसको दस दूंगा।

حدثنی عبدالرزاق عن معمر عن زهری عن عروة عن عائشةؓ عن رسول

الله صلى الله عليه وسلم عن جبرائيل قال الله تعالىٰ انى استحى ان

اعذب ذا شيبة فى الاسلام وانى يشيب فى الاسلام.

मुझे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बताया उसको मौमर ने बताया, उसे ज़ोहरी ने बताया, उसे उरवा ने बताया, उसे हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया। उन्हें हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया। उन्हें जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बताया। जिब्राईल अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने बताया कि जब कोई मुसलमान इस्लाम में बूढ़ा होकर मरता है तो अज़ाब देते हुए उससे शर्माता हूँ।

ऐ अल्लाह! तुझे पता है कि मैं इस्लाम में बूढ़ा हुआ हूँ ﴿وانى

﴿لبست في الاسلام﴾ मैं सत्तर साल का बूढ़ा हूँ तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

صدق عبدالرزاق وصدق معمر و صدق زهرى وصدق عروة وصدق عائشه وصدق رسولى و حبيى وصدق جبرائيل ولنا اصدق القائلين

इन सब रावियों ने सच कहा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी सच कहा और जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने सच कहा और इनमें मैं सारे सच्चों का सच्चा हूँ। इसलिए तुझे माफ़ किया।

सारे ख़ज़ानों से क़ीमती दौलत

अल्लाह तआला ने बहुत बड़ा इनाम फ़रमाया कि ईमान की दौलत हमें दे दी। बे मांगे दे दी। सारे ख़ज़ानों से क़ीमती दौलत।

भाई यह क़ीमत है किस लिए? बहैसियत मुसलमान होने के अल्लाह तआला ने हमारे ज़िम्मे बहुत बड़ा काम लगाया। जो हर मुसलमान कर सकता है। अपने दीन की दावत देना और अपने दीन पर जमना यह हमारा काम है। बतौर मक़सद के यह हमें मिला है। ये सारे फ़ज़ाइल इसलिए है कि अल्लाह तआला ने एक लाख चौबीस हज़ार नबियों का सिलसिला चलाया और उसका उरूज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़त्म फ़रमाया। आप पर ख़ात्मा हुआ। अब तो इंसानियत को हर वक़्त ज़रूरत है नबुव्वत की।.

﴿فالهمها فجورها وتقواها﴾ इसके अंदर बुराई भी है और अच्छाई भी है। लिहाज़ा ये दोनों माद्दे टकराते रहेंगे। नबुव्वत तो ख़त्म हो गई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर, अब कौन है जो इंसानियत की रहबरी का काम करे? अल्लाह तआला ने एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया किराम को मुख़ातिब फ़रमाने के बाद इस

पूरी उम्मत को मुख़ातिब फ़रमाया ﴿هو اجتبكم﴾ अब मैंने तेरी उम्मत को ले लिया है। ﴿هو سمٰكم المسلمين﴾ इसका नाम भी रख दिया मुसलमान।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اسمان من اسماء الله تعالى سمى بها امتى﴾ अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत का नाम भी अपने नाम पर रखा है। ﴿سمى نفسه السلام﴾ अल्लाह तआला का नाम सलाम है। ﴿سمى به بالمسلمين﴾ अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत का नाम मुस्लिमीन रखा है।

हम से पहले किसी उम्मत का नाम मुस्लिमीन नहीं रख गया। यहूद, नसारा, मुस्लिम सिर्फ़ इस उम्मत को ख़िताब मिला है।

﴿سمى نفسه المومن، سمى امتى بالمومنين﴾ अल्लाह तआला का नाम मोमिन है मेरी उम्मत का नाम अल्लाह तआला ने मुमिनीन रखा है।

सारे नबियों पर जब तक मैं न चला जाऊँ और सारी उम्मतों पर (जन्नत हराम है) जब तक मेरी उम्मत जन्नत में न चली जाए। वे कहेंगे या अल्लाह! ये क्या हो रहा है। ये लोग आए हमारे बाद और जा रहे हैं हम से पहले तो अल्लाह पाक फ़रमाएंगे कि यह मेरा फ़ज़ल है जिसे चाहूँ दूँ।

अरे भाई बहैसियत मुसलमान। अल्लाहु अकबर! ख़ुदा की क़सम सात ज़मीन व आसमान की दौलत इसके सामने हेच है कि मैं मुसलमान हूँ। मेरे पाँव में जूते न हों, जिस्म पर कपड़े न हों, खाने को रोटी न मिले। दर-दर की ठोकरें खाया हुआ हूँ। फिर भी मेरे पास आसमान व ज़मीन से क़ीमती दौलत है।

अल्लाह तआला ने ईमान दिया और ईमान की मेहनत दी। अब अल्लाह का तारुफ़ कराना, इस उम्मत का काम बन गया।

पहले नबी का काम होता था कि जाओ लोगों को बताओ कि तुम्हारा रब अल्लाह है और आगे मौत है और हश्र है। आगे हिसाब व किताब है। लिहाज़ा अल्लाह की मान के चलो। यह अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम है। ख़बरदार करना बनी का ज़िम्मा था। जन्नत से, जहन्नम से ख़बरदार करना हर नबी का काम है।

अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़त्मे नबुव्वत के तुफ़ैल यह काम इस उम्मत को दिया है कि यह अल्लाह और उसके रसूल का तार्रुफ़ करवाए। यह हमें बतौर काम के मिला है। यह जो कम्पनियों के ऐजेन्ट होते हैं। ये कम्पनी की दवा बेचते हैं। कंपनी इनको पैसा भी देती है और लाइसेन्स भी देती है। घर भी देती है और गाड़ी भी देती है। इसी तरह हम अल्लाह और उसके रसूल के सफ़ीर हैं। अल्लाह का तार्रुफ़ कराना हमारा काम है।

हमारे बड़े का भी हमारे छोटे का भी, नौजवान का भी, बूढ़े का भी, अपनढ़ का भी पढ़े लिखे का भी, डाक्टर का भी, इंजीनियर का भी, औरत का भी, मर्द का भी, ग़रीब का भी, अमीर का भी। चाहे अफ़्रीका में चले जाएं या दुनिया के किसी कोने में चले जाएं तो हमारा काम नहीं बदलेगा।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती होने के नाते हमें बड़ा इज़्ज़त वाला काम दिया गया है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें अपना सफ़ीर बनाया। सफ़ीर की ताक़त उसकी हुकूमत की ताक़त के बराबर होती है। हम अल्लाह के सफ़ीर हैं। हमारे पीछे अल्लाह की ताक़त है। आप जहाँ कहीं भी रहते हैं तो अल्लाह तआला ने आपको सफ़ारत का काम दिया है।

अरे भाई! अब पूरी दुनिया को यह समझाना है कि सब कुछ अल्लाह तआला के हाथ में है। अब यह हमारा काम है। इस वक़्त सबसे बड़ी गुमराही है कि लोग समझते हैं कि कमाएंगे तो पैसा आएगा, पैसा आएगा तो ज़रूरतें पूरी होंगी। ज़रूरतें पूरी होने से हमारे हालात दुरुस्त हो जाएंगे। हम उनको यह बात समझाएं कि सारी काएनात पर बादशाही सिर्फ़ एक अल्लाह की है।

له ملك السموات، له ما في السموات وما في الارض وما بينهما وما تحت الثرى

यह बात हर इंसान को समझानी है। आसमान पर अल्लाह बादशाह है और ज़मीन पर भी अल्लाह बादशाह है और तहतुस्सरा में भी अल्लाह बादशाह है।

﴿لله ما في السموات وما في الارض﴾ यह हमारे ज़िम्मे है कि हम हर घर में जाकर उनको बता दें कि अल्लाह की मानकर उसकी ज़मीन पर चलना ही कामयाबी है। अल्लाह का यह निज़ाम भी अजीब है कि अपने दीन का काम अक्सर ग़रीबों से लेता है और मालदारों से ज़्यादा नहीं लेता। क्योंकि उनका गुमान है कि जब पैसा आएगा तो तबलीग़ करेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं दुनिया में तो जितना थोड़ा होगा उतना ही आसानी से मेरा क़ुर्ब नसीब होगा।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का मक़ाम

दो सरदार आए अक़रब बिन हाबिस और ऐना बिन हसन ख़ज़ारी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में कि हम तेरी बात मान लेता हैं लेकिन इन ग़रीबों को हटा दो। बिलाल है, सुहैब है, अम्मार बिन यासिर है, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। ये ग़रीब लोग हैं, छोटे हैं। इनको उठाओ। इनके साथ बैठना हमारी शान के ख़िलाफ़ है। फिर हम आपकी बात सुनेंगे। एक

सहाबी ने अरज़ किया या रसूलुल्लाह हम तो आपके गुलाम हैं, हम को उठा लें या बिठा लें तो भी हम आपके ही हैं। मुमकिन है कि हम को उठाने से वे बैठ जाएं और बात सुनकर ईमान ले आएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बात तो ठीक है। तुम आओगे तो ये नहीं होंगे। उन्होंने कहा आप हमें लिख दो। आपने उनसे कहा कि लिखो। लिखने वाले के आने से पहले अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा, ﴿لا تطرد الذين يدعون ربهم بالغداة والعشى﴾ इनको आप नहीं उठा सकते, वे आए या न आए।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उमैय्या बिन ख़लफ़ से बात कर रहे हैं और अब्दुल्लाह बिन मक्तूम आ गए जो नाबीना भी हैं और ग़रीब भी। हुज़ूर उनको समझा रहे थे और वे बड़ी तवज्जोह से आपकी बातें सुन रहे थे। इतने में अब्दुल्लाह इब्ने मक्तूम आ के फ़रमाने लगे :

﴿يا رسول الله علمني ما علمك الله﴾ इतना सा ख़्याल आया तो इधर जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए। ﴿عبس وتولى ان جاء الاعمى﴾ आख़िर तक यह कलाम पढ़ा। जिसका मफ़हूम है कि अच्छा आपके माथे पर बल चढ़ गए, मुँह फेर लिया क्योंकि यह ग़रीब आपके पास आ गया, अंधा आ गया जोकि आपकी हिदायत का तलबगार है। और आपसे कुछ सीखना चाहता है। और यह बदबख़्त इसको न आपकी क़द्र न दीन की क़द्र, न मेरी पहचान और इसकी वजह से आप इस ग़रीब को छोड़ रहे हैं।

ये मुसलमान चाहे ग़रीब हो या अमीर हो। अगर ये ठान लें कि मुझे दीन ज़िंदा करना है तो अल्लाह इससे काम ले लेगा। इसकी ग़रीबी न आड़े आएगी न इसका पैसा आड़े आएगा।

अपनी ज़िम्मेदारी को पहचानें

मेरे कहने का मक़सद यह है कि हमें मुसलमान होने की हैसियत से अल्लाह तआला ने बहुत बड़ा काम दिया है। हम अपनी ज़िम्मेदारी को पहचानें। अल्लाह तआला ने आपको यहाँ मुक़द्दर लिख दिया है ओर रोज़ी यहाँ लिख दी। इसमें यह हिक्मत थी कि अगर आप लोग यहाँ न होते तो यह इज्तिमे का नक़्शा कैसे होता? अल्लाह तआला ने आप लोगों को ज़रिया बना दिया। आप अपने को आस्ट्रेलया के लिए चाबी समझें। अब यहाँ अल्लाह के कलिमे को ज़िंदा करना यह आपकी ज़िम्मेदारी है।

यह ज़िम्मेदारी तबलीग़ी जमाअत की वजह से नहीं आई है क्योंकि तबलीग़ कोई जमाअत नहीं है। जो भी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरी नबी मानता है उसके ज़िम्मे है कि आपके पैग़ाम को आगे ले जाए और यह ज़िम्मेदारी हमें हज्जतुल-विदा के मौके पर मिली है। ﴿الا فليبلغ الشاهد الغائب﴾ पैग़ाम यह है कि इस काएनात का सिर्फ़ एक रब है जिससे डरा जाए और किसी से न डरा जाए। ﴿لا رب ان يخشى ولا رب يرجى﴾ और कोई रब नहीं जिससे उम्मीद लगाई जाए, ﴿ولا حجب يشفع﴾ उसके दर्मियान में कोई वास्ता नहीं जिसको सिफ़ारिश देकर या रिश्वत देकर काम निकाला जाए। ﴿ولا وزير يعطى﴾ उसको कोई वज़ीर नहीं जिसक पर काम डाला जाए। ﴿فقدرنا فنعم القادرون﴾ हम ही अंदाज़ा लगाने वाले और कौन है मेरे अलावा यह निज़ाम चलाने वाला?

यह हमारा काम है भाई। हम बतौर मुसलमान इस काम को अपने ज़िम्मे समझें। अल्लाह की किबराई सारी दुनिया को बयान करें।

अल्लाह का तार्रुफ़ कराना हमारा काम है। यह हमारी सफ़ारत

है। अनपढ़ भी सफ़ीर, पढ़ा लिखा भी सफ़ीर। इस सारे निज़ाम में एक अकेले बादशाह की हुकूमत है। हर एक के दिल में यह बात बिठाना घर-घर में जाना यह नबी का काम है। नबी यह नहीं कहता कि मेरे क़रीब आओ। नबी कहता है कि मैं ख़ुद आता हूँ। अबूजहल नहीं सुनता, नहीं मुझे सुनाना है। अबूलहब नहीं सुनता नहीं मुझे सुनाना है। वह पत्थर मारता है यह सुना रहे हैं। वह गाली दे रहा है यह सुना रहे हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बूनू हनीफ़ा के पास तशरीफ़ ले गए। अल्लाहु अकबर। उन्होंने कहा हमारे सरदार आ जाएं तो उनसे बात कर लेना। आप तशरीफ़ रखते थे कि उनका सरदार आ गया और कहा यह कौन है? यह वह क़ुरैशी है जो यह कहता है कि मैं रसूल हूँ। उसने बहुत बड़ी गाली दी। उठ जा और चला जा। मेरे ख़ेमे में नज़र न आना वरना मैं तेरी गर्दन उड़ा दूंगा। आप उठे ग़मज़दा ऊँटनी पर सवार हुए तो उसने ऊँटनी के पीछे से नेज़ा मारा तो ऊँटनी बिदक गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊँटनी से ज़मीन पर जा गिरे। फिर भी आपने उनको दावत दी और फ़रमाया कि यह मेरा काम है। हमें मुसलमान होने की हैसियत से आस्ट्रेलिया में क्या करना है? अल्लाह का तार्रुफ़ कराना है और उसी से वक़्त निकालकर थोड़ी सी कमाई भी करना है। हम कमाने नहीं आए हैं। आज से अपनी नीयतें बदल लें। जों ही आप नीयत बदलेंगे तो अल्लाह की क़सम! अल्लाह की निगाह आप पर पड़ेगी। हाए अल्लाह मुहब्बत से देखेगा कितनी बड़ी बात है।

हम तो बड़े इ़ज़्ज़त वाले हैं अल्लाह तआला की निगाह में

अरे भाई! हम तो बड़े इ़ज़्ज़त वाले हैं अल्लाह तआला की

निगाह में। हमारे पास एक कौड़ी भी न हो तो भी हम इज़्ज़त वाले हैं। हम अल्लाह को पहचानते हैं और उसके रसूल को पहचानते हैं। अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा नबी प्यारे होते हैं क्योंकि वे अल्लाह की तारीफ़ करते हैं। आज जो ऐसी आवाज़ लगाएगा वह भी अल्लाह को प्यारा होगा जैसे नबी प्यारे हेते हैं। मूसा अलैहिस्सलाम के पास सोने के लिए बिस्तर नहीं था और फ़िरऔन सोने और चाँदी की मसहरियों पर सोता था। क्या मूसा अलैहिस्सलाम छोटे बन गए? नहीं हमें अपने नबी का तारुफ़ कराना है। उसकी ज़िंदगी को अपनी ज़िंदगियों में लाना है।

अरे भाई! ज़मीन व आसमान पर बादशाही अल्लाह की है। ﴿وتعز من تشآء وتذل من تشآء﴾ ज़िल्लत व इज़्ज़त पैसे से नहीं अल्लाह के इरादे से है। फ़रमाया ﴿من اعتمد على ما له فقد ضل﴾ जो कहता है कि पैसे से काम बनता है उसको काम हमेशा अधूरे ही रहते हैं। ﴿من اعتمد على ماله فقد ضل﴾ जो कहता है कि पैसे से काम बनता है उसके काम हमेशा अधूरे ही रहते हैं ﴿من اعتمد على سلطانه فقد ضل﴾ जो कहता है हुकूमत से इज़्ज़त मिलती है तो उसे हमेशा ज़िल्लत देखनी पड़ती है। ﴿من اعتمد علمه فقد ضل﴾ जो कहता है कि मैं बड़ा आलिम हूँ तो वह हमेशा गुमराह ही रहता है। ﴿من اعتمد على عقله فقد اعتل﴾ जो कहता है कि मेरी अक़्ल पूरी है। मुझे किसी की ज़रूरत नहीं तो उसकी अक़्ल ख़राब हो के रहती है। ﴿من اعتمد على الله فلا ضل ولا قل ولا بل ولا اختمل﴾ और जो कहता है कि मेरा अल्लाह मुझे काफ़ी है तो उन उसका माल कम होता है न उसकी अक़्ल ख़राब होती है न वह ज़लील होता है। अल्लाह उसको काफ़ी हो जाता है।

अल्लाह हमारा हो जाए

सारी दुनिया के इंसानों को यह बताना है कि हालात भी अल्लाह के हाथ में हैं। चीज़ें भी हल्लाह के हाथ में हैं।

﴿القی بینهم العداوة والبغضآء سیجعل الرحمن ودا.﴾

मुहब्बत अल्लाह की तरफ़ से है, नफ़रत अल्लाह की तरफ़ सह है। हर चीज़ अपने वजूद में आने में अल्लाह की मुहताज है। यह बात हमें समझानी है। अल्लाह के ख़ज़ाने हमारे लिए खुल जाएं और अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम हमारे हक़ में हो जाए, अल्लाह हमारा हो जाए और हमारे लिए दुनिया व आख़िरत के फ़ैसले कर दिए जाएं इसके लिए हमें पैसा नहीं चाहिए। इसके लिए हमें हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी को सीखना है जो सैय्यदुल अव्वलीन व आख़िरीन हैं।

आपने फ़रमाया ﴿انا نبی الانبیآء بعثت الی الاسود والاحمر، الی کل جن وانـــس﴾ पहलों का नबी, कालों का नबी, गोरों का नबी, जिन्नात और इंसानों के नबी। अल्लाह तआला ने अपनी किताब में किसी नबी की क़सम नहीं खाई लेकिन आप की उम्र की क़सम खाई। उस नबी से निकला हुआ अमल कितना क़ीमती होगा। एक सुन्नत ज़मीन व आसमान से क़ीमती है। यह बात मुसलमान को समझानी है। दवाई में पाँच जुज़ हों तो उसमें से एक जुज़ को निकाल दिया जाए तो दवाई की ताक़त घटती है कि नहीं घटती? एक पुर्ज़ा मशीन का निकाल दिया जाए तो मशीन की ताक़त घटती है कि नहीं। और एक सुन्नत छोड़ने से कुछ नहीं होगा कि सुन्नत है कोई बात नहीं कर लो तो ठीक है न करो तो भी ठीक है। यह कैसे हो सकता है?

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में हर नबी को नाम लेकर पुकारा है लेकिन अल्लाह तआला ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब भी पुकारा है तो नाम नहीं लिया।

﴿يا ايها الرسول، ياايها النبى، ياايها المزمل، ياايها المدثر﴾

या अय्युहर्रसूल, या अय्युहन्नबी, या अय्युहल मुज़्ज़म्मिल, या अहय्युहल मुद्दस्सिर। एक जगह भी नाम नहीं लिया। और चार जगह नाम लिया है और यह ख़िताब नहीं किया, सिर्फ़ नाम बताए कि ये मेरे हबीब के नाम हैं और यह नाम न अब्दुल मुत्तलिब ने रखा है। न आमना न रखा है। यह नाम मैंने रखा है। आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से भी हज़ारों साल पहले अल्लाह तआला ने क़ुरआन पढ़ा। उस वक़्त भी नामे "मुहम्मद" क़ुरआन में मौजूद था और जहाँ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लिया है तो सात रिसालत का ज़िक्र किया है।

﴿وما محمد الا رسول﴾ वमा मुहम्मदुन इल्लाह रसूल, नाम के साथ रिसालत।

﴿ما كان محمد ابا احد من رجالكم ولكن رسول الله﴾ वमा मुहम्मदुन अबा अह्दा मिर्रिजालिकुम वला किर्रसूलल्लाह, पहले नाम बाद में रिसालत।

﴿محمد الرسول الله والذين معه الخ...﴾ मुहम्मदुर्रसूलल्लाह वल्लज़ीना मअूहू..., नाम के साथ रिसालत आई।

﴿وامنوا بما نزل على محمد هو الحق من ربهم﴾ आमनू बिमा नज़्ज़ला अला मुहम्मद हुवल हक़्क़ुहू मिर्रब्बिहिम, नाम आया साथ रिसालत भी आई।

फिर एक जगह अहमद आया है। वह भी यह बताने के लिए

कि यह नाम मैंने ही रखा है। ﴿ومبشرا برسول ياتى من بعدى اسمه احمد﴾ रिसालत को पहले लाए। मेरे बाद एक नबी आएगा जिसका नाम अहमद होगा।

जिसका नाम अल्लाह ने रखा। और क़ुरआन में जिसको नाम से ख़िताब नहीं किया गया, लक़ब से ख़िताब किया तो उसका अल्लाह के यहाँ कितना बड़ा मक़ाम होगा। और अपने नाम के साथ उनके साथ उनके नाम को जोड़ा, जब मैराज में गए।

अल्लाह ने हमें सबसे बड़ा अमल दिया है

क़यामत तक अल्लाह और उसके रसूल के नाम एक दूसरे से जुदा नहीं होंगे। अल्लाह ने हर जगह अपने नाम के साथ अपने हबीब के नाम को जोड़ा है। भाई हमें यह बताना है कि तुम कामयाबी चाहते हो तो हमारे नबी के तरीक़े पर आ जाओ और अपनी ज़रूरतों और हाजतों को नमाज़ के ज़रिए से पूरा कराओ। अल्लाह ने हमें सबसे बड़ा अमल दिया है।

मेरे भाईयो! अल्लाह ने अपने ख़ज़ाने से निकालने के लिए हमें नमाज़ अता फ़रमाई है। पहली उम्मतों पर सिर्फ़ दो नमाज़ें फ़र्ज़ थीं, फ़ज्र और अस्र वह भी दो रकअत। हमें अल्लाह तआला ने पचास अता फ़रमायीं। पचास नमाज़ें पढ़ सकते थे, कौन पढ़ता? अल्लाह ने अपनी मुहब्बत बढ़ा दी और इस उम्मत से इतनी मुहब्बत है कि ये सज्दे में पड़े ही रहें उठे ही नहीं। और अपना ताल्लुक़ बताना चाहते हैं कि यह उम्मत मस्जिद ही में रहे, मस्जिद से निकले ही नहीं। जो माँ-बाप का इकलौता बेटा होता है तो वालदैन चाहते हैं कि यह हमारी आँखों के सामने ही रहे। इधर-उधर न हो। अल्लाह तआला को अपने हबीब से प्यार और उसकी उमत से भी प्यार। इसलिए यह मेरे सामने ही रहे।

या अल्लाह हमें रोटी भी खानी है और तक़ाज़े भी पूरे करने हैं। तो अल्लाह तआला ने पाँच ही देनी थीं। वह सारी कहानी चलवाई और मूसा अलैहिस्सलाम को ज़रिया बनाया। उन्होंने कहा कि ये पाँच भी नहीं पढ़ेंगे। मेरी उम्मत पर दो फ़र्ज़ हुई थीं वे भी नहीं पढ़ सकी। आप और भी कम करवा लें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे अपने रब से शर्म आती है। अल्लाह तआला ने आपको आसमान पर बुलाकर नमाज़ अता फ़रमाई। एक दफ़ा कहा सुअर न खाओ। एक दफ़ा कहा शराब न पियो, एक दफ़ा कहा ज़िना न करो लेकिन बीसियों दफ़ा कहा कि नमाज़ क़ायम करो।

नमाज़ का तोहफ़ा अर्श से मिला है

जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए, या रसूलुल्लाह! आज आसमान सजाए जो चुके हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के अर्श पर आपका इंतिज़ार हो रहा है। फिर बैतुल्लाह से बैतुलमुक़द्दस पहुँचे। ये नमाज़ का तोहफ़ा अर्श से मिला है। यह इतनी अज़ीमुश-शान चीज़ है कि जहाँ वक़्त हो अज़ान देकर नमाज़ पढ़े। जब आप अज़ान देंगे तो जहाँ-जहाँ तक आवाज़ जाएगी क़यामत के दिन हर हर पत्थर आपकी गवाही देगा। हर दरख़्त और पत्ता आपकी गवाही देगा। जहाँ आप सज्दे में सर रखेंगे तो तहतुस्सरा तक ज़मीन पाक हो जाती है।

हदीस में आता है कि जब आदमी ज़मीन पर सर रखता है तो अल्लाह तआला के क़दमों पर सर रखता है। जब अल्लाहु अकबर कहता है तो ज़मीन व आसमान का ख़ला नूर से भर जाता है। अर्श के पर्दे उठ जाते हैं। जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं और जन्नत की हूरें जन्नत के दरवाज़े खोलकर नमाज़ी को देखती हैं।

जितना लंबा क़याम करेगा, मौत की सख़्ती आसान होती चली जाएगी। लंबी नमाज़ मौत की सख़्ती को तोड़ देती है। जब रुकू करेगा तो जितना जिस्म का वज़न है उतना सोना सदक़ा करने का सवाब मिलेगा। जब रुकू से खड़ा होता है तो अल्लाह तआला मुहब्बत की निगाह से देखते हैं सज्दे में जाता है तो सारे गुनाह धुल जाते हैं। जब अत्तहियात पढ़ता है तो साबिरीन का अज्र मिलता है। जब नमाज़ में दरूद पढ़ता है तो अल्लाह पाक दस दफ़ा दरूद भेजता है। जब सलाम फेरता है तो गुनाहों से बाहर हो जाता है। अल्लाह तआला ने इतनी बड़ी नेमत अता फ़रमाई कि अगर कोई तकलीफ़ हो तो पढ़ नमाज़। हुज़ूर को कोई तकलीफ़ होती थी तो फ़ौरन नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह होते थे।

﴿قد افلح المومنون﴾ हर ईमान वाला नहीं पूरा कामयाब ﴿الذين هم فی صلاتهم خاشعون﴾ जिसकी नमाज़ ऐसी होगी वह कामयाब, ﴿قد افلح من تزکی وزکراسم ربه فصلی﴾ कामयाब हो गया वह जिसने वुज़ू करके पाक होकर अल्लाह को सज्दा किया, वह कामयाब हो गया। ﴿الا المصلین الذین هم علی صلوتهم دائمون﴾ इंसान बड़ा बेसब्र, बड़ा बख़ील, बड़ा मुतकब्बिर है लेकिन नमाज़ी मुतकब्बिर नहीं होता अल्लाह तआला गवाही दे रहा है। ﴿من اللیل فاسجد له وسبحه لیلا طویلا﴾ और अल्लाह तआला अपने हबीब से कह रहे हैं कि हर रात मेरे पास आ जाया करे। ﴿فاذا فرغت فانصب والی ربك فارغب﴾ रात को सारे सो जाएं तो मेरे आ जाया कर कि नमाज़ अल्लाह से बात करना है। ﴿الصلوة صلة بین عبد و رب﴾।

अब आप बताएं पचास साल हो गए नमाज़ पढ़ते हुए एक सज्दा भी ऐसा न मिला जो अल्लाह के ध्यान के साथ हो तो वह नमाज़ कैसी नमाज़ होगी? फिर इसका इक़रार भी नहीं कि मेरी

नमाज़ ख़राब है। दुनिया का मसअला अटक गया हो तो दुआ कराते हैं कि मेरा मसअला अटक गया है। यह नहीं रहा वह नहीं हो रहा। चालीस बरस में नमाज़ में खुशू नहीं, तवज्जोह नहीं, अल्लाह का हुज़ूर नहीं। उसके कोई दुआ नहीं। अल्लाह तआला से रो रो के मांगो कि या अल्लाह मेरी नमाज़ ठीक कर दे। वह नमाज़ कैसी नमाज़ है जिसमें अल्लाह का ध्यान न हो।

सबसे आला वह नमाज़ है जो कि आदमी अल्लाहु अकबर कहता है फिर अल्लाह ही अल्लाह हो। अल्लाह का ग़ैर न हो। अबू रैहान रह० की नमाज़ का क़िस्सा पीछे गुज़र चुका है कि बीवी इंतिज़ार में है कि आज की रात हुक़ूक़ की अदाएगी होगी। दो रकअत नमाज़ की नीयत बांधी तो फ़ज्र की अज़ान हो गई और नमाज़ ख़त्म न हुई। ऐसी नमाज़ों पर आना और लाना है।

बेहतरीन कलाम

अल्लाह तआला ने क़ुरआन अता किया है। यह अल्लाह का बेहतरीन कलाम है। जन्नत की ज़बान है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे तौरात के मुक़ाबले में सूरः फ़ातिहा मिली, इंजील के बदले में सूरः माएदा मिली है, ज़बूर के बदले में ह-मीम की सूरतें मिली हैं। मुफ़स्सिलात के ज़रिए जो बाक़ी क़ुरआन है उसके ज़रिए मुझे इज़्ज़त मिली है।

जन्नत में क़ुरआन सुनाया जाएगा और अगर कोई किताब नहीं। हर मुसलमान क़ुरआन निकाले और पढ़े ओर सीखे क्योंकि यह अल्लाह की बात है। अल्लाह तआला जन्नत में सब अव्वलीन व आख़िरीन को इकठ्ठा करेगा। जन्नत में एक मैदान है उसका नाम "मज़ीब" है। उसकी चौड़ाई को अल्लाह के अलावा जानता कोई नहीं। अल्लाह तआला उसमें सबको बुलाएगा और बिठाएगा।

फिर उनको खाना खिलाएगा। पानी पिलाएगा, फल खिलाएगा, कपड़े पहनाएगा। उसमें ख़ुशबू लगाएगा। शाही दरबार में जाने के लिए एक ख़ास लिबास होता है। फिर उसके बाद अल्लाह तआला जन्नत की हूरों से फ़रमाएगा आओ और मेरे बंदों को आज जन्नत का नग़मा सुनाओ। उनकी आवाज़ इतनी दिल फ़रेब होगी कि उनकी आवाज़ सुनकर सारे झूम जाएंगे।

आख़िर में अल्लाह पाक पर्दे उठाएंगे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को सामने देख रहे होंगे ﴿الى ربها ناظرة﴾। अरे भाईयो! क्या बताऊँ। अय्यूब अलैहिस्सलाम अठ्ठारह बरस बीमार रहे। वह बीमारी किसी दूसरे पर नहीं आएगी। फिर अल्लाह तआला ने सेहत दे दी। तंदरुस्ती और तवानाई, क़ुव्वत दी। किसी ने पूछा कि बीमारी के दिन याद आते हैं? कहने लगे, वे दिन बड़े मज़े के थे। वाह वाह कैसे मज़े के थे। फ़रमाने लगे, जब मैं बीमार था तो अल्लाह तआला रोज़ाना पूछता था कि अय्यूब क्या हाल है? उस एक बोल में ऐसी लज़्ज़त थी जो किसी चीज़ में नहीं थी और अल्लाह तआला देख रहा हो और पूछ रहा हो।

हदीस में आता है कि जन्नत में हर एक का अल्लाह तआला नाम लेकर बात करेंगे कि तेरा क्या हाल है? तेरा क्या हाल है? एक एक का नाम लिया जाएगा फिर अल्लाह तआला को देखेंगे, उनका कलाम सुनेंगे क्या लज़्ज़त होगी।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखकर औरतों ने हाथों पर छुरियाँ चला लीं और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बनाने वाले के हुस्न को कोई नाप सकता है? फिर अल्लाह तआला क़ुरआन सुनाएंगे। यह वह क़ुरआन है जो अल्लाह तआला ने हमें अता फ़रमाया है। हर मसुलमान क़ुरआन सीखे। अरबी में क़ुरआन पढ़ा जाए। क़ुरआन की तिलावत के लिए वक़्त निकाला जाए। अल्लाह के ज़िक्र के

लिए वक़्त निकाला जाए। क़ुरआन पाक क़यामत में शफ़ाअत करेगा। जो आगे रखेगा क़यामत में उसको खींचकर जन्नत में ले जाएगा। जो क़ुरआन पाक को पीछे करेगा उसको धकेलकर दोज़ख़ में डालेगा। भाई नबुव्वत वाले अख़्लाक़ सीखें।

नुबुव्वत वाले अख़्लाक़ को सीखें

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿بعثت لا تمم مكارم الاخلاق﴾ मैं अख़्लाक़ को चोटियों तक पहुँचाने के लिए आया हूँ। नबुव्वत के अख़्लाक़ क्या हैं?

﴿صل من قطعك تعطي من حرمك واعف من ظلمك واحسن من اساء اليك﴾

आपने फ़रमाया, जो यह अख़्लाक़ सीख लेगा मैं उसको जन्नतुल फ़िरदौस में घर लेकर दूंगा। ﴿لمن حسن خلقه﴾ जो अपने अख़्लाक़ को अच्छा कर ले तो मैं ज़ामिन हूँ कि जन्नतुल फ़िरदौस में घर लेकर दूंगा।

तो भाई अख़्लाक़ ऐसी ताक़त है। अगर कोई ख़ुशबू लगाए तो वह बताए या न बताए हर सूरत में आपको पता चल जाएगा। लिहाज़ा अगर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ हमारे अंदर आ जाएं तो यों हवा में ईमान और इस्लाम फैल जाएगा। नबुव्वत वाले अख़्लाक़ को सीखें। ये अख़्लाक़ बड़े से बड़े आदमी को गिरा देते हैं। बड़ी से बड़ी ताक़त को तोड़ देते हैं। बड़े से बड़े कुफ़्र को खोखला कर देते हैं। तो भाई यह हमारा काम है अल्लाह का तार्रुफ़ कराना और अपने नबी का तार्रुफ़ कराना। नमाज़ों को आला से आला तरीक़े पर क़ायम करना औरों को नमाज़ों पर लाना। क़ुरआन की तिलावत करना, अल्लाह का ज़िक्र करना। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले

अख़्लाक़ को सीखना और सिखाना और इसकी दावत देना, अल्लाह को राज़ी करने के लिए हर काम करना और अपने आपको हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाएब समझकर हुज़ूर की नयाबत में सारी दुनिया के इंसानों को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने की नीयत करके अपने जान व माल से कोशिश करना।

नीयत करते ही अल्लाह तआला का निज़ाम हमारे हक़ में हो जाएगा। ग़ैबी निज़ाम हमारे मुवाफ़िक़ हो जाएगा। दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी बनेगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हें पता है कि जन्नत में सबसे पहले कौन जाएगा? सहाबा किराम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह यह आपको और आपके रब को पता है। फ़रमाया ﴿الفقراء المهاجرون﴾ फ़ुक़रा और मुहाजिरीन दीन के लिए हिजरत करने वाले जो मुसीबतें सहते रहे। ﴿يموت احدهم وحاجته فى صدره﴾ वे मरते थे और ज़रूरतें उनके सीने में घुट के रह जाती थीं।

अल्लाह तआला की तरफ़ से इज़्ज़त

ज़रूरत पूरी न कर सके और मर गए। क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रिश्तों से कहेगा कि जाओ इनको सलाम करो। फ़रिश्ते कहेंगे या अल्लाह यह कौन हैं जिनको आप कह रहे हैं कि उनको हम सलाम करें?

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ये वे लोग हैं जो मेरे दीन के ख़ातिर धक्के खाते फिरते हैं। फ़रिश्ते आएंगे ﴿سلام عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار﴾ कहेंगे हम आपको सलाम करने आए हैं। अल्लाह तआला ने आपको इतना ऊँचा मकाम अता फ़रमाया।

और अल्लाह तआला दीन की मेहनत करने वालों को वह दर्जात देते हैं कि घर में इबादत करने वाले को इसकी हवा नहीं लग सकती। जन्नत में नूर की चमक उठेगी। सारी जन्नत रौशन हो जाएगी। लोग कहेंगे यह नूर कैसा है?

यह जन्नतुल फ़िरदौस के जन्नती के चेहरे का नूर है। या अल्लाह इसको यह दर्जा कैसे दिया? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे यह मेरे रास्ते में निकलकर मेरे दीन को फैलाता था और तुम घर बैठकर मुझे याद करते थे। तुम और वह बराबर कैसे हो सकते हैं?

एक सहाबी आए। या रसूलुल्लाह मैं अल्लाह के रास्ते में माल ख़र्च करूं और ख़ुद न जाऊँ, क्या ख़्याल है? मुझे अल्लाह के रास्ते में जाने का सवाब मिलेगा? आप ने फ़रमाया कितने पैसे हैं तेरे पास? कहने लगे छः हज़ार। तो आपने फ़रमाया तुम अगर इन सबको ख़र्च कर दो तो जो आदमी अल्लाह के रास्ते में सोया हुआ है उसकी नींद के अज्र को भी हासिल नहीं कर सकते।

अल्लाह तआला ने जन्नत फ़िरदौस को लफ़्ज़े कुन से बनाया और फ़िरदौस को अपने हाथ से बनाया। फिर उस पर मुहर लगा दी। उसको किसी को नहीं दिखाया। फिर दिन में पाँच दफ़ा कहता है ﴿ازدادی طیبا لاولیائی وزدادی حسنا لاولیائی﴾ ऐ जन्नत! तेरे दोस्तों के लिए ख़ूबसूरत हो जा। मेरे दोस्तों के लिए पाकीज़ा हो जा। वह आगे से दुआ करती है ऐ अल्लाह मेरा फल पक गया। नहरों का पानी बाहर निकल रहा है। किनारे छलक पड़े हैं। ऐ अल्लाह मैं जन्नत वालों की मुश्ताक़ हूँ। कब आएंगे? जन्नत को आबाद करेंगे? उनको मेरे पास भेज दें।

दिन में पाँच दफ़ा हुक्म हो रहा है कि ख़ूबसूरत हो जा।

तो भाईयो! यह पूरी मेहनत से हासिल होगा और मेहनत भी अल्लाह तआला ने खुद हमें दी है। हमारे इलाके में एक ग़रीब आदमी का बेटा डाक्टर बन गया। उसकी मिसाल देते थे कि देखा वह डाक्टर बन गया। उसकी इतनी इ़ज़्ज़त है। कितनी उसकी शोहरत है तू भी ऐसा हो जाएगा। इसी तरह अल्लाह तआला भी हमें काम बता रहे हैं और काम की फ़ज़ीलत बता रहे हैं कि तुम मेरे काम को करो। दुनिया में इ़ज़्ज़त और आख़िरत में जन्नत और मेरी रज़ा। ﴿ورضوان من الله اكبر﴾ क्या ख़्याल है भाई? अल्लाह तआला की रज़ामंदी है। इससे तमाम मसाइल हल होंगे। दीन पर आना दीन पर लाना यह हमारा काम है। हुज़ूर की पहचान करना और हुज़ूर की पहचान करवाना, इल्म व ज़िक्र की फ़िज़ाओं को क़ायम करना और करवाना यही हमारा काम है।

इस पर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि दुनिया भी दे दूंगा और आख़िरत भी दे दूंगा। मुझे पता है कि आप ख़ाली जन्नत पर राज़ी नहीं होंगे। तुम्हें मैंने ही बनाया है। जो अल्लाह का बनकर अल्लाह से मांगेगा उसे अल्लाह तआला देंगे लेकिन शर्त यह है कि पहले उसके दीन पर चलना सीखे और उसको दूसरों को सिखाए। इसके लिए यह आवाज़ लगती है कि कुछ वक़्त निकालकर इस काम को सीखा जाए। अल्लाह तआला मुझे और आपको अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾

❁ ❁ ❁

ईमान व यक़ीन

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

الحمد للّٰہ نحمده ونستعينهٗ ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذ باللّٰه من شرور انفسنا ومن سيات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضللهٗ فلا هادى له. ونشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له ونشهد ان محمد عبده ورسوله اما بعد

فَاَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن اتبعنى ... وسبحن الله وما انا من المشركين وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह वह ज़ात है जिसका कोई शरीक नहीं। ﴿الملك لا شريك له﴾ अकेला है ला इलाहा इल्लल्लाह। उसकी ज़ात में कोई शरीक नहीं। उसकी सिफ़ात में कोई शरीक नहीं। ﴿ليس كمثله شئ وهو السميع البصير﴾ उसकी सिफ़ात में, उसके अफ़आल में कोई उस जैसा नहीं है। वह बादशाहे कुल है। शहंशाह काएनात है। ज़मीन व आसमान का तन्हा बादशाह है।

﴿له ما فى السموات وما فى الارض وما بينهما وما تحت الثرىٰ﴾

वह अल्लाह जो आसमानों का भी मालिक, वह अल्लाह जो ज़मीनों का भी मालिक। ﴿لله ما فى السموات وما فى الارض﴾ वह अल्लाह जो ज़मीन व आसमान में जो कुछ है उसका अकेला

मालिक है। ﴿الا ان اللہ من فی السموات ومن فی الارض﴾ जो कुछ ज़मीन में है वह अल्लाह तआला की है। अल्लाह वह बादशाह है जिसकी बादशाही को ज़वाल नहीं। अल्लाह वह बादशाह है जिसकी बादशाही की कोई इब्तिदा नहीं। अल्लाह वह बादशाह है जिसकी बादशाही की कोई इंतिहा नहीं।

﴿لله الامر من قبل ومن بعد﴾ पहले भी अल्लाह, अव्वल भी अल्लाह, आख़िर भी अल्लाह, ज़ाहिर भी अल्लाह, बातिन भी अल्लाह। इस काएनात और उसकी मख़्लूक़ की तो एक हद है पर उसकी बादशाही की कोई हद नहीं है। उसकी ज़ात की कोई हद नहीं है। ज़मीन व आसमान का बादशाह हम से कह रहा है मेरे बंदो! ﴿وكفى بالله وكيلا﴾ तेरा रब वकील है। ﴿وكفى بالله شهيدا﴾ हाज़िर है, ﴿وكفى بالله قريبا﴾ क़रीब है, ﴿كفى بالله عليما﴾ सब कुछ जानने वाला है। ﴿وكفى بالله وليا﴾ तेरा दोस्त भी है। ﴿كفى بالله نصيرا﴾ तेरा मददगार भी है। काफ़ी है, काफ़ी है, सात दफा अल्लाह तआला ने पुकारा है। उसके बाद हमसे सवाल किया ﴿اليس الله بكاف عبده﴾ अब भी यक़ीन नहीं आता कि मैं तुम्हें काफ़ी हूँ? अब तो मान जाओ कि मैं अकेला तुम्हें काफ़ी हूँ।

कभी किसी को मैंने भूका रखा फिर तू हराम क्यों खाता है?

अरे मेरे बंदे! मैंने सात आसमान बनाए, मैं न था। मैंने सात ज़मीनें बनायीं मैं न थका। मुझे बता तो सही तुझे रोटी खिला के मैं थक जाऊँगा। तू क्यों सूद की तरफ़ क्यों चल पड़ा? तूने क्यों कहना शुरू किया कि सूद के बग़ैर कैसे मइशत चलेगी? तू क्यों रिश्वत पर आ गया? तू क्यों झूठ पर आ गया? तूने क्यों किसी का माल लूटा?

अरे मैंने तो फ़िरऔन को चार सौ साल खिलाया। नमरूद को सैंकड़ों साल खिलाया। आद व समूद को खिलाया। आज के काफ़िरों को खिलाया। चलो वे तो इंसान हैं बिल में पड़े हुए साँप को खिलाया। झपटते उक़ाब को, न भेड़िए को भूला। न उक़ाब को भूला न लोमड़ी को भूला। वह करोड़ों अरबों खरबों लातादाद चींटियों में से एक को न भूला। चींटी को पहुँचाया। परवाने को खिलाया। पतंगे को खिलाया। उक़ाब को खिलाया, बल खाते साँप को खिलाया। समुन्दर की मछलियों को खिलाया।

रज़्ज़ाके हक़ीक़ी सिर्फ़ अल्लाह तआला है

पानी की तह में जहाँ पानी काला है कोई रोशनी नहीं, वहाँ की एक एक मछली को खिलाया। व्हेल की क्या ज़रूरत है, पहुँच रही, शार्क की क्या ज़रूरत है पहुँच रही। साँप की क्या ज़रूरत है? पहुँच रही है।

चार बेटों की परवरिश दो माँ-बाप नहीं कर सकते। उस रब को देखो जो खरबों मच्छरों को, खरबों पतंगों को, परवानों को, इंसानों को, जिन्नात को, फ़रिश्तों को, काएनात के ज़र्रे-ज़र्रे को जो पाल रहा है, खिला रहा है, पिला रहा है, उठा रहा है। उन सबको देकर न वह भूला न वह थका, न वह भटका, न वह घबराया, न वह चौका कि मेरा मुक़द्दर किसी और को जाए।

वह इब्तिदा और इंतिहा से पाक है, जहत व शक्ल से पाक, ज़मान व मकान से पाक। इस मस्जिद ने हमारा इहाता किया हुआ है, घेरा हुआ है मगर अल्लाह तआला ﴿لا يحويه مكان﴾ वह मकान से पाक ﴿لا يشتمل عليه زمان﴾ वह किसी ज़माने में समाया हुआ नहीं।

अल्लाह तआला माज़ी, हाल, मुस्तक़्बिल से पाक है। ज़मान व

मकान से पाक। जहत से पाक। नींद से पाक। थकन से पाक। ऊँघ से पाक।

﴿يطعم ولا يطعم﴾ वह अल्लाह सबको खिलाता है मगर खुद खाने से पाक, ﴿يسقى ولا يسقى﴾ वह सबको पिलाता है मगर खुद पीने से पाक, ﴿يكسى ولا يكسى﴾ वह सब को कपड़े पहनाता है मगर खुद पहनने से पाक। ﴿يصور﴾ वह शक्लें बनाता है खुद शक्ल से पाक, ﴿يلون﴾ वह हर एक को रंग देता है खुद हर रंग से पाक, हर जहत से पाक। सबको मारेगा मगर खुद मौत से पाक, ﴿يميت ولا يموت﴾ और ﴿يحى﴾ ज़िंदा। वह ज़िंदा है।

हम भी ज़िंदा हैं, मगर हम ज़िंदा हैं असबाब के साथ। असबाब जब मिटते हैं तो हम भी मर जाते हैं। वह ज़िंदा है अपनी ज़ात के साथ। ﴿القيوم﴾ क़ायम बग़ैर असबाब के। क़ायम हमेशा से है और हमेशा तक।

हम क़ायम हैं रूह के साथ और मिट्टी व हवा के साथ, ग़िज़ा के साथ। वह क़ायम है बग़ैर किसी मिट्टी पानी ग़िज़ा और रोटी के बग़ैर असबाब के।

मैं बादशाहों का बादशाह हूँ

﴿الحى القيوم لا تاخذه سنة ولا نوم له ما فى السموات وما فى الارض﴾

ज़मीन से नीचे तक अल्लाह की बादशाही है और इस सारी बादशाही में और ज़ाते आली में न कोई उसका शरीक है और न वज़ीर।

الملك لا شريك له المدبر لا مشير له، القاهر بلا معين، لم يتخذ صاحبة ولا ولدا

ولم يكن له شريك فى الملك ولم يكن له ولى من الذل ما كان معه من اله.

वह ऐसा बादशाह है जिसका शरीक कोई नहीं। ऐसा तदबीर

करने वाला जिसका कोई मुशीर नहीं। ऐसा गुस्से वाला है जिसका मददगार कोई नहीं। न उसको बीवी की हाजत है और न औलाद की कोई हाजत। उसकी बादशाहत में शरीक नहीं कोई और न ही उसको किसी दोस्त की ज़रूरत है और न ही उसकी उलहूइयत में कोई उसका शरीक है।

तो कोई उससे टकराने वाला नहीं। कोई उसका मुक़ाबिल नहीं ﴿هل تعلم له سميا﴾ है कोई मुक़ाबिल तो बताओ। है कोई नहीं। तो अल्लाह तआला अपनी ज़ात में कामिल है और किसी का भी मुहताज नहीं है।

सबसे दिल हटा लो

तो मेरे भाईयो! अल्लाह से उम्मीद ग़ैरों से नाउम्मीद। "ला इलाहा" ने सबको काट दिया। "इल्लल्लाह" सिर्फ़ एक अल्लाह से जोड़ दिया। "ला इलाहा", किसी से कुछ नहीं होता। "इल्लल्लाह", अल्लाह सब कुछ करता है। "ला इलाहा", कोई मेरे काम नहीं कर सकता। "इल्लल्लाह", अल्लाह मेरे सारे काम बनाएगा। "ला इलाहा", का मतलब हम यह समझते हैं कि हम अल्लाह के सिवा किसी को सज्दा नहीं करते। "ला इलाहा", कोई मुझे ज़िंदगी नहीं दे सकता। "इल्लल्लाह", अल्लाह ही मुझे ज़िंदगी देगा तो मैं ज़िंदा रहूँगा। "ला इलाहा" कोई मुझे ग़नी नहीं कर सकता। "इल्लल्लाह", अल्लाह ही चाहेगा, मुझे माल मिलेगा। "ला इलाहा" कोई मुझे फ़कीर नहीं बना सकता, "इल्लल्लाह", अल्लाह ही चाहेगा तो मैं फ़कीर बनूंगा। "ला इलाहा" कोई मेरी हिफ़ाज़त नहीं कर सकता। "इल्लल्लाह", अल्लाह चाहेगा तो मेरी हिफ़ाज़त करेगा। "ला इलाहा" कोई मुझे खुश नहीं कर सकता, "इल्लल्लाह", अल्लाह चाहेगा मुझे ख़ुशी होगी। "ला इलाहा"

कोई मुझे ग़म नहीं दे सकता, "इल्लल्लाह", अल्लाह चाहेगा तो मेरे दिल में ग़म आएगा। "ला इलाहा" कोई ज़मीनों को सरसब्ज़ नहीं कर सकता, "इल्लल्लाह", अल्लाह चाहेगा तो सरसब्ज़ी आएगी। "ला इलाहा" एटम से हमारा मुल्क इज़्ज़त नहीं पाएगा, "इल्लल्लाह", अल्लाह चाहेगा तो इज़्ज़त मिलेगी। "ला इलाहा" कोई किसी की मुहब्बत किसी के दिल में पैदा नहीं कर सकता, "इल्लल्लाह", अल्लाह जब चाहेगा तो मुहब्बत पैदा होगी।

काएनात के ज़र्रे ज़र्रे पर अल्लाह ने "ला इलाहा" की छड़ी चलाई हैं सबसे दिल हटा लो और एक अल्लाह की तरफ़ दिल फेर लो। इब्राहीम अलैहिस्सलाम का क़ौल नमाज़ के शुरू में सुब्हा-न कल्लाह हुम्मा पढ़ते हैं। यह एक दुआ नहीं बहुत सी दुआएं हैं। यहाँ पढ़ने की एक वजह यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ी।

सबसे कटकर अल्लाह तआला से जुड़ जाओ

﴿انی وجهت وجهی للذی فطر السموات والارض حنیفا وما انا من المشرکین.﴾

सबसे मुँह मोड़ा अल्लाह की तरफ़ फेर लिया। सबसे कट गया अल्लाह से जुड़ गया। मैं मुश्रिकीन में से नहीं हूँ। अपने नबी अलैहिस्सलाम की सुनो। ﴿اللهم اسلمت نفسی الیك﴾ ऐ अल्लाह! मैंने अपने आपको आपके हवाले कर दिया। ﴿وضعت امری الیك﴾ मेरे सारे काम तेरे सुपुर्द हो गए। तू ही मेरा सहारा है। मैंने अपनी कमर तेरे साथ लगा दी। ﴿لا ملجا ولا منجا من الله الا الیك﴾ कोई जाए पनाह नहीं कोई जाए नजात नहीं, सिवाए तेरी ज़ात के। ﴿ورغبة ورهبة الیك﴾ शौक़ में भी ख़ौफ़ तू ही मलजा तू ही पनाह, तू ही मौतमद, तू ही वकील, तू ही कफ़ील, तू ही शहीद, तू ही रक़ीब।

यह तबलीग़ का काम है। अल्लाह तआला की तारीफ़ करके

लोगों को अल्लाह का दीवाना बना दो। जिसके सौदा नहीं बिकता है वह भी शाम तक सदा लगाता है। शाम को अपने गले सड़े सेब बेचकर घर आता है। आवाज़ में इतनी ताक़त है।

दुनिया वालों की तरफ़ मत जाओ

ओ मेरे भाईयो! यह दुनिया वाले तो पत्थर दिल हैं। ये तो ज़ालिम हैं। संग दिल हैं। ये तो औरों की इज़्ज़तें लूटकर अपनी महफ़िलें सजाते हैं। औरों के बच्चों के मुँह से निवाले छीनकर अपने बच्चों की खुशियाँ पूरी करते हैं। औरों की बेटियों से दुपट्टे छीन कर अपनी बेटियों को आंचल उढ़ाते हैं। औरों की ज़िंदगियों से खेलकर ये अपनी बीवियों की ज़िंदगियों को बनाते हैं। औरों के घर ढाह करके ये अपने महल बनाते हैं। उनकी तरफ़ मत जाओ। उस मेहरबान अल्लाह की तरफ़ आओ जो इतना करीम है इतना करीम है कि आपकी आह पर सत्तर मर्तबा कहता है ﴿لبيك لبيك لبيك يا عبدى﴾ मेरे बंदे मैं तो कब से तेरे इंतिज़ार में था कि तू मुझे भी पुकारे। मुझसे भी इल्तिजा करके मुझसे भी बातें करे। अल्लाह के सामने आँख के अंदर तैरने वाला एक आँसू जो आँख से बाहर भी न निकले आँख के अंदर ही तैरता रहे, बड़ा क़ीमती है।

अरे इन अफ़सरों के पास मसअले हल कराने जाते हो जिनके सामने आँसुओं के ढेर लगा दो, नहर बहा दो तो उन पर कोई असर नहीं होता।

अरे उस अल्लाह के सामने तेरी आँख में एक आँसू भी अगर तिर गया तो सारी ज़िंदगी के गुनाह धोकर साफ़ कर देगा और ज़मीन व आसमान की चक्की जो आज हमारे गुनाहों की वजह से उल्टी चल चुकी है उसे सीधा कर देगा।

तो मेरे भाईयो! हम अपने आपको बदलें। हुकूमतों से मुतालबे छोड़ दो। इस मन के मुतालबे मानना छोड़ दे। अब तो अल्लाह की मानने पर आ जा। कब तक मन की मानता रहेगा। यह ज़िंदगी है ही कितने दिन की। अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों पर आ जा। अब तो अपने क़दमों को लौटा ले और अल्लाह से तौबा कर ले। यह इतना बड़ा मजमा जो जुमा की नमाज़ पढ़ने आया है, यह हर नमाज़ में क्यों नहीं आता।

रमज़ान में गाने की दुकानें बंद हो जातीं हैं तो क्या रमज़ान में ही गाना सुनना हराम है। बाक़ी ग्यारह माह हलाल है। रमज़ान में सच बोलना है तो क्या बाक़ी दिनों में झूठ बोलना हलाल है। जुमा की नमाज़ पढ़ी, बाक़ी नमाज़ों की छुट्टी तो क्या जुमा की नमाज़ फ़र्ज़ है बाक़ी नहीं?

अल्लाह को राज़ी कर लो

अल्लाह के वास्ते अल्लाह से ताल्लुक़ बना लें और अल्लाह को राज़ी कर लें। वह दिन आ गया हंगामे वाला दिन जिसको अल्लाह तआला ने खुद ﴿طامة الكبرىٰ﴾ ताम्मतुल कुबरा कहा है और गले में ज़ंजीर पड़ गई तो अब कोई नहीं बचा सकता। फिर ख़ून के आँसू भी बहाएंगे तो कुछ नहीं हो सकता और यहाँ छोटी मोटी आह निकालकर भाईयो अल्लाह से ताल्लुक़ मज़बूत कर लो। जब अल्लाह से ताल्लुक़ मज़बूत होता है तो ईमान व यक़ीन की ऐसी कैफ़ियत हो जाती है कि अल्लाह अपनी हर मख़्लूक़ इसके ताबे कर देते हैं जैसा सिर्फ़ हदीस शरीफ़ में है ﴿من كان لله﴾ जो अल्लाह का हो जाता है ﴿كان الله له﴾ अल्लाह भी उसके हो जाते हैं। अब हम इन हज़रात का तज़्किरा करते हैं जिनके साथ अल्लाह ने अपनी ग़ैबी मदद के दरवाज़े खोले।

अल्लाह की क़ुदरत

हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का बैतुल मुक़द्दस से गुज़र हुआ जिसे बख़्ते नसर ने तोड़ दिया था। ख़त्म हो चुका था। कहने लगे ﴿انى يحى هذه الله بعد موتها﴾ या अल्लाह ये भी ज़िंदा होंगे? सब मिट चुके थे। शहर को आग लगा दी और सारा कुछ बर्बाद कर दिया। उन्होंने कहा या अल्लाह ये कैसे होगा?

﴿فاماته الله مائة﴾ आम सफ़र पर जा रहे हैं। गधे पर सवार हैं। खाना बना हुआ है। अल्लाह पाक ने आराम करने का तक़ाज़ा पैदा किया। दरख़्त के नीचे गधे को बांधा। खाने को साथ रखा। लेटे तो अल्लाह तआला ने जान को निकाल लिया। सौ बरस तक मौत दे दी। ﴿ثم بعثه﴾ फिर खड़ा किया सौ बरस के बाद। ﴿كم لبثت﴾ बताओ कितना ठहरे? ﴿يوم﴾ या अल्लाह एक दिन। फिर सूरज को देखा ढलने वाला था। कहा नहीं ﴿بعض يوم﴾ आधा दिन ﴿قال لبثت مائة عام﴾ नहीं सौ बरस तू यहाँ सोया नहीं बल्कि मरा है। ﴿فانظر الى طعامك وشرابك لم يتسنه﴾ अपने खाने को देख लो। पानी को देख लो। खाना गर्म है, पानी ठंडा है। सौ बरस हो गए, खाने को कोई चीज़ ख़राब नहीं कर सकी। अल्लाह का अम्र है। फ़्रिज के बग़ैर बर्फ़ के बग़ैर पानी ठंडा है और सारी दुनिया के असबाब सौ बरस से चल रहे हैं लेकिन अल्लाह का अम्र इस खाने को ढके हुए है।

मेरे भाईयो! सौ बरस में खाना ख़राब नहीं हुआ और गधे को देखो उसकी हड्डियाँ देखो। उसका कुछ नहीं बचा। गधा जो टिकने वाली चीज़ है वह मिट्टी बन चुका है और खाना जो ख़राब होने वाली चीज़ है वह मौजूद पड़ा हुआ है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया अब देखो ﴿كيف ننشزها ثم نكسوها لحما﴾ अब देखा मैं इसे कैसे ज़िंदा करता हूँ।

अब गधे पर अम्र मुतवज्जेह हुआ। हड्डियाँ ज़मीन से उगती चली गयीं और खड़ी होकर ढांचा बनता चला गया और उसमें गोश्त आता चला गया और चारों तरफ़ से जो खाल के ज़र्रात ज़मीन में ख़त्म हो चुके थे वह उड़ उड़ के उसके जिस्म पर लगने शुरू हो गए। एक आन की आन में उज़ैर अलैहिस्सलाम के सामने सारा नक़्शा आ गया। गधा मिटकर बना और उसमें रूह आई और वह दोबारा कान हिलाने लगा। ﴿فاذا هو ينهق﴾ और आवाज़ भी निकाल रहा है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया जाओ उस बस्ती को देखो जिसको कहते थे ये कैसे ज़िंदा होंगे? अब आए तो बैतुल मुक़द्दस आबाद था। सौ बरस गुज़र चुके थे।

यहूदी का सवाल

एक यहूदी ने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास सवाल लिखकर भेजे। कौन से दो भाई हैं जो एक दिन पैदा हुए, एक दिन वफ़ात पाई और एक सौ साल बड़ा है, एक सौ साल छोटा है? पैदाइश का दिन एक, मौत का दिन एक लेकिन एक सौ साल बड़ा एक सौ साल छोटा और वह कौन सी जगह है जहाँ सूरज एक दफ़ा तुलू हुआ फिर कभी तुलू नहीं हुआ।

उन्होंने कहा भाई इब्ने अब्बास को बुलाओ, वही जवाब देंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया गया। उन्होंने फ़रमाया, उज़ैर और उज़ैज़ दो जुड़वाँ भाई थे। उज़ैर को सौ बरस पहले मौत आ गई। उसकी ज़िंदगी में से सौ बरस कट गए और फिर दोनों भाई एक दिन मरे। एक दिन पैदा हुए। एक सौ बरस छोटा है, एक सौ बरस बड़ा है और वह समुन्दर जिसे अल्लाह तआला ने फाड़ के ज़मीन के नीचे से निकाला। उस पर सूरज एक दफ़ा तुलू हुआ और फिर पानी को मिलाया। फिर कभी वहाँ ख़ुश्की न आई।

अस्हाबे कहफ़ की तीन सौ बरस की नींद

अल्लाह पाक अस्हाबे कहफ़ का किस्सा सुना रहे है। ﴿فتية﴾ नवजवान थे जिनकी जवानियाँ उठी थीं। ﴿امنوا بربهم﴾ ईमान लाए अपने रब पर ﴿وزدنهم هدى﴾ हमने उनके ईमान को और बढ़ाया। अब एक तरफ़ माँ है बाप है दोस्त हैं और एक तरफ़ ला इलाहा इल्लल्लाह है। बादशाह ने बुलाया और यों कहा अगर कलिमे पर बाक़ी रहो तो फिर मरने के लिए तैयार हो जाओ। या कलिमा होगा या तुम्हारी जान होगी।

अगर कलिमे पर रहना है तो मरना पड़ेगा और अगर कलिमे को छोड़ोगे तो तुम्हें छोड़ दूंगा। नहीं तो तुम सबको क़त्ल कर दूँगा। एक रात की मुहलत देता हूँ और ख़ुद कहीं चला गया। पीछे ये सारे नौजवान इकठ्ठे हुए। इन्होंने कहा कि भाई ईमान बचाना सबसे ज़रूरी है। न जान ज़रूरी है न माल, न माँ-बाप ज़रूरी हैं न बीवी बच्चे। ईमान का बचाना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।

अस्हाबे कहफ़ की हिफ़ाज़त

ईमान को बचाकर निकले। ग़ार आया। अल्लाह तआला ने सुलाया। अपनी क़ुदरत को ज़ाहिर फ़रमा रहा है। एक साल, दो साल, दस साल नहीं सोए। तीन सौ बरस सोते रहे। ﴿ولبثوا في كهفهم ثلث مائة سنين﴾ तीन सौ बरस तक सोते रहे हैं। आदमी ज़्यादा से ज़्यादा आठ घंटे सोए, दस घंटे सोए। बेहोश है तो चौबीस घंटे सोए, अड़तालीस घंटे सोए। लेकिन आख़िर भूख उसे उठाएगी। भूख लगेगी, उठेगा। प्यास लगेगी उठेगा। पड़े पड़े थक जाएगा तो उठेगा, पेशाब का ज़ोर आएगा तो उठेगा, हाजत का तक़ाज़ा ज़ोर से आएगा तो उठेगा। पसलियाँ दर्द करेंगी, सोते सोते तो उठ बैठेगा लेकिन अल्लाह अपनी क़ुदरत क़ाहिरा को दिखा रहा है। मैंने जान

नहीं निकाली इनकी। उज़ैर की जान निकाली थी। इनकी जान नहीं निकाली। इनको सुलाया तीन सौ बरस तक सो रहे हैं।

﴿ونقلبهم ذات اليمين وذات الشمال﴾ हम उनकी करवटें बदलते रहे। कभी दाईं तरफ़ कभी बाईं तरफ़। तीन सौ बरस में पेशाब नहीं आया, किसने पेशाब को रोका? तीन सौ बरस तक हाजत नहीं हुई। कौन है रोकने वाला? तीन सौ बरस में भूख नहीं लगी। किसने भूख को मिटाया? तीन सौ बरस में सोए-सोए थके नहीं। किसने उनकी थकावट को दूर किया? तीन सौ बरस में पसलियाँ दर्द नहीं हुईं। किसने दर्द को हटाया? तीन सौ बरस में कोई कीड़ा, साँप, बिच्छू उन्हें काटने नहीं आया। किस ज़ात ने उन्हें रोका? तीन सौ बरस में कोई शेर, चीता उन्हें खाने नहीं आया। कौन सी क़ुदरत ने उन्हें पीछे धक्का दिया? तीन सौ बरस में ज़मीन ने उनको नहीं खाया। ज़मीन खा जाती है, ज़मीन निगल जाती है। बड़ों-बड़ों को ज़मीन मिट्टी बना देती है। ज़मीन पर अम्र उतरा तुमने खाना नहीं। हवा पर अम्र उतरा तुमने जगाना नहीं। सूरज को हुक्म हुआ ऐ सूरज तेरी किरने मेरे बंदों पर बराहे रास्त नहीं पड़नी चाहिएं। ﴿تقرضهم﴾ जब सूरज चलता है तो अल्लाह पाक का अम्र आता है। जो सूरज की किरनों को उनसे हटा देता है। तीन सौ बरस के बाद फिर उनको उठाया ﴿ثلث مائة سنين﴾ तीन सौ बरस सो रहे हैं। फिर उठाया ﴿قال قائل﴾ अब एक बोला ﴿كم لبثنا﴾ यार कितना अरसा सोए। एक बोला ﴿يوم﴾ एक दिन। दूसरा बोला नहीं ﴿او بعض يوم﴾ आधा दिन। बाल नहीं बढ़े, नाखुन नहीं बढ़े। कपड़े पुराने नहीं हुए, मैले नहीं हुए, फटे नहीं, थकावट नहीं और ﴿وكلبهم باسط ذراعيه بالوصيد﴾ कुत्ता बाहर बैठा आराम से सो रहा है और वहाँ से फौजें गुज़र रही हैं। उनकी तलाश में मुल्क का कोना कोना छान मार रहे हैं।

लेकिन अल्लाह उनकी निगाहों पर पर्दा डाल रहे हैं। कुत्ता बाहर बैठा है। वे अंदर सो रहे हैं, फ़ौजें गुज़र रही हैं, किसी को नज़र नहीं आ रहा। अल्लाह पाक ने अंधा कर दिया। तीन सौ बरस के बाद उठाया। कितना अरसा सोए? भाई आधा दिन सोए हैं। अच्छा भाई अब भूक लगी है। अल्लाहु अकबर तीन सौ बरस में तो भूक नहीं लगी। अब उठते ही भूक लगी। भाई कोई भूक का इंतिज़ाम करो। उन्होंने कहा ऐसा करो, जाना और ﴿وليتلطف﴾ नरमी से बात करना। ﴿ولا يشعرن بكم احدا﴾ किसी को पता न चले। कहीं हम पकड़े गए तो मारे जाएंगे। इन्हें ख़बर नहीं कि बाहर तीन सौ बरस गुज़र चुके हैं। यह है मेरे रब की शान।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश

मर्द औरत मिलें तो बच्चा पैदा होता है। सारी दुनिया देखती है। सारा जहान देखता है। लिहाज़ा हर कोई शादी के बाद दुआ करता है कि अल्लाह औलाद दे। शादी से पहले भी किसी ने दुआ की? और अल्लाह की नेक बंदी एक कोने में हुई, नहाने को गई तो फ़रिश्ता इंसानी शक्ल में सामने आ गया। वह थर्रा गई।

﴿اني اعوذ بالرحمن منك ان كنت تقيا﴾ अल्लाह से पनाह मांगती हूँ, कौन है तू? कहा नहीं डरो। मर्द नहीं हूँ। ﴿انما انا رسول ربك﴾ फ़रिश्ता हूँ। क्यों आए हो? ﴿لاهب لك غلما زكيا﴾ अल्लाह तुम्हें बैटा देना चाहता है। वह कहने लगीं तौबा तौबा ﴿اني يكون لي غلم﴾ मुझे बेटा? ﴿لم يمسسني بشر﴾ मेरी तो शादी नहीं हुई ﴿ولم اك بغيا﴾ मैं कोई बाज़ारी औरत नहीं हूँ। तो यह कैसे हो सकता है? या हराम से आए या हलाल से आए। तो दोनों काम नहीं हैं। ﴿قال كذالك قال ربك هو علي هين﴾ ऐ मरयम! तेरा रब कह रहा है कोई मसअला नहीं। अभी हो जाएगा। ﴿فنفخنا فيها من روحنا﴾ जिब्राईल

अलैहिस्सलाम ने फूंक मारी। इधर फूंक पड़ी उधर हमल। उसको नौ महीने उठातीं तो किस किस को जवाब देतीं कि मेरी बेबसी है। लिहाज़ा दूसरी क़ुदरत फूंक से हमल। और साथी नौ महीने के मरहले नौ पल में तय करवा के दर्द ज़ह लगा दिया। ﴿فاجاءها المخاض الى جذع النخلة﴾ और दर्दे ज़ह ने भगाया और एक खजूर के नीचे जा के बच्चा दे दिया। और अब सर पर हाथ रखा।

﴿يليتني مت قبل هذا﴾ हाय मैं मर जाती, ﴿وكنت نسيا منسيا﴾ हाय मेरा दुनिया में आना भी लोग भूल जाते। मैं किस मुँह से अब शहर को जाऊँ? जिब्राईल अलैहिस्सलाम फिर आए ﴿لا تحزني قد جعل ربك تحتك سريا﴾ ग़म न कर, चश्मा चल गया है ﴿كل واشربي﴾ खा पी ﴿قري عينا﴾ इत्मिनान रख और बच्चे को शहर में ले जा। उन्होंने कहा, कैसे ले जाऊँ, क्या जवाब दूँ? कहा तुम जवाब देना ﴿اني نذرت للرحمن صوما. فلن اكلم اليوم انسيا﴾ मेरा रोज़ा है। मैंने बात नहीं करनी।

बनी इस्राइल रोज़े में भी बात नहीं कर सकते थे। हम रोज़े में झूठ भी बोलें तो रोज़ा नहीं टूटता। वे सच भी बोलें तो टूट जाता है। इतनी रिआयत लेकर भी अल्लाह तआला की नाफ़रमानी करते हैं हाय हाय।

﴿فاتت به قومها تحمله﴾ बच्चे को गोद में लेकर शहर में आयीं। एक पुकार पड़ी ﴿يا مريم لقد جئت شيئا﴾ फ़रमाया मरयम यह क्या किया? ﴿يا اخت هارون﴾ ऐ हारून की बहन ﴿ما كان ابوك امرء سوء﴾ तेरा बाप तो ऐसा नहीं था, ﴿وما كانت امك بغيا﴾ तेरी माँ तो ऐसी नहीं थी। ﴿فاشارت اليه﴾ उनकी उंगली उस बच्चे की तरफ़ उठी। फिर यों कहा इससे बात करो। मेरा रोज़ा है। तो वे फट पड़े। ﴿كيف نكلم من كان في المهد صبيا﴾ बेवक़ूफ़ बनाती है। बहाना करने का भी तुझे तरीक़ा नहीं आता। एक तो मुँह काला किया। एक

ऐसा बहाना बनाती है। बच्चा कैसे बात करे? तो एक हंगामा शुरू हो गया। अभी वे ऐसे ही हो हाँ कर रहे थे कि एकदम बच्चे का ख़िताब शुरू हुआ बग़ैर लाउडस्पीकर के सारे डिफ़ेन्स में घूम गया। सारे बैतुल मुक़द्दस में घूम गया।

पैदाइशी बच्चे की तक़रीर

انی عبد اللہ. اٰتانی الکتاب وجعلنی مبارکا اینما کنت واوصنی بالصلوۃ

والزکوۃ ما دمت حیا. وبرا بوالدتی ولم یجعلنی جبارا شقیا. والسلام

علی یوم ولدت ویوم اموت ویوم ابعث حیا. ذالک عیسی ابن مریم.

ईसा अलैहिस्सलाम ने तक़रीर की। तीसरी क़ुदरत। फूंक से हमल, फ़ौरन बच्चा हुआ, तीसरी ताक़त ज़ाहिर हुई कि जो ढाई साल के बाद टूटी फूटी बात करने वाला बच्चा वह माँ की गोद में ऐसी फ़सीह तक़रीर कर रहा।

मैं अल्लाह का बंदा, मैं किताब वाला, मैं नबुव्वत वाला, मैं बरकत वाला, मैं माँ का फ़रमांबरदार, मैं नहीं हूँ बद दिमाग़, मैं नमाज़ वाला, मैं ज़कात वाला, मैं सलामती वाला पैदाइश के दिन, मैं सलामती वाला मौत के दिन और मैं सलामती वाला क़यामत के दिन।

यह तक़रीर उस बच्चे से अल्लाह तआला ने करवाकर सारी दुनिया के दिमाग़ों पर हथौड़ा मारा है कि काएनात का निज़ाम असबाब से चलता है। अल्लाह तआला किसी सबब के पाबन्द नहीं हैं।

सारी काएनात के मसाइल का हल सिर्फ़ एक अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह की ज़ात तो ऐसी क़ुदरत वाली है जो नामुमकिन को मुमकिन बना दे। इस पर एक वाक़िआ बताता हूँ।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाइश का अनोखा वाक़िआ

फ़िरऔन का सारा लश्कर इस कोशिश में है कि मूसा अलैहिस्सलाम पैदा न हों। वह एक साल बच्चे ज़िब्ह करता था। एक साल छोड़ता था। जिस साल छोड़ता उस साल हारून अलैहिस्स्लाम पैदा हुए और जिस साल क़त्ल करता था उस साल मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

फिर अगर अल्लाह कहीं छुपाकर उनको पालता तो क़ुदरत का कैसे पता चलता? ﴿واوحينا الى ام موسى ان ارضعيه﴾ ऐ उम्मे मूसा! दूध पिला इसको। ﴿فاذا خفت عليه﴾ जब डर लगे ﴿فالقيه فى اليم﴾ तो फिर संदूक़ में डाल देना।

ولا تخافى ولا تحزنى انا رآده اليك وجاعلوه من المرسلين.

न डरना न ग़म करना, तेरी गोद में रसूल बनकर वापस आएगा।

फ़िरऔनी लश्कर हरकत में है कि नहीं ज़िंदा रहने देना। अल्लाह तआला का निज़ाम हरकत में है कि करके दिखाना है।

मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा बढ़ई के पास गयीं कि संदूक़ बना दो। उसको शक पड़ गया कि कोई चक्कर है। जब फ़िरऔन सामने आया तो अल्लाह पाक ने ज़बान बंद कर दी। वह कहे बोलो क्या बात है? वह बोलना चाहे तो बोल न सके। इशारों से समझाए तो समझ में न आया। फ़िरऔन ने कहा पागल है निकाल दो। जब बाहर निकला तो ज़बान फिर ठीक हो गई। वह फिर वापस आया कि मुझे ज़रूरी बात फ़िरऔन को बतानी है। फ़िरऔन ने अंदर आने की इजाज़त दी।

रहम दिली का करिश्मा

फ़िरऔन बनी इस्राईल के अलावा अपनी क़ौम में रहम दिल भी था और आदिल भी था। इसलिए उसको इतनी मुहलत मिल गई। एक दिन मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा, या अल्लाह! फ़िरऔन तो ख़ुदाई का दावा करता था तो आपने उसको इतनी मुहलत क्यों दी? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया, वह अपनी रिआया में आदिल भी और रहम दिल भी था। इसलिए मैंने उसको इतनी मुहलत दी।

वह फिर अंदर आ गया। कहा क्या बात है? फिर ज़बान बंद हो गई। अब वह समझाना चाहे तो समझा न सके। उन्होंने फिर निकाल दिया। जब बाहर निकला तो ज़बान ठीक हो गई। फिर वह अंदर भागा। जब तीसरी मर्तबा उसकी ज़बान बंद हो गई तो फ़िरऔन ने कहा अब अगर आए तो इसकी गर्दन उड़ा देना। तो उसने सोचा कि अल्लाह ही ने कुछ करना चाहा है। इसमें इंसान बेबस है। चुप करके संदूक़ बनाकर हवाले कर दिया। फिर उन्हें दरिया में डाल दिया गया।

मेरे अल्लाह के रंग

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने पूछा या अल्लाह अब यह संदूक़ कहाँ जाएगा। ﴿فليلقه اليم بالساحل﴾ दरिया की मौज उसको किनार पर लगा देगी। ﴿ياخذه عدولي وعدوله﴾ इसको फ़िरऔन उठा लेगा। यह सुनकर मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा का सीना एकदम हिल गया कि या अल्लाह यह आप क्या कह रहे हैं? जिससे बचाना चाहते हैं उसी के पास भेज रहे हैं।

फ़रमाया ﴿لا تخافي﴾ इसकी मौत का डर न कर, ﴿ولا تحزني﴾

इसकी जुदाई का ग़म न कर, ﴿انا رادوه اليك﴾ इसे तेरी गोद में वापस ला दूंगा। ﴿وجاعلوه من المرسلين﴾ और इसे रसूल बनाकर दिखा दूंगा।

जब उस बच्चे को पकड़कर फ़िरऔन के दरबार में लाया गया तो फ़िरऔन ने देखते ही कहा यही मेरा क़ातिल है। इसे मार दो। ख़ुद आसिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा ﴿قرت عين لي ولك﴾ यह तो आँखों की ठंडक है। इसे छोड़ दो। इतने मारे हैं यह हमारे घर में पलेगा क्या हो जाएगा। तो अल्लाह पाक ने फ़िरऔन के घर में मूसा अलैहिस्सलाम को ठहरा दिया।

﴿وحرمنا عليه المراضع﴾ जिस ख़ज़ाने से उसे क़त्ल कराने के लिए पैसा ख़र्च हुआ है। आओ भाई इसे दूध पिलाओ। (इसने बड़े होकर मेरा ही सर लेना है।) मूसा अलैहिस्सलाम किसी का दूध न पिएं। अल्लाह पाक ने सारी औरतों का दूध हराम कर दिया। मूसा अलैहिस्सलाम किसी का दूध नहीं पी रहे। तो उन्होंने कहा कि मैं एक घर जानती हूँ, उसका पता बता दूँ। उन्होंने कहा हाँ ज़रूर बताओ। यह अपनी माँ को बुलाकर लायीं। अब माँ बच्चे को देखे और उसके दिल में मुहब्बत का जोश न आए और चेहरे पर असर न हो, यह कैसे हो सकता है। यह तो इंसानी फ़ितरत के ख़िलाफ़ है।

यही मेरी माँ है

शहंशाह अकबर उम्रकोट में पैदा हुआ। दो ढाई साल का था कि उसकी माँ काबूल चली गई। ढाई साल बाद वह काबुल गया तो बहुत सारी औरतें बैठी थीं तो अकबर को छोड़ा गया कि अपनी माँ के पास जाओ। उसने सब चेहरों को देखा और अपनी माँ की गोद में जाकर बैठ गया।

कहाँ से पहचाना? उसके चेहरे से कि उसकी माँ के चेहरे के एक-एक ख़ाल से मुहब्बत फूट रही थी। उसने कहा यही मेरी माँ है।

मूसा अलैहिस्सलाम की अपने घर में वापसी

जब मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा आयीं तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿ان كادت لتبدى به لولا ان ربطنا على قلبها﴾ कि करीब था कि मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा के दिल की बेक़रारी चेहर पर आ जाती, हमने उसके दिल को बंद कर दिया और मूसा अलैहिस्सलाम की मुहब्बत को खींच लिया और उनकी वालिदा ऐसे पत्थर हो गयीं जैसे अपना बेटा ही नहीं लेकिन जब उन्हें दूध पिलाया तो वह पीने लग गए। उनकी वालिदा ने कहा कि मैं ग़रीब औरत हूँ मैं आपके पास नहीं रह सकती। मेरे और भी बच्चे हैं। मैं तो इसे घर ले जाऊँगी और घर ले जाकर इसे दूध पिलाऊँगी। यह मंज़ूर है तो ठीक है नहीं मैं तो जाती हूँ।

फ़िरऔन ने कहा ठीक है। इसे ले जाओ और दूध पिलाओ। और दूध पिलाकर हमारे पास छोड़ जाओ। अब जिस ख़ज़ाने से पैसे ख़र्च करके बच्चे ज़िब्ह किए जा रहे हैं उसी ख़ज़ाने से मूसा अलैहिस्सलाम की परवरिश हो रही है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और आग

मेरे भाईयो! इस काएनात में हुकूमत अल्लाह तआला की है। यहाँ वह होगा जो अल्लाह चाहता है। सारी की सारी नमरूद की ताक़त इस्तेमाल हुई कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में जला दो। लकड़ियाँ इकठ्ठी की गयीं। ढेर लगाया गया और ऐसी आग दहकी कि ऊपर से उड़ने वाले परिन्दे भी इसमें गिर कर राख हो

जाएं। अब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को फेंकने का वक़्त आया तो आग के क़रीब जाएगा कौन? रास्ता ही कोई नहीं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहने लगे तू खुद चला जा। वह कहने लगे क्यों जाऊँ तुमने जलाना है फेंको मुझे।

अब फेंकने का तरीक़ा कोई नहीं। क़रीब जाएं तो खुद जलते हैं। शैतान ने एक हथियार बना दिया। गुलेल की तरह उसमें उतार के फेंका। कपड़े उतारे, रस्सियों से बांधा।

जब वहा में उड़े तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम दाईं तरफ़ आ गए और पानी का फ़रिश्ता बाईं तरफ़ आ गया। दर्मियान में इब्राहीम अलैहिस्सलम इधर जिब्राईल अलैहिस्सलाम उधर पानी का फ़रिश्ता और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ख़ामोश हैं।

बस इतना कह रहे हैं ﴿حسبی اللہ ونعم الوکیل﴾ हस्बियल्लाहु व नेअमल वकील। इससे आगे कुछ नहीं बोल रहे। इधर पानी का फ़रिश्ता इंतिज़ार में है कि अभी अल्लाह तआला फ़रमाएंगे पानी डालो, आग बुझाओ। जिब्राईल अलैहिस्सलाम इंतिज़ार में है कि यह मुझ से कुछ कहें तो मैं आगे करूं। तो जब देखा कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम बोलते नहीं हैं तो बेक़रार हो गए कि यह आग में जाएगा तो जल जाएगा। जिब्राईल अलैहिस्सलाम भी तो यही जानते थे कि आग जलाती है। कहने लगे, इब्राहीम आपको मेरी ज़रूरत है? तो फ़रमाया ﴿اما الیک فلا﴾ मुझे तेरी कोई ज़रूरत नहीं। ﴿اما الی اللہ فنعم﴾ बेशक अल्लाह का ज़रूरत मुहताज हूँ पर तेरा मुहताज कोई नहीं। आग में जा रहे हैं। जब जिब्राईल अलैहिस्सलाम से भी नज़र हट गई और पानी के फ़रिश्ते से भी नज़र हट गई तो अल्लाह तआला ने बराहेरास्त आग को हुक्म दिया ﴿ینار کونی بردا وسلاما علی ابراہیم﴾ ऐ आग! ठंडी हो जा

सलामती के साथ मेरे इब्राहीम पर। तो अल्लाह जल्लेजलालुहू ने ऐसा ठंडा फ़रमाया और उसके शोलों को गोद बना दिया।

शोलों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को गोद में लिया जैसे माँ बच्चे को चारपाई पर लिटाती है, ऐसे आराम से अंगारों पर बिठा दिया। आग को शफ़ाफ़ बना दिया यहाँ तक कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बाप आज़र जो जानी दुश्मन और क़त्ल के दरपे था जब उसकी नज़र पड़ी तो उसकी ज़बान से बेसाख़्ता निकला ﴿نعم الرب ربك يا ابراهيم﴾ ऐ इब्राहीम! तेरे रब के क्या कहने क्या ही ज़बरदस्त है तेरा रब।

आख़िरी फ़ैसला अल्लाह तआला का है

काएनात मेंजो भी शक्ल है जो भी सूरत है उसको अल्लाह तआला ने बनाया है। वह अल्लाह के क़ब्ज़े में है। वह अल्लाह के ताबे है। अल्लाह की चाहत से इस्तेमाल होती है। इस जहाँ में फ़ैसला अल्लाह का आख़िरी चलता है। जो ज़मीन को कहेगा वह करेगी। जो आसमानों को कहेगा वह करेंगे। जो हवाओं को कहेगा वह करेंगी। जो पानियों को कहेगा वही होगा। सारी काएनात में आख़िरी फ़ैसला अल्लाह तआला का है।

लंगड़े मच्छर का कारनामा

नमरूद के मुक़ाबले में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कलिमे की दावत दी। अल्लाह तआला ने लंगड़े मच्छर से पिटवाकर दिखा दिया कि मैं हूँ असल करने वाला। मच्छरों से नमरूद के लश्कर को बर्बाद कर दिया। नमरूद के लश्करों पर मच्छरों ने हमला किया। मच्छरों ने काट-काट के नमरूद के लश्कर को बर्बाद किया। नमरूद भागा और अपने महल में पहुँचा और बीवी से

कहा कि मेरे लश्करों को मच्छरों ने बर्बाद कर दिया और सब हलाक हो गए। इतने में एक लंगड़ा मच्छर भिनभिनाता हुआ कमरे आया और यों सर पर घूमा। कहने लगा ऐसे मच्छर थे जिन्होंने बर्बाद किया और वही आगे उसकी नाक में घुसा और अल्लाह तआला ने दिमाग़ में पहुँचाया और उसके सर पर जूते पड़ते रहे और जूते पड़ते पड़ते भेजा फट गया और मर गया। अल्लाह तआला ने कलिमे की ताक़त को दिखाया।

अल्लाह तआला ने हर आसमान को अपने अम्र और अपनी ताक़त के साथ अलग-अलग अहकाम देकर जकड़ दिया, बांध दिया। इतने बड़े अल्लाह को पुकारते ही नहीं। लेकिन जब आजिज़ हो जाते हैं तो फिर कहते हैं अब तो अल्लाह ही करेगा। अच्छा! पहले कौन कर रहा था? अब तो अल्लाह ही शिफ़ा देगा। क्या पहले तू शिफ़ा दे रहा था?

मूसा अलैहिस्सलाम के पेट में दर्द हुआ। कहने लगे या अल्लाह! पेट में दर्द है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि रेहान के पत्ते उबालकर पी लो। रेहान एक छोटा सा पौधा होता है। उन्होंने उसको रगड़कर पीसकर पी लिया। ठीक हो गए। फिर कुछ दिनों के बाद दोबारा पेट का दर्द हो गया। अल्लाह तआला से नहीं पूछा खुद ही जाकर रगड़कर पीसकर पी लिया तो दर्द और तेज़ हो गया एकदम तेज़।

फिर कहा या अल्लाह! यह क्या हुआ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया, तूने क्या समझा था इसमें शिफ़ा है? मुझसे क्यों नहीं पूछा। ﴿وإذا مرضت فهو يشفين﴾ तेरा रब शाफ़ी है। रेहान शाफ़ी नहीं। तेरा रब शाफ़ी है। कामयाबी और कामरानी अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह को साथ लेने से काम बनता है। फिर पत्थर भी एटम बम बन जाता है।

यह कोई अक़्ल की बात है?

जब तालूत जालूत के मुक़ाबले के लिए निकला तो दाऊद अलैहिस्सलाम उस वक़्त छोटे बच्चे थे। कहने लगे कि मुझे भी साथ ले लें। जब ये रास्ते में जा रहे थे तो उधर एक पत्थर पड़ा हुआ था। वह कहने लगा कि ऐ दाऊद! मुझे उठा लो। मेरे अंदर जालूत की मौत लिखी हुई है।

छोटा सा पत्थर था। उसको उठाकर जेब में डाल दिया। जब मैदान में पहुँचे तो जालूत लोहे का लिबास पहनकर आया। सिर्फ़ उसकी आँखें नज़र आती थीं। उसने ऐलान कर दिया कि आओ कोई मेरे मुक़ाबले में?

दाऊद अलैहिस्सलाम ने तालूत से कहा कि इससे मुक़ाबले के लिए मैं जाता हूँ। उन्हें इजाज़त मिल गई तो यह छोटा सा नौउम्र बच्चा मैदान में उतरा तो जालूत ने कहा यह यह नौउम्र बच्चा मेरे मुक़ाबले में आकर अपनी मौत से खेल रहा है। इतने में दाऊद अलैहिस्सलाम ने वही पत्थर उठाकर उसके सर पर मारा और वह पत्थर सर से पार निकल गया। इतना छोटा सा पत्थर सर को पार करके दूसरी तरफ़ निकल जाए यह कोई अक़्ल की बात है?

﴿وما رميت اذ رميت ولكن الله رمى﴾ तू नहीं मारता है बल्कि तेरा रब मार रहा है।

मेरा अल्लाह गवाह है

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनी इस्राइल के एक आदमी का वाक़िआ सुनाया कि बनी इस्राइल में एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा कि मुझे नक़द रक़म चाहिए और मैं परदेसी हूँ। मेरा घर दरिया के पास बस्ती में है। दूसरे आदमी ने कहा इस

पर गवाह कौन होगा? कर्ज़ मांगने वाले ने कहा ﴿وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا﴾ अल्लाह मेरा गवाह है। फिर दूसरे ने कहा आपका कफ़ील कौन है? जवाब दिया ﴿وَكَفٰى بِاللّٰهِ كَفِيْلًا﴾ यानी मेरा कफ़ील अल्लाह है। उसने कहा कितने दरहम चाहिएं? कर्ज़ मांगने वाले ने कहा तीन सौ। उसने दे दिया और तारीख़ वापसी के लिए मुक़र्रर हुई। जब वह कर्ज़ वापस करने के लिए आए तो दरिया में ज़बरदस्त चढ़ाव था। कश्तियाँ खड़ी हुई हैं। तो यह आदमी सर पकड़कर दरिया के किनारे बैठकर फ़रियाद करने लगा, "या अल्लाह मैंने आपको गवाह बनाया था और वकील बनाया था। अब मुक़र्रर किए हुए वक़्त पर न पहुँच सका तो तेरी गवाही झूठ साबित होगी। जितना मुझसे हो सका मैंने कर दिया आगे काम तू कर देना। एक बड़ा तिनका लकड़ी का पड़ा हुआ था उसको अंदर से खोदा और पैसे की थैली उसमें डाली और साथ में एक पर्चा लिखकर डाला :

"दरिया में चढ़ाव की वजह से मैं आ नहीं सका। पैसे इस लकड़ी में डाल रहा हूँ और जिसको कफ़ील और गवाह बनाया था उसको कहा रहा हूँ कि वह इसको तुझ तक पहुँचा दें और लकड़ी को दरिया में डालकर खुद घर चला गया।

दूसरी तरफ़ लेने वाला किश्ती के इंतिज़ार में बैठा हुआ है। जब कोई किश्ती नहीं आई तो कहने लगा कि अल्लाह को गवाह बनाया झूठा और वायदा ख़िलाफ़ निकला। जब वापस जाने लगा तो वह लकड़ी नज़र अई तो कहा चलो घर के लिए ईंधन तो हाथ आ गया। वह लकड़ी दरिया की मौजों को चीरती हुई उसके पास दरिया के किनारे खड़ी हो गई। उसने लकड़ी को पकड़ा, फिर उठाकर घर लाया। फिर चीरने के लिए कुल्हाड़ा लेकर आया।

दो तीन मर्तबा कुल्हाड़े लकड़ी पर पड़े तो छन-छन करते हुए

दरहम बाहर आ गए और पर्ची भी उठाकर पढ़ी और उसके बक़ाया भी मिल गए। कुछ अरसे के बाद वह आदमी आया और कहने लगा कि मेरे साथ यह वाक़िआ हुआ था और मैंने इस तरह कर दिया था। अब अगर वह रक़म न पहुँची हो तो यह ले लो। उसने उससे कहा अल्हम्दुलिल्लाह जिसको तुमने वकील बनाया और गवाह बनाया उसने वह रक़म भी पहुँचा दी और ईंधन भी पहुँचा दिया।

मेरे दोस्तो! हम दीन पर चलें, दीन का काम करें। अल्लहा की क़सम अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम हिफ़ाज़त करेगा। अब बताओ भाई! इस काम के लिए कौन-कौन तैया है उधार नहीं हमें नक़द चाहिए। अब फ़रमाइए कि कौन-कौन चार महीने और चिल्ले के लिए नक़द तैयार हैं?

अल्लाह की मदद के बग़ैर कामयाबी नामुमकिन है

सबसे पहला मार्का जिसमें हक़ व बातिल टकराए वह बदर है। बदर इस्लाम का एक बुनियादी संगे मील है। संगे मील जहाँ से इस्लाम की तारीख़ बनी। एक तरफ़ पूरी हथियारबंद फ़ौज खड़ी हुई है। हज़ार आदमी हैं जिनमें तीन सौ घोड़े सवार हैं। सात सौ तलवार वाले हैं। बाक़ी नेज़े वाले हैं। इधर कुल तीन सौ तेरह आदमी खड़े हैं। ये तीन सौ तेरह बग़ैर तैयारी के निकले हैं। लड़ाई के लिए न ज़हनी तौर पर तैयार हैं न हथियार हैं। सारे लश्कर में आठ तलवारें हैं।

सात सौ तलवार और आठ तलवार क्या मुक़ाबला है? तीन सौ घोड़ा सवार और दो घुड़सवार क्या मुक़ाबला है? साठ ऊँटनियाँ। यह कुल सामाने जंग है बदर की लड़ाई का। कुल सामने जंग और एक हज़ार हथियाबंद हैं। उस ज़माने के सारे

हथियारों के साथ और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सज्दे में पड़े हुए हैं

﴿ان تهلك هذه العصابة فلن تعبد﴾ इनको तूने मार दिया तो फिर तेरा नाम लेने वाला कोई नहीं रहेगा।

ये अलफ़ाज़ बदर के सहाबा की अज़मत को बताते हैं कि अल्लाह के नबी की अज़मत को बताते हैं कि अल्लाह के नबी उनको इतना ऊँचा मक़ाम दे रहे हैं कि अगर ये मिट गए तो फिर तेरा नाम भी दुनिया से मिट जाएगा। ये ऐसे बुनियादी लोग हैं। और इस दिन जो रोए हैं और अल्लाह से मांगा है। कुछ भी हाथ में नहीं और इधर सबने भी मांगा।

﴿اذ تستغيثون ربكم فاستجاب لكم﴾ सब मांग रहे हैं या अल्लाह तू ही करेगा, तू ही करेगा।

फ़रिश्तों का जंग में लड़ना

तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿لبيك لبيك انى ممدكم بالف من الملائكة مردفين﴾ मेरे हज़ार फ़रिश्ते आ रहे हैं। काफ़िर एक हज़ार, फ़रिश्ते भी एक हज़ार।

एक बात समझाई। कहा फ़रिश्तों को न समझना कि फ़रिश्तों का काम होता है। काम अल्लाह ही करता है।

﴿وما النصر الا من عند الله﴾ काम अल्लाह ही बनाता है। दूसरी मदद आई ﴿اذ يغشيكم النعاس امنة منه﴾ अल्लाह तआला ने नींद दे दी। सब सो गए। थके हुए थे, सो गए। थकावट दूर हो गई। तीसरी मदद क्या आई? एक तो अल्लाह तआला ने फ़रिश्ते भेजे, शैतान के वसवसे दूर हुए और इस्तिक़ामत नसीब हो गई। जम गए। और अल्लाह तआला ने दिलों को मज़बूत कर दिया।

फिर पाँचवीं मदद क्या आई? अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को लड़ने का हुक्म दिया। फ़रिश्ते आते तो थे हमेशा लेकिन लड़ते नहीं थे। जंगे बदर में फ़रिश्ते लड़े हैं आकर। यह पहली जं थी जिसमें फ़रिश्तों ने आकर लड़ाई की और अल्लाह तआला ने उनको बताया ﴿فاضربوا فوق الاعناق واضربوا منهم كل بنان﴾ उनकी गर्दनें काटना और हाथ काटना। तो कहाँ तीन सौ तेरह और कहाँ एक हज़ार। जब लश्कर सामने होने लगे तो एक हवा चली। एक ज़ोर से हवा आई। हज़रत अली ने पूछा या रसूलुल्लाह! यह हवा कैसी है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिब्राईल अलैहिस्सलाम आ गए फ़रिश्तों के साथ।

फिर एक दूसरी हवा आई। फिर हज़रत अली ने पूछा या रसूलुल्लाह यह क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मीकाईल आ गए फ़रिश्तों के साथ। अल्लाह तआला ने मिनटों में पांसा पलट के दिखा दिया। अल्लाह तआला की मदद को साथ लिए बग़ैर कामयाबी नामुमकिन है।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त दरिन्दों के नाम

हज़रत सलमान फ़ारसी मदाइन के अफ़सर बनकर आए। बड़े गवर्नर बन के आए तो चोरियाँ शुरू हो गयीं। पहले तो कोशिश करते रहे कि ऐसे ही ठीक हो जाएं। फिर कहने लगे अच्छा भाई काग़ज़ क़लम लाओ। लिखा कि मदाइन के गवर्नर की तरफ़ से जंगल के दरिन्दों के नाम,

"आज रात तुम्हें जो भी चलता फिरता मशकूक नज़र आए उसे चीर फाड़ देना।"

अपने दस्तख़त करके फ़रमाया शहर के बाहर इसको कील गाड़कर लटका दो।

उधर राब्ता दो रकअत के ज़रिए ऊपर और इधर जंगल के दरिन्दों को हुक्म। इधर राब्ता ऊपर है तो ख़ाली मोहर ही हैं शतरंज की मोहरों की तरह। अच्छा कहा, भाई आज दरवाज़ा खुला रहेगा शहर का, दरवाज़ा बंद नहीं होगा। जूँ ही रात गुज़री शेर गुर्राते हुए अंदर चले आए। किसी को हिम्मत नहीं हुई कि बाहर निकल सके।

अल्लाह के रसूल वाली ज़िंदगी की ट्रेनिंग

आप के दो नफ़्ल वह काम करेंगे जो बड़े-बड़े हथियार नहीं कर सके और *कि* सारे ज़ालिमों और बदमाशों को अल्लाह तआला गर्दनें मरोड़कर तुम्हारे क़दमों में डाल देगा। सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल वाला तरीक़ा सीख लिया जाए। तो इसकी भी ट्रेनिंग चाहिए बग़ैर ट्रेनिंग के कैसे आएगा? तो जो तबलीग़ का काम है उस ज़िंदगी की ट्रेनिंग है कि जिसमें हमारे सारे जिस्म के आज़ा अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के ताबे हो जाएं।

अल्लाह की मदद का नज़ारा

हज़रत उक़्बा बिन नाफ़े जब पहुँचे त्यूनुस में तो कहरवान का शहर अब भी मौजूद है। यह पहले जंगल था ग्यारह किलोमीटर चौड़ा था। यहाँ छावनी बनाई थी। लश्कर में उन्नीस सहाबी थे। उन्होंने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को लेकर एक टीले पर चढ़कर ऐलान किया :

"जंगल के जानवरो! हम अल्लाह और उसके रसूल के ग़ुलाम हैं। यहाँ छावनी बनानी है। तीन दिन में ख़ाली कर दो। उसके

बाद जो हमें मिलेगा हम उसे क़त्ल कर देंगे।"

यह वाक़िआ ईसाई मौर्रिख़ीन ने भी अपनी किताबों में नक़ल किया है। ईसाई मौर्रिख़ीन इस वाक़िए को लिखते हैं। इसकी हक़्क़ानियत को मानते क़बूल करते हैं। तीन दिन में सारा जंगल ख़ाली हो गया। और इस मंज़र को देखकर हज़ारों अमरीकन क़बीले इस्लाम में दाख़िल हो गए। उनकी तो जानवर भी मानते हैं, हम कैसे न मानें।

आँख का क़ीमा बन गया मगर बीनाई लौट आई

क़तादा बिन नौमान एक सहाबी हैं। ओहद की लड़ाई में उनकी आँख में एक तीर लगा। अंदर घुस गया तो सारी आँख का चूरा चूरा हो गया। क़ीमा क़ीमा हो गया। आँख का वह क़ीमा उठाकर ले आए। (अर्ज़ किया) या रसूलुल्लाह! मेरी आँख ज़ाए हो गई। आप अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह मेरी आँख ठीक कर दे।

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, आँख लोगे या जन्नत लोगे?

उन्होंने कहा दोनों ही लूंगा। अल्लाह तआला के पास क्या कमी है। दोनों ही लूंगा। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी बीवी को बड़ा बुरा लगेगा कि मेरी आँख नहीं है। तो आप मुस्करा दिए। वही जो क़ीमा था उठाया और उसे आँख के ढेले में रखा और यों हाथ फेरा ﴾اللهم جعلها احسن عينين﴿ ऐ अल्लाह! इस आँख को दूसरी से ख़ूबसूरत कर दे।

फिर वह आँख दूसरी आँख से ज़्यादा ख़ूबसूरत होकर चमक रही थी। तो शाफ़ी तो अल्लाह है जो चाहे कर दे। तो भाई

अल्लाह तआला को साथ ले लो।

वह अल्लाह जब इरादा करेगा, आपके काम बनानो का तो कोई उसको रोक नहीं सकेगा। सारा जहाँ आपक पीछे और अल्लाह तआला आपके आमे जो सारा जहाँ क़रीब नहीं खड़ा हो सकता। सारा जहाँ आपके आगे आ जाए। हिफ़ाज़त को अल्लह का इरादा हो हलाकत का। यह सब मिट्टी की मूरत साबित होंगे। कुछ भी नहीं कर सकते।

﴿وامن يمسك الله بضر فلا كاشف له الا هو﴾ मैं मुसीबत में डाल दूंगा तो सारी दुनिया के मआशियात के माहिरीन उस मुसीबत को दूर नहीं कर सकते। लोग पागल हैं कि अंधों से पूछ रहे हैं कि रास्ता बताओ। ﴿وان يردك بخير﴾ और अगर भलाई का इरादा कर लूँ तो सारा जहान मिलकर तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचा सकता।

हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम हैं

जब सहाबा किराम ईरान में दाख़िल हुए और जब ईरान के बादशाह यज़्दुजर के पास गए तो दरबारी हंसने लगे कि अच्छा इन्हीं तीरों से ईरान को फ़तह करने आए हो। उनके तीर छोटे-छोटे थे और ईरानियों के तीर बड़े-बड़े थे। और कहा इन छोटी-छोटी तलवारों से ईरान को फ़तह करोगे तो सहाबा किराम ने कहा कि तुम इनकी तेज़ी मैदान में देखोगे। हमारे साथ अल्लाह तआला का ग़ैबी निज़ाम है कि हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम हैं। आज वह बात छूटी हुई है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का अल्लाह तआला पर तवक्कुल

हज़रत अली इशा की नमाज़ पढ़ के घर की तरफ़ निकले तो

साथी पहरा दे रहे हैं। कहा, यह पहरा क्यों है? कहा, आपको ख़तरा है इसलिए पहरा दे रहे हैं। फ़रमाया, किस वजह से पहरा दे रहे हैं, ज़मीन वालों से या आसमान वालों से? कहा, आसमान वाले से पहरा कौन दे सकता है, हम ज़मीन वालों से पहरा दे रहे हैं।

फ़रमाया, जाओ सो जाओ। आसमान वाला जब तय करता है तो ज़मीन वालों के पहरे नफ़ा नहीं देते। जब आसमान वाला तय नहीं करता तो यहाँ तीर व तलवार कुछ असर नहीं करता। जाओ आराम करो। वापस भेज दिया।

मेरे भाईयो! आज मुसीबत पर अल्लाह की तरफ़ दौड़ ख़त्म हो गई। तंगी में अल्लाह तआला याद नहीं आते, मुसीबत और परेशानी में याद नहीं आते। जब सारे असबाब टूट जाते हैं तब अल्लाह को याद करते हैं। कोई कहे डाक्टर के पास जाओ, कोई कहे थानेदार के पास जाओ, कोई कहे वकील और जज के पास जाओ। मैं अल्लाह से ताल्लुक़ काटकर अपनी जैसी मख़्लूक़ के पास जाऊँ तो मुझसे बड़ा अहमक़ कौन होगा?

तू अल्लाह से क्यों नहीं मांगता

हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का वज़ीफ़ा मुक़र्रर था दीनार और दरहम। एक दिन आने में देर हो गई और बड़ी तंगी आई। ख़्याल आया कि ख़त लिखकर याद करा दूँ। क़लम और दवात मंगाया। फिर एकदम छोड़ दिया। क़लम काग़ज़ सरहाने रखकर सो गए। ख़्वाब में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया हसन! मेरे बेटे होकर मख़्लूक़ से मांगते हो? फ़रमाया, तंगी आई है तो अल्लाह से क्यों नहीं मांगता?

कहा, क्या मांगू? फ़रमाया, यह मांगो ऐ अल्लाह! मेरे दिल में यक़ीन भर दे। ﴿وقتر رجائی عمن سواک﴾ सारी मख़्लूक़ से मेरी उम्मीदें काट दे कि या अल्लाह! तू ही मेरे दिल और दिमाग़ में समा जाए। बाक़ी सारी मख़्लूक़ से मेरी कट जाएं।

اللهم دعوت عنه قوتی ويقصر عنه عملی ولم تنتهی اليه رغبتی وتبلغ مسئلتی ولم يجری علی لسانی مما اعطيت احد الاولين والآخرين من اليقين تخصه عنه به يا رب العالمين.

या अल्लाह! तेरे ऊपर तवक्कल का वह दर्जा जिसको मैं ताक़त से न ले सका। अपनी उम्मीद और तसव्वुर भी उसका क़ायम न कर सका। मेरा सवाल भी उस तक न पहुँच सका। मेरी ज़ुबान पर भी यक़ीन का वह दर्जा न आ सका। वह इतना ऊँचा दर्जा है। या अल्लाह! तूने अपने बंदों में से किसी को दिया है, वह दर्जा मुझ भी नसीब फ़रमा दे।

क्या ज़बरदस्त दुआ है। बेटा! यह दुआ मांग। चंद दिन के बाद एक लाख के बजाए पंद्रह लाख पहुँच गया।

अल्लाह के बन गए तो समन्दर भी नहीं डुबेएगा

हदीस पाक में आता है कि जिस आदमी के दिल में राई के दाने के बरारबर तवक्कल और भरोसा होगा तो वह पानी पर चलेगा तो पानी उसको रास्ता देगा। उसको डुबो नहीं सकेगा। ﴿لو كان الابن آدم حبة العشير من اليقين ان يمشی علی الماء﴾ मेरे भाईयो! अल्लाह से अपना ताल्लुक़ बना लो।

अल्लाह को साथ लोगे तो काम बनेंगे

जब तक अल्लाह मुसलमानों के साथ है, इनकी कोई तदबीर

कामयाब नहीं हो सकती। जब अल्लाह साथ है ﴿ان ينصركم الله فلا غالب لكم﴾ अगर मैं तुम्हारे साथ हूँ तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता।

﴿ان يخذلكم فمن ذاالذى ينصركم من بعده﴾ अगर मैं तुम्हें छोड़ दूँ तो कौन तुम्हारी मदद करेगा। (सूरः आले इमरान)

इस आयत से पता चला कि अल्लाह हमारे साथ होना चाहिए। हुकूमत हमारे साथ हो या न हो, फ़ौज हमारे साथ हो या न हो, हथियार ज़्यादा हो या न हों तो भी हमारा ही नाम ऊँचा होगा। हमारा ही पल्ला भारी होगा। हमारा ही बोल बाला होगा। उन्हीं को इज़्ज़त मिलेगी जिनके साथ अल्लाह तआला है और अगर अल्लाह साथ नहीं तो हज़ारों एअम बम बना लें तो कोई मसअला हल नहीं होगा।

मिठाई कोई बांटने की चीज़ नहीं। हाँ अगर इंसान तौबा कर ले तो यह मिठाई बांटने की चीज़ है कि अब अल्लाह साथ हो गया।

बनू अब्बास के हथियार क्या काम आए चंगेज़ियों के सामने। अलाउद्दीन ख़्वारज़मी शाही सलतनत का घमंडी क़िस्म का इंसान था। चार लाख फ़ोर्स तैयार की और चंगेज़ ख़ान लुटेरा था। और दो लाख लश्कर के साथ और दो हज़ार मील सफ़र करके आया था। कहाँ वह लश्कर? पहाड़ी कोह क़राकम के सिलसिलों को चंगेज़ ख़ान ने पार किया। आज तक कोई हाकिम, कोई सालार, कोई फ़ौज पार न कर सकी। अल्लाह की क़ुदरत कितनी कि कितनी पेचीदा और दुश्वार गुज़ार घाटियों से वह गुज़रा। एक सिपाही भी रास्ते में ज़ाए न हुआ। कोई भी फिसल जाए, नोकीली चट्टानों पर भी सफ़र किया। दो लाख लश्कर में एक आदमी भी फिसल कर नहीं मरा। इतना थका हुआ लश्कर पराए देस में

लड़ने आया और वहाँ चार लाख का ताज़ा दम लश्कर उसके इंतिज़ार में है। फिर भी अल्लाह तआला ने उसके टुकड़े करवा दिए। और चालीस साल में उसने पूरी इस्लामी हुकूमत को ज़मीन चटा दी और ख़ून की नदियाँ बहा दीं। जब अल्लाह साथ छोड़ देता है तो फिर एटम बम बनाने से काम नहीं बनता।

मौत से ज़िंदगी का सफ़र

एक औरत आई लाहौर में। बड़े मालदार आदमी की बेटी थी और अभी वह ज़िंदा है। उसको जिगर का कैंसर हो गया। वहाँ एक बुज़ुर्ग के पास गई कि मैं अमरीका इलाज कराने जा रही हूँ। आप मेरे लिए दुआ करें। उन्होंने उसको एक छोटी सी दुआ दी।

﴿يا بديع العجائب بالخير يا بديع﴾ "या बदीउल अजाइबि बिल ख़ैर या बदीअ", यह पढ़ लिया करो।

एक महीने तक उस औरत ने यह वज़ीफ़ा पढ़ा। एक महीने के बाद वापस हस्पताल में चैक कराया तो डाक्टरों ने कहा यह वह मरीज़ नहीं है जो पहले हमारे पास लाया गया था। अल्लाह मुर्दों को ज़िंदा कर सकता है तो नामुमकिन बीमारियों को सेहत भी दे सकता है। अल्लाह चाहे तो मौत को ज़िंदगी से बदल देता है। ﴿العظمة لله﴾ सारी अज़मतें अल्लाह की हैं।

पैर चाटने वाला शेर

अबुल हसन ज़ाहिर ने अहमद तूलून को नसीहत की। उसको गुस्सा चढ़ गया तो उसने शेर के सामने डलवा दिया। हाथ पाँव बंधवा के भूखे शेर के सामने और सब को इकठ्ठा किया कि बादशाहों के साथ गुस्ताख़ी करने वाले का अंजाम देखा जाए। सब इकठ्ठा हो गए।

शेर को जब छोड़ा। वह आया, जाएज़ा लिया और फिर पाँव की तरफ़ बैठ गया। आपके पाँव चाटने लगा। जैसे अपने बच्चे को चाटता है माँ, अपनी ज़बान से बच्चे को चाटता है। इज़्हारे मुहब्बत, यह प्यार है, चाट रहा है, चाट रहा है। उन पर भी लरज़ा तारी हो गया कि मैं तो बर्बाद हो गया।

शेर को बाहर निकाला गया। वापस उनको बाहर लाए। लोग कहने लगे कि हज़रत! शेर आपके पाँव की तरफ़ बैठ गया, तो वह खा भी तो सकता था। उस वक़्त आप क्या सोच रहे थे?

कहने लगे मैं सोच रहा था कि शेर मेरे पाँव चाट रहा है। पता नहीं मेरे पाँव पाक है या नापाक हैं। मैं यह सोच रहा था।

﴿العظمة لله﴾ अल्लाह की अज़्मत ऐसी दिल में उतरी की जंगल का बादशाह शेर भी उनके सामने बकरी हो गया। और हम बकरियों से डरते हैं और अल्लाह से नहीं डरते। अपने जैसी मख़्लूक़ से डरते हैं और अल्लाह से नहीं डरते।

अल्लाह को मना लो

भाईयो! अल्लाह से ताल्लुक़ बना लें। अल्लाह के वास्ते अपने अल्लाह को राज़ी कर लें। मसअला ऊपर से हल होगा। नीचे से हल नहीं हो सकता और वह हल होगा तौबा से। वह हल होगा अल्लाह के सामने रोने धोने से। कहीं वह दिन आ गया कि जिस दिन के हंगामे को अल्लाह तआला ﴿الطامة الكبرى﴾ ताम्मतुल कुबरा कह रहा है, ﴿الصاخة﴾ साख़्ख़ा कह रहा है। और अगर गले में ज़ंजीर पड़ गई तो अब कोई नहीं बचा सकता। फिर हम ख़ून के आँसू भी रोएंगे तब भी रहम नहीं आएगा। और यहाँ छोटी मोटी हाय निकल जाए तो अल्लाह तआला ख़ुश हो जाते हैं। चलो मेरे

लिए हाय तो की है। मेरे लिए हाय तो कही है। एक आदमी बुत को पूजा करता था। या समद कहीं ग़लती से निकल गया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया लब्बै लब्बैक लब्बैक लब्बैक या अब्दी। फ़रिश्तों ने कहा तुझे तो जानता भी कोई नहीं। ग़लती से निकल गया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया सत्तर साल से इंतिज़ार कर रहा था। कभी तो मुझे बुलाएगा। चाहे बेख़बरी में बुलाया है। मेरे ज़िम्मे तो जवाब देना है।

साठ हज़ार काफ़िरों के मुक़ाबले में साठ सहाबा किराम

आज के एटम बम से डरना ऐसा है जैसा बुतों से डरना। एटम पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है। उनके दिमाग़ों पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है। उनकी तदबीर पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है। उनके दिलों पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरी तदबीर सब तदबीरों पर हावी है। मैं तुम्हारी तदबीरों को जानता हूँ। तुम मेरी तदबीरें नहीं जानते। अल्लाह तआला ताक़तवर से बे ताक़त कर दे। अगर हम ला इलाहा इल्लल्लाह की ताक़त को समझते तो यह हमें खिलौने नज़र आते।

ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को जब पता चला कि साठ हज़ार अरब ईसाई और चौबीस हज़ार काफ़िर जंगे यरमूक में उनके सामने हैं और मुसलमान छत्तीस हज़ार थे और रोमियों के सरदार बहान ने कहा तुम अरब हो। तुम जाओ उनका मुक़ाबला करो।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को जब पता चला कि यह अरबियत की बुनियाद पर कह रहे हैं। हज़रत अबूहुरैरह

रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तीस, साठ हज़ार के मुक़ाबले में। पूछा हक़ीक़त कह रहो हो या मज़ाक़ कर रहे हो। हज़रत ख़ालिद बोले कुफ़्र के ज़माने में बड़ा दिलेर था। इस्लाम लाने के बाद बुज़दिल बन गया। कहने लगे मैं बुज़दिली की नहीं इंसाफ़ की बात करता हूँ।

फ़रमाने लगे, नहीं अगर तुमने जाना है तो साठ आदमी लेकर जाओ। किसके मुक़ाबले में साठ हज़ार के मुक़ाबले में। यह अबूसुफ़ियान का मशवरा था। अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु अमीर थे। उन्होंने फ़रमाया कि अबूसुफ़ियान ठीक कहते हैं। तो अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि साठ आदमी तो ले लो। तो कहने लगे मैं ऐसे आदमियों को चुनूंगा कि अगर वे अल्लाह के हाँ उठाएंगे तो अल्लाह उनके हाथ ख़ाली नहीं लौटाएगा। उन्हें बताऊँगा कि हम अरबी होने की वजह से नहीं फ़तह पा रहे हैं। अल्लाह तआला के साथ होने की वजह से फ़तह पा रहे हैं।

जंगे बदर में अल्लाह की मदद

﴿ولقد نصركم الله وانتم اذلة﴾ जंगे बदर में आयतें उतरी हैं। तुमने कहा था कि कहाँ है मदद तो आ गई मदद।

आप भी बाज़ आ जाओ। अच्छी बात है। और अगर तुमने दोबारा हमला किया तो अल्लाह कहता है मैं हमला करूंगा। फिर तुम्हारी कोई ताक़त तुम्हें नफ़ा नहीं दे सकती। मैं ईमान वालों के साथ हूँ।

हज़रत ख़ालिद ने आवाज़ लगाई अब्बास, ज़ुबैर, अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, ज़रार बिन अज़्वर कहाँ हैं?

ग़रज़ साठ आदमियों को साथ लिया और साठ हज़ार पर

जाकर पड़े तो चिल्ला कर कहने लगे क्या कर रहे हो? कहने लगे मैं होश में हूँ। एक हमला हुआ, दूसरा हमला हुआ, तीसरे पर दरार पड़ी। सफ़ में नौ दस टोलियाँ बना दीं। फ़रमाते हैं कि कोई माँ इन जैसा नहीं जनेगी। कहते हैं, मैंने देखा कि बीस मर्तबा काफ़िरों ने ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को क़त्ल करने के लिए उस टोली पर हमला किया। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु आगे बढ़ते थे और ऐलान करते थे अब्बास का बेटा फ़ज़्ल! ऐ कुत्तों की जमाअत मेरे नबी के साथियों से दूर हो जाओ। उन्होंने बीस हमलों को तोड़ दिया।

वह अकेले ने नहीं तोड़ा। तुम नहीं तीर मार रहे, कहा मैं मार रहा हूँ। तुम नहीं क़त्ल कर रहे मैं क़त्ल कर रहा हूँ। तुमने नहीं मारा मैंने मारा है।

हज़रत सफ़ीना की करामत

सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु समन्दर में जा रहे हैं। तूफ़ान आ गया। कहने लगे ﴿اسكن يا بحر هلانت الا عبد حبشى﴾ ऐ समन्दर थम जा तू काला हब्शी ही तो है।

यह काला हब्शी क्यों कहा? समन्दर गहरा होता है तो पानी काली छाल देता है। कहने लगे ठहर जा, ऐ समन्दर तू काला हब्शी ही तो है। दूसरी मौज नहीं उठी। उसके बाद वहीं थम गया और किश्ती पर सफ़र कर रहे हैं और अपना क़ुरआन पाक सी रहे हैं। क़ुरआन पाक के वरक़ थे, वे सी रहे थे। सूई हाथ से गिरकर पानी में चली गई। पानी में कहने लगे, ﴿عازمت عليك على رب الا رددت على ابرتى﴾ ऐ अल्लाह! तुझे कसम देता हूँ मेरी सूई मुझे वापस कर दे। दूसरी सूई मेरे पास कोई नहीं। वह सूई पानी पे यों खड़ी हो गई।

एक वक़्त था जब मुसलमान उठता था तो सारी काएनात के बातिल पर लरज़ा तारी हो जाता था और वे अपने ऐवानों में थर्र थर्र कांपते थे। वह वक़्त था जब मुसलमान ने कलिमा सीखा हुआ था। आज मुसलमान ने कलिमा नहीं सीखा। इसलिए दुनिया में कोई ताक़त उसे अल्लाह के हाँ सुर्ख़रू नहीं कर सकती।

उंगली के इशारे से क़िला गिर गया

हज़रत शराबील बिन हसन रज़ियल्लाहु अन्हु एक पतले से सहाबी हैं। "वही" के कातिब थे। "वही" लिखते थे। मिस्र में एक क़िला फ़तह नहीं हो रहा था। कुछ दिन ज़्यादा गुज़र गए। एक दिन हज़रत शराबील बिन हसन को जोश आया। घोड़े को ऐढ़ लगाकर आगे हुए। फ़सील के क़रीब जाकर फ़रमाया :

ऐ क़िब्तियो! सुनो हम एक ऐसे अल्लाह की तरफ़ तुम्हें बुला रहे हैं। अगर उसका इरादा हो जाए तो तुम्हारे इस क़िले को आन के आन में तोड़ सकता है। ला इलाहा इल्लल्लाह अल्लाहु अकबर कहकर जो शहादत की उंगली उठाई सारा क़िला ज़मीन पर आ गिरा। यह कलिमा सीखा हुआ था। मैं आपको पक्की रिवायतें बता रहा हूँ। यह कलिमा सीखा हुआ था। ये लोग गधे नहीं थे। हम गधे हैं जिन्होंने शेर की ख़ाल को पहना हुआ है और कहते हैं हम इस्लाम वाले हैं। नहीं मेरे भाईयो! हमने अभी कलिमा सीखा ही नहीं है। जब कलिमा अंदर आता है तो बातिल ऐसे टूटता है जैसे तुम अंडे के छिलके को तोड़ते हो।

ईमान व यक़ीन

हिज्जाज बिन यूसुफ़ इस उम्मत का बुरा आदमी गिना जाता है। उसकी ज़िंदगी में कभी तहज्जुद क़ज़ा नहीं हुई। और हफ़्ते में

क़ुरआन पाक ख़त्म करता था। तीन दिन में, पाँच दिन में क़ुरआन ख़त्म करता था। कभी ज़िंदगी में झूठ नहीं बोला। मरते दम तक यक़ीन ऐसा था कि एक दफ़ा बीवी पर कुछ असरात हुए। उसने किसी आमिल को बुलवाया और उसने दम करके लोहे का कील रख दिया कि इसको दफ़न कर दो। उन्होंने कहा यह क्या चीज़ है?

उन्होंने कहा तुम अपने हब्शी बुलाओ। दो हब्शी बुलाए। कहा लकड़ी डालकर इसको उठाओ। दो ग़ुलाम ज़ोर लगा रहे हैं, उठा रहे हैं वह छूटा सा कील नहीं उठता। फिर दो और लगाए चार। फिर दो और लगाए छः, फिर दो और लगाए आठ, दो और लगाए दस, बारह ग़ुलाम लगाए। छः इस तरफ़, छः उस तरफ़। छोटे से कील को उठा रहे हैं। वह उठता ही नहीं।

उसने कहा देखी इसकी ताक़त यह है। उसने कहा पीछे हट जाओ। अपनी छड़ी उठाई।

﴿ان ربكم الله خلق السموات والارض فی ستة ايام ثم استوى على العرش.﴾

यह आयत पढ़कर जो छड़ी डाली और कील हवा में उड़ता हुआ वह गया। उन्होंने कहा भाग जाओ। तुम्हारे अमलों का मुहताज नहीं हूँ। यक़ीन की ताक़त ने सहर को तोड़ दिया।

कलिमा तैय्यबा की क़ुव्वत

तो भाईयो! आज अल्लाह की मुहब्बत दिलों से निकल गई। अल्लाह पर एतिमाद और यक़ीन ढीला पड़ गया। इस उम्मत का काम है कि अल्लाह की अज़मत, किबरियाई, जबरूत, जलाल के क़िस्से सुनाकर लोगों के दिलों में जितने बुत हैं उनको तोड़ते हैं। अंदर के बुतों को भी तोड़कर ला इलाहा इल्लल्लाह का नक़्श

दिलों में रासिख़ करते हैं कि ला इलाहा इल्लल्लाह दिल में उतर जाए। एक हदीस से आप अंदाज़ा लगाइए :

والذی نفسی بیده لو جی باسموات السبع والارضین السبع وما فیهن وما بینهن وما تحتهن فوضعن فی کفة لرجعت بهن المیزان ولا اله الا الله فی کفة.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इतना बड़ा तराज़ू हो कि उसके एक पलड़े में सात आसमान और सात ज़मीन रख दिए जाएं और दूसरी तरफ़ ला इलाहा इल्लल्लाह रख दिया जाए तो यह ला इलाहा इल्लल्लाह सबको हवा में उठा देगा। और यह वज़नी हो जाएगा।

और हमारी मेहनत यह है कि हम इसको दिल में उतारें। इसको सीखें और इसकी दावत दें।

ला इलाहा इल्लल्लाह में काएनात की ताक़त नहीं। अल्लाह की ताक़त छुपी हुई है। अल्लाह वह ज़ात है उसकी कोई इब्तिदा है न उसका कोई आख़िर है।

अल्लाह से दोस्ती का फ़ायदा

एक मर्तबा सुफ़ियान रह० अपनी माँ से कहने लगे, मुझे अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दो। वालिदा ने कहा जाओ मैंने आपको अल्लाह के लिए आपको वक़्फ़ कर दिया। तो यह सहाबा उठे घर से निकले तो उन्नीस साल में वापस लौटे। रात को घर पहुँचकर दरवाज़े पर दस्तक दी तो अंदर से वालिदा ने कहा कौन हो? उन्होंने कहा मैं आपका बेटा हूँ। वालिदा ने कहा कि मैंने आपको अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ कर दिया था और दी हुई चीज़ को वापस लेना बड़ी बेग़ैरती है। चले जाओ क़यामत के दिन मुलाक़ात होगी। ﴿يوم اللقاء﴾ मुलाक़ात के दिन होगी।

यह बेटे की क़ुर्बानी थी। उसको कहाँ मक़ाम मिला। उस लड़के ने बाद में अबू जाफ़र मंसूर के ख़िलाफ़ फतवा दिया। अबू जाफ़र ने हुक्म जारी कर दिया कि मैं मक्का आ रहा हूँ। सूली तैयार की जाए और उसको मेरे सामने सूली पर लटका दिया जाए। यह हतीम में फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० की गोद में सर रखकर लेटे हुए थे। सुफ़ियान बिन ऐनिया रह० आकर कहने लगे सुफ़ियान! उठो और भाग जाओ। अबू जाफ़र ने तुझको सूली पर लटकाने का हुक्म दिया है। उठकर सीधे मुलतज़िम में आकर अल्लाह तआला से फ़रियाद की :

"या अल्लाह! आपने अबू जाफ़र को मक्के में दाख़िल होने दिया तो दोस्ती टूट जाएगी।"

अबू जाफ़र का मक्का पहुँचना तो दरकिनार ताएफ़ तक नहीं पहुँच सका। ताएफ़ के पीछे ही पहाड़ों में गिरकर मर गया। आज उस जाबिर की क़ब्र का भी किसी को पता नहीं, कहाँ पड़ा हुआ है।

ईमान सबसे बड़ी दौलत है

सबसे बड़ी दौलत ईमान है। इसको तो ज़ाए कर रहे हैं। दस डॉलर की चीज़ ख़रीदकर लाते हैं और चैकिंग करते हैं कि ज़ाए न हो जाए। एक किलो गोश्त ख़रीदकर लाते हैं और उसको लपेटकर लाते हैं कि ख़राब न हो जाए। उसकी हिफ़ाज़त के लिए फ़्रीज बना रखा है। मेरे भाईयो! दस डॉलर की चीज़ की हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम कर रखा है। ईमान को बचाने का कोई इंतिज़ाम ही नहीं है।

आँखों ने ग़लत देखा तो ईमान लुटा, कानों ने गाने सुने तो ईमान लुटा, ज़बान से झूठ बोला तो ईमान लुटा, हराम खाया पिया

तो ईमान लुटा। अपनी शोहरत को ग़लत इस्तेमाल किया तो ईमान लुटा। सबसे बड़ी दौलत तो लुटा दी। सबसे बड़ी दौलत तो बर्बाद कर दी। तो पैसा कमाकर क्या करोगे? मैं कहता हूँ कि छोटे से छोटा अमल नेकी का न छोड़ो। छोटी से छोटी नेकी को भी न छोड़ो और छोटे से छोटे गुनाह से भी परहेज़ करो।

अल्लाह तआला का इंसान से शिकवा

हदीस पाक में आता है :

يا ابن آدم لو لا انت ذنبا فلا تنظر الى صغره انظر الى من عاصيته.

मेरे बंदे जब तू कोई गुनाह करता है यह ने देखाकर कि छोटा है कि बड़ा है। यह देखा कर कि नाफ़रमानी किसकी हो रही है।

नाफ़रमानी तो बहुत बड़े रब की हो रही है। उसकी ज़ात से असर लेकर चलना यह ईमान है।

आप में से बहुत सारे मुझे जानते हैं। नाम से नहीं जानते तो शक्ल से जानते हैं। शक्ल से तो मुझे पहचान रहे हैं। तारुंफ़ तो इसको भी कहते हैं। तारुंफ़ और ताल्लुक़ का मतलब यह है कि जब आप इसके दरवाज़े पर आएं तो वह आपका काम ज़रूर करे, अगर वह कर सकता है। आपको वह लौटा न सके। ऐसा अल्लाह के साथ ताल्लुक़ बना लें और अल्लाह तआला भी यही फ़रमाते हैं कि अपने बंदे के हाथ ख़ाली लौटाते हुए मुझे शर्म आती है। इसका नाम ताल्लुक़ है। इस ताल्लुक़ को अल्लाह पाक के साथ आप बना लें।

ईमान के नूर की निशानी

﴿اذا دخل النور انشرح الصدر﴾ जब अल्लाह की रौशनी अंदर

दाख़िल होती है तो अंदर से सीना खुल जाता है।

किसी सहाबी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया ﴿فهل لذلك من علامة يا رسول الله﴾ ऐ रसूलुल्लाह! इस नूर की कोई निशानी है?

हम सारे ईमान वाले बैठे हैं हम सारे दुआ करते हैं। हमारे अंदर ईमान का नूर है। देखो और उसकी निशानी क्या है?

अल्लाह पूछने वाले का भला करे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसकी निशानी की तीन चीज़े हैं :

﴿التجافي عن دار الغرور﴾ दुनिया से बेरग़बती पहली निशानी, ﴿الإنابة الى دار الخلود﴾ जन्नत का शौक़, ﴿الاستعداد للموت قبل النزول﴾ मौत से पहले मौत की फ़िक्र करने वाला।

ये तीन बातें हैं तो ईमान का नूर अंदर आ चुका है। अगर तीन बातें नहीं हैं तो ऐन मुमकिन है कि ईमान है लेकिन नूर से ख़ाली है। जैसे लाइन है, अंदर बत्ती भी है और जलाने वाला कोई नहीं है और ज़रूरत है उसको जलाने की। ईमान है मगर उसे चमकाने की ज़रूरत है। चमकाने के लिए मेहनत करना पड़ती है। नफ़्स का मुजाहिदा इसे कहते हैं यानी अपनी तबियत से लड़ना। ईमान का नूर पैदा करने के लिए। यह ईमान का नूर फिर बतलाएगा कि आमाल में कामयाबी है। और अल्लाह और नबी के हुक्म में कामयाबी है। अल्लाह तआला के हाथ में आसमान और ज़मीन का नक़्शा है। नबी दुनिया में आकर यह मेहनत करते थे। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकर भी यही मेहनत की।

मेरे बंदे तेरा रोना मुझे अच्छा लगता है

अल्लाह से ताल्लुक़ बना लें। अपने अल्लाह को मना लें।

जिसकी वफ़ाओं का यह हाल है कि या अल्लाह एक दफ़ा कहे और वह सत्तर मर्तबा कहे मेरे बंदे तू क्या कहता है। अच्छा एक आदमी दुआ मांगता है या अल्लाह तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, जल्दी दे दो। जल्दी दे दो। सुनना नहीं चाहता। नाफ़रमान है दे दो।

एक आदमी रो रहा है या अल्लाह या अल्लाह दूसरी रात या अल्लाह या अल्लाह। तीसरी रात या अल्लाह या अल्लाह। कभी महीनों गुज़र गए। कभी साल गुज़रगए। या अल्लाह या अल्लाह। यहाँ तक कि फ़रिश्ते सिफ़ारिश करते हैं या अल्लाह तेरा फ़रमाँबरदार बंदा है। इसे तू देता क्यों नहीं?

﴿انی احب﴾ इसकी मुझे हाय हाय अच्छी लग रही है। ज़रा रोने तो दो और अगर दे दिया तो कब रोएगा। हाँ दे दिया तो कब रोएगा। अच्छा लग रहा है। रोने दो इसका रोना मुझे पसन्द आ रहा है। क्योंकि हमें दीन से गहरी वाक़िफ़यत नहीं है। इसलिए हम हालात से परेशान होकर अल्लाह के ही नाशुक्रे बन बैठे हैं और कोई मिला ही नहीं। अल्लाह को आज़माने के लिए हम ही रह गए थे।

भाईयो! यह तबलीग़ का काम है। अल्लाह को साथ लेने का। उस ज़ुलजलाल वल इकराम को साथ लिए बग़ैर न क़ौमें बन सकती हैं और न मुल्क बन सकते हैं और ना अफ़सर बन सकते है। और न औरतें बन सकती हैं और न औलाद बन सकती है। अल्लाह को लेना पड़ेगा।

अल्लाह से बग़ावत अच्छी नहीं

ऐसे मेहरबान अल्लाह से बग़ावत करना किसी मुसलमान के

लिए हलाल नहीं। अगर यह वजूद तेरा अपना है तो फिर जो मर्ज़ी कर। अगर मरना नहीं है तूने तो फिर जो मर्ज़ी में आए कर। अगर मरकर हिसाब किताब कोई नहीं है फिर जो मर्ज़ी करे।

लेकिन अगर मरना है बल्कि एक और ज़िंदगी का सामना करना है और एक ताक़तवर बादशाह का सामना करना है तो क्या मुँह दिखाओगे? किस मुँह से जाओगे? किस मुँह से सामना करोगे? तो मेरे भाईयो! जब दिल का कनक्शन अल्लाह से टूट जाता है तो उस दिल पर अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं आता। जब अल्लाह का डर किसी के दिल से निकल जाता है तो वह दिल सारी चीज़ों से डरता है। अल्लाह तआला मुझे और आपको अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

क़यामत के मनाज़िर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًاo مَا يَلِيْقُ بِجَمَالِهٖ وَعَظِيْمِ سُلْطَانِهٖ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنْ اَرْسَلَهٗ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًاo وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَمَّا بَعْدُ

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِo بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِo

قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن اتبعنى ... وسبحن الله وما انا من المشركين وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا و الاخرة.

दुनिया में रहने के दो तरीक़े

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! अल्लाह तआला ने दुनिया में दो रास्ते बताए हैं। दो राहें बताई हैं। ज़िंदगियों को गुज़ारने के दो रास्ते हैं, दो तरीक़े हैं। दो तरह की मौत है, दो तरह का अंजाम है।

कुछ लोग वह हैं जो अपनी जानों को बेचते हैं और अल्लाह की रज़ा को ख़रीदते हैं। कुछ लोग वे हैं जो अपनी जानों का सौदा करते हैं और अल्लाह तआला की नाराज़गी को ख़रीदते हैं।

﴿كل الناس يغدوا بايع النفس﴾ बाज़ार गर्म, ख़रीदारी उरूज पर, लेन देन चल रहा है।

अल्लाह तआला के नबी ने आमाल को भी एक मंडी से तशबीह दी है। बाज़ार से तशबीह दी है कि दीन का बाज़ार भी सरगर्म है और हर इंसान इसमें ख़रीद व फ़रोख़्त के लिए उतर रहा है। कुछ लोग वे हैं जो अपनी जानों को बेचते हैं, आज़ादी हासिल करते हैं। कुछ लोग वे हैं जो अपनी जान को बेचते हैं और हलाकतें ख़रीदते हैं।

﴿كل الناس يغدوا﴾ सुबह सुबह दौड़ लगती है और हर इंसान बाज़ार में उतरता है। ﴿بايع النفس﴾ अपनी जान को बेचता है, ﴿فمعتقها﴾ कुछ आज़ादी ख़रीदते हैं ﴿اوموبقها﴾ कुछ हलाकतें ख़रीदते हैं।

और ज़िंदगियों में एक वह है जिसे अल्लाह तआला ने पसन्द फ़रमाया और ﴿ان الدين عند الله الاسلام﴾ के साथ अल्लाह मुज़ैय्यन फ़रमाया। फिर हम से मुतालबा किया ﴿ادخلوا فى السلم كافة﴾ मेरे नज़दीक ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा जो पसन्दीदा है वह इस्लाम है। ﴿ان الدين عند الله الاسلام﴾ सिर्फ़ इस्लाम। क्या इसके अलावा कोई तरीक़ा चल सकता है?

﴿ومن يبتغ غير الاسلام دينا فلن يقبل منه﴾ इस्लाम को छोड़कर जिस तरीक़े को भी अपनाया जाएगा वह अल्लाह के दरबार में मरदूद हो जाएगा। इसमें फिर अल्लाह तआला का मुतालबा है ﴿ادخلوا فى السلم كافة﴾ पूरे पूरे आओ। हमारी तुम्हारी तरह नहीं कि हमारा एक पाँव अंदर है एक बाहर है। हम कुछ अल्लाह की मानते हैं कुछ अपनी मानते हैं। कुछ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर चलते हैं कुछ अपने तरीक़े पर चलते हैं।

दूसरा रास्ता यह है कि जिसको अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿لا تتبعوا خطوات الشيطان﴾ शैतान के पीछे न चलना। ﴿ان هدينا السبيل﴾ रास्ते दो हैं ﴿اما شاكرا و اما كفورا﴾ शुक्रगुज़ारी वाला इस्लाम का रास्ता, नाशुक्री वाला शैतान का रास्ता। ﴿وهدينا النجدين﴾ हमने अंजाम भी तुम्हें दोनों बताए हैं। रास्ते भी तुम्हें दोनों बताए हैं। ﴿فالهمها فجورها وتقوها﴾ तुम्हारे अंदर हमने बुराई की ताक़त भी रखी और अच्छाई की ताक़त भी रखी है। जैसे ज़िंदगी गुज़ारी है वैसी ही मौत आती है।

﴿ان الارض تبكى على الانسان وتبكى للانسان﴾ कुछ लोग वे हैं जिनकी मौत पर ज़मीन इसलिए रोती है कि या अल्लाह यह क्यों मर गया। और कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जिनके ज़िंदा रहने पर रोती है कि या अल्लाह यह कब मरेंगे?

﴿ان الارض تبكى على الانسان﴾ या अल्लाह यह क्यों मर गए। या अल्लाह ये क्यों मर गए? ﴿ان نموت﴾ नहीं मरना था। इनकी तो नमाज़ें, इनका तो ज़िक्र, इनकी तो तिलावत, इनकी तो तहज्जुद, इनका तक़्वा, इनकी सख़ावत ये सब मेरे कुछ मेरे ऊपर एक बाग़ था। एक चमन था। आज इसके मरने से वह चमन उजड़ गया। कुछ लोग ऐसे हैं जिनकी वजह से ज़मीन रोती है। ﴿تبكى للانسان﴾ या अल्लाह यह ज़ालिम कब मरेगा? इसके ज़िना ने मुझे बर्बाद कर दिया, इसके झूठ ने मेरे कलेजे में सुराख़ कर दिए, माँ बाप की नाफ़रमानियों ने मुझे जलाकर रख दिया, गाने बजाने की महफ़िलों, मौसीक़ी की तानों ने मुझे वीरान कर दिया।

या अल्लाह यह कब मरेगा? या अल्लाह यह कब मरेगा? कब यह बोझ मेरे सर से हटेगा और यह ज़ेरे ज़मीन जाएगा तो मुझे राहत होगी।

ज़मीन एक है इंसान दो किस्म के हैं

तो मेरे भाईयो! कुछ ऐसे होते हैं जो ज़मीन के कलेजे को जलाकर रख देते हैं और उसकी रग रग में दर्द उतार देते हैं।

अपनी नाफ़रमानियों से, चोरियों से, डाको से, ज़िना से, क़त्ल से, सूद से, झूठ से, माँ बाप की नाफ़रमानियों से, क़तअ रहमी से, बुख़्ल से, तकब्बुर से, उजब से, रिया से, गाने बजाने से, जितने भी कबीरा गुनाह हैं, रिश्वत से, ज़ुल्म से, सितम से। कुछ लोग ऐसे हैं जो ज़मीन की रग रग को जला देते हैं।

कुछ लोग ऐसे हैं जो ज़मीन की रग रग में ठंडक भर देते हैं और राहत भर देते हैं। वह जिधर से गुज़रते हैं, जहाँ पाँव रखते हैं ज़मीन ठंडी हो जाती है। जो हवा उनसे टकराती है वह नसीम बन जाती है। जहाँ सज्दे में सर रखते हैं तहतुस्सरा तक ज़मीन का कलेजा बर्फ़ बन जाता है। जहाँ बैठकर तिलावात करते हैं फ़िज़ा मुअत्तर हो जाती है। जब नज़र झुकाकर बाज़ार से गुज़रते हैं तो बाज़ार की एक एक चीज़ उनको नज़रें उठाकर देखती है कि यह कौर हया वाला गुज़र रहा है। बाज़ार तो बेहयाओं से भरा हुआ है। बाज़ार तो आवारा नज़रों से भरा हुआ है। यह कौन है जो नज़रें झुका झुका के चल रहा है।

ज़मीन उसके क़दम चूमती है। हवाएं उसको बोसे लेती हैं और आसमान के फ़रिश्ते भी उसको देखकर खुश होते हैं और अल्लाह तआला भी उस पर फ़ख़्र फ़रमाते हैं।

इस उरयानी और फ़हाशी के दौर में किसने इस नौजवान को नज़रों का पर्दा झुका दिया। यह क्यों नज़रें झुका के चल रहा है।

يا ابن آدم جعلت لك عينين وجعلت لهما الغطاء فانظر بعينيكما احللته

لك. فان انظر كما حرمت عليك فابق عليها الغطاء.

मेरे बंदे मैंने तुझे दो आँखें दीं उस पर दो पर्दे लगाए। इन आँखों से वह देख जो तेरे लिए हलाल है और जब तुझे हराम नज़र आने लगे तो यह पर्दा गिरा लिया कर।

यह पर्दा इसलिए लगाया है कि इससे हराम न देखा कर। इससे ग़लत न देखा कर। तो ऐसे बाज़ारों से गुज़र जाएं, गलियों से गुज़र जाएं तो वे गलियाँ मुअत्तर हो जाती हैं, वे बाज़ार रौशन हो जाते हैं। चमन से गुज़र जाएं तो चमन का हुस्न दोबाला हो जाता है। ज़मीन व आसमान पर उनके चर्चे होते हैं।

कहाँ गई हया की चादर

मेरे भाईयो! अब तो चिराग़े रुख़े ज़ेबा से भी ये लोग नज़र नहीं आते। दुनिया उजड़ गई। इंसान मिट गए, औरतें मर गयीं। मौअन्नस रह गयीं। कुछ मुज़क्कर हैं कुछ मुअन्नस हैं। निसा चली गयीं। वे मर्द उठ गए। औरतों ज़ेरे ज़मीन चली गयीं।

वे मर्द जाकर मिट्टी की चादर ओढ़कर सो गए जिनकी रातों की आह व बुका अल्लाह के अर्श को हिला देती थी। वह औरतें जिनकी हया फ़रिश्तों को भी शर्मा देता था। उनसे जहाँ ख़ाली हो गया। कोई करोड़ों में एक हो तो शायद हो। होना भी चाहिए वरना तो क़यामत आ ही जाती। वरना तो भाईयो! आज मुज़क्कर हैं, मुअन्नस हैं। जिन्हों शहवतों के सिवा, लज़्ज़तों के सिवा, नफ़्स की गुलामी के सिवा कुछ भी नहीं है। इस सारी ज़िंदगी के लिए अल्लाह तआला ने एक फ़ैसले का दिन रखा है :

يوم ترجف الراجفة تتبعها الرادفة قلوب يومئذ واجفة ابصارها خاشعة.

एक ज़लज़ला। ज़लज़ले के पीछे ज़लज़ला। दिल धड़कते हुए, डरते हुए, परेशान आँखे ज़लील व पस्त।

अल्लाह तआला की क़ुदरत के नमूने

क्या हुआ आज, यह आज क्या हुआ। वह फ़ैसले का दिन आ गया जिसका अल्लाह तुम्हें बताता रहा। डराता रहा। अरे संभल के चल, संभल के बोल, संभल के तोल, संभल के देख। तेरा रब न सोता है न ऊँघता है न खाता है न ग़ाफ़िल है न जाहिल है न कमज़ोर है, न आजिज़ है, न ज़ईफ़ है न अदम से वजूद में आया, न उसे किसी ने बनाया, न उससे कोई पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ। न उसने किसी से मुल्क लिया। जो शराकत से पाक है। जो ज़ोअफ़ और ज़िल्लत से पाक है।

पहले भी अल्लाह, आज भी अल्लाह, कल भी अल्लाह, क़यामत तक अल्लाह, हमेशा अल्लाह, मश्रिक़ का अल्लाह, मग़रिब का अल्लाह, शुमाल व जुनूब का अल्लाह, फ़ौक़ व तहत का अल्लाह, सितारे कहकशाँ, शम्स व क़मर, लैल व नहार, दिन और रात, सुबहें शामें, जंगल, दरिया, पहाड़ सब काएनात का तने तन्हा वाह्दहु ला शरीक ख़ालिक़।

जिसने सब कुछ बनाया, उसे किसी ने नहीं बनाया। जो सबको मौत देगा, कोई उसे नहीं मार सकता। जो सबको पकड़ता है कोई उसे नहीं पकड़ सकता। जो सबसे पूछेगा कोई उससे नहीं पूछ सकता। जो सबको देता है कोई उसको नहीं दे सकता। जो सबसे लेता है कोई उससे नहीं लेता। जो ऊँचा करता है कोई उसे नीचे नहीं कर सकता। गिरा दे तो कोई उठा नहीं सकता। बचा ले

तो मार नहीं सकता। मारने पर आए तो कोई बचा नहीं सकता।

फिर काएनात लोहे की दीवार बन जाए, आसमान की छत भी लोहा बनकर उस पर क़ायम हो जाए। अगर अल्लाह तआला ने इरादा कर लिया है कि मुझे मारना है तो काएनात आजिज़ हो जाएगी।

﴿قل لكم ميعاد يوم لا تستاخرون عنه ساعة ولا تستقدمون.﴾

वह साल, वह महीना, वह हफ़्ता, वह दिन, वह घड़ी, वह घंटे, वह मिनट, वह सेकन्ड का आख़िरी लम्हा। जब मौत का हमला होगा और यह सांस का तार कटेगा और आँखों की शमा बुझेगी और कानों के टेलीफ़ोन के तार कटेंगे। वह अल्लाह तआला ने तय किया हुआ है। अल्लाह फ़रमा रहे हैं, न कम होगा न ज़्यादा होगा न आगे होगा न पीछे होगा। और जब वह बचाने पर आता है तो ख़ूंख़्वार मछली का पेट हो, समन्दर की बिफरी मौजें हों ﴿فالتقمه الحوت﴾ यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली ने निगला। मछली के पेट में रखकर भी अल्लाह तआला ने बचाकर दिखाया। आग के ढेर पर इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बचाकर दिखाया। छुरी की धार के नीचे इस्माईल अलैहिस्सलाम को बचाकर दिखाया। समुन्दर फाड़कर बनी इस्राईल को पार लगा के दिखाया। काएनात में उसके अजाएब व ग़राएब हैं, क़दम-क़दम पर बिखरे हुए हैं।

मौत का वक़्त लिखा जा चुका है

मेरे भाईयो! इन दो रास्तों को बनाने के बाद दो ज़िंदगियों का अख़्तियार देने के बाद वह ग़ाफ़िल नहीं है। एक दिन तय है मेरी और आपकी मौत का। एक दिन तय है इंसानियत की मौत का।

जब ज़मीन का ज़लज़ला आएगा। ﴿اذا زلزلت الارض زلزالها﴾।

पहाड़ उड़ना शुरू कर दें ﴿وتكون الجبال كالعهن المنفوش﴾।

और जब समन्दरों में आग लग जाएगी ﴿واذا البحار سجرت﴾।

अल्लाह जाने वह कौन सा जुमा होगा। वह कौन सा वक़्त होगा, वह कौन सी घड़ी होगी।

बाज़ रिवायतों में है कि दस मुहर्रम लेकिन वह यकीनी नहीं। जुमा का दिन होगा। यह पक्की रिवायत है। जुमे का दिन। रात हौले हौले ढली होगी। रात कह कर गई होगी कि कल नहीं आऊँगी, सितारों ने आख़िरी दफ़ा चमकना था, आज चाँद की आख़िरी किरनें थीं और सूरज की नक़ाब कुशाई पर आया। उसे नहीं मालूम कि आज मेरी आख़िरी किरने हैं जो ज़मीन को रोशन कर रही हैं।

जब हर चीज़ अपने अंजाम को पहुँचेगी

कलियों को नहीं पता कि आज आख़िरी दफ़ा खिलना है।

गुलाब को नहीं पता कि आज आख़िरी दफ़ा महकना है।

चिड़ियों को नहीं पता कि आज आख़िरी चहचहाट है।

कोयल को नहीं पता कि आज आख़िरी कू कू कू है।

बुलबुल को नहीं पता कि आज आख़िरी नग़मा है।

शेर को नहीं पता कि आज मेरा आख़िरी दहाड़ है।

साँप को नहीं पता कि आज मेरा आख़िरी बल खाना है।

दरियाओं को नहीं पता कि आज आख़िरी मौज है जो बह रही है।

समुन्दर को नहीं पता कि आज आख़िरी तूफ़ान है जो उठ रहा है।

हवाओं को नहीं पता कि आज आख़िरी झोंके हैं जो चल रहे हैं।

दरख़्तों को नहीं पता कि आज आख़िरी दिन है जिसको हम देख रहे हैं।

आज हमारी हरियाली की आख़िरी घड़ी है।

मोतियों की चमक आख़िरी है।

हीरों का आख़िरी दिन है।

हुस्न का आख़िरी दिन है।

वादियों के सब्ज़ादारों का आख़िरी दिन है।

सहराओं रेगिस्तानों का आख़िरी दिन है।

पहाड़ों पत्थरों का आख़िरी दिन है और इंसानों का आख़िरी दिन है।

सूरज का मग़रिब से निकलना

क़यामत मुसलमानों पर नहीं, क़यामत काफ़िरों पर है। अल्लाह तआला क़यामत से पहले सूरज को मग़रिब से निकालेगा जो आख़िरी निशानी होगी। मग़रिब से सूरज निकलते ही तौबा का दरवाज़ा बंद हो जाएगा जो खुला हुआ है। हर वक़्त खुला हुआ है। जब सूरत मग़रिब से निकलेगा तो शैतान उसे देखेगा। एक सज्दे में गिरकर कहेगा या अल्लाह! आज तो जिसको भी कहे मैं सज्दा करने को तैयार हूँ। तो उसके शतूंगड़े छोटे शैतान आकर कहेंगे क्या हुआ? आज आपसे हम वह सुन रहे हैं वह देख रहे हैं जो कभी न देखा न सुना।

वह कहेगा मेरी मुहलत के ख़त्म होने का वक़्त क़रीब आ गया। मेरी मुहलत ख़त्म होने का वक़्त आ गया। यह सूरज

मग़रिब से निकल आया। इसके बाद किसी की तौबा क़बूल नहीं होगी। फिर मुसलमानों को अल्लाह मार देगा। यह बैतुल्लाह की आवाज़, यह मस्जिद और यह अमरीका का शहर, मदीना मुनव्वरा का आबाद शहर, मस्जिदे नबवी की पुर रौनक़ फ़िज़ाएं, ये ऐसे चटियल मैदान बन जाएंगे कि इसके क़रीब से गुज़रते हुए क़ाफ़िले कहा करेंगे यहा कभी आबादी हुआ करती थी। यहाँ कभी लोग रहा करते थे। किसी चीज़ का निशान न रहेगा।

अल्लाह के नबी ने फ़रमाया मैं अपनी आँखों से देख रहा हूँ। हब्शा का हब्शी टेढ़ी पिंडलियों वाला, वह बैतुल्लाह के पत्थरों को तोड़ तोड़कर उसे गिरा रहा है। वह कहेगा आज अब अबाबील नहीं आएंगे। अब यह जहाँ का दस्तरख़्वान अल्लाह लपेटना चाहता है। इस बारात को समेटना चाहता हैं अब खरे खोटे को जुदा करने का वक़्त क़रीब है। अब मुजरिम महरम की जुदाई का वक़्त क़रीब है। अब ज़ालिम और मज़लूम के इंसाफ़ का वक़्त क़रीब है। लिहाज़ा अब अल्लाह तआला समेट देगा।

लोगों को कुछ ख़बर नहीं होगी कि आज आख़िरी दिन है। सियासतदानों की सियासत चमक रही होगी। शादी की बारातें इकठ्ठी हो रही होंगी। मीरासी ढोल बजाने को तैयार, इधर नाई देगे पकाने को तैयार, इधर दुकान का इफ़्तिताह हो रहा है, कचहरी बाज़ार में, कचहरी लग रही है। इधर खेत में हाली हल लेकर जा रहा है। उधर माँए सुबह सुबह मक्खन निकाल रह हैं। पेढ़ी बना रही हैं। कोई माँ उसको तवे पर डाल रही है। कोई निवाला बनाकर बच्चे के मुँह में ले जा रही है। किसी ने दुकान खोली है। झाड़ू दे रहा है। कोई झाड़ू देकर बैठ चुका है। कोई ग्राहक से लेन-देन कर चुका है। इस तरह हदीस पाक में आता है

कि वह कपड़ा नाप रहा है। कपड़ा नापकर कैंची डाली कि मैं दस मीटर इसको नाप के दे दिया। यहाँ कैंची डाली और ग्राहक ने जेबे से पैसे निकाले। गिनने शुरू किए कि मुझे इसको देने हैं। वह काटने में यह गिनने में मसरूफ़। यह ज़मींदार यों अपनी मुठ्ठी को उठाएगा बीज बखेरने के लिए। इधर दुकान खोलने के लिए ताले में चाबी डालकर यों हिला रहा होगा और झाड़ू देने वाली ख़ातून घर में यों झाड़ू उठाएगी और बादशाहों के तख़्त सजाए जा रहे होंगे। और दुल्हनों को गजरे पहनाए जा रहे होंगे। और उनके माथे पर झूमर सजाए जा रहे होंगे। दुल्हा को हार पहनाए जा रहे होंगे। और काएनात ऐसी होगी जैसी आज सुबह हुई। ऐसी सुबह होगी। सूरज निकलेगा, दिन ऐसे चढ़ेगा, हवा इसी तरह चलेगी, कलियाँ इसी तरह खिलेंगी, कव्वा इसी तरह काँय काँय करता आएगा। बिल्ली मियाँउ मियाँउ करती आएगी। सांप बिल से बल खाता निकलेगा। उक़ाब झपटने को तैयार है। कौआ छिपने को भाग रहा है। मौजें बिखरने को तैयार हैं।

निज़ामे काएनात बिखर जाएगा

﴿فاذا جاءت الطامة الكبرى﴾ एक धमाका हो जाएगा। वह माँ जिसने निवाला बनाया था बच्चे के मुँह में डालने के लिए वह निवाला ऐसे गिर जाएगा। वह मैंने अभी बताया ना कैंची यों गिर जाएगी। कपड़ा यों गिर जाएगा। पैसे इधर गिर जाएंगे, पैसे वाला उधर गिर जाएगा। जिसने मुठ्ठी उठाई थी बीज बखेरने के लिए उसकी मुठ्ठी ऐसे ढीली होके पीछे आ जाएगी।

जिसने हल डाल दिया था, हल इधर गिरेगा, यह उधर गिरेगा। वह मीरासियों के ढोल गिरेंगे। ये उधर गिरेंगे। गजरे वह पड़े होंगे।

दूध उधर पड़ा होगा। दुल्हन वह पड़ी होगी। हार उधर पड़ा होगा। दुल्हा इधर होगा। तख़्त इधर होगा, तख़्त वाले उधर। बाराती इधर भागेगें, दुल्हा उधर भागेगा। माँए इधर भागेंगी, बच्चे उधर रोएंगे।

﴿تذهل كل مرضعة عما ارضعت﴾ चंद घड़ियाँ पहले ये बच्चे को गोद में लिए उसका माथा चूम रही थी, होंट चूम रही थी। मेरा लाल कह रही थी।

﴿فاذا جاءت الصاخة﴾ वह चीख़ आएगी। वह हंगामा खड़ा होगा। वह लाल को यों फेंकेगी, ऐसे उठाकर फेंक देगी कि यह मरता हो तो मरे। ﴿وتضع كل ذات حمل حملها﴾ हमल वाली औरतों के हमल गिर जाएंगे। बूढ़े बाप को कोई नहीं पूछेगा। माँ को कोई पुरसाने हाल नहीं होगा। हर कोई अपनी आप तापी में पड़ जाएगा। और बाज़ार वीरान हो जाएंगे। अरे इस दुकान को तो अदालत में केस चल रहा था। तुम कहाँ जा रहे हो? आज ज़मीन का फ़ैसला होना था कहाँ जा रहे हो? कल फ़ैसलाकुन इलैक्शन है तुम कहाँ भागे जा रहे हो? एसेम्बलियाँ वीरान, बाग़ात वीरान, वादियाँ वीरान, घर, घरौंदे औंधे मुँह गिरना शुरू होंगे। इंसान क्या दरख़्त सहमे, फूल सहमे, कलियाँ सहमी, पानी सहमा, हवाएं सहमी, पहाड़ कांपने लगे, पत्थर लरज़ने लगे, ज़मीन थरथराने लगी, हवाएं साकिन होने लगीं, ज़मीन का ज़लज़ला, आवाज़ बढ़ी, ज़मीन थरथराने लगी।

फिर आवाज़ और बढ़ी, फिर आवाज़ और बढ़ी। फिर ख़ौफ़नाक शक्ल अख़्तियार करती चली गई। जंगल के जानवर भाग भाग कर बाहर आना शुरू हुए। शैतान जिन्नात नज़र आने लगे। शैतान भी चीख़ता चिल्लाता इधर उधर भागे कभी उधर भागे।

इतने में आसमान को बैठता देखेंगे, सितारों को टूटता देखेंगे, सूरज बेनूर हो जाएगा। यह सूरज को क्या हुआ, देखो! देखो। ﴿اذا الشمس كورت﴾ अरे यह तो काला हो गया, ﴿وانشق القمر﴾ यह चाँद को क्या हो गया। यह तो फैलता चला जा रहा है। सितारों को क्या हुआ ﴿واذا الكواكب انتثرت﴾ यह क्यों टकरा टकरा कर झड़ रहे हैं और टूट रहे हैं?

और यह ज़मीन को क्या हुआ। ज़मीन को क्या हुआ? एक धमाका होगा। ज़मीन ऐसे फटना शुरू हो जाएगी। ज़मीन फटना शुरू हो जाएगी और ज़मीन के नीचे तो आग है। सिर्फ़ पचास किलोमीटर नीचे आग है।

ज़मीन चौबीस हज़ार किलोमीटर की गेंद है। इसके ऊपर पचास किलोमीटर की वही हैसियत है जो सेब के ऊपर छिलके की हैसियत है। यों सूई लगाओ तो छिलका फट जाए। चौबीस हज़ार किलोमीटर एक छिलके की हैसियत है। ज़मीन फटेगी और नीचे से आग निकलेगी और वह आग समन्दर को भी जलाना शुरू कर देगी।

﴿واذا البحار فجرت﴾ पानियों में आग लग गई। पहाड़ हिमालय जो आज सरबुलन्द खड़ा हुआ कह रहा है कि कोई मेरे मुक़ाबले में है? कोई मेरे जितना ऊँचा है? कोई मेरे जैसा सर रखने वाला है? कोई मेरी जैसी बुलन्दियाँ रखने वाला है? कोई मेरे जैसी सख़्ती रखने वाला है? आज कोई देखने वाला देखता कि हिमालय के साथ हिमालय के ख़ालिक़ ने क्या करके दिखा दिया।

अल्लाह की क़ुदरत जो आँखों से देखी

जब हम बंगला देश जा रहे थे। नेपाल के रास्ते से हम

काठमांडू से आगे चले तो कैप्टन ने ऐलान किया, आप लोग खुशकिस्मत हैं कि आज हिमालय का मतलअ साफ़ है। सारे साल में सिर्फ़ चंद दिन के लिए इस चोटी पर बादल नहीं होते। आज इस पर बादल नहीं हैं। आप सब हज़रात इसको मुलाहिज़ा फ़रमाएं तो मैं इस तरफ़ बैठा हुआ था। तो दूसरी तरफ़ हम भाग के गए तो अल्लाह तआला का शाहकार नज़र आया।

जो ख़ामोश ज़बान से कह रहा था अल्लाहु अकबर। जो ख़ामोश ज़बान से कह रहा था मैं मख़्लूक़ ऐसी हूँ तो मेरा ख़ालिक़ कैसा होगा। जो ख़ामोश ज़बान से कह रहा था कि जब मैं इतना मज़बूत हूँ तो मेरा बनाने वाला कितना मज़बूत होगा। जो अपनी ख़ामोश ज़बान से पुकार पुकार कर कह रहा था जब मैं इतना ताक़तवर हूँ तो मेरा बनाने वाला कितना ताक़तवर होगा।

वह हिमालय, वह शाहकार मैं नहीं भूल सकता। फिर उसके बाद कई मर्तबा वहाँ से गुज़रे बादल ही नज़र आए। बस वही एक दफ़ा बादल के बग़ैर देखा तो ज़बान बेसाख़्ता पुकार उठी अल्लाहु अकबर सुब्हानल ख़ालिक़।

क़यामत के दिन कोई हिमालय की वादी में खड़ा हुआ देखता कि वह कैसे रूई के गालों की तरह उड़ना शुरू हो जाएगा। बर्फ़ पिघल जाएगी। पहाड़ उड़ गए। रूई के गाले बन गए। फटते चले गए।

﴿فقل ينسفها ربی نسفا فيذرها قاعا صفصفا لا ترى فيها عوجا ولا امتا﴾

पहाड़ रूई के गाले बनते चले गए।

फ़रिश्तों और इब्लीस को मौत आ जाएगी

وتكون الجبال كالعهن المنفوش. وترى الارض بارزة وحشرنا هم فلم

نغادر منهم احدا وعرضوا على ربك صفا لقد جئتمونا كما خلقنكم اول

مرة بل زعمتم الن نجعل لكم موعدا

पहाड़ फट गए, पिघल गए, उड़ गए, रेत बन गए, हवाओं में बिखर गए। तो जो आवाज़ हिमालय को पिघला देगी वह आवाज़ पाँच फ़ुट के गोश्त पोस्त पर क्या असर करेगी? हड्डियाँ पिघल जाएंगी और जानवरों की चीख़ पुकार होगी।

﴿واذا الوحوش حشرت﴾ आज जानवरों का भी कोई पुरसाने हाल नहीं है। फिर एक ज़ोरदार धमाका होगा और ज़मीन पुर्ज़ा पुर्ज़ा हो जाएगी। इंसान मरेंगे, शयातीन मरेंगे। फिर इब्लीस की बारी आएगी।

मलकुल मौत सामने से आएगा। वह ज़मीन में ग़ोता लगाएगा तो दूसरी तरफ़ निकल जाएगा। आगे देखेगा तो मलकुल मौत है। फिर वह ज़मीन में ग़ोता लगाएगा तो तीसरी तरफ़ निकल जाएगा। आगे देखेगा तो मलकुल मौत है। फिर वहाँ से ग़ोता लगाएगा और चौथी तरफ़ निकल जाएगा। हर तरफ़ मलकुल मौत को सामने देखेगा। आज कोई जाए पनाह नहीं है। मलकुल मौत कहेगा भाग भाग आज कहाँ तक भागेगा। आज तेरा वक़्त भी आ गया। इब्लीस पूछेगा मुझे कहाँ ले जाओगे?

जवाब मिलेगा तेरी माँ के पास। कहाँ ﴿جهنم الى امك الهاوية﴾ तेरी माँ के पास ले जाऊँगा। हाविया जहन्नम की सबसे ख़ौफ़नाक आग जो मुनाफ़िक़ीन के लिए तैयार की गई है। यह आवाज़ पड़ेगी। आसमान फटेगा, फ़रिश्ते मरेंगे, दूसरे आसमान पर ख़ौफ़ होगा। फ़रिश्ते मरेंगे। आसमान फटेगा। तीसरे आसमान पर मौत, चौथे आसमान पर मौत, पाँचवें आसमान पर मौत, छठे आसमान

पर मौत, सातवें आसमान के फ़रिश्तों पर मौत। फिर अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगे अर्श के उठाने वालों को भी मौत दे दी जाए। अर्श के फ़रिश्ते धड़ाम से गिरेंगे।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे जिब्रील और मीकाई मर जाएं। तो अल्लाह तआला का अर्श बोल उठेगा। सिफ़ारिश करेगा या अल्लाह! जिब्रील और मीकाईल को तो आप बचा लें तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴾اسكت فقد كتبت الموت على كان تحت عرشي﴿ मेरे अर्श के नीचे सबको मरना है। कोई नहीं बच सकता।

हाय वह देखो जिब्राइल मर गए। मीकाईल मर गए। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे। इसराफ़ील मर जाएं। एक रिवायत में आता है कि अल्लाह तआला पूछेंगे, कौन बाक़ी है?

कहा जाएगा या अल्लाह! अर्श के फ़रिश्ते बाक़ी हैं। जिब्राईल, मीकाईल, मलकुल-मौत, इसराफ़ील बाक़ी हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे जिब्राईल और मीकाईल मर जाएं। मर गए। अब कौन बाक़ी है? यह बाक़ी मर जाएं। अब कौन बाक़ी है? इसराफ़ील। मर जाएं। अब कौन बाक़ी है?

मलकुल मौत कहेंगे या अल्लाह! ऊपर तू बाक़ी नीचे मैं। ऊपर अल्लाह तआला अर्श के नीचे मलकुल मौत। इसराफ़ील जो सूर उठाकर फूंक रहे थे उड़ते हुए बुलन्द हवा में चले जाएंगे। और सूर अल्लाह के अर्श पर जाकर अपने आप टिक जाएगा और इसराफ़ील मुँह के बल ज़मीन पर गिरेंगे। अब ऊपर अल्लाह तआला नीचे मलकुल मौत। सबकी रूहें निकालने वाला, सबको तड़पता देखने वाला। आज कोई उसको तड़पता देखता। आज कोई उसकी चीख़ सुनता।

हदीस में यों आता है कि अगर इस वक़्त इंसानियत ज़िंदा होती तो उसकी चीख़ सुनकर सबके कलेजे फट जाते।

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ऐ मलकुल मौत! मर जाओ। किसी को बक़ा नहीं सिवाए अल्लाह की ज़ात के। अर्श के नीचे सबको मौत। जब जिब्राईल, मीकाईल की अर्श सिफ़ारिश करेगा कि या अल्लाह जिब्राईल को तो बचा ले। मीकाईल को तो बचा ले तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे :

﴿اسكت﴾ ख़ामोश मेरे अर्श के नीचे सबको मौत आती है। कोई नहीं बच सकता। हाय मलकुल मौत गिरा पड़ा है। सब को मिटा दिया बनाने वाले ने।

كما بدأنا اول خلق نعيدكم وعدا علينا انا كنا فاعلين. منها خلقنكم

وفيها نعيدكم ومنها نخرجكم تارة اخرى.

मिट्टी से बने थे। मिट्टी में लौटा दिया तुम्हें। इंतिज़ार करो दोबारा ज़िंदा होने का।

अल्लाह तआला का ऐलान

फिर अल्लाह तआला सारी काएनात को अंधेरे में धकेल कर ऐलान करेगा, कहाँ हैं मेरे शरीक? कहाँ हैं बादशाह? ﴿من كان لى شريك فليات﴾ कोई मेरा शरीक है तो सामने आए। फिर दोबारा कहेगा ﴿من كان لى شريك فليات﴾ मेरा शरीक है तो सामने आए। फिर तीसरी मर्तबा कहेगा ﴿من كال لى شريك فليات﴾ कोई मेरा शरीक है तो सामने आए। फिर अल्लाह तआला ज़मीन व आसमान को झटका देकर कहेगा :

﴿انا الملك﴾ मैं बादशाह हूँ। फिर अल्लाह तआला दूसरा झटका

देकर क़हेगा ﴿انا القدوس السلام المؤمن﴾ मैं हूँ क़ुद्दूस, सलाम, मुमिन। फिर तीसरा झटका देकर कहेगा ﴿المهيمن العزيز الجبار المتكبر﴾ मैं हूँ मुहैमिन, अज़ीज़, जब्बार, मुतकब्बिर। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएगा :

बादशाह कहाँ गए, मुग़ल इक्तिदार कहाँ गया? अंग्रेज़ इक्तिदार कहाँ गया, अमरीका का इक्तिदार कहाँ गया? बनू अब्बास बनू उमैय्या कहाँ गए, कहाँ गए उस्मानी तुर्क, कहाँ गया सिकन्दर यूनानी, कहाँ गया सिकन्दर ज़ुलक़रनैन? किधर चले गए महमूद व अयाज़? किधर गया तैमूर लंग? बादशाह कहाँ हैं? ज़ालिम कहाँ हैं? ज़ालिम कहाँ हैं? ज़ालिम कहाँ हैं? ﴿اين المتكبرون﴾ तकब्बुर करने वाले कहाँ चले गए? एड़ियाँ मारकर चलने वाले, गर्दन अकड़ाकर चलने वाले कहाँ गए?

मेरे भाईयो! इंसान की भी कोई अवक़ात है कि तकब्बुर करे। एक दर्द ही इसको तड़पा के रख दे। मौत का झटका निशान मिटा के रख दे। पेट का पाख़ाना इसके अंदर, ग़लाज़त, पेशाब के जोहड़, गंदा पानी इसके अंदर, पाख़ाना इसके अंदर, गंदा ख़ून इसके अंदर, थूक इसके अंदर, बलग़म इसके अंदर, नाक की गंदगी इसके अंदर, कानों का मैल इसके अंदर, आँखों का मैल इसके अंदर, सर की जूंए इसके अंदर, आफ़ात व बलियात इसके ऊपर, मौत इसके ऊपर, मिट्टी इसका ओढ़ना बिछौना, क़ब्र इसका आख़िरी ठिकाना। जिस इंसान की यह अवक़ात हो वह गर्दन अकड़ाकर चले। बाज़ू हिलाकर चले।

भाईयो! अल्लाह तआला से शर्माना चाहिए। यह चाल मेरे रब को पसन्द नहीं है। तो आज अल्लाह पूछ रहा है कहाँ हैं मुतकब्बिर। फिर अल्लाह फ़रमाएंगे ﴿لمن الملك اليوم﴾ आज

किसकी बादशाही है? कोई जवाब देने वाला नहीं होगा। फिर अल्लाह तआला खुद कहेगा ﴿لله الواحد القهار﴾ आज अकेले अल्लाह तआला की बादशाही है। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿انی برات بالدنیا ولم تکن شیا وانا الذی اعھدتھا﴾ तुम कुछ न थे और अल्लाह था। फिर अल्लाह ने तुम्हें बनाया। फिर तुम्हें मुहलत दीं फिर तुम्हें मिटाया, फिर तुम्हें दोबारा ज़िंदा करेगा। सारी काएनात ख़त्म। झगड़े झमेले गए। मेले ठेले गए, रोना हंसना गया।

सारी ज़िंदगी की सारी रौनाइयाँ ख़त्म। सिर्फ़ अल्लाह अपनी ज़ात के साथ बाक़ी है।

﴿الله لا اله الا هو الحی القیوم لا تاخذه سنة ولا نوم...الخ﴾

अल्लाह तआला ने इस दुनिया को बनाया। उसी अल्लाह ने मिटा दिया। यह मच्छर का पर था, यह मकड़ी का जाला था, यह धोके का घर, यह मच्छर का पर, यह मकड़ी का जाला।

जिसकी सुबहें थोड़ी हैं शामें ज़्यादा हैं। जिसकी राहतें थोड़ी हैं और ग़म ज़्यादा हैं। जिसका हंसना थोड़ा है और रोना ज़्यादा है। जिसके दर्द ज़्यादा हैं और सुख थोड़े हैं। जहाँ की ज़िल्लतें ज़्यादा हैं और इज़्ज़तें कम हैं। जहाँ दर्द और ग़म थे, मुश्किलात और मुसीबतें थीं। आज अल्लाह तआला ने उस जग को मिटा दिया। उसके आशिक़ों को मिटा दिया। उसके पीछे रोने वालों को हलाक कर दिया। उन्हें भी बेनिशान कर दिया। यह वह दुनिया है जिसने मुझे और आपको अल्लाह से दूर कर दिया है। यही वह रुपया है। आज सोने चाँदी के ढेर हैं। लेने वाला कोई नहीं। मोतियों के ढेर, हीरे जवाहरात के ढेर हैं। कोई उनके पीछे बाज़ी लगाने वाला, तख़्त ऐवान शाही में पड़े हुए हैं। उस पर कोई नहीं है।

यह धोके का घर अंजाम ख़राब न कर दे

यह धोके घर, यह मच्छर का पर, यह मकड़ी का जाला, यह मताए क़लील, यह दारुल ग़ुरूर ﴿وما الحيوة الدنيا في الاخرة الا قليل﴾ यह क़लील मताअ, यह दारुल ग़ुरूर, यह लहू व लअब, यह ज़ीनत, यह तफ़ाख़ुर, यह मिट जाने वाला घर। इसकी सुबहें देखते हैं शामे नहीं देखते। इसकी शामें देखते हैं सुबहे नहीं देखते। यह मिट जाने वाला, टूट जाने वाला घर है।

इसीलिए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿لا تغرنكم الحيوة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور.﴾

याद रखना तुम्हें फ़ैसलाबाद की रौनक़ें जन्नत न भुला दें। अल्लाह न भुला दें। यहाँ का माल व मताअ तुम्हें जन्नत के शौक़ न भुला दें। यहाँ का ख़ौफ़ तुम्हें दोज़ख़ न भुला दे कि अल्लाह तआला ने सबको मिटा दिया। अब अल्लाह तआला ने ज़िंदा करना है। फिर एक दिन आएगा जब अल्लाह इस जहान को ज़िंदा करेगा। फिर दोबारा ज़मीन बिछाएगा।

يوم تبدل الارض غير الارض والسموات وبرزوا لله الواحد القهار

وترى المجرمين يومئذ مقرنين في الاصفاد سرابيلهم من قطران

وتغشى وجوههم النار ليجزى الله كل نفس ما كسبت ان الله سريع

الحساب هذا بلغ للناس ولينذروا به وليعلموا انما هو اله واحد

وليذكر اولوالالباب.

जिस दिन ज़मीन बदल के बिछाई जाएगी, आसमान तब्दील किए जाएंगे और अल्लाह तआला के सामने पेश किए जाओगे।

दो ज़िंदगियाँ, दो रास्ते, दो मौतें, दो अंजाम हैं। आज जिन्होंने अल्लाह तआला को नाराज़ किया तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿وبرزو لله الواحد القهار﴾ आज तुम सब आ गए।

﴿وترى المجرمين﴾ आज ज़रा मेरे नाफ़रमानों को देखो।

﴿مقرنين فى الصفاد﴾ ज़ंजीरों में जकड़े हुए।

﴿سرابيلهم من قطران﴾ उनको शलवारें तारकोल की पहनाई जा चुकी हैं।

﴿وتغشى وجوههم النار﴾ उनके सरों पर आग चढ़ चुकी है।

﴿قطعت لهم ثياب من النار﴾ उनको कुर्ते आग के पहनाए जा चुके हैं।

﴿ليس لهم طعام الا من ضريع﴾ कांटेदार झाड़ियों के सिवा उनके लिए खाना कोई नहीं।

﴿يسقى من ماء صديد﴾ खौलती हुई पीप के सिवा उनका पानी कोई नहीं।

﴿يشوى الوجوه﴾ वे प्याले जब मुँह के करीब करेंगे तो उसकी भाप उनके चेहरों की खाल को जलाकर, पिघलाकर, पानी में गिरा देगी। यह खाना पीना है। ये उनके कमरे हैं।

﴿نارا احاط بهم سرادقها﴾ आग के पर्दे, आग की दीवारें, यह उनके बिस्तर हैं।

मेरे भाईयो! उस दिन कामयाबी हासिल करने और नाकामी से बचने के लिए सिर्फ़ एक ही रास्ते की ज़रूरत है और वह है सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रास्ता। अल्लाह तआला हम सबको उस वक़्त की कामयाबी की ताफ़ीक़ दे और उस वक़्त नाकामी से महफ़ूज़ फ़रमाए, आमीन।

दुआ

اللهم الحمد حمدا كثيرا كما انت اهله. اللهم لك الحمد انت رب السموات والارض. اللهم لك الحمد انت قيم السموات والارض. اللهم لك الحمد انت مليك السموات والارض. اللهم لك الحمد كما انت اهله، فصل على سيدنا ومولانا محمدا كما انت اهله فافعل بنا ما انت اهله انك اهل التقوى واهل المغفرة.

या अल्लाह! ऐ ज़मीन व आसमान के तन्हे तन्हा मालिक, ख़ालिक़। ऐ जिसने हमें गंदे पानी से इंसान बनाया। तेरा हम शुक्र करते हैं। या अल्लाह! तूने हमें मुसलमान बनाया हम तेरा शुक्र अदा करते हैं।

या अल्लाह! तूने हमें वजूद सही अता फ़रमाया। हम तेरा शुक्र अदा करते हैं। या अल्लाह! तूने धरती को हमारे लिए बिछाया, हवाओं को हमारे लिए चलाया। काएनात की एक एक चीज़ को हमारी ख़िदमत के लिए लगाया। या अल्लाह हम तेरे शुक्र गुज़ार हैं।

मौला! हमें तेरी नेमतों का जैसा हक़ अदा करना था वैसे हम ने न किया। हम नाफ़रमान हो गए। हम आवारा हो गए। हम तुझसे टकरा गए। हम नादान थे। मौला! बे अक़्ल थे। मौला या अल्लाह! बे अक़्ली की वजह से तुझ जैसे करीम अल्लाह से टक्कर ले ली।

या अल्लाह बे अक़्ली की वजह से तेरे प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से टक्कर ले ली।

या अल्लाह! हम सब तेरी बारगाह में माफ़ी मांगते हैं, हमें

माफ़ कर दे। इन क़दमों ने बहुत ग़लत तरफ़ उठ-उठ के देखा। या अल्लाह! इन्हें सही तरफ़ उठने वाला बना दे। इन हाथों से बड़े-बड़े ग़लत काम हुए। अब इनसे सही काम करवा ले। इन आँखों ने बहुत ग़लत देखा। अब इनके अंदर हया का सुर्मा लगा दे। इन कानों ने बहुत ग़लत सुना। या अल्लाह! इन्हें क़ुरआन की तरफ़ लगा दे।

यह ज़बान बहुत ग़लत चली। या अल्लाह अब इसको अपने ज़िक्र पर लगा दे। यह बदन तेरी नाफ़रमानियों में डूब गया। ज़र्रा ज़र्रा, रवाँ-रवाँ गुनाहों से स्याह हो गया। या मालिक व ख़ालिक़! ऐ बादशाहों के बादशाह! हमारी इस ग़फ़लत को माफ़ कर दे।

हमारे इन जुर्मों को माफ़ कर दे। हमारी ज़िल्लतों को माफ़ कर दे। या अल्लाह हमें अपना फ़रमांबरदार बना दे। या अल्लाह! हमारा रुख़ अपनी ज़ात की तरफ़ फेर दे। अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ फेर दे। सारी उम्मत का रुख़ अपनी तरफ़ फेर दे। या अल्लाह हमारी बेबसी है। या अल्लाह! हमारी बेबसी है, हमारी बेचारगी है। इस माहौल की गंदगी ने हमारी हर तौबा तोड़ दी। हमारे हर इरादे को ख़ाक में मिला दिया। या अल्लाह! इन फ़िज़ाओं को बदलना न हमारे बस में रहा न किसी इंसान के बस में रहा। या अल्लाह! तू ख़ुद आके संभाल ले। या अल्लाह! बातिल ने हमारी नस्ल को ख़रीद लिया। हमारी सारी नस्ल मेरे मौला! जिनके हाथों से क़ुरआन उठाती थी इन हाथों में गिटार आ गए। जिन ज़बानों से क़ुरआन पढ़ा जाता था, वे ज़बान गानों में चल पड़ीं। जो क़दम मस्जिद की तरफ़ उठते थे वे क़दम रक़्सगाहों की तरफ़ उठने लगे।

या अल्लाह! हम तुझे अपना दुखड़ा सुनाते हैं और तुझसे सवाल भी करते हैं। या अल्लाह! दुनिया में कोई नहीं रहा जो तेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत का ग़म सुने, फ़रियाद सुने। या अल्लाह! हम पिसे और पिसते चले गए। या अल्लाह! हर गली की नुक्कड़ पर, ज़मीन के हर हिस्से पर मेरे मौला हमारे ही बच्चों की लाशें बिखरी पड़ी हैं। हमारी बेटियों की इज़्ज़तें तार तार हो गयीं। हमारे ही घरों को आग लगी। हमारे ही घरों से धुंए उठे। हम पर दुश्मन हंसा। हम ही इबरत का निशान बने। मौला! साल दो साल की बात होती तो हम हाय हाय न करते। यह तो दो सौ साल गुज़रने को हैं। या अल्लाह! हर आने वाला दिन पहले से ज़्यादा तारीक, हर आने वाली रात पहले से ज़्यादा ख़ौफ़नाक, अंधेरी रात के भटके हुए मुसाफ़िर की तरह हम भी भटक गए मौला।

या अल्लाह! हम बिखरे हुए क़ाफ़िले की तरह बिछड़ गए मौला। कटी पतंग की तरह हवा के रहम व करम पर हो गए मौला। ऐ बादशाहों के बादशाह! देख ले।

या अल्लाह! हमारी बेबसियाँ, अल्लाह! तू तो सोता नहीं, तू ऊँघता नहीं, तू ग़ाफ़िल नहीं, तू जाहिल नहीं। या अल्लाह! बातिल ख़ुदाई के दावे कर चुका है। हर दौर में जब बातिल ने ख़ुदाई का दावा किया तेरी क़ुदरत ने आगे बढ़कर उसकी गर्दन को मरोड़ा है।

अल्लाह! तूने मिस्र के फ़िरऔनों को तो पकड़ा था। आज के फ़िरऔनों को कब पकड़ेगा। या अल्लाह! हमारे सीने फट गए। मौला! हमारी तो आँखों से रोते रोते आँसू ख़ुश्क हो गए। या

अल्लाह! हमारे पास अब अलफ़ाज़ भी कोई नहीं जो तेरे सामने रखकर अपना ग़म सुनाएं, अपना दुखड़ा सुनाएं। ऐ मौला! हम गूंगे हो चुके हैं।

या अल्लाह! हम पागल हो गए हैं। या अल्लाह! हमें सदमों ने पागल कर दिया है। या अल्लाह! अपने ज़वाल को देख-देख के, मासूम बच्चों को तड़पता देख-देख के, मासूम बच्चियों की इज़्ज़तों को तार-तार होता, सुन-सुन के हमारी अक़्लें ख़त्म हो चुकी हैं। हमारे पास अलफ़ाज़ कोई नहीं अपनी कहानी सुनाने को। या अल्लाह! तू सुनने को हर वक़्त तैयार है। हम ही सुनाने का सलीक़ा भूल गए। तू मदद करने को हर वक़्त तैयार है। अल्लाह हमें तुझ से गिला कोई नहीं। अल्लाह हम ख़ुद गुनाहगार हैं। हमें पता है हम तेरे मुजरिम हैं। यह ज़मीन फट के निगल जाए हम हक़दार हैं। आसमान टूट पड़े हम पर, हम हक़दार हैं। बिजलियाँ हमें जला दें हम हक़दार हैं। ऐ अल्लाह! फ़क़ीर का हक़ तो कोई नहीं रोकता। वह तो पीछे पड़कर भीख मांगता है। हम भीख मंगे हैं या अल्लाह! या अल्लाह! भला गुनाहगार का क्या हक़ है? भला नाफ़रमान का क्या हक़ हो? कहाँ से अबूबक्र लाएं? कहाँ से उमर लाएं? कहाँ से ख़दीजा लाएं? कहाँ से लाएं उम्मे कलसूम को? हम ही हैं गुनाहगार, हम ही हैं नाफ़रमान हैं। तुझे पुकारते हैं। मौला! यह ग़फ़लत की फ़िज़ा बदल दे नाँ मौला। रहम कर दे हम लुटे हुए मुसाफ़िर हैं रहम कर दे। मौला! अपनी मददें उतार दे। या अल्लाह! हमारी बेचारगी के दिन ख़त्म कर दे। या अल्लाह! या अल्लाह! जैसे हवाएं ठंडी हो गयीं। इस्लाम की हवाएं चला दे। बातिल हमें लूट गया। दोहरी चाल चल गया। जान पे भी डाके मार गया, ईमान को भी लूट गया। हमारी नस्लें नाचने

वाली बन गयीं। हमारी पाक बेटियाँ स्टेज पे नाचने को आ गयीं। या अल्लाह! हमारे हया वाले नौजवान आवारा हो गए।

या अल्लाह हम तुझे अपना ग़म सुनाते हैं। दुनिया के बादशाह ने हमें मंडी में बेच दिया है। सौदे की तरह तेरे महबूब की उम्मत बिकाऊ माल बन गई। भेड़ बकरियों की तरह बिक गई। ऐ मौला और कौन है जिसे हम सुनाएं, दुनिया वालों ने तो सुनना छोड़ दिया। उनके ऐवान बंद हो गए। उनके दिल लोहे और पत्थर की तरह सख़्त हो गए। ये आँखों से अंधे हो गए। इन्हें हमारी बेबसी नज़र नहीं आती। ये कानों से बहरे हो गए। हमारी फ़रियादें इनके कानों तक नहीं जातीं।

ऐ वह ज़ात जो सोने से पाक है, जो ऊँघ से पाक है, तू तो सुनता है नाँ। तू तो देखता है नाँ। देख हम लुअ गए मौला! ईमान भी लुट गया, दुनिया भी लुट गई। इस लुटे हुए मुसाफ़िर पर अब रहम कर दे। इस डूबती कश्ती पर अब रहम कर दे। हमें तो नाखुदा छोड़ गए। मल्लाह बीच मंझधार में छोड़ गए।

ऐ अल्लाह! तुझे बहुत कुछ सुनाने को जी चाहता है। अललाह तुझे सारा ग़म सुनाने को जी चाहता है लेकिन हमें पता है तू हमारे बोल का मुहताज नहीं। हम तुझे अपना ग़म सुनाएं इसका तू मुहताज नहीं। हमारे ग़म सुनाए बग़ैर तू सुनता है। इधर मग़रिब का वक़्त क़रीब है। उधर हिकायते ग़म तवील है। अब तो बहुत देर हो गई, बहुत देर हो गई।

मौला! अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत पर रहम खा। बातिल के शिकंजे से निकाल और इनको दिखा दे कि तू अब भी हमारा है। हमारा तुझ पे दावा है कि तू हमारा है। बेशक हम गंदे हैं। बेटे नाफ़रमान हो जाएं तो मौला! नसब तो

नहीं बदल जाता। रहते तो अपने माँ बाप के ही हैं। हम तेरे नबी के नाफ़रमान सही पर उन्हीं की रूहानी औलाद हैं।

मौला! हमें अपनी रहमत की चादर में ले ले और अपनी हिफ़ाज़त की चादर में ले ले। हमें बातिल ने ज़लील कर दिया है और इस दावे में आ गए हैं कि लाओ अपने ख़ुदा को। आ नाँ या अल्लाह! या अल्लाह! आ जा नाँ या अल्लाह।

या अल्लाह! हमें न देख। तेरे दीन का सवाल है। या अल्लाह! तेरे क़ुरआन का सवाल है। या अल्लाह! तेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज इज़्ज़त का सवाल है। या अल्लाह! तू ख़ुद आ ख़ुद आ। इन फ़िरऔनों को पकड़। इन नमरूदों को पकड़। इन शद्दादों को पकड़। इन हामानों को पकड़। या अल्लाह! हमारी नस्ल को हिदायत दे दे। हमारी बच्चियों को पाकीज़गी दे दे। हया दे दे। पर्दा दे दे। हमारे नौजवानों को पाकदामनी दे दे, हया दे दे। इन्हें क़ुरआन का ख़ूगर बना दे। इन्हें मौसीक़ी से नफ़रत दे दे। इन्हें हया का ज़ेवर पहना दे। इनकी आँखों में हया का सुर्मा लगा दे। इनकी नज़रों से बेहयाई निकाल दे। इनके क़दमों से आवारगी निकाल दे। या अल्लाह! या अल्लाह! इनको वह नौजवान बना जिनकी इबादत अज़ाब टाल देती है। इन्हें वह नौजवान बना जिनकी दुआएं तेरे अर्श से फ़रिश्तों को उतार देती हैं। इस सारे मजमे से राज़ी हो जा। इन बैठे हुओं से राज़ी हो जा। बाज़ार से गुज़रने वालों से राज़ी हो जा। जो राहगीर दुआ में शामिल हो गए उनको भी अपनी रहमत की चादर में ले ले मौला।

ऐ मेरे मौला! हम मुन्तज़िर हैं, हर शाम इंतिज़ार में, हर सुबह इंतिज़ार में, टकटकी बांधी हुई है कि कब तेरा दरवाज़ा खुलेगा।

कब तेरे फ़रिश्ते उतरेंगे। कब इस्लाम का झंडा लहराएगा। कब तक्बीर की सदाएं बुलन्द होंगी। हमारी तो आँखें लगी हुई हैं। पता नहीं कब तेरा दर खुलेगा। हमने आँखें लगाई हुई हैं, हमने टकटकी बांधी हुई है। हमने तो हाथ फैलाए हुए हैं। हमने तो नज़रें आसमान की तरफ़ लगाई हुई हैं।

मौला! तू कब क़बूल करेगा। तेरी हिकमत और हमारी बेसब्री है। हमारी बेसब्री भी बरहक़ है। हमें मज़ीद इंतिज़ार न करवा। अपनी रहमत के दर खोल दे। हिदायत के दर खोल दे। इज़्ज़त के दर खोल दे। कामयाबी के दर खोल दे। बुलन्दी के दर खोल दे। ज़िल्लत के दर बंद कर दे। या अल्लाह! हमें माफ़ कर दे, आमीन।

﴿و آخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾